महाकवि नंददास
प्रणीत
भँवरगीत
डॉ॰ भगवानदास तिवारी

❀❀ महाकवि नंददास-प्रणीत भँवरगीत

(पाठानुशीलन)

सप्रेम भेंट

महाकवि नंददास-प्रणीत

भँवरगीत

लेखक

साहित्य-महोपाध्याय, तत्त्वभूषण

डॉ० भगवानदास तिवारी

एम० ए०, पी-एच० डी०

प्रोफेसर व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,

सोलापुर कॉलेज, सोलापुर–२

६१, महाजनी टोला, इलाहाबाद

संस्करण	प्रथम, १९७२ ई०
प्रकाशक	स्मृति प्रकाशन ६१, महाजनी टोला, इलाहाबाद
आवरण	शिव गोविन्द पाण्डे
मुद्रक	फाईन प्रिन्ट १०६, शहराराबाग, इलाहाबाद
मूल्य	पुस्तकालय संस्करण ९·०० विद्यार्थी संस्करण ६·००

भूमिका

ऐतिहासिक परिवेश—

भँवरगीत के प्रणेता नंददास जिस कृष्णोपासक भक्तिमार्ग के अनुयायी थे, उसकी परंपरा वासुदेव धर्म, सात्वत धर्म और गीता के एकांतिक या भागवत धर्म के रूप में इस देश में अति पुरातन काल से वर्तमान थी, किन्तु कालचक्र के परिवर्तन ने वैष्णव धर्म को वाह्याचार प्रदर्शन और कर्मकाण्डी विधान में इस बुरी तरह से जकड़ लिया कि धर्म के मूलभूत तत्त्व जनजीवन से लुप्त हो गये। ऐसे वातावरण में उत्तर भारत में जैनधर्म और बौद्धधर्म का आविर्भाव हुआ। इनमें से जैनधर्म अपनी कठोर आचारनिष्ठा के कारण एक सम्प्रदाय विशेष तक सीमित रह गया और बौद्ध धर्म ने राज्याश्रय पा उत्तर भारत ही नहीं अपितु दक्षिणपूर्वी एशियाई देशों तक अपना झंडा फहराया। ऐसी अवस्था में उत्तर भारत के वैष्णवमतानुयायी कृष्णोपासक सात्वत या वृषनिवंशी क्षत्रियों ने दक्षिण भारत में जा मथुरा के नामसाम्य पर मदुरा नगरी बसाई जिससे दक्षिण में कृष्ण भक्ति का प्रचार हुआ। आलवार सन्तों की रचनाएँ इसका प्रमाण हैं।

कालान्तर में जैनधर्म अनेक पंथों में बँट गया और बौद्धधर्म महायान, हीनयान, सहजयान आदि शाखा-प्रशाखाओं में विभक्त हो इन्द्रियसुख की गुह्य साधनाओं में भटक गया। इससे भी आगे चलकर नाथों, सिद्धों, कापालिकों, योगियों ने आत्मतत्त्व की स्वतन्त्र व्याख्यायें कीं तथा धर्म के नाम पर अनेक रहस्यमय और वीभत्स क्रियाओं का प्रचलन हुआ, फलतः शंकराचार्य ने जैन और बौद्ध धर्मों पर कुठाराघात कर 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' की घोषणा की और एक बार फिर से औपनिषदिक चिन्तन-धारा को नई गति प्रदान की। शंकराचार्य का मत अद्वैतवाद के नाम से प्रख्यात है, किन्तु उसमें बौद्धिकता का अतिरेक है, अतः वह लोकमानस में सरलता से नहीं पैठ सका और इसीलिए भक्ति को लोक-व्यवहार में प्रतिष्ठित करने के लिए श्री संप्रदाय, सनक संप्रदाय, ब्रह्म संप्रदाय और रुद्र संप्रदाय आविर्भूत हुए। इन संप्रदायों ने भक्ति को तर्क-कुतर्क से दूर सामान्य जन-जीवन में आस्था, विश्वास और श्रद्धा का विषय बनाया।

पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक—

पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक और आद्य प्रचारक श्री मद्वल्लभाचार्य थे। उनके आविर्भाव के समय सारे देश में नाथों, सिद्धों, जैनों, निर्गुणिया सन्तों और प्रेममार्गी सूफियों

का बोलवाला था। नाथों और सिद्धों का सिद्धि रहस्यमय चमत्कारों, सूफियों का प्रेम दिव्य उन्माद और निर्गुणिया सन्तों की वाणी उपेदशात्मकता से बोझिल थी। विरक्ति का स्वर सारे देश में प्रबल था, अत: लोक जीवन के सामान्य कार्य व्यापारों के बीच भक्ति की प्रतिष्ठापना इस युग की सबसे बड़ी माँग थी। आचार्यजी ने पुष्टिमार्ग चलाकर यही कार्य किया।

वल्लभाचार्य जी का जन्म रविवार, वैशाख कृष्ण ११, संवत् १५३५ को मध्य प्रदेश के रायपुर जिले में चंपारण्य नामक वन में हुआ था। इनके पिता का नाम लक्ष्मण भट्ट और माता का नाम इल्लम्मागारू था, जो भारद्वाज गोत्रीय तैलंग ब्राह्मण थे। बचपन से ही वल्लभाचार्य अद्भुत प्रतिभा सम्पन्न थे। दस वर्ष की आयु में संवत् १५४५ में इन्होंने वेदवेदांग और दर्शन में अपनी विशेष योग्यता अर्जित कर जगदीशपुरी में पंडितों से शास्त्रार्थ किया और अपनी दिव्य प्रतिभा तथा प्रकाण्ड पांडित्य के बल पर शांकर मत का खण्डन कर विशुद्ध ब्रह्मवाद की प्रतिष्ठा की। संवत् १५६५ में इन्होंने पुन: विजय-नगर के राजा कृष्णदेव राय के दरबार में शांकर मत का खंडन कर शुद्धाद्वैतवाद का प्रतिपादन किया, जिससे प्रभावित हो राजा कृष्णदेव राय ने आचार्य जी का कनकाभिषेक कर उन्हें 'आचार्य चक्रचूणामणि जगद्गुरू श्रीमदाचार्य महाप्रभु' उपाधि से समलंकृत किया। उसी दिन से आचार्यजी लोक में महाप्रभु वल्लभाचार्य जी के नाम से विख्यात हुये। 'आचार्य जी की प्रतिभा से अभिभूत हो विष्णुस्वामी संप्रदाय के आचार्य विल्वमंगल ने उन्हें स्वसंप्रदाय का आचार्यत्व प्रदान किया, जिसके बाद आचार्यजी ने स्वमत प्रचारार्थ अनेक यात्रायें कीं, जिन्हें साम्प्रदायिक भाषा में महाप्रभुजी की 'पृथ्वी प्रदक्षिणायें' कहा जाता है।

इन यात्राओं के क्रम में आचार्य जी संवत् १५४९ में ब्रज पधारे, जहाँ उन्होंने गोवर्धन पर्वत में से श्रीनाथजी के स्वरूप को निकालकर एक छोटे से मंदिर में प्रति-ष्ठित किया। बाद में उनके अनन्य भक्त पूरनमल खत्री ने श्रीनाथजी का विशाल मन्दिर बनवाया। आचार्य जी के चौरासी शिष्य थे, जिनकी कथाएँ चौरासी वैष्णवन की वार्त्ताओं में संकलित हैं। अष्टछाप के चार कवि-सूरदास, परमानंददास, कुंभनदास और कृष्णदास वल्लभाचार्य जी के ही शिष्य थे।

आचार्य जी उद्भट विद्वान, तार्किक, अत्युत्तम वक्ता और मौलिक चिंतक थे। उनके रचे हुए ग्रंथों की संख्या ३० कही जाती है, जिनमें से अणुभाष्य, सुबोधिनी, पूर्व मीमांसा भाष्य, तत्वदीप निवन्ध और षोडष ग्रंथ विद्वन्मान्य हैं। आचार्य जी गृहस्थधर्म के बीच भक्ति के प्रचारक थे, अत: वे स्वयं भी पारिवारिक जीवन बिताते थे। उनकी धर्म-पत्नी का नाम महालक्ष्मी तथा पुत्रों के नाम गोपीनाथ और बिट्ठलनाथ थे। अपने जीवन में गृहस्थ और अध्यात्म दोनों की सम्यक् साधना करते हुए आचार्य जी ने

आषाढ़ शुक्ल ३, संवत् १५८७ को काशी में, हनुमानघाट पर गंगा में जल समाधि ली। नित्यलीला प्रवेश के समय वे ५२ वर्ष के थे।

आचार्य जी के तिरोधान के उपरान्त उनके ज्येष्ठ पुत्र गोपीनाथ वल्लभ संप्रदाय के आचार्य हुए। उन्होंने गुजरात में स्वसंप्रदाय का खूब प्रचार किया, परन्तु दुर्दैव से २८ वर्ष की अवस्था में ही उनका गोलोकवास हो गया, अत: वल्लभाचार्य के दिवतीय पुत्र विट्ठलनाथजी पुष्टिसंप्रदाय की गद्दी पर बैठे। गुसाईं विट्ठलनाथ भीं अपने पिता की ही तरह उद्भट विद्वान और सम्मान्य आचार्य थे। भारत के तात्कालिक सम्राट अकबर राजा मानसिंह, राजा बीरबल, टोडरमल आदि आचार्य जी का बड़ा आदर करते थे। गुसाईं जी के समय में वल्लभ संप्रदाय का प्रचार खूब बढ़ा और उनके शिष्यों की संख्या २५२ हुई। इन वैष्णवों के प्रसंग दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता नामक ग्रंथ में संग्रहीत हैं।

अष्टछाप के कवि

गुसाईं जी के समय में वल्लभ संप्रदाय के वैभव और प्रचार के कारण लोक-श्रद्धा का पुनर्जागरण हुआ और पुष्टिमार्गीय मंदिरों में भगवान की सेवा-पूजा का विधान समृद्ध हुआ। गुसाईं जी ने श्रीनाथजी की कीर्तनसेवा के लिए अपने पिता वल्लभाचार्य जी के चार शिष्य-सूरदास, परमानन्ददास, कुंभनदास और कृष्णदास के साथ अपने चार शिष्य यथा गोविन्द स्वामी, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास और नन्ददास को मिलाकर आठ कवियों के एक मण्डल की स्थापना का, जो अष्टछाप के नाम से प्रख्यात है। ये आठों भक्त कवि गोस्वामी विट्ठलनाथ जी के सहवास में लगभग संवत् १६०६ से १६३५ तक एक दूसरे के समकालीन थे तथा गोवर्द्धन पर्वत पर स्थित श्रीनाथजी के मन्दिर में कीर्तन सेवा करते हुए व्रजभाषा में पदरचना करते रहते थे।

लोकजीवन के कार्यव्यापारों के बीच प्रेम, सौन्दर्य, आनन्द और लीलामय भगवान श्रीकृष्ण की अवतारणा कर इन कृष्णभक्त कवियों ने मन वाणी से अगम अगोचर ब्रह्म को साँसों के निकट लाकर बिठा दिया। निर्गुणोपासक संतों और प्रेममार्गीय सूफियों के बीच सगुण भक्ति का अधिष्ठान कर इन अष्टछापी कवियों ने हिन्दी साहित्य के इतिहास में बड़ा मूल्यवान योगदान दिया।

अष्टछापी कवियों में सूर सिरमौर हैं, किन्तु उनके बाद नन्ददास जी का स्थान सर्वोपरि है। सूरदास ने भी निर्गुण-सगुण भक्ति के विवादास्पद प्रसंग को लेकर तीन भ्रमरगीत रचे, परन्तु उनका प्रयास सर्वथा भावप्रवण ही रहा। नन्ददास ने अपने भँवरगीत में काँटे से कांटा निकालने की चेष्टा की और जिस प्रकार कबीर आदि कवि ज्ञानमार्गीय पद्धति से तार्किक शैली में सगुण भक्ति की अपेक्षा निर्गुण निराकार

की प्रतिष्ठा कर चुके थे, उसी तार्किक शैली में नन्ददास ने अपने भँवरगीत में उद्धव-गोपी संवादों का आयोजन कर प्रेम और भक्ति के सहारे ज्ञान, योग और निर्गुण की निस्सारता सिद्ध कर सगुण भक्ति का पथ प्रशस्त किया। नन्ददास प्रणीत भँवरगीत में गोपियों की विजय और उद्धव की पराजय का यही रहस्य है।

उपरोक्त वैचारिक सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि नन्ददास का भँवरगीत हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकालीन निर्गुण-सगुण मतवाद के द्वन्द्व की निष्पत्ति है, जिसमें नंददास ने उद्धव और गोपियों के प्रत्यक्ष वाद-विवाद के माध्यम से निर्गुण पर सगुण की, ज्ञान पर भक्ति की और योग पर प्रेम की विजय उद्घोषित कर अन्ततोगत्वा वल्लभाचार्य जी द्वारा प्रतिपादित शुद्धाद्वैतवाद का प्रतिपादन किया है।

नंददास की जीवनी

(क) **अन्तःसाक्ष्य** :—मध्यकालीन अनेक संतों और भक्तों के जीवनवृत्त की ही तरह नंददास की जीवनी भी विवादास्पद है। उनके सम्वन्ध में प्राप्य अन्तःसाक्ष्य अल्प और वहिःसाक्ष्य विवाद्य है। अद्यतन प्राप्त अन्तःसाक्ष्य के अनुसार नंददास वल्लभाचार्य जी के सुपुत्र गुसाईं विट्ठलनाथ जी के शिष्य थे। गुसाईं जी के प्रति अपनी श्रद्धा और भक्ति के कारण वे उनके पुण्यपवित्र विमल यश का गान करते थे और उनकी ही सेवा में रहकर महाप्रसाद पाते थे।[१] विट्ठलनाथ जी के अतिरिक्त उनके पुत्र गिरिधरजी पर भी नंददास की बड़ी आस्था थी।[२] कृष्णोपासक होने के कारण व्रजभूमि से उन्हें अगाध नेह था[३] और उसमें भी नंदगाँव उनका विशेष प्रिय स्थल था।[४] प्रारम्भ में वे राम और कृष्ण दोनों के उपासक थे।[५]

---

१. प्रात समय श्री वल्लभसुत को पुण्य पवित्र विमल जस गाऊँ।
सदा रहौं चरनन के आगे, महाप्रसाद सो जूठन पाऊँ॥
-नंददास, संपादकः उमा शंकर शुक्ल, भाग २, पृष्ठ ४३१.

२. श्री विट्ठलेश गिरिधरन भजो।
-पुष्टिमार्गीय पद संग्रह, वैष्णव ठाकुरदास सूरदास, भाग ३, पृष्ठ ७.

३. जो गिरि रुचे तो बसो श्री गोवर्धन, गाम रुचे तो बसो नंदगाम।
नगर रुचे तो बसो श्री मधुपुरी, सोभा सागर अति अभिराम॥
सरिता रुचे तो बसो श्री यमुना तट, सकल मनोरथ पूरण काम।
नन्ददास कानन रुचे तो बसो भूमि वृन्दावन धाम॥
-नंददास ग्रंथावली — संपादकः व्रजरत्नदास, पृष्ठ ३३१, पद २२.

४. नंदगाँऊ नीको लागत री।
-वही, पृष्ठ ३३०- पद २१.

५. राम कृष्ण कहिये उठि भोर।
× × ×
नंददास के ये दोउ ठाकुर, दशरथ सुत वाबा नन्द किशोर।
-वही, पृष्ठ ३२३-३२४, पद ३.

तत्वत: वैष्णवों की दृष्टि में राम और कृष्ण में कोई भेद नहीं है, क्योंकि ये दोनों ही भगवान विष्णु के त्रेता और द्वापरकालीन अवतार हैं। सूरसागर में रामभक्ति के पद और तुलसी द्वारा कृष्णगीतावली की रचना इसका प्रमाण है।

नंददासजी की कृतियों के अन्त:साक्ष्य से यह संकेत मिलता हैं कि उन्होंने अपने किसी परम रसिक मित्र के लिए रसमंजरी,[1] भाषा दशमस्कन्ध[2] और रास-पंचाध्यायी[3] की रचना की थी। श्री वियोगीहरि ने इस परम रसिक मित्र का नाम गंगाबाई[4] अनुमाना है, किन्तु वार्ता साहित्य से वियोगीहरिजी का अनुमान गलत सिद्ध होता है। कृष्णदास अधिकारी की वार्ता के अनुसार गंगाबाई का कृष्णदास से तो विशेष स्नेह था[5], पर नंददास से उसका कोई सम्बन्ध नहीं था। वार्ताओं के अनुसार नंददास की यह परम रसिक मित्र रूपमंजरी थी।[6]

(ख) **बहि:साक्ष्य**—बहि:साक्ष्य की दृष्टि से नंददास के बारे में नाभादासजी के भक्तमाल के उल्लेख महत्वपूर्ण हैं। अपने भक्तमाल में नाभाजी ने नंददास के बारे में लिखा है कि—

लीला पद रस रीति ग्रंथ रचना में नागर।
सरस उक्ति जुत जुक्ति भक्तिरस गान उजागर ॥
प्रचुर पयध लौं सुजस रामपुर ग्राम निवासी।
सकल सुकुल संवलित भक्ति पद रेनु उपासी ॥

---

१. एक मीत हमसो अस गुन्यौ। मैं नायिका भेद नहिं सुन्यौ।
—नन्ददास ग्रंथावली, संपादक: ब्रजरत्नदास, रसमंजरी, पृष्ठ १४४.

२. परम विचित्र मित्र इक रहै। कृष्ण चरित्र सुन्यौ सो चहै।
—नन्ददास ग्रंथावली, संपादक: ब्रजरत्नदास, भाषादशमस्कन्ध, पृष्ठ २१६.

३. परम रसिक इक मित्र मोहिं तिन आशा दीन्ही।
तातैं मैं यह कथा जथामति भाषा कीन्ही ॥
—नंददास ग्रंथावली, संपादक: ब्रजरत्नदास, रासपंचाध्यायी, पृष्ठ ४.

४. ब्रजमाधुरी सार—संपादक: वियोगी हरि, चतुर्थ संस्करण, पृष्ठ ५२, पादटिप्पणी.

५. और कृष्णदास को गंगाबाई सों बहुत स्नेह हुतो सो श्री गुसाईजी को न सुहावतो।
—अष्टछाप, संपादक: डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, पृष्ठ ३१.

६. एक दिनां श्रीनाथजी ग्वालियर की बेटी रूपमंजरी के संग चौपड़ खेलने पधारे।...वह बीन आछी बजावत हती।...नन्ददास जी को वाको संग हतो। गुणगान आछो करत हती। ताके लिए नन्ददासजी रूपमंजरी ग्रंथ कियो है। तामें चौपाई धरी है—
रूपमंजरी त्रिया को हीयो। सो गिरिधर निज आलय कीयो ॥
—नंददास—डॉ० रामरतन भटनागर, पृष्ठ ६-७,

चन्द्रहास अग्रज सुहृद, परम प्रेम पय में पगे ।
श्री नंददास आनंद निधि रसिक सुप्रभु हित रँगमगे ।।[१]

नाभाजी के उक्त छप्पय से यह ज्ञात होता है कि नन्ददास कृष्णलीला विषयक पदों और रसरीति ग्रंथों के प्रणयन में अत्यन्त निष्णात थे । अपनी सरस उक्ति, तर्कवाद और भक्तिरससिक्त पदावली के गान के लिए वे सुविख्यात थे अर्थात् नन्ददास केवल उक्ति-कौशल-सामर्थ्य-सम्पन्न कवि ही नहीं, बड़े तार्किक और संगीत मरमी भी थे । उनकी कीर्ति समुद्र तक (संभवत: ब्रज से द्वारका तक) फैली थी । वे रामपुर ग्राम के निवासी, सुकुलोत्पन्न अथवा शुक्ल आस्पदधारी ब्राह्मण तथा भक्तों की चरण रज के उपासक, चन्द्रहास के सुहृद अग्रज, परम प्रेमी जीव और आनन्द की निधि रसिक शिरोमणि भगवान कृष्ण के अनन्य भक्त थे ।

भक्तनामावलि के अनुसार वे एक सुकवि, रसिक और प्रेमी जीव थे ।[२]

वार्ताओं के विविध संस्करणों[३] के अनुसार नन्ददास तुलसीदास के छोटे भाई और सनाढ्य ब्राह्मण थे । वे पूरब में स्थित रामपुर ग्राम के निवासी थे । बचपन से ही उनके स्वभाव में हठ, उच्छृंखलता और रसिकता का प्राधान्य था । तुलसीदास के प्रभाव से वे प्रारम्भ में रामोपासक थे, परन्तु राम की मर्यादा और शीलवृत्ति नंददास की रसिकवृत्ति से बेमेल थी, अत: एक दिन नंददास तुलसीदास के मना करने पर भी एक संघ के साथ काशी से रणछोड़जी के दर्शनार्थ चल दिये । योगायोग से मार्ग भूल वे सिंहनद नामक एक गाँव में पहुँचे, जहाँ उनकी आसक्ति रणछोड़जी को छोड़ एक सद्य:स्नाता क्षत्राणी की रूपमाधुरी पर केन्द्रित हो गयी और नन्ददास नित्य उस क्षत्राणी के दर्शनार्थ उसके घर के चक्कर काटने लगे । अन्तत: उस क्षत्राणी के घरवालों ने ब्राह्मण क्लेश और लोकभय से संत्रस्त हो रातों रात गोकुल की राह पकड़ी । प्रात:काल जब नंददास को इस घटना का पता चला तो उन्होंने भी उस परिवार का पीछा किया ओर बीच रास्ते में उसे जा मिलाया ।

नंददास से पिण्ड छुड़ाने के लिए उस क्षत्रिय परिवार के प्रमुख ने नाविकों को लालच दिया, अत: उन्होंने नंददास को नाव पर नहीं चढ़ने दिया और वह क्षत्रिय

---

१. भक्तमाल—भक्तिसुधास्वाद तिलक—सीतारामशरण भगवानप्रसाद रूपकला, पृष्ठ ६०२.

२. भक्त नामावलि—ध्रुवदास, दोहा क्रमांक ७७,७८,७९.

३. देखिए—नंददास—डॉ० रामरतन भटनागर, पृष्ठ १०-२९.
अष्टछाप और वल्लभसम्प्रदाय—डॉ० दीनदयालु गुप्त, प्रथम भाग, पृष्ठ-१४१—१४८.
अष्टछाप—संपादक: डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, पृष्ठ ९४—१०३.

परिवार यमुना पार कर गुसाईं विट्ठलनाथजी की सेवा में पहुँचा। गुसाईंजी ने एक सेवक भेज नंददास को बुलवाया और उन्हें दीक्षा दे पुष्टिमार्ग का पथिक बना लिया। फलतः नंददास की लौकिक आसक्ति भगवद्भक्ति में परिणत हो गई। इसके बाद गुसाईंजी ने नंददास को साम्प्रदायिक ज्ञान तथा भक्ति की दृढ़ता के लिए छः मास पर्यन्त परासोली में सूरदास के साथ रहने का आदेश दिया।

गोस्वामी तुलसीदास को जब यह पता चला कि नन्ददास पुष्टिमार्ग में दीक्षित हो गये हैं तो पहले तो उन्होंने एक पत्र भेजकर नन्ददास को अपने पास बुलाया, किन्तु नंददास के न आने पर वे स्वयं ब्रज आये और उन्होंने नन्ददास को पुष्टिमार्ग से विरत करने की चेष्टा की। अन्ततः नंददास टस से मस नहीं हुए। इधर सूरदास ने नन्ददास में (सांसारिक सुखोपभोग की कामना के कारण) भक्ति की दृढ़ता का अभाव देख गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने की सलाह दी। तदनुसार नन्ददास अपने गाँव वापिस आये। उन्होंने विवाह किया तथा एक पुत्र की प्राप्ति के बाद वे पुनः गुसाईंजी की शरण में चले गये।

तुलसीदासजी द्वारा रामचरितमानस की रचना का समाचार पा नंददास ने श्रीमद्भागवत का ब्रज भाषा में पद्यानुवाद करने का निश्चय किया। इस खबर को सुन मथुरा के पंडित घबरा गये और उन्होंने गुसाईं बिट्ठलनाथजी से यह प्रार्थना की कि यदि नन्ददासजी ने सम्पूर्ण भागवत भाषा कर दी तो हमारी जीविका मारी जायगी। पंडितों की प्रार्थना सुन गुसाईंजी ने नंददास से कहा कि यह ब्राह्मण क्लेश भला नहीं है। अतएव नंददासजी ने रासपंचाध्यायी तक का अंश अपने पास रख शेष भाषानुवाद श्रीयमुनाजी में पधरा (बहा) दिया।

नंददासजी ब्रज में गोवर्धन गाँव के निकट मानसी गंगा नामक तालाब के पास रहते थे और वहीं रहकर साहित्य-रचना में संलग्न रहा करते थे। एक बार अकबर बादशाह का डेरा मानसी गंगा पर लगा। सुप्रसिद्ध गायक तानसेन और राजा बीरबल उसके साथ थे। एक दिन तानसेन ने अकबर को नन्ददास का एक पद[1] सुनाया, जिसे सुनकर अकबर ने नन्ददास से मिलने की इच्छा प्रकट की। बीरबल के साथ अकबर नन्ददास के पास आया और उसने नंददास से उनके पद की अन्तिम पंक्ति—"नन्ददास गावे तहाँ निपट निकट" का रहस्य पूछा। नन्ददास म्लेच्छ को स्वसंप्रदाय का गुप्त रहस्य नहीं बतलाना चाहते थे, अतः उन्होंने अकबर से कहा कि वे उस पद का अर्थ अपनी एक सेविका से, जो परम वैष्णवी है, पूछ लें। अकबर ने अपने डेरे पर जाकर जब उस सेविका से उक्त पद का अर्थ पूछा तो उसने अपनी देह छोड़ दी और इधर नन्ददास की भी इहलौकिक लीला समाप्त हो गई।[2]

---

१. नन्ददास ग्रंथावली—सम्पादक : ब्रजरत्नदास, पृष्ठ ३६३, पद ११९.
२. भँवरगीत विमर्श—डॉ० भगवानदास तिवारी, पृष्ठ ९—२१.

वार्ता-साहित्य अपने उपलब्ध रूप में पूर्णतः प्रामाणिक इतिहास नहीं, पुष्टिमार्गीय-पुराण है, जिसमें तथ्य, कल्पना और साम्प्रदायिक महत्ता के आग्रहों का सन्निवेश पाया जाता है । इतना सब कुछ होने पर भी यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि वार्ता-साहित्य बहिःसाक्ष्य के नाते नंददास के जीवनवृत्त पर पूर्ववर्ती उल्लेखों की अपेक्षा अधिक व्यापकता से प्रकाश डालने का एक महत्वपूर्ण साधन है ।

वार्ताओं के बाद तुलसीदास और नंददास के वंशानुगत एवम् पारिवारिक सम्बन्धों पर प्रकाश डालने वाली सोरों-सामग्री प्रकाश में आई । भारतीय हिन्दी परिषद् के दिल्ली अधिवेशन के अवसर पर दिनांक ३१ मई १९६० को यह सोरों-सामग्री उक्त विश्वविद्यालय के कलासंकाय में आयोजित प्रदर्शनी में हमारे देखने में आई । इसके अनुसार बराह क्षेत्र (सूकरखेत-सोरों) के पास रामपुर नामक ग्राम में सनाढ्य कुलोत्पन्न पंडित नारायण शुक्ल रहते थे । उनके चार पुत्र हुए—श्रीधर, शेषधर, सनक और सनातन । इनमें से सनातन के पुत्र परमानन्द और परमानन्द के पुत्र सच्चिदानन्द हुए । सच्चिदानन्द के पुत्रों के नाम क्रमशः आत्माराम और जीवाराम थे । आत्माराम की पत्नी का नाम हुलसी और पुत्र का नाम तुलसीदास था । जीवाराम के दो पुत्र थे, जिनमें से बड़े का नाम नन्ददास और छोटे का नाम चन्द्रहास था । सोरों-सामग्री का यह विवरण नाभादास के 'चन्द्रहास अग्रज सुहृद' का समर्थक है । तुलसीदास के पत्नी का नाम रत्नावली और नन्ददास की पत्नी का नाम कमला था । संवत् १६५७ में गंगा के महापुर में रत्नावली की जन्मभूमि बदरी बाढ़ में बह गई । नन्ददास के पुत्र का नाम कृष्णदास और चन्द्हास के पुत्र का नाम ब्रजचन्द था । पुष्टि सम्प्रदाय में दीक्षित होने के बाद नन्ददास ने अपनी जन्मभूमि रामपुर में श्यामसर नामक एक तालाब खुदवाया और उस गाँव का नाम बदलकर श्यामपुर कर दिया । तुलसीदास ने रामचरित मानस रचा और नन्ददास ने रासपंचाध्यायी ।

अपने उपलब्ध रूप में सोरों-सामग्री भी पूर्णतः प्रामाणिक और सर्वमान्य नहीं है, किन्तु उससे नन्ददास और तुलसीदास विषयक पूर्वविवेचित अन्तःसाक्ष्य और बहिःसाक्ष्य का समर्थन अवश्य होता है । भविष्य में यदि तुलसीदास और नन्ददास के बारे में खोज में कुछ नवीन तथ्य हाथ लगे तो इस सोरों-सामग्री की प्रामाणिकता अथवा अप्रामाणिकता पुरोगामी तथ्यानुसंधान में सहायक होगी । इसी दृष्टि से इस विवाद्य सामग्री का यहाँ संकेत कर दिया गया है ।

नंददास के जीवनवृत्त की सामान्य रूपरेखा:—

प्राप्त अन्तःसाक्ष्य और बहिःसाक्ष्य के अनुसार नन्ददास तुलसीदास के चचेरे भाई थे । नन्ददास तुलसीदास से आयु में छोटे थे और उनका जन्म संवत् १५९० के

लगभग उत्तर प्रदेश के सोरों या सूकर खेत नामक स्थान के निकट रामपुर में हुआ था। बचपन में तुलसीदास और नन्ददास दोनों सोरों में गुरु नृसिंह के पास विद्याध्ययन करते थे। अपने गुरु के साथ ही ये दोनों काशी आये और रामानन्द सम्प्रदाय में दीक्षित हो गये। नन्ददास बचपन से ही रसिक, हठी और उच्छृंखल स्वभाव के थे। उन्हें नाच-गाने का शौक था, अतः उनकी प्रवृत्ति राम की अपेक्षा कृष्ण की ओर अधिक झुकी हुई थी। तुलसीदास के मना करने पर भी उनका संघ के साथ रणछोड़-जी के दर्शनार्थ जाना इसका प्रमाण है। खत्राणी-प्रकरण उनकी रसिकता का उदाहरण है। जो हो, खत्राणी-प्रकरण के बाद वे गुसाईं विट्ठलनाथजी के शिष्य हो गये और उन्होंने अपनी काव्य-साधना तथा संप्रदाय-निष्ठा के बल पर सूर के बाद अष्टछाप के कवियों में अपना अन्यतम स्थान बनाया।

गुसाईंजी के आदेश से नन्ददास छः महीनों तक सूरदास के संपर्क में रहे। इस अवसर पर नन्ददास के मन में भक्ति की दृढ़ता का अभाव देख सूर ने उन्हें ग्रहस्थाश्रम में प्रवेश करने की सलाह दी। नन्ददास अपने गाँव गये। उन्होंने वहाँ एक तालाब खुदवाया और उस गाँव का नाम श्यामपुर कर दिया। कमला से विवाह कर कृष्णदास के जन्म के बाद वे पत्नी, पुत्र और घरबार सब चंद्रहासजी के सहारे छोड़ पुनः गुसाईंजी की शरण में आ गये, तथा गोवर्धन गाँव के पास मानसी गंगा पर रहकर साहित्य-साधना करने लगे।

गुसाईंजी की सेविका रूपमंजरी से नंददास की बड़ी घनिष्टता थी और वे उसे अपना परम रसिक मित्र मानते थे। रूपमंजरी के लिए ही नंददास ने रसमंजरी, रासपंचाध्यायी तथा श्रीमद्भागवत का भाषानुवाद शुरू किया था। 'मंजरी' से नंददास का प्रेम इस बात में भी सिद्ध होता है कि नंददास के रचे हुए ग्रंथों में से पाँच ग्रंथो के नाम में मंजरी शब्द जुड़ा है। नंददास कीं सांप्रदायिक निष्ठा बहुत प्रबल थी। वे पुष्टिमार्ग के कट्टर अनुयायी थे, इसीलिये संवत् १६२४ और १६२६ के बीच नंददास तुलसीदास के व्रज आने पर भी स्वसंप्रदाय से विलग नहीं हुए।

नंददास के जीवनकाल में ही उनके पद संगीतकारों के द्वारा समादृत हो चुके थे। तानसेन द्वारा उनके पद का गायन सुन अकबर का नंददास से मिलने आना इसका प्रमाण है। संभवतः संवत् १६४० के लगभग अकबर, बीरबल और नंददास की भेंट हुई और इसी वर्ष नंददासजी ने नित्यलीला में प्रवेश किया होगा।[1]

---

१. भँवरगीत विमर्श—डॉ० भगवानदास तिवारी, पृष्ठ २४-५६.

रचनाएँ:—

हिन्दी साहित्य के इतिहास-ग्रंथों[1], खोज रिपोर्टों तथा देश के विविध संग्रहालयों में नन्ददासकृत ग्रंथों की संख्या ३१ बतलाई गई है—

१. रासपंचाध्यायी, २. रूपमंजरी, ३. रसमंजरी, ४. अनेकार्थ मंजरी, ५. मानमंजरी (नामामाला), ६. विरहमंजरी, ७. दसमस्कन्ध भागवत, ८. स्याम-सगाई, ९. सुदामा चरित, १०. गोवर्धनलीला, ११. सिद्धान्त पंचाध्यायी, १२. रुक्मिणी मंगल, १३. भँवरगीत, १४. दानलीला, १५. जोगलीला, १६. मानलीला, १७. फूलमंजरी, १८. राजनीति हितोपदेश, १९.नासकेत पुराण भाषा, २०. रानी मंगौ, २१. रासलीला, २२. कृष्ण मंगल, २३. प्रबोधचन्द्रोदय नाटक, २४. रास मंजरी, २५. ज्ञान मंजरी, २६. विज्ञानार्थप्रकाशिका, २७. बाँसुरीलीला, २८. अर्थचन्द्रोदय, २९. अध्यात्म पंचाध्यायी, ३०. पनिहारिन लीला, ३१. पद या बानी ।

हस्तलेखों की खोज और उनकी परीक्षा के उपरांत हमें यह ज्ञात होता है कि इनमें से केवल १३ रचनाएँ नंददास जी की प्रामाणिक कृतियाँ हैं। अन्य रचनाएँ या तो अन्य कवियों की रचनाएँ हैं अथवा अप्राप्य है।[2]

प्रामाणिक रचनाओं का वर्गीकरण—

नाभाजी के छप्पय के आधार पर नंददास जी की रचनाएँ चार वर्गों में बाँटी जा सकती हैं —

---

१. इस्त्वार द ता लितरेत्यूर ऐन्दुई ए ऐन्दुस्तानी—गार्सां द तासी, भाग २, पृष्ठ ४४५—४४७.
शिवसिंह सरोज—शिवसिंह सेंगर, पृष्ठ ५०२.
मिश्रबन्धु विनोद—मिश्रबन्धु, चतुर्थ संस्करण, पृष्ठ २२७-२२८.
हिन्दी साहित्य का इतिहास—रामचन्द्र शुक्ल, छठा संस्करण, पृष्ठ १७५.
हिन्दी साहित्य—डॉ० श्यामसुन्दरदास, पृष्ठ २२५.
हिन्दी साहित्य का उद्‌भव और विकास—रामबहोरी शुक्ल और डॉ० भगीरथ मिश्र, पृष्ठ १८७-१९१.
हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास—डॉ० रामकुमार वर्मा, पृष्ठ ५४८-५५१.
हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास-आचार्य चतुरसेन शास्त्री, पृष्ठ १९२.
हिन्दी साहित्य (द्वितीय खंड)—सम्पादक : डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, ब्रजेश्वर वर्मा पृष्ठ ३६०.

२. भँवरगीत विमर्श - डॉ० भगवानदास तिवारी, पृष्ठ ६१–८१.

(क) **कृष्ण लीला विषयक रचनाएँ**—१. रासपंचाध्यायी, २. भँवरगीत, ३. स्याम सगाई, ४. गोवर्धन लीला, ५. भागवत दसमस्कन्ध, ६. रुक्मिणी मंगल

(ख) **भक्ति-रस पोषक रचनाएँ**—७. रूप मंजरी, ८. विरहमंजरी, ९. सुदामा चरित

(ग) **कवि के आचार्यत्व द्योतक अथवा रसरीतिपरक ग्रंथ**—१०. मान मंजरी (नाममाला) ११. अनेकार्थ मंजरी, १२. रस मंजरी, १३. सिद्धान्त पंचाध्यायी।

-(घ) **पदावली**—नंददास जी ने राम, कृष्ण, हनुमान, वल्लभाचार्य, गोस्वामी विट्ठलनाथ, गिरिधरजी, गंगा यमुना की वंदना, ब्रज महिमा, कृष्ण जन्म, बाललीला, दानलीला, मानलीला, रासलीला, वर्षा, फाग, दोलोत्सव, नित्यकीर्तन तथा वर्षोत्सवकीर्तन के पद रचे थे।

डॉ० दीनदयालु जी गुप्त की सूचना के अनुसार नंददास के सात सौ पद मथुरा के पं० जवाहरलालजी चतुर्वेदी के पास संग्रहीत हैं।[1]

व्यक्तित्व—

नंददास के जीवन विषयक विविध प्रसंगों और उनकी कृतियों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि नंददास संस्कृत भाषा के ज्ञाता, रसरीति के आचार्य, सौन्दर्य-प्रेमी, भाषाधिकारी और तर्किक, पंडित कवि थे। उनकी भावुकता भी बड़े उँचे दर्जे की थी, जिसका परिचय रासपंचाध्यायी में पाया जाता है। जीवन के प्रारंभिक वर्षों में वे बड़े हठो, साहसी और ध्येयवादी थे। उनकी रुचि लौकिक सौन्दर्य, प्रेम और संगीत में थी, किन्तु खत्राणि—प्रकरण के बाद उनकी सौन्दर्य और प्रेम-भावना का जो उदात्तीकरण हुआ, उसने उन्हें अष्टछाप के कवियों में सूरदास के बाद दूसरे क्रमांक[2] पर ला बैठाया।

अपनी अध्ययनशील प्रवृत्ति, दार्शनिक अभिरुचि और संगीतात्मकता के कारण पुष्टिसंप्रदाय के दार्शनिक सिद्धान्तों, भक्ति और काव्य में उनकी अच्छी पैठ थी। गेय पद और पद्यवन्ध प्रबन्ध लिखने में वे समान रूप से सिद्धहस्त थे। मार्मिक प्रसंगों का चयन कर कथात्मक काव्य लिखने में उन्हें अच्छी सफलता मिली थी। वे केवल भक्त कवि ही नहीं, रस-रीति के जानकार और कोशकार भी थे। अपने विपुल ज्ञान के साथ-साथ साम्प्रदायिक निष्ठा, भावुकता, कल्पनाशीलता और ब्रजभाषा पर अतुल अधिकार के कारण उनके काव्य में भाव, विचार और बिम्बों का ऐसा

---

१. अष्टछाप और वल्लभ संप्रदाय—डॉ० दीनदयालु गुप्त, प्रथम भाग, पृष्ठ ३७०.

२. अष्टछाप में सूरदास जी के पीछे इन्हीं का नाम लेना पड़ता है।
—हिन्दी साहित्य का इतिहास – रामचन्द्र शुक्ल, छठा संस्करण, पृष्ठ १७५

आह्‌दकारी गुंफन हुआ कि लोक में नंददास के बारे में यह उक्ति ही चल पड़ी है कि—और सब गढ़िया, नंददास जड़िया ।

भँवरगीत में नंददास का यही जड़िया रूप तर्कबद्ध संवादों और गोपियों के भावोन्माद में उभर आया है ।

शुद्धाद्वैत दर्शन [1]

वल्लभाचार्यजी द्वारा प्रतिपादित दार्शनिक मत शुद्धाद्वैतवाद के नाम से अभिहित होता है। इसके आधारभूत ग्रंथ चार हैं – १. वेद (ब्राह्मण सहित), २. गीता, ३. वेदान्त-सूत्र और ४. श्री मद्‌भागवत । इन्हें शुद्धाद्वैतवाद के मूल-स्रोत या प्रस्थान चतुष्टय भी कहा जाता है । प्रस्थान चतुष्टय के अनुसार ब्रह्म में सत्, चित और आनंद तीनों गुण विद्यमान रहते हैं किन्तु जीव या चेतन में सत् और चित् का आविर्भाव और आनन्द का तिरोभाव होता है। जड़ में केवल सत् का आविर्भाव तथा चित् और आनंद का तिरोभाव होता है । सत, चित् आनंदयुक्त ब्रह्म समस्त विरोधी धर्मों का आगार है। उसमें उक्त तीन गुणों के अतिरिक्त ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य ये छ: अन्य गुण भी पाये जाते हैं । इस ब्रह्म के तीन रूप हैं—पूर्ण पुरुषोत्तम, अक्षर ब्रह्म और अन्तर्यामी । भगवान क्रृष्ण पूर्ण पुरुषोत्तम हैं। अक्षर ब्रह्म चौबीस अवतारों में प्रगट होता है और अन्तर्यामी ब्रह्म योगियों के हृदय में निवास करता है ।

शुद्धद्वैतवाद के अनुसार जीव-जगत और ब्रह्म के सम्बन्ध अंशी भाव पर आधृत है। अंश होने के कारण जीव अल्पज्ञ और ब्रह्म सर्वज्ञ है। अंश होने के कारण ही जीव में आनंद गुण की कमी है, इसी तरह से ब्रह्म के अन्य छ: गुण भी जीव में नहीं होते । केवल भगवदनुग्रह (पुष्टि) से ही जीव आनंद पा सकता है। पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान क्रृष्ण और उनके अनुग्रह से आनंद की प्राप्ति के हेतु जीव के लिए भक्ति ही एकमात्र सुलभ साधन है अत: वल्लभाचार्य द्वारा निर्देशित पुष्टिमार्ग पर चलते हुए भगवदनुग्रह पाना ही पुष्टिसंप्रदाय के अनुयायियों का चरम लक्ष्य है ।

जीव दो प्रकार के होते हैं – १. दैवी जीव, जिन पर प्रभु का अनुग्रह होता है और २. आसुरी जीव जो अविद्या में फँसे रहते हैं । दैवी जीव भी दो प्रकार के होते हैं– (क) पुष्टि मार्गीय और (ख) मर्यादा मार्गीय, इनमें भी पुष्टिमार्गीय जीवों की तीन श्रेणियाँ हैं, यथा – शुद्ध पुष्टि या पुष्टिपुष्ट जीव, मर्यादा पुष्ट जीव और प्रवाह-पुष्टि जीव । पुष्टिपुष्ट जीव भगवदनुग्रह से भगवान की नित्य लीला में प्रवेश पाते हैं । मर्यादा पुष्ट जीव मर्यादा मार्ग पर चलते हुए भगवदनुग्रह प्राप्त करते हैं और प्रवाहपुष्ट जीव

---

१. देखिये – शुद्धाद्वत मार्तण्ड और उसकी आलोक रश्मि (लेख) डॉ० भगवानदास तिवारी, राष्ट्रवाणी, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पूना, सितम्बर १९६८, पृष्ठ ८५-८८.

निरंतर प्रवाह में पड़े रहकर भगवदनुग्रह पाने का यत्न करते रहते हैं। विवेक की दृष्टि से अविद्या माया के वशीभूत जीव दो प्रकार के होते हैं – १. अज्ञ जीव, यथा रावण, कंश, अघासुर आदि। ये जीव अविद्या माया के वश में रहने के कारण ब्रह्म से शत्रु-भाव रखते थे, अतः भगवदनुग्रह से इनकी मृत्यु हुई और ये मुक्त हो गये। २. दुर्ज्ञ जीव, जो अविद्या माया में इतने अधिक फँसे रहते हैं कि ब्रह्म को जानने के लिए उन्हें कभी सुयोग ही नहीं मिलता, अतः इनके लिए मुक्ति का प्रश्न ही नहीं उठता।

शंकराचार्य ने 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' कहकर ब्रह्म को एक मात्र पारमार्थिक सत्य माना था तथा जगत को माया का विकार कहकर असत्य घोषित कर दिया था। वल्लभाचार्य ने जगत को माया के संसर्ग से रहित ब्रह्म की सृष्टि कहा और माया–सम्वन्ध-रहित ब्रह्म को प्रतिपादित करते हुए शुद्धाद्वैतवाद की प्रतिष्ठा की। आचार्य वल्लभ के अनुसार माया न तो ब्रह्म की जन्य है, न जननी, न वह ब्रह्म की तरह स्वतः सिद्ध और अनादि है, न अनंत ही। उसे कदाचित्क (कभी उत्पन्न होने वाली और कभी नष्ट होने वाली) भी नहीं माना जा सकता, क्योंकि इन सभी रूपों में माया या तो ब्रह्म की अद्वैतता खंडित कर देती है, अथवा ब्रह्म को विकार घोषित करती है। वल्लभाचार्य ने माया के विकार को हटाकर शंकर के अद्वैतवाद के पूर्व 'शुद्ध' विशेषण जोड़ 'शुद्धाद्वैतवाद' मत प्रचारित किया। शुद्धाद्वैतवाद के अनुसार जीव और जगत दोनों ही ब्रह्म के अंश हैं और माया के दो रूप हैं– १. विद्या माया और २. अविद्या माया। विद्या माया से प्रेरित जीव भगवदोन्मुख होता है और अविद्यामाया से बद्ध जीव संसार चक्र में भटकता रहता है। वल्लभाचार्य जी के अनुसार पुष्टिमार्ग का पथिक विद्या माया के सहयोग से पूर्णपुरुषोत्तम भगवान कृष्ण की दिव्य लीलाओं का आनन्द पा सकता है।

जगत ब्रह्म के सत अंश से युक्त होने के कारण उसका अविकृत परिणाम है। जगत और संसार दो भिन्न सत्ताएँ हैं। जगत की सृष्टि ब्रह्म करता है, अतः जगत का लय ब्रह्म की इच्छा पर निर्भर है, परन्तु अविद्या माया के प्रभाव से प्रत्येक जीव अपना-अपना संसार निर्माण करता है, जिससे उसे मोह ममता होती है। भगवदनुग्रह से जीव इस संसार से तो मुक्त हो जाता है, पर जगत से उसका सम्बन्ध नहीं छूटता।

पुष्टिमार्गीय भक्ति—

पुष्टिमार्ग में भक्तों का आदर्श ब्रज की गोपियाँ हैं, अतः गोपियों की ही तरह भगवान को सर्वात्मभावेन सर्वस्व समर्पण करना, उनकी ही भाँति भगवान के प्रति परमासक्ति रखना तथा उनकी ही भाँति भगवदनुग्रह पाना पुष्टि मार्गीय जीवों का धर्म है। नंददास ने अपने भँवरगीत में उद्धव के ज्ञानजन्य विकार को हटाकर उन्हें परम प्रेम का पाठ सिखलाकर इसी पुष्टिमार्गीय भक्ति का महत्व अंकित किया।

पुष्टिमार्ग में शरीर से की जानेवाली सेवा तनुजा, द्रव्यार्पण द्वारा की जाने

वाली सेवा वित्तजा और श्रवण, कीर्तन, गुणकथन आदि के द्वारा की जाने वाली सेवा मानसी सेवा कही जाती है। इनमें मानसी सेवा सर्वोत्तम है। भगवान की नित्य सेवा के अन्तर्गत वल्लभ सम्प्रदाय में अष्टयाम सेवा प्रचलित है– १. मंगला, २. शृंगार, ३. ग्वाल, ४. राजभोग, ५. उत्थापन, ६. भोग, ७. सन्ध्या-आरती और ८. शयन। इसके अतिरिक्त वार्षोत्सवों का भी विधान किया जाता है। भक्ति का यह सब विधान भगवदनुग्रह की प्राप्ति के लिए होता है।

नंददास के भँवरगीत में उद्धव-गोपी-विवाद के बीच गोपियों के तर्क शुद्धाद्वैतवाद के दार्शनिक पक्ष के प्रतिपादक तथा गोपियों के आत्म निवेदन और कृष्ण-गुण कथन में भगवान के प्रति उनका अनन्य प्रेम, उनकी रूपासक्ति, गुणमहात्म्यासक्ति, लीला-गान आदि पुष्टिमार्गीय भक्तों के कार्य व्यापारों के द्योतक हैं।

भ्रमरगीत परंपरा—

भ्रमरगीत-परंपरा[1] का मूल स्रोत श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध के पूर्वार्द्ध में ४६ वें और ४७ वें अध्याय में है, जहाँ निर्गुण-सगुण ब्रह्मवाद का झगड़ा इतना तगड़ा नहीं है, जितना वह सूर और नंददास के भ्रमरगीतों में दिखाई देता है। भागवतकार की गोपियाँ तो सगुण ब्रह्म के साथ-साथ उसकी ज्ञानपरक उपासना के महत्व को मानअन्ततः भगवत् ध्यान में, परम प्रेम में लीन हो जाती हैं, किन्तु भक्ति काल के भ्रमरगीतों में निर्गुण-सगुण ब्रह्म विवाद तात्कालिक धर्म-संप्रदायों के संघर्ष का प्रतीक है।

अष्टछापी कवियों में सबसे पहले सूरदास ने ३ भ्रमरगीत लिखे। उसके बाद नंददास, तुलसी दास, हरिराय, रहीम, रसखान, सेनापति आदि ने इस प्रसंग पर अपनी-अपनी प्रतिभा आजमाई।

रीतिकाल में अक्षर अनन्य, आलम, नागरीदास, चाचा हित वृन्दावनदास, ब्रजवासीदास, महाकवि देव, घनानंद, ठाकुर, भिखारी दास, पद्माकर आदि ने भ्रमर-गीत प्रसंग पर खूब लेखनी चलाई तथा आधुनिक काल में रघुनाथदास सनेही, प्रागन कवि, भारतेन्दु, रसीले, सत्यनारायण कविरत्न, जगन्नाथदास रत्नाकर आदि ने भ्रमर–गीत विषयक रचनाएँ लिखीं। सत्यनारायण कविरत्न ने भ्रमरगीत-परंपरा की धार्मिक भावना को राष्ट्रीय भावना से स्थानापन्न कर भ्रमर के माध्यम से भारतमाता का संदेश कृष्ण तक भिजवाया है। आधुनिक काल के अन्यान्य कवियों में मुकुन्दीलाल माहौर, चन्द्रभानु रज, प्रद्युम्न टुगा, डॉ० रमाशंकर शुक्ल 'रसाल', पं० द्वारिका प्रसाद मिश्र और

---

१. हिन्दी साहित्य में भ्रमरगीत परंपरा - डॉ० सरला शुक्ल।
हिन्दी में भ्रमरगीत काव्य और उसकी परंपरा - डॉ० स्नेहलता श्रीवास्तव
कृष्ण काव्य में भ्रमरगीत - डॉ० श्यामसुंदरलाल श्रीवास्तव

डॉ० श्यामसुंदर लाल दीक्षित ने भी अपनी-अपनी कृतियों द्वारा भ्रमरगीत परंपरा का पोषण किया है।

प्रस्तुत ग्रंथ के लिए शोधायात्राएँ करते समय हमें कवि परबत, निज कवि[१], कवि मंजुल[२], महाराज रघुराजसिंह, चतुर्भुजदास चतुर्वेदी आदि के भँवरगीत भी प्राप्त हुए, जिनकी संक्षिप्त चर्चा भँवरगीत विमर्श[३] में की गई है। इस तरह से भँवरगीतों की परंपरा भक्तिकाल से लेकर आधुनिक काल तक निरंतर वृद्धिगत होती रही और उसमें विभिन्न कवियों ने मूल प्रसंग पर अपनी-अपनी प्रतिभा का चमत्कार दिखलाया है।

भ्रमरगीत प्रसंग पर लोक काव्य के अन्तर्गत बारहमासा, मल्हार, वटगमनी, झूमर, भजन और गजलें तक प्रचलित हैं, जिससे यह सिद्ध होता है कि भ्रमरगीत परंपरा शुद्ध साहित्यिक धरातल से लेकर लोककाव्य तक व्याप्त है।

हिन्दीं की भ्रमरगीत परंपरा की ही तरह गुजराती में भी भ्रमरगीतों की एक सुदीर्घ परंपरा है, जिस पर हिंदी और गुजराती में तुलनात्मक दृष्टि से अनुसंधान किया जा सकता है[४]।

सूर और नन्ददास के भँवरगीतों की तुलना—

सूरदास ने तीन भ्रमरगीत लिखे हैं। इनमें से प्रथम दो भ्रमरगीत पद मात्र हैं। प्रथम भ्रमरगीत दो पदों में विभक्त है और दूसरा भ्रमरगीत एक स्वतन्त्र पद है[५]। सूर के दूसरे भ्रमरगीत की प्रारम्भिक पंक्तियों और नंददास के भँवरगीत के प्रारम्भिक पंक्तियों में साम्य दृष्टव्य है—

ऊधौ को उपदेश सुनौ किन कान दै।
हरि निर्गुन संदेश पठायो आन दै॥ - सूरदास,
ऊधौ को उपदेश सुनो ब्रजनागरी।
रूप सील लावन्य सबै गुनआगरी॥ - नंददास.

बहुत संभव है कि सूर के इस दूसरे भँवरगीत से ही प्रेरित हो नंददास ने अपना भँवरगीत रच डाला हो। सूरदास का तीसरा भँवरगीत कोई स्वतन्त्र रचना नहीं, उनके द्वारा भ्रमरगीत प्रसंग पर लिखे गये लगभग ४०० पदों का संग्रह है, जिसमें सूर ने

१. देखिए-निज कवि और उनका भ्रमरगीत (लेख) डॉ० भगवानदास तिवारी, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, बर्ष ६६, अंक ४, पृष्ठ १२१ - १३७.
२. देखिये-कविमंजुल और उनका काव्य (लेख) डॉ० भगवानदास तिवारी, ब्रजभारती, मथुरा, वर्ष २४, अंक २, पृष्ठ २५ - ३१.
३. भँवरगीत विमर्श - डॉ० भगवानदास तिवारी, पृष्ठ११३ - १२०.
४. वही, वही, पृष्ठ ११२ -११३
५. सूरसागर - संपादक : आचार्य नंददुलारे बाजपेयी, नागरी प्रचारिणी सभा छंद ४७१२, ४७१३ और छंद संख्या ४७१४.
६. देखिये - भ्रमरगीत सार - संपादक : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल.

श्री मद्भागवत के मूल प्रसंग को अपनी मौलिक उद्भावना, कल्पना, भावुकता और काव्य प्रतिभा से कुछ इस तरह से सजाया है कि यह भंवरगीत सूरसागर का नवनीत कहा जा सकता है।

स्फुट पदों का संग्रह होने के कारण सूर के भँवरगीत में कथात्मकता का गठन शिथिल और पुनरुक्तियों का आधिक्य है, पर इस दृष्टि से नन्ददास के भँवरगीत में कथात्मक सूत्र सुगठित, तर्कबद्ध तथा पुनरुक्ति दोषों से मुक्त है। सूर के भँवरगीत में नन्द-यशोदा, गोप-ग्वाल, राधा आदि सभी की मनोदशाएँ अंकित हैं, पर नन्ददास के भँवरगीत में इन पात्रों का अभाव है। सूर के भँवरगीत में गीतिसौन्दर्य और नन्ददास के भँवरगीत में तार्किकता तथा दर्शनिकता का माधुर्य है। सूर हृदय को संचालित करते हैं तो नन्ददास हृदय और बुद्धि दोनों को उद्बुद्ध करते हैं। परिणाम यह हुआ है कि सूर के भँवरगीत में बेचारे उद्धव चुप और गोपियाँ खूब मुखर हैं। इसके विपरीत नन्ददास के भँवरगीत में उद्धव और गोपियाँ समान मानसिक धरातल पर अपने-अपने पक्ष का समर्थन और परपक्ष का खंडन करते हुए दिखाये गये हैं।

सूर ने अपने भँवरगीत में उद्धव के ब्रजगमन के कारणों से लेकर उनके मथुरागमन तक के सभी प्रसंगों को विस्तार से लिखा है, अत: उनके काव्य में वर्णन, विवरण और भाव-व्यंजना विस्तृत रूप से उपलब्ध है, किन्तु नन्ददास के समक्ष संपूर्ण प्रकरण की संक्षिप्त, सुनियोजित, तीव्र और प्रभावशालिनी व्यंजना अभीष्ट थी, अत: उन्होंने संक्षिप्तता में यथासाध्य भागवत तथा बुद्धिगत सरसता का संयोजन किया है। सूर प्रेम को लेकर चले हैं तो नन्ददास तर्क और प्रेम दोनों को, फलत: सूर के भँवरगीत में गोपियों के प्रेम-प्रवाह के सामने उद्धव की बोलती बन्द हो गई है, पर नन्ददास के भँवरगीत में उद्धव के ज्ञान-गौरव के सामने गोपियों की तार्किकता तथा उनकी प्रेम-व्यंजना में संतुलन है। सूर ने उद्धव को ज्ञानी कहकर भी ज्ञान के प्रदर्शन का अवसर नहीं दिया, जबकि नन्ददास ने उनकी ज्ञानगरिमा के लिए काफी अभिव्यक्ति दी है।

निर्गुण पर सगुण की, ज्ञान पर प्रेम की और योग पर भक्ति की विजय दिखलाकर शुद्धाद्वैतवाद की महिमा का बखान करना सूर और नन्ददास दोनों को अभिष्ट था। दोनों ने कृष्ण को ब्रह्म और गोपियों को पुष्टि-पुष्ट जीव माना है। कुब्जा के प्रति दोनों ने गोपियों का सपत्नीभाव प्रकट किया है और दोनों की गोपियों ने उपालम्भ के समय कृष्ण को कपटी, छली तथा नारीद्रोही कहा है।

अपने-अपने भँवरगीतों में सूर भावविदग्धता में और नन्ददास सौहार्द्रपूर्ण दार्शनिकता के प्रतिपादन में सफल हैं। सूर का भँवरगीत शुद्ध गीतिकाव्य है और नन्ददास का भँवरगीत पद्यबद्ध प्रबन्ध। वह प्रस्तावना की कमी की छोड़ एक सफल गीति नाट्य है। विप्रलम्भ शृंगार की सूक्ष्म और विशद व्यंजना में जहाँ सूर की सफलता अद्वितीय है वहाँ पुष्टिमार्गीय भक्ति-साधना और विशिष्टाद्वैत के प्रतिपादन

में नन्ददास की सफलता श्लाध्य है। संक्षेप में कथा-प्रसंग, पात्र, परिस्थिति, चरित्र-चित्रण, भाव, कल्पना और मानसिक बिम्बों की दृष्टि से सूर का भँवरगीत उद्यान है तो नन्ददास का भँवरगीत पुष्पगुच्छ।[१]

साहित्यिक सौष्ठव:—

नन्ददास का भँवरगीत अपने वर्तमान रूप में पौराणिक कथाश्रित पद्यबद्ध प्रवन्ध है, जो पुष्टिमार्गीय कीर्तन में भजन तथा ब्रज के लोकमंच पर लीला नाटक के रूप में अभिनीत होता है। लोकनाट्य के रूप में इसे रंगमंच पर प्रस्तुत करने के लिए कम से कम ६ पात्र चाहिए, जिनमें से एक कृष्ण, एक उद्धव और चार सखियाँ पर्याप्त हैं। यदि सखियों की संख्या आठ रहे तो और भी उत्तम है। रासमंडली वाले सबसे पहले रासनृत्य प्रस्तुत करते हैं और फिर उसके बाद उत्तरार्द्ध में भगवान की कोई लीला का अभिनय होता है। रास में उद्धव लीला के प्रारम्भ के पहले समाजी सूर के 'ऊधो मोंहि ब्रज बिसरत नाहीं।' आदि पदों का अभिनय कृष्ण से करवाकर उद्धव के ब्रजागमन की प्रस्तावना पूरी कर देते हैं और जब उद्धव ब्रज में आकर गोपियों से मिलते हैं तबसे नन्ददास का भँवरगीत शुरू हो जाता है। संवादों की तार्किकता तथा खण्डन-मण्डन-पद्धति के कारण नन्ददास का भँवरगीत रंगमंच की अच्छी पकड़ रखता है।[२]

भँवरगीत के पूर्वार्द्ध में उद्धव और गोपियाँ क्रमशः निर्गुण-सगुण ब्रह्मवाद पर तर्कप्रमाण शैली में खण्डन-मंडन करते हैं, जिसमें उद्धव निर्गुण ब्रह्म की प्राप्ति के लिए ज्ञान और योगसाधना की अनिवार्यता पर जोर देते हैं तथा उद्धव के तर्कों जो जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए गोपियाँ प्रेम, भक्ति और सगुणोपासना का पक्ष लेती हैं। उद्धव को पराजित करने के लिए वे केवल तर्कों का ही सहारा नहीं लेतीं, भावना का भी जबरदस्त प्रहार करती हैं, जिसे देख उद्धव गोपियों के प्रेम-प्रवाह में तटवर्ती तिनके से बहने लगते हैं। उनका ज्ञानजन्य अहं और उसका दर्प समाप्त हो जाता है और वे ब्रज से परमप्रेमी बनकर कृष्ण के पास मथुरा लौटते हैं।

हृदय और बुद्धि दोनों पर समान अधिकार होने के कारण नन्ददास ने भँवरगीत में विचार, तर्क और दर्शन के साथ विरहपूर्ण उपालम्भों की जो आयोजना की है उसी में भँवरगीत का भव्य सौन्दर्य दृग्गोचर होता है।

भँवरगीत में शुद्धाद्वैतवाद:—

अपने भँवरगीत में योगियो, ज्ञानमार्गियों तथा अद्वैतवादियों को उद्धव के माध्यम

---

१. भँवरगीत विमर्श—डॉ० भगवानदास तिवारी, पृष्ठ १२२-१३०.

२. वही, पृष्ठ १५६-१६२.

से करारी हार दे नन्ददास ने प्रेमाभक्ति और सगुणोपासना की विजय घोषित की है। उन्होंने शुद्धाद्वैतवादी मान्यताओं के अनुसार कृष्ण को प्रेमामृत का भांडार, आनंद स्वरूप, पूर्णपुरुषोत्तम सिद्ध करते हुए जीव और ब्रह्म में शुद्धाद्वैत का प्रतिपादन किया है—

जोगी जोतिहि भजै, भक्त निज रूपहि जानै ।
प्रेम पियूषै प्रगट स्यामसुन्दर उर आनै ।। —छंद २८.

शुद्धाद्वैतवाद में जीव और ब्रह्म में अंश-अंशी भाव होता है। भँवरगीत के अंत में यही अंश-अंशी भाव प्रकट किया गया है। उद्धव मथुरा लौटने पर अपने समक्ष यही देखते हैं कि—

रोम-रोम प्रति गोपिका ह्वै गये साँवरे गात ।
कल्प तरोवर साँवरों, ब्रज बनिता भईं पात ।
उलहि अंग-अंग तें ।। —छंद ७३.

भँवरगीत में एक जगह और भी नन्ददास ने जल-तरंग-न्याय (छंद ७४) से जीव और ब्रह्म में शुद्धाद्वैत दिखलाया है।

जीव-जगत और ब्रह्म के कार्यकारण-सम्बन्ध को स्पष्ट करते हुए नन्ददास ने भँवरगीत में बीज रूपी ब्रह्म से वृक्ष रूपी जीव और जगत की उत्पत्ति बतलाई है। उनकी गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि—

जो उनके गुन नाहि और गुन भये कहाँ ते ।
बीज बिना तरु जमै मोहि तुम कहो कहाँ ते ।।—छंद २०.

जीव अपने मूल रूप में विशुद्ध जलवत् ही है, पर अविद्या माया के संसर्ग से वह वैसे ही दूषित हो जाता है, जैसे मेघों से बरसने वाला शुद्ध जल कीचड़ के संयोग से गँदला हो जाता है—

वा गुन की परछाँह री माया दरपन बीच ।
गुन ते गुन न्यारे भये अमल वारि ज्यों कीच ।।—छंद २०.

वल्लभ-दर्शन में भगवदनुग्रह की प्राप्ति के लिए मर्यादा निरपेक्ष भक्ति को बड़ा महत्व दिया गया है। इसीलिए गोपियों के मर्यादा निरपेक्ष प्रेम को देखकर उद्धव कहते हैं कि—

जे ऐसे मरजाद मेंटि मोहन को ध्यावैं ।
काहे न परमानन्द प्रेम पदवी सचु पावैं ।। —छंद ६४.

गोपियों के इस परम प्रेम को देख उद्धव को ज्ञान और योग प्रेम के हीरे के सामने काँच के टुकड़े से दीखने लगे और वे ज्ञानजन्य दुविधा को त्याग भगवद्प्रेम रस के मधुकर बन गये—

ऊधों तें मधुकर भयौ, दुविधा ग्यान मिटाइ ।
पाय रस प्रेम कौ ।। —छंद ६६.

पुष्टिमार्गीय भक्ति

केवल शुद्धाद्वैत दर्शन ही नहीं, पुष्टिमार्गीय भक्ति के अनुरूप भगवन्नाम-स्मरण (छन्द–३०), कृष्ण का ध्यान (छन्द ६, २९), भगवद्गुणकथन (छंद ३३), भगवत्लीला–गान (छंद १०, ३४, ४१), भगवदीय प्रेम-जन्य आत्मोल्लास की अनुभूति (छंद ३२, ६०) आदि का विवेचन भी भँवरगीत में पाया जाता है, अतः यह कहा जा सकता है कि नन्ददास का भँवरगीत शुद्धाद्वैत दर्शन का प्रतिपादक ग्रंथ ही नहीं, पुष्टिमार्गीय भक्ति का निरूपक और प्रचारक ग्रंथ भी है ।

भाव-नियोजनः—

नंददास कोरे तार्किक पंडित या दार्शनिक आचार्य ही नहीं, रससिद्ध कवि भी थे, इसीलिये उन्होंने भँवरगीत के उत्तरार्द्ध में बड़ी सरसता, मार्मिकता और प्रभविष्णुता के साथ गोपियों की विरह-व्यथा और उनके उपालम्भों का गुंफन किया है । जहाँ नन्ददास ने गोपियों द्वारा प्रिय के ध्यान (छंद २९), तथा एक निष्ठ प्रेयसियों की दीनता, कातरता, अभिलाषा और आत्मनिवेदन (छंद ३०) आदि के चित्रण में अच्छी सफलता पाई है । कृष्ण की निष्ठुरता (छंद ३०) और गोपियों की निराश्रयता (छंद १) ने गोपियों से जिस उपालम्भ का सूत्रपात कराया है, उससे प्रेरित हो गोपियाँ कृष्ण को छली (छंद ३२), राजमदान्ध (छंद ३३), कठोर (छंद ३४), निष्ठुर (छंद ३५) ही नहीं कहतीं, भ्रमर के माध्यम से कृष्ण और उद्धव दोनों की खूब खबर लेती हैं । प्रेमिकाओं की इस भावुकतापूर्ण खीझ के चित्रण में नन्ददास ने नारी-हृदय की विविध मनोभूमिकाओं का सफल अंकन किया है । उनकी सारी वचन-वक्रता, और भावुकता रस रीति को लेकर चली है ।

काव्यशास्त्रीय दृष्टि से विरह की एकादश दशाएँ भी यथा – १. अभिलाष (छंद ३१), २. चिन्ता (छंद ३४), ३. स्मृति (छंद १०), ४. गुणकथन (छंद ४८), ५. उद्वेग (छंद ५०), ६. प्रलाप (छंद ३५), ७. उन्माद (छंद ३२), ८. व्याधि (छंद ३०), ९. जड़ता १०. (छंद ३), मुर्च्छा (छंद ६) और ११. चरम निराशा, जो मरण का कारण हो सकती है (छंद ६०) भँवरगीत में पाई जाती है ।

उपरोक्त प्रमाणों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि गोपियों के विप्रलम्भ श्रृंगार, उनकी परम विरहासक्ति और विरहभाव के चरम उत्कर्ष का द्योतन करने के कारण भँवरगीत एक सुन्दर काव्यग्रंथ है ।

भाषा-शैली:—

'और कवि गढ़िया नन्ददास जड़िया' उक्ति नन्ददास को शब्द-संपदा का धनी, सशक्त भाषाधिकारी कवि और काव्यकला का निष्णात् कलाकार घोषित करती हैं। भँवरगीत में पात्र, परिस्थिति, कथानक, भाव, विचार, तर्क और प्रसंग के अनुरूप सार्थक शब्दों का आयोजन नन्ददास के भाषाधिकार का प्रमाण है। उनके काव्य में व्रजभाषा की समृद्धि देखी जा सकती है। प्रस्तुत अपने भँवरगीत में उन्होंने संस्कृत के अनेक तत्सम शब्द, यथा-ग्राम, दृग, ब्रह्म, अच्युत, ब्रह्माण्ड, प्रेम, अम्बुज, जलनिधि, मित्र, कंचुकी, प्रेमासक्त द्रुम, गुल्म के साथ-साथ उपदेस, लावन्य, परिकर्मा, पुन्य, अकास, देस, गलानि, भरम आदि अर्धतत्सम शब्द और पे, समे, औसर,ठाउँ, नीके, सगरे, जिनि, कान्ह, निस्चे, आध आदि तद्भव शब्द प्रयुक्त किये हैं। जड़िया कवि के हाथों से प्रयुक्त होने के कारण इस भँवरगीत में प्रत्येक शब्द यथास्थान अपने संपूर्ण रूपवैभव और अर्थवत्ता के साथ जड़ा हुआ है, इसलिये भँवरगीत में भाषा की सरलता, तरलता, स्वाभाविकता, कोमलता, प्रवाहात्मकता, संगीतात्मकता और निम्बविधायिनीशक्ति की प्रभावोत्पादकता पाई जाती हैं, जिसमें कौन समेटै धूर, पचि मरे, घर आयौ नाग न पूजहीं बामी पूजन जांहि, हिए लौन लगावो, फ़ाटि हिय दृग चल्यौ, कूल कौ तृन भयौ, बाँधी मूठी आदि मुहावरे और कहावतें छन्दों में नगीनों सी जड़ी हैं। साथ ही छंदों के क्रमिक प्रवाह में तर्क और प्रलाप शैली का माधुर्य अपनी अलग छटा रखता है।

छंद:—

भँवरगीत की छंद योजना संगीतात्मक है और संगीत शास्त्र की दृष्टि से यह सम्पूर्ण भँवरगीत राग धनाश्री में गेय हैं। संगीत के कारण ही उसके कई दीर्घ लिखित व्यंजन ह्रस्व उच्चरित होते हैं। उदाहरणार्थ-निम्नलिखित पंक्ति में रेखांकित वर्ण देखिए—

काहै न फेरि कृपाल होउ··· ।– छंद ३०.

छंद-शास्त्र की दृष्टि से भँवरगीत के प्रत्येक छन्द में एक रोला, एक दोहा और फिर दस मात्राओं की एक टेक पाई जाती है।

रस:—

कथातत्त्व और प्रसंगवर्णन के आधार पर भँवरगीत प्रवास विरहजन्य विप्रलम्भ शृंगार रस की रचना है, जिसमें मधुराभक्ति और कान्तासक्ति का चरम विकास दृग्गोचर होता है। इसमें भाव-विभाव, अनुभाव-संचारी आदि का विवेचन बड़ी मार्मिकता से किया गया हैं। भँवरगीत में गोपियाँ आश्रय, कृष्ण आलम्बन, उद्धव द्वारा उनके संदेश का आना उद्दीपन, गोपियों के हृदय में आनन्द रस और नेत्रों में

आँसुओं का आप्लावन अनुभाव है । गोपियों के उपालंभ और रुदन में विरह तथा विरहिणी गोपियों के मनोभावों का सरस अभिव्यंजन दृष्टव्य है (छंद-३० से ६० तक) ।

अलंकार:—

भँवरगीत जैसी ७५ छन्दों की रचना में लगभग १४ अलंकारों का प्रयोग हुआ है । अलंकारों की यह प्रचुरता भी नन्ददास के जड़िया रूप का समर्थन करती हैं । रसरूपिनी, गदगद गिरा, ब्रज बाल, जोग जुगुति आदि में छेकानुप्रास, सखा सुनि स्याम के, कपटी कुटिल कठोर आदि में वृत्यनुप्रास, बन-बन, दुरि-दुरि, हँसि-हँसि में पुनरुक्तिप्रकाश, जोग-जोग में यमक, धन्य-धन्य में वीप्सा, मोहन संदेश में परिकर, कुबिजा तीरथ जाय कियौ इंद्रिन को मेला में श्लेष, प्रेमपियूषै, प्रेम अमृत में रूपक अलंकारों का सौन्दर्य दर्शनीय है । इसी तरह अप्रस्तुत प्रशंसा (छंद ५७), दृष्टान्त (छंद २०), उदाहरण (छंद २८,६६), भ्रान्तिमान (छंद ४५), रूपकातिशयोक्ति (छंद ३३), लोकोक्ति (१२, १८, ४१) और स्वभावोक्ति (छंद ३) अलंकार भी भँवरगीत में पाये जाते हैं ।

उपसंहार:—

संक्षेप में नन्ददासकृत भँवरगीत एक पौराणिक कथात्मक पद्य-निबन्ध है । उसमें धर्म, दर्शन, काव्य, संगीत और भक्ति के साथ-साथ सांस्कृतिक जीवन की झाँकी दिखाई देती है । भाव, भाषा, छंद, रस, अलंकार, काव्यशास्त्र, संगीत-शास्त्र, नाट्यशास्त्र और रस रीति की दृष्टि से वह एक सफल कृति है । वह अपने प्रणेता के कवित्व, आचार्यत्व और भक्त रूप की ज्ञापिका तथा भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य के इतिहास में तर्क-प्रमाण और भावना के धरातल पर ज्ञानमार्ग, योगमार्ग और अद्वैतवाद का खंडन कर शुद्धाद्वैतवाद सम्मत सगुणोपासना का प्रचार और प्रसार करने वाली सफल रचना है । हिन्दी साहित्य की भ्रमरगीत-परम्परा में उसका अपना स्थान है तथा वल्लभ-संप्रदाय के मन्दिरों से लेकर, संगीत समाज राममंडलियों और काव्य प्रेमियों तक उसका समादर उसकी लोकप्रियता का प्रत्यक्ष प्रमाण है । प्रस्तुत ग्रंथ में भँवरगीत के मूल पाठ तक पहुँचने का एक अत्यन्त विनम्र किन्तु प्रामाणिक प्रयास किया गया है । आशा है, सुधी जन इसे पाकर और पढ़कर प्रसन्न होंगे ।

कृतज्ञता-ज्ञापन:—

आदरणीय डॉ० भगीरथजी मिश्र के निर्देशन में 'महाकवि नन्ददास-प्रणीत भँवरगीत' पर कार्य करने के लिए पूना विश्वविद्यालय ने तीन हजार रुपयों का शोध अनुदान तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ने 'साहित्यमहोपाध्याय' उपाधि व ग्रंथ-

प्रकाशन की अनुमति दे मुझे उपकृत किया है। इसी तरह से जिन व्यक्तियों की कृतियों और हस्तलिखित प्रतियों से इस ग्रंथ के निर्माण में मुझे सहायता मिली है, उनका भी मैं हृदय से आभारी हूँ। विशेषकर इस ग्रंथ के प्रकाशन के लिए मैं पं० बालकृष्णजी त्रिपाठी तथा मेरे सुहृद बन्धु श्री हरिमोहनजीमालवीय का चिर कृतज्ञ हूँ। अन्ततः इस रचना में यदि कहीं कोई त्रुटि रह गई हो तो सूज्ञ पाठकों से प्रार्थना है कि वे उसकी ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने का कष्ट करें, ताकि इस रचना के आगामी संस्करण अधिक निर्दोष हो सकें।

भगवानदास तिवारी

सोलापुर कॉलेज, सोलापुर—२.
२ जनवरी, १९७२.

विषयानुक्रमणिका

प्रथम अध्याय | भँवरगीत के पूर्व प्रकाशित संस्करण और तत्सम्बन्धी ज्ञातव्य

नन्ददास की रचनाओं में भँवरगीत की श्रेष्ठता—

भँवरगीत नददासजी की एक प्रौढ़ और लोकप्रिय रचना है। वह ब्रजभाषा-प्रेमियों के लिए रस का स्रोत, संगीतज्ञों के लिए कण्ठ का हार, साहित्यप्रेमियों के लिए अध्ययन-चिन्तन-मनन-सापेक्ष काव्य-कृति, रासमण्डलियों के लिए भगवल्लीला की सुमधुर काव्य नाटिका और पुष्टि-सम्प्रदाय के मन्दिरों में कीर्त्तनार्थ सरस सुदीर्घ पद है। वर्ण्य-विषय, शैली, काव्य और दर्शन की दृष्टि से भी वह एक आद्यन्त रोचक कृति है। उसमें नंददास का आचार्यत्व और कवित्व दोनों एक साथ प्रकट हुए हैं। उनकी अन्य रचनाओं में सामान्यत: उनकी प्रतिभा का एक-एक पक्ष ही उभरता हुआ दिखाई देता है। वे रासपंचाध्यायी में कवि, सिद्धान्तपंचाध्यायी में आचार्य, अनेकार्थ-मंजरी, नाममाला में कोशकार, रसमंजरी, रूपमंजरी आदि में रस-रीति के व्याख्याता, भाषा दशम स्कन्ध में अनुवादक, गोवर्द्धनलीला, स्याम-सगाई, सुदामा-चरित में कथाकार कवि और पदावली में श्रेष्ठ संगीतज्ञ और कीर्तनकार के रूप में हमारे सामने आते हैं, पर भँवरगीत में वे कवि, आचार्य, संगीतज्ञ, भक्त, कथाकार-कवि, पुष्टि मार्ग के व्याख्याता और प्रचारक, दार्शनिक, तार्किक एवम् भावुक सभी रूपों में एक साथ दिखाई देते हैं। इस आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भँवरगीत नंददासजी की एक अत्यन्त श्रेष्ठ रचना है और इसीलिए वह विगत अनेक शताब्दियों में लोकप्रिय रही है।

भँवरगीत की प्रकाशित प्रतियाँ—

श्रेष्ठ काव्य-लक्षणों से समलंकृत होने के कारण अतीत में समय-समय पर भँवरगीत की अनेक हस्तलिखित प्रतियाँ तैयार हुईं और भक्तों, कवियों, संगीतकारों व रासमंडलियों में उनका खूब प्रचार हुआ। मुद्रण की सुविधा के साथ-साथ अनेक व्यक्तियों ने भँवरगीत का संपादन कर उसे प्रकाशित करवाया। इस क्षेत्र में भी दो प्रतियों को मिलाकर तीसरी प्रति तैयार करने की परम्परा चलती रही। शोध-दृष्टि के अभाव में सामान्यतः अधिकांश सम्पादकों ने अपने-अपने ढंग से या निज रुचि के

अनुकूल उक्त रचना का पाठ-निर्धारण किया, या जिसे जो प्रति मिली उसने उसे ही आधार मानकर अपना काम चलाया। पाठानुसंधान की ओर सम्पादकों की दृष्टि कम गई, फलतः भँवरगीत के प्रकाशित संस्करणों की संख्या तो बढ़ी, पर उसके मूल पाठ की ओर जाने की प्रवृत्ति या तुलनात्मक अध्ययन के उपरान्त पाठ-निर्धारण की ओर बहुत कम सम्पादकों ने ध्यान दिया। अधिकांश सम्पादकों ने कुछ या अनेक हस्त-लिखित प्रतियों का उल्लेख तो किया पर वे प्रतियाँ कौन सी थीं ? इसका पता नहीं दिया। ऐसी स्थिति में भँवरगीत के सम्पादित संस्करणों का आधार खोजना कठिन हो गया और हर संस्करण में एक स्वतंत्र पाठ प्रचलित हो गया।

भँवरगीत के कुछ ऐसे ही प्रकाशित संस्करणों का विवरण इस प्रकार है—

भँवरगीत की प्रकाशित प्रतियों का कालक्रमागत परिचय—

(१) श्री नन्ददासजी कृत भ्रमरगीत–

संवत् १९४६ में प्रकाशित श्री नंददासजी कृत भ्रमरगीत के मुखपृष्ठ पर प्रकाशकीय सूचना में लिखा है कि—यह व्रजभाषा करुणा रस ग्रन्थ प्राचीन ग्रन्थ प्रकाशक यदुवंशी भाटीया जातीय ठक्कर गोवर्धनदास लक्ष्मीदास इंनोने बहुत परिश्रम से पदच्छेद युक्त करके मुंबई 'श्री कल्पतरु' छापेखाने में छपवा कर प्रसिद्ध किया, संवत् १९४६, सन् १८९०।[1]

इस रचना में २४ पृष्ट और ७४ छंद हैं। प्रथम छंद के अन्त में 'सुनो व्रज-नागरी' की अपेक्षा 'बन्दना करत हौं' टेक दी गई है। इस भ्रमरगीत में अन्य प्रतियों में प्राप्त छंद क्रमांक ६६ की प्रारम्भिक ३ पंक्तियाँ और छंद क्रमांक ६७ की अन्तिम २ पंक्तियाँ कम हैं, अतः इसमें छंद क्रमांक ६६ और ६७ की अपेक्षा एक ही छंद है—

उद्धव वाक्य—

पुनि कहै परसत पाँय सबनि हौं प्रेमनिवारो ।।
भृंगी संज्ञा करत विसद गुन गन विस्तारो ।।
तब अतिसै कृतकृत्य ह्वै भूम्र बसे सहि पाय ।।
उद्धव ते मधुकर भये, मुद्रा योग मिटाय ।।
लही यह संपदा ।।६६।।

---

१. **श्री नन्ददासजी कृत भ्रमरगीत–सं० व प्रकाशक**–गोवर्द्धनदास लक्ष्मीदास, प्रथम संस्करण, संवत् १९४६, पृष्ठ १।

अंतिम छंद इस प्रकार है—

गोपी आप दिखाई एक करिकें बनवारी ॥
उद्धव को फिरि नैन डारि व्यामोह कटारी ॥
हम उद्धव जानीं नहीं, ओछी करिहैं प्रीत ॥
भली भई प्रभु सौं चली, जग में उलटी रीत ॥
कह्यौ रोमांच ह्वै ॥७४॥

संपूर्णम ॥ इति नंददासजी कृत भँवरगीत समाप्त ॥

ग्रन्थ के अंत में गोपियों की प्रेम-प्रशंसा में ग्वाल कवि का एक कवित्त[1] दिया गया है तथा प्रत्येक छंद के पहले प्रसंगानुसार उद्धव-वाक्य या गोपी-वाक्य लिखा है। मूल ग्रन्थ किस प्रति के आधार पर प्रकाशित किया गया है, इसका कहीं पता नहीं है। इस भ्रमरगीत की एक प्रति भारती भवन पुस्तकालय, लोकनाथ की गली, प्रयाग में सुरक्षित है, जहाँ इसकी क्रम संख्या ६४७८६ व विभाग संख्या ८१२-१०४ है।

(२) सूरसागर–

नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित सूरसागर[2] के द्वितीय संस्करण में पृष्ठ क्रमांक ७२० से ७२६ तक नंददास कृत भ्रमरगीत छपा है। इस रचना की एक प्रति डॉ० दीनदयाल गुप्त, अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ के निजी संग्रह में है। भ्रमरगीत की जिस हस्तलिखित प्रति के आधार पर पाठ लिया गया है, उसका सूरसागर में कहीं भी उल्लेख नहीं है।

(३) रासपंचाध्यायी और भँवरगीत–

बाबू बालमुकुन्द गुप्त द्वारा सम्पादित एवं भारतमित्र प्रेस, मुक्तारामबाबू स्ट्रीट, कलकत्ता से पण्डित कृष्णानंद शर्म्मा द्वारा संवत् १९६१ में मुद्रित एवं प्रकाशित रास-

---

१. गोपिन के प्रेम कौं जो रसना रुकतु किहम। रसना है एक ताते बनै न उच्चारतैं।
सिंधु हूँ को अवगाह थाह लाई सकीयत। उनको अथाह गुन आवै न सम्हारतैं।
ग्वाल कबि तिनही कै एक एक कौतुक पै। सुख सरसाज कौं बहाउँ निज दुवार तैं।
तन वारौं मन वारौं धन वारौं प्रान वारौं। राम रोम वारौं नहीं हारौं जग वारतैं।
—पृष्ठ २४।

२. सूरसागर—नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, संवत् १९३१.

पंचाध्यायी और भँवरगीत में भँवरगीत पृष्ठ संख्या २७ से ४० तक छपा है। भूमिका के आधार पर बाबू बालमुकुन्द गुप्त द्वारा संपादित इस भँवरगीत के पाठ का आधार नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित सूरसागर का संवत् १८९४ वाला तृतीय संस्करण है।[१]

(४) कविवर नन्ददास कृत रासपंचाध्यायी और भँवरगीत–

आश्विन संवत् १९७५ में श्री ब्रजमोहनलाल विशारद द्वारा सम्पादित कविवर नन्ददास कृत रासपंचाध्यायी और भँवरगीत का प्रकाशन हुआ। इसके प्रकाशक थे–श्री परीक्षित सिंह, प्रबन्धक, काव्य कुसुमांजलि कार्यालय, लाला का बाजार, मेरठ और मुद्रक थे–श्री के० सी० भल्ला, स्टार प्रेस, प्रयाग। इस पुस्तक में भँवरगीत पृष्ठ क्रमांक ३२ से ४८ तक छपा है, जिसकी आधारभूत प्रति का उल्लेख कहीं नहीं है।

उपोद्‌घात में श्री ब्रजमोहनलाल ने भँवरगीत के स्वरूप को देखते हुए यह धारणा व्यक्त की है कि–भँवरगीत अवश्य उनकी (नन्ददासजी की) भागवत का अंश है, क्योंकि इसके आदि व अंत में कोई छंद इस प्रकार का नहीं लिखा गया है...।[२]

श्री ब्रजमोहनलालजी की उक्त धारणा निराधार है क्योंकि नन्ददास कृत दशमस्कन्धभाषा में अनुवादित भँवरगीत की एक हस्तलिखित प्रति हमें शोध-यात्रा करते समय मिली है, जिसे पाठकों की जानकारी के लिए इसी ग्रन्थ के परिशिष्ट क में स्थान दिया गया है।

(५) भ्रमरगीत–

श्रावण, संवत् १९८० में बाबू ब्रजरत्नदास द्वारा सम्पादित भँवरगीत की प्रथम आवृत्ति का प्रकाशन साहित्य सेवा सदन, काशी से हुआ।[३] इस प्रति में बाबूजी ने निजी संग्रहालय की एक, व पण्डित केदारनाथजी पाठक के संग्रहालय की तीन हस्तलिखित प्रतियों का उपयोग किया और बाबू बालमुकुन्द गुप्त व ब्रजमोहनलाल विशारद द्वारा सम्पादित दो प्रकाशित प्रतियों को एकत्रित कर भँवरगीत का पाठ निर्धारित किया। तीन हस्तलिखित प्रतियों में जनमुकुन्द और अन्य तीन प्रतियों में नन्ददास की

---

१. **रासपंचाध्यायी और भँवरगीत**—सं० बाबू बालमुकुन्द गुप्त, भूमिका, पृष्ठ २.

२. **कविवर नंददासकृत रासपंचाध्यायी और भँवरगीत**—सं० श्री ब्रजमोहन लाल विशारद, उपोद्‌घात् पृष्ठ ७।

३. **बाबू बालमुकुन्द गुप्त, श्री ब्रजमोहनलाल विशारद तथा बाबू ब्रजरत्नदास द्वारा संपादित भँवरगीत के संस्करण चिरंजीव पुस्तकालय, भैरों बाजार, बेलनगंज, आगरा के स्वामी श्री चिरंजीवलालजी पालीवाल के निजी संग्रह में हैं।—लेखक।**

छाप देखकर बाबूजी ने दो शंकाएँ उपस्थित कीं–प्रथम यह कि जनमुकुन्द नन्ददास का उपनाम होगा और दूसरे यह कि किसी अप्रसिद्ध जनमुकुन्द के स्थान पर नन्ददास का नाम इसमें जोड़ दिया गया हो। परन्तु इस विचार से कि वैष्णव मन्दिरों के नित्य कीर्तन में यह पद पाया जाता है और उसमें केवल अष्टछाप के कवियों के ही पद लिये गये हैं प्रथम शंका ही निश्चित जान पड़ती है।[1]

पूर्वप्रकाशित भँवरगीत की प्रतियों के क्रम में इस रचना की तीन विशेषताएँ हैं:

(क) इसमें भँवरगीत की आधारभूत हस्तलिखित और मुद्रित प्रतियों का स्पष्ट उल्लेख मिलता है।

(ख) सम्पादक ने जनमुकुन्द के नन्ददास का उपनाम होने की संभावना प्रकट की है।

(ग) किसी भी हस्तलिखित प्रति में न होने पर भी बाबूजी ने सम्पादक के विशेषाधिकार से भँवरगीत के कथानक को उपशीर्षकों में विभक्त किया है। यथा–उद्धव का कृष्ण-सन्देश (छंद १-२), ब्रजबालाओं का प्रेम (छंद ३), कथोपकथन (छंद ४ से २८), कृष्ण-प्रति उपालम्भ (छंद २९ से ४५), भ्रमर प्रति उपालम्भ (छंद ४६ से ६१), उद्धव की प्रेमदशा (छंद ६२ से ६८), मथुरा-प्रत्यागमन (छंद ६९-७०),गोकुल का वृत्तान्त (छंद ७१ से ७३), उद्धव को उपदेश (छंद ७४ से ७५)।

(६) भ्रमरगीत–

संवत् १९८६ में ओंकार प्रेस, प्रयाग से प्रिंसिपल श्री रामाज्ञा द्विवेदी समीर ने भँवरगीत का स्वसम्पादित संस्करण छपाया। इसमें ९ पृष्ठों की भावुकतापूर्ण भूमिका है, जिसमें प्रिंसिपल साहेब ने एक स्थल पर नन्ददास को भागवतकार और सूर से भी श्रेष्ठ बतलाते हुए लिखा है कि–नन्ददासजी ने संक्षेप में मूल कथा तथा सूरदास की कृति दोनों को ही मात कर दिया है।[2]

भूमिका के अन्त में लिखा है कि इस संस्करण में दो-तीन प्रतियों से सहायता ली गई है।[3] किन्तु ये दो-तीन प्रतियाँ कौन-कौन सी थीं इसके सम्बन्ध में सम्पादित प्रति मौन है।

(७) भँवरगीत–

सन् १९३२ में श्री विश्वम्भरनाथ मेहरोत्रा एम० ए० द्वारा सम्पादित भँवरगीत

१. **भ्रमरगीत**—सम्पादक, बाबू ब्रजरत्नदास, वक्तव्य, पृष्ठ १–२।
२. **भ्रमरगीत**—सं० प्रिंसिपल रामाज्ञा द्विवेदी समीर, भूमिका, पृष्ठ ४।
३. वही, पृष्ठ ९।

का प्रथम संस्करण रामनारायणलाल ने इलाहाबाद से प्रकाशित किया। मेहरोत्राजी ने प्रस्तुत प्रबन्ध के इसी अध्याय में पूर्ववर्णित छहों प्रतियों के आधार पर[1] भँवरगीत का पाठ निर्धारित किया है। भूमिका के रूप में उन्होंने ३९ पृष्ठों में नन्ददास के जीवन, काव्य व भँवरगीत की विशेषताओं की सामान्य चर्चा की है।

(८) भ्रमरगीत—

व्रजसाहित्य ग्रन्थमाला, वृन्दावन के व्यवस्थापक श्री दानबिहारीलाल शर्मा ने संवत् १९९७ में अग्रवाल प्रेस, वृन्दावन से स्वसम्पादित भ्रमरगीत प्रकाशित कराया। बीस पृष्ठों की इस पुस्तिका के प्रारंभ के दो पृष्ठों में निवेदन और शेष १८ पृष्ठों में भ्रमरगीत छपा है।

भ्रमरगीत के प्रकाशित पाठ के आधार के सम्बन्ध में शर्मा जी ने कोई सूचना नहीं दी है।[2]

(९) नन्ददास—

नन्ददासजी के जीवन और काव्य के समग्रतामूलक अध्ययन की दिशा में सर्व-प्रथम शोधकार्य श्री उमाशंकरजी शुक्ल, एम० ए०, राजा पन्नालाल स्कॉलर, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग ने किया। शुक्लजी ने बड़े परिश्रम और विवेक से नन्ददास के काव्य का संकलन किया और स्वसंकलित सामग्री नन्ददास नामक ग्रन्थ के दो भागों में प्रकाशित करवाई। यह ग्रन्थ प्रयाग विश्वविद्यालय से ही प्रकाशित हुआ। इसके प्रथम भाग के प्रथम संस्करण का प्रकाशन सन् १९४२ में हुआ है।

श्री उमाशंकरजी शुक्ल ने भँवरगीत के पाठानुसन्धान के लिए १३ हस्तलिखित प्रतियों तथा श्री विश्वम्भरनाथ मेहरोत्रा द्वारा सम्पादित भँवरगीत का परीक्षण किया।[3] आलोच्य हस्तलिखित प्रतियों में से उन्हें छः प्रतियों में जनमुकुन्द छाप मिली, तीन प्रतियाँ खण्डित थीं, और शेष पाँच प्रतियों में नन्ददास की छाप थी। उक्त १४ प्रतियों के अतिरिक्त उन्हें भँवरगीत की तीन हस्तलिखित प्रतियों की और सूचना मिली, किन्तु ये प्रतियाँ उन्हें अवलोकनार्थ उपलब्ध नहीं हुईं।

भँवरगीत की हस्तलिखित प्रतियों में जनमुकुन्द छाप देखकर श्री शुक्लजी को भी सन्देह हुआ, अतः उन्होंने अपना सन्देह प्रकट करते हुए लिखा है कि—भँवरगीत की बहुत सी प्रतियों में जनमुकुन्द की छाप भी मिलती है। प्राप्त सामग्री से इस बात का

---

१. **भँवरगीत**—सं० श्री विश्वम्भरनाथ मेहरोत्रा, भूमिका, पृष्ठ ३६-३७।
२. **भ्रमरगीत**—सं० दानबिहारीलाल शर्मा, निवेदन, पृष्ठ १-२।
३. **नंददास**—श्री उमाशंकर शुक्ल, एम० ए०, प्रथम भाग, भूमिका, पृष्ठ ६७-६८

निराकरण नहीं होता कि यह नन्ददास का ही उपनाम था। मिश्रबन्धुविनोद[१] में जनमुकुन्द नाम से ध्रुवगीता नामक एक अन्य ग्रन्थ का उल्लेख हुआ है।[२]

उक्त विचार के आधार पर शुक्लजी जनमुकुन्द को नन्ददास से भिन्न व्यक्ति मानते से प्रतीत होते हैं, पर वे जनमुकुन्द की खोज के झमेले में नहीं पड़े। उन्होंने पूर्ववत् भँवरगीत को नन्ददास की रचना मान पाठ-निर्धारण किया। ब्रजभाषा की परम्परा के अनुसार उन्होंने नव सम्पादित भँवरगीत में छंद संख्या न देकर अंग्रेज़ीढंग से पंक्ति संख्या दी है, अतः इस संस्करण में ५, १०, १५ आदि के क्रम से हमें ५ से ३७५ तक पंक्ति-संख्याएँ मिलती हैं।[३]

(१०) रासपंचाध्यायी और भँवरगीत—

डॉ० उदयनारायण तिवारी द्वारा सम्पादित रासपंचाध्यायी और भँवरगीत की द्वितीय आवृत्ति सन् १९४९ में तरुण भारत-ग्रन्थावली, दारागंज, प्रयाग से प्रकाशित हुई, जिसकी प्रस्तावना में श्री तिवारीजी ने नन्ददास के जीवन और काव्य पर १३ पृष्ठों में विचार किया है। शेष पृष्ठों में रासपंचाध्यायी पर अधिक और भँवरगीत पर अपेक्षाकृत कम लिखा गया है।[४] उपरोक्त दोनों रचनाए किन आधारों पर सम्पादित की गई हैं, इसका उल्लेख इस ग्रन्थ में नहीं है।

(११) नन्ददास-ग्रन्थावली—

काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा संवत् २००६ में प्रकाशित एवं बाबू ब्रजरत्नदासजी द्वारा सम्पादित नन्ददास-ग्रन्थावली में भ्रमरगीत पृष्ठ क्रमांक १७३ से १८९ तक मुद्रित है। इस भ्रमरगीत के सम्पादन में चार हस्तलिखित प्रतियों तथा चार छपी प्रतियों से सहायता ली गई है। हस्तलिखित प्रतियों का काल क्रमशः सं० १८९५, १८७३, १९०८, और १९०३ है। छपी प्रतियाँ सन् १८९४, १९०३, १९०४, और १९१८ ईस्वी की हैं।[५] इस रचना का पाठ साहित्य सेवा सदन, काशी से प्रकाशित बाबूजी के भ्रमरगीत के अनुरूप हैं।

उक्त प्रतियों के काल के अतिरिक्त बाबूजी ने हस्तलिखित प्रतियों के बारे में

---

१. **मिश्रबन्धु विनोद : भाग-२**, श्री मिश्रबन्धु, द्वितीय संस्करण, पृ० ४२१।
२. **नंददास**—श्री उमाशंकर शुक्ल, एम० ए०, प्रथम भाग, भूमिका, पृष्ठ ६९।
३. **नंददास**—सं० श्री उमाशंकर शुक्ल, प्रथम भाग, पृष्ठ १२३ से १४१ तक।
४. **रासपंचाध्यायी और भँवरगीत**—सं० डॉ० उदयनारायण तिवारी, प्रस्तावना पृष्ठ १३-७१।
५. **नंददास-ग्रंथावली**—सं० बाबू ब्रजरत्नदास, भूमिका, पृष्ठ ६०।

अन्य कोई सूचना नहीं दी, अतः यह नहीं कहा जा सकता उपरोक्त हस्तलिखित प्रतियों के आकार, प्रकार और स्रोत क्या थे।

(१२) भँवरगीत–

डॉ० प्रेमनारायणजी टंडन ने छात्रों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए भँवरगीत का एक सटीक संस्करण हिन्दी साहित्य भंडार, गंगाप्रसाद रोड, लखनऊ से प्रकाशित कराया। इस भँवरगीत के प्रारंभ में नन्ददासजी का जीवन, उनके ग्रंथ, भँवरगीत और उसकी समीक्षा बहुत संक्षेप में दी गई है।[१] मूलग्रंथ[२] के बाद परिशिष्ट एक में पाठान्तर[३] तथा परिशिष्ट दो में टिप्पणियाँ[४] दी गई हैं। किन्तु श्री टंडनजी ने इस बात का कहीं संकेत तक नहीं किया कि उन्होंने भँवरगीत का मूल पाठ किस प्रति के आधार पर लिया है और पाठान्तर में दिये गये पाठभेद किन-किन प्रतियों पर आधृत हैं।

(१३) भ्रमरगीत—

पण्डित जवाहरलालजी चतुर्वेदी द्वारा सटिप्पण और समभावद्योतक सूक्तियों सहित भ्रमरगीत का एक संस्करण सं० २०१९ में प्रकाशित करवाया गया है। इसमें संस्कृत, हिन्दी, उर्दू के अनेक कवियों की प्रसंग व भाव-साम्य-द्योतक सूक्तियों का विशाल संग्रह है। मूल भ्रमरगीत के उपरान्त चतुर्वेदीजी ने तत्सम्बन्धी टिप्पणी और समभावद्योतक सूक्तियाँ संकलित की हैं। परिशिष्ट क में श्रीमद्भागवत के मूल भ्रमरगीत को पादटिप्पणी में अर्थ सहित छाप दिया है। परिशिष्ट ख में सूर का भ्रमरगीत[५] दिया गया है, जो आचार्य श्री नन्ददुलारे वाजपेयी द्वारा सम्पादित एवं काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित सूरसागर में संकलित पद[६] का पाठान्तरित रूप है। परिशिष्ट ग में सदाशिवलालकृत जुक्तिसमूह[७] प्रकाशित है। भँवरगीत-

---

१. **भँवरगीत**—सं० डॉ० प्रेमनारायण टंडन, चतुर्थ संस्करण, १९६०, पृष्ठ ५ से २१ तक।
२. **वही**, पृष्ठ २३ से ३७ तक।
३. **वही**, पृष्ठ ३८ से ४४ तक।
४. **वही**, पृष्ठ ४५ से ८८ तक।
५. **भ्रमरगीत**–सं० पंडित जवाहरलाल चतुर्वेदी, पृष्ठ ३७५ से ३७८।
६. **सूरसागर**–सं० पंडित नंददुलारे वाजपेयी, दूसरा खंड, पृष्ठ १४७६-७८, पद संख्या ४७१४।
७. **भ्रमरगीत**–सं० पंडित जवाहरलाल चतुर्वेदी, पृष्ठ ३७९ से ३९०।

परम्परा में लोकोक्तियों से परिपूर्ण इस सुन्दर रचना में ७५ छंद हैं तथा श्री चतुर्वेदी जी के मतानुसार इसका रचनाकाल संवत् १८८६ है।

नन्ददासकृत भँवरगीत की सम्पादन-कथा का ब्यौरा देते हुए चतुर्वेदीजी ने लिखा है कि—सम्पादन की आधारभूत बीसों हस्तलिखित तथा मुद्रित प्रतियों का लेखा-जोखा भी आज प्रकाशन के समय स्मृति-पटल से ओझल हो गया है।[1] फिर भी उन्होंने भरतपुर राज्य पुस्तकालय की सबसे प्राचीन और शुद्ध प्रति, बाबू राधाकृष्ण-दास द्वारा सम्पादित एवं हरिश्चन्द्र-चन्द्रिका में प्रकाशित और बाबू बालमुकुन्द गुप्त द्वारा सम्पादित व भारतमित्र प्रेस से प्रकाशित भँवरगीत की प्रतियों का सन्दर्भ दिया है।[2]

इनके अतिरिक्त चतुर्वेदीजी ने अन्य मुद्रित या हस्तलिखित प्रतियों के सम्बन्ध में कुछ नहीं लिखा।

(१४) नन्ददास का भँवरगीत विवेचन और विश्लेषण—

डॉ० स्नेहलता श्रीवास्तव की उक्त रचना जुलाई १९६२ में चैतन्य प्रकाशन, कानपुर से छपी। इसके प्रारम्भिक सात अध्यायों में कवि-परिचय के साथ-साथ भँवर-गीत की विशद टीका की गई है। अष्टम अध्याय में भँवरगीत का पाठ, शब्दार्थ, अन्त-कथाएँ और सूर के भ्रमरगीत से चुने हुए १०४ पद दिये गये हैं। सम्पादिका ने मूल पाठ के अतिरिक्त पादटिप्पणी में पाठान्तर[3] भी दिये हैं, पर सम्पूर्ण ग्रंथ में आदि से अन्त तक कहीं भी मूल-पाठ और पाठान्तर की आधारभूत प्रतियों का उल्लेख नहीं किया।

(१५) भँवरगीत—

स्वर्गीय डॉ० सुधीन्द्र ने नन्ददासकृत भँवरगीत की एक टीका लिखी थी, जिसमें भ्रमरगीत के मूल स्वरूप, और उसके विकास के साथ-साथ भँवरगीत के प्रत्येक छंद का भावार्थ भी दिया गया था। टीकाकार ने भँवरगीत का पाठ नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित नन्ददास-ग्रंथावली में दिये गये भँवरगीत के अनुसार रखा और प्रयाग विश्वविद्यालय से प्रकाशित नन्ददास में दिये गये भँवरगीत के पाठभेद ग्रहण कर उसका टीका में समावेश किया।[4]

---

१. **वही, संपादकीय**, पृष्ठ ८।

२. **वही**, पृष्ठ ९।

३. **नंददास का भँवरगीत :** विवेचन और विश्लेषण—डॉ० स्नेहलता श्रीवास्तव, पृष्ठ १४३-१५६।

४. **भवरगीत—सं०** डॉ० सुधीन्द्र, चतुर्थ संस्करण, सन् १९६६, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृष्ठ ३।

(१६) उद्धवलीला अर्थात् भँवरगीत–

रासमंडलियों में भँवरगीत उद्धवलीला के नाम से अभिनीत किया जाता है। मुझे इस लीला की एक प्रति बाबा तुलसीदास, गोपाल भवन, दुसायत मोहल्ला, वृन्दावन से प्राप्त हुई। इस रचना में रंगमंचीय सुविधा के अनुरूप नन्ददास के भँवर-गीत के पूर्व सूर के तीन पद प्रस्तावना के रूप में जोड़ दिये गये हैं। इसके बाद भँवर-गीत छपा है। पात्रों के निर्देशन के लिए भँवरगीत के छंदों के बीच में उद्धव वचन, समाजी वचन, गोपी वचन, सब गोपियों को आपस में बतरावनौ, गोपियों को भ्रमर पर कटाक्ष करके ऊधौं सों कहनौ, उद्धव कौ प्रेम में विह्वल होकर बोलबौ, उद्धव कौ श्री कृष्णजी सों कहनौ, ठाकुरजी वचन[1] आदि सूचनाएँ कोष्टकों में दी गई हैं। इस लीला में भी भँवरगीत की आधारभूत प्रति या प्रतियों की सूचना नहीं है। केवल अंतिम छंद में कवि की छाप नन्ददास है।

(१७) नन्ददास और उनका भँवरगीत–

सन् १९६६ में बिहार पब्लिशिंग हाउस, पटना-४ से डॉ० पूर्णमासी राय ने नन्ददास और उनका भँवरगीत नामक पुस्तक प्रकाशित करवाई। इस रचना में भँवर-गीत की समीक्षा, उसका मूल पाठ, व्याख्या और परिशिष्ट दिये गये हैं। भँवरगीत के पाठ के सम्बन्ध में डॉ० पूर्णमासी राय ने लिखा है कि प्रस्तुत संस्करण के सम्पादन में मेरे सामने प्रयाग तथा काशी से प्रकाशित ग्रंथावली एवं कुछ हस्तलिखित प्रतियाँ भी थीं। लीथो पर छपी संवत् १९३८ की एक प्रति भी मिल गई।[2] ...किन्तु ये 'कुछ हस्तलिखित प्रतियाँ' कौन सी थीं इसका उक्त ग्रंथ में उल्लेख नहीं किया गया।

भँवरगीत के प्रकाशित संस्करणों की उक्त ७५-७६ वर्षों की परम्परा को देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि अधिकांश सम्पादकों ने भँवरगीतों की हस्तलिखित प्रतियों का परिचय अपने संम्पादित भँवरगीतों में नहीं दिया है। कुछ सम्पादक 'कुछ' या 'अनेक हस्तलिखित प्रतियों' का संकेत कर उनके सम्बन्ध में सूचना देने से किनारा कर गये, तथा शेष दो-तीन सम्पादकों ने यथोपलब्ध प्रतियों की प्रामाणिकता के साथ सूचना दे सम्पादन के सिद्धान्तादि की कोई भी चर्चा न करते हुए पाठ-निर्धारण किया, अतः भँवरगीत की हस्तलिखित प्रतियों के ही आधार पर उसके पाठ-निर्धारण की समस्या ज्यों की त्यों थी, जिसके निराकरण की दिशा में यह प्रबन्ध एक प्रयास मात्र है।

---

१. **उद्धव लीला अर्थात भवरगीत**—प्रकाशक बाबा तुलसीदास, गोपालभवन, दुसा-यत, वृंदावन, पृष्ठ १-१७।

२. **भ्रमरगीत—संपादक** : बाबू ब्रजरत्नदास, वक्तव्य, पृष्ठ १-२।

भँवरगीत के कवि : जनमुकुन्द या नन्ददास–

हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर भँवरगीत का सम्पादन करने वाले विद्वानों के दो वर्ग हैं-पहले वर्ग में वे सभी सम्पादक आ जाते हैं, जो भँवरगीत की हस्तलिखित प्रतियों में जनमुकुन्द की छाप देखकर भी अनदेखी कर देते हैं, या जनमुकुन्द-नन्ददास के झमेले से किनारा कर जाते हैं ।

दूसरे वर्ग में कुछ सम्पादक ऐसे भी हैं जो भँवरगीत की हस्तलिखित प्रतियों में जनमुकुन्द और नन्ददास दोनों की छाप देख मूल रचना को शंकास्पद दृष्टि से देखते हैं । इस वर्ग के सम्पादकों के मत[1] से —

१. जनमुकुन्द नन्ददास का उपनाम होगा । अथवा

२. किसी अप्रसिद्ध जनमुकुन्द के स्थान पर नन्ददास का नाम भँवरगीत में जोड़ दिया है । इस शंका के अनुसार भँवरगीत किसी अज्ञात कवि जनमुकुन्द की रचना है जो नन्ददास के नाम से चल पड़ी है ।

उक्त शंकाओं में से प्रथम शंका विशुद्ध रूप से कल्पनाश्रित अतः निराधार है, क्योंकि पुष्टि-सम्प्रदाय के साहित्य में, विशेषकर वार्ता-साहित्य में, इस बात की कहीं चर्चा तक नहीं है, कि नन्ददास का उपनाम जनमुकुन्द था । सोरों-सामग्री भी इस सन्दर्भ में मौन है । यदि नन्ददास का उपनाम जनमुकुन्द होता तो इस तथ्य का नन्ददासजी की अन्य रचनाओं या पुष्टिमार्गीय-साहित्य में कहीं-न-कहीं जरूर हवाला दिया जाता । पर ऐसा कहीं नहीं हुआ । दूसरे नन्ददास का नाम नन्ददास ही था इसलिए उनके सम्पूर्ण काव्य में उनके कवि की छाप 'नन्द' या 'नन्ददास' ही है ।[2] इस दृष्टि से प्रथम शंका केवल शंका-मात्र है ।

दूसरी शंका शोध-सापेक्ष निर्णय की अपेक्षा रखती है, जिसके लिए भँवरगीत की हस्तलिखित प्रतियों का संकलन, अध्ययन, विश्लेषण, वर्गीकरण और जनमुकुन्द छाप के स्रोतों पर सप्रमाण चिंतन और निष्कर्ष अनिवार्य है । अगले अध्याय में इस विषय पर हमने विचार किया है ।

●

---

१. **नंददास और उनका भँवरगीत**—डॉ० पूर्णमासीराय, निवेदन, पृष्ठ छ ।

२. **नंददासजी की अनेकार्थमंजरी, नाममाला, रूपमंजरी के आदि में 'नंद' और अंत में 'नंददास', रसमंजरी, बिरहमंजरी, दशमस्कंध के आदि और अंत में केवल 'नंद' तथा रासपंचाध्यायी, सिद्धांत पंचाध्यायी, गोवर्द्धनलीला, स्यामसगाई, रुक्मिणीमंगल, सुदामा-चरित के अंत में 'नंददास' छाप है । गेय पदों में कहीं 'नंद' और कहीं 'नंददास' छाप मिलती है —लेखक ।**

द्वितीय अध्याय | भँवरगीत का पाठानुशीलन

भँवरगीत के पाठानुसन्धान तथा नन्ददास-जनमुकुन्द प्रकरण पर साधार, सप्रमाण विचार करने के लिए भँवरगीत की प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों की खोज आवश्यक थी। इस शोध के क्रम में लेखक को विविध स्थलों पर भँवरगीत की शताधिक हस्तलिखित प्रतियाँ उपलब्ध हुईं, जिनमें से ५५ प्रमुख हस्तलिखित प्रतियों का विवरण इस प्रकार है—

भँवरगीत की हस्तलिखित प्रतियाँ—

१. वाराणसी की प्रतियाँ—

(क) नागरी प्रचारिणी सभा की प्रतियाँ—

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के हस्तलेख-संग्रह विभाग में भँवरगीत की १३ हस्तलिखित प्रतियाँ हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है :

(१) भमरगीत लीला—

इस प्रति का अनुक्रमांक ६०१, हस्तलेख क्रमांक ९०१।६३४ है। लिपिकाल संवत् १८६६ और लिपिकर्ता का नाम मीश्र रामकृक्ष है। इसमें १८ पत्र हैं। प्रत्येक पत्र का आकार ५.८''×४.२'' है और प्रत्येक पृष्ठ पर १०–११ पंक्तियाँ हैं। प्रत्येक पंक्ति में लगभग बीस अक्षर हैं तथा अंत में कवि की छाप जनमुकुन्द है।

ग्रन्थारम्भ में 'श्रीमते रामानुजाय नमः'' लिखा है, जिससे यह प्रतीत होता है कि इस प्रतिलिपि के लेखक कदाचित रामानुज सम्प्रदाय के अनुयायी थे। ग्रन्थान्त में अठारहवें पत्र पर हाशिये में टीप दी गई है– ।।इति श्री भमरगीत लीला संपूर्ण सं० १८६६ ।। चैत्र शुदी २, शुक्रवार लिषतं मीश्र रामकृक्ष ।।

(२) भ्रमरगीत—

इस प्रति का अनुक्रमांक ११३६, हस्तलेख क्रमांक ९२१।६३४, लिपि-काल और लिपिकर्ता का नाम अज्ञात है। पोथी खंडित है। प्रारम्भ का एक पत्र नहीं है, इसलिए इसमें आरम्भ के ४ और अंत के ३ छंद अनुपलब्ध हैं। पत्र संख्या २ से १८ तक ही

ग्रन्थ प्राप्य है। प्रत्येक पत्र का आकार ६"×४·८" है, और प्रत्येक पृष्ठ पर ७ पंक्तियाँ हैं। प्रत्येक पंक्ति में लगभग बीस अक्षर हैं। अंतिम पृष्ठ के अभाव में कवि की छाप का पता नहीं है।

(३) भवरगीता—

इस प्रति का अनुक्रमांक ११३५, हस्तलेख क्रमांक ९१६/६४०, लिपि-काल संवत् १९२४ और लिपिकर्ता का नाम अज्ञात है। प्रति अत्यन्त अशुद्ध है। बीच में से पत्र क्रमांक १२ और ३ फटे हैं। कुल २० पत्र हैं। प्रत्येक पत्र का आकार ६·४"× ४·९" है। प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियाँ हैं। प्रत्येक पंक्ति में लगभग सत्रह-अठारह अक्षर हैं तथा अंत में कवि की छाप नन्ददास है। ग्रंथान्त में टिप्पणी इस प्रकार है—ईति श्री भागवते महापुराणे दसम नन्ददास कृति भवरगीता संपूर्ण संवत् १९२४ सावन मासे कृष्म पक्ष ॥

(४) भमरगीत—

इस प्रति का अनुक्रमांक ५९९, हस्तलेख क्रमांक ५१९/३७२, लिपिकाल संवत् १८८९ और लिपिकर्ता का नाम अज्ञात है। पोथी के पत्र क्रमांक ७१ पर ऊपर से आठवीं पंक्ति से भ्रमरगीत प्रारम्भ हुआ है और अंतिम छंद पत्र संख्या ८१ पर है। प्रत्येक पत्र का आकार ५·७"×८·८" है। प्रत्येक पृष्ठ पर २१ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग बारह-तेरह अक्षर हैं। अन्तिम छंद में कवि की छाप जनमुकुन्द है। ग्रन्थारम्भ में ॥ श्री कृष्माय नमः ॥ अथ भमरगीत लीष्यते ॥ लिखा है और ग्रन्थान्त में टिप्पणी इस प्रकार है—इति श्री भवरगीत संपूर्णम् ॥ शुभं भूयात् संवत् १८८९ ॥ लिपितं मथुरा मध्ये ब्राह्मण दीर्घ विष्मु निकट स्थिते फाल्गुण शुक्ला द्वितीया ॥२॥ गुरवासरे ॥ य अश्लोक संख्या १५०० ॥ पठनार्थं।

(५) भमरगीत—

इस प्रति का अनुक्रमांक ११३४, हस्तलेख क्रमांक ७६१/५५२, लिपि-काल सवत् १९१० और लिपिकर्ता का नाम मिश्र कीसंलाल है। भँवरगीत की पत्र सख्या २३ से ३६ तक है। प्रत्येक पत्र का आकार ५·८"×८·४" है और प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियाँ हैं। प्रत्येक पंक्ति में लगभग तेरह अक्षर हैं। अंत में कवि की छाप श्री जनमुकुन्द है।

ग्रन्थारम्भ में– ॥ श्री गणेशायनमः ॥ अथ भमरगीत लीष्यते ॥ लिखा है। ग्रंथान्त में ७५ वें छंद में कवि की छाप श्री जनमुकुन्द होने पर भी पत्र-संख्या ३६ के उत्तरार्द्ध में टिप्पणी दी गई है–इति श्री भमरगीत नन्ददास कृत्य संपूर्ण ॥

इस पोथी के पत्र क्रमांक ५८ पर श्री कृष्म परिक्षा नाम ग्रन्थ के अन्त में इस प्रकार टीप दी गई है–लीपतं मिश्र कीसंलाल पठनार्थ तोताराम... संवत् १९१० ॥

(६) भवरगीत

इस प्रति का अनुक्रमांक ६०३, हस्तलेख क्रमांक ६८६/६८१, लिपिकाल संवत् १८८१ और लिपिकर्ता का नाम अज्ञात है। कुल पत्र संख्या १६ है। प्रत्येक पत्र का आकार ५.१" × ४.३" है और प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियाँ हैं। प्रत्येक पंक्ति में लगभग सत्रह-अठारह अक्षर हैं। अंतिम छन्द में कवि की छाप नन्ददास दी गई है, किन्तु टिप्पणी में जनमुकुन्द का भी उल्लेख है यथा–इति श्री भवरगीत जनमुकन्दकृत संपूर्ण ॥ सं० १८८१.

(७) भमरगीत

इस प्रति का अनुक्रमांक ११३३, हस्तलेख क्रमांक ५१३।३६६, लिपि-काल संवत् १९४१ और लिपिकर्ता का नाम अज्ञात है। कुल पत्र-संख्या ९ है। प्रत्येक पत्र का आकार ६.३" × ९.७" है और प्रत्येक पृष्ठ पर २२ पंक्तियाँ है। प्रत्येक पंक्ति में लगभग चौदह अक्षर हैं। अंतिम छन्द में कवि की छाप जनमुकन्द है।

ग्रंथारम्भ में—श्री गणेशाय नमः ।। अथ भमरगीत लिख्यते ॥ लिखा है और ग्रंयान्त में टिप्पणी इस प्रकार है–इति श्री भमरगीती संपूर्ण ॥ श्री हरि संवत् ॥१९॥ १४॥ वैसाख बदी ॥ ११ ॥

इस प्रति में लिपिदोष बहुत अधिक हैं।

(८) भवरगीत—

इस प्रति का अनुक्रमांक २२०१२, हस्तलेख क्रमांक १०५५।७३२, लिपिकाल संवत् १८४९ और लिपिकर्ता का नाम अज्ञात है। पोथी में भँवरगीत पत्र क्रमांक ६५ से ७९ तक लिखा है। प्रत्येक पत्र का आकार ४.७" × ६.१" है। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग पन्द्रह-सोलह अक्षर हैं। ग्रन्थान्त में कवि की छाप नन्ददास दी गई है।

ग्रंथारम्भ में—श्री गोपीजनवल्लभाय नमः ॥ अथ नन्ददासकृत भवरगीत लिख्यते ॥ और अन्त में–इति श्री भवरगीत नन्ददासजीकृत भाषा संपूर्ण ॥ लिखा है।

इस पोथी में भँवरगीत के साथ-साथ नन्ददासजी की रासपचाध्यायी भी लिखी है, जिसमें २११ छन्द हैं और अन्त में पुष्पिका इस प्रकार है–इति श्री पंचाध्योई नन्ददासकृत समाप्त। मिती आश्विन सुदि ९, चंद्रे, संवत् १८४९।

पंचाध्यायी और भँवरगीत की लिपि एक समान है, अतः इस भँवरगीत का

लिपिकाल संवत् १८४९ मानना अनुचित नहीं है। भँवरगीत में कुल ६८ छन्द हैं, छंद क्रमांक ३६, ४८, ५०, ५१, ५३, ५५ और ५९ हस्तलेख में छूट गये हैं।

(९) भमरगीत—

इस प्रति का अनुक्रमांक ११३६, हस्तलेख क्रमांक १४७१।८६४, लिपिकाल संवत् १८९८ और लिपिकर्ता का नाम राधाकृष्ण है। कुल पत्र-संख्या ३० है। प्रत्येक पत्र का आकार ६·४"×३·६" है। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग पन्द्रह-सोलह अक्षर हैं। कवि की छाप मुकंददास है। प्रति अपूर्ण है। प्रथम पत्र नहीं है। अंतिम पृष्ठ पर टिप्पणी और पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री मुकंददास कृत भमरगीत संपूर्ण ॥ शुभं ॥ संवत् १८९८ श्री ॥ संवत् १८/९८ मिति आश्वन वदी ५ चन्द्रवासरे पुस्त लिपी राधाकृष्ण ने पठनार्थ जसराम वहोरे कु स्याम सूंद जी ॥

(१०) भ्रमरगीत—

इस प्रति का अनुक्रमांक ११३७, हस्तलेख क्रमांक १३३९/६८४ है। प्रति खंडित है। चौथे पत्र पर ७ वें छंद की तीन पंक्तियों से लेकर १८वें पत्र पर ६८वें छन्द की १½ पंक्तियाँ ही प्राप्य हैं। प्राप्त सभी छन्द भँवरगीत के हैं। आदि-अन्त के पत्र न होने के कारण ग्रन्थ का नाम, लिपिकाल, लिपिकर्ता का नाम और कवि की छाप के बारे में कुछ भी पता नहीं चलता। पोथी के पत्रों का आकार ५·६"×४·४", प्रतिपृष्ठ पंक्ति संख्या ८ और प्रतिपंक्ति अक्षर संख्या लगभग उन्नीस है।

(११) भवरगीत—

इस प्रति का अनुक्रमांक ११४०, हस्तलेख क्रमांक ११९५/९००, लिपि-संवत् १८९० और लिपिकर्ता का नाम अज्ञात है। भँवरगीत की पत्र संख्या १९ है। प्रत्येक पत्र का आकार ६"×३·९" है। प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग अठारह अक्षर हैं। ग्रन्थ के आरम्भ में कवि का नाम नन्ददास ही दिया गया है। ग्रंथारम्भ—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भवरगीत लिख्यते ॥ भवरगीत भाषा कृति स्वामी नन्ददास ॥ अंत इस प्रकार है— इति श्री नन्ददासकृत भाषा भमर-गीत संपूर्णं। शुभ। इसी पोथी में भँवरगीत के आगे सूरदासजी कृत सुदामाजी की बारहखड़ी लिखी है, जिसके अंत में पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री सूरदासकृत सुदामाजी की वारेषरी संपूर्ण ॥ संवत् १८९० मिति ज्येष्ठ वदि २ ॥ नन्ददासकृत भँवरगीत और सूरदास की बारहखड़ी की लिपि एक समान है, अतः यह मानना अनुचित नहीं है कि उक्त पोथी में लिखित भँवरगीत का लिपिकाल भी संवत् १८९० है।

(१२) भवरगीत—

इस प्रति का अनुक्रमांक ६००, हस्तलेख क्रमांक ३११३।१९५८, लिपिकाल

संवत् १८९८ और प्रतिलिपिकर्ता का नाम 'वलदेवसिंघ विराम्हरण पाटण का' है भँवरगीत के कुलपत्रों की संख्या २६ है। प्रत्येक पत्र का आकार ३·९''×५·९" है। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग दस अक्षर हैं।

मूलतः यह प्रति पाटण (गुजरात) की है। ग्रंथारम्भ इस प्रकार हुआ है– ॥ श्री गोपाल जी ॥ अब भवरगीत सं लीष्यते ॥ ग्रन्थान्त में टिप्पणी इस प्रकार है– ईति श्री भवरगीत संपूर्णम् ॥ श्री कृष्मजी ॥ यावत पुस्तकं दृष्टा ॥ तावत लिष्यते मया ॥ अथवा सुध असुधं. वा. ॥ मम दोसो न दैवते ॥१॥ भाद्रपद व्रह्मा २ ॥ मंगल-वार ॥ संवत् ॥ १८९८ ॥ का ॥ लिषतं कृतं ॥ वलदेवसिंघ विराम्हण पाटण का ॥ पठनार्थ शुभं भूयात् ॥

वलदेवसिंहजी ने किस प्रति से नकल क थी, इसका प्रतिलिपि में कहीं भी उल्लेख नहीं है।

(१३) भ्रमरदूत–

इस प्रति का अनुक्रमांक ११४१ और सस्तलेख क्रमांक ५३३/३८ है। प्रति खंडित है। इसके पत्र क्रमांक २ से २० तक भँवरगीत के छन्द क्रमांक २ से ५३ तक प्राप्य हैं। लिपिकाल, लिपिकर्ता आदि का कोई विवरण नहीं है। पत्रों का आकार ६·८''×४·३'' है। प्रतिपृष्ठ पंक्ति-संख्या ७ है और प्रत्येक पंक्ति में लगभग पन्द्रह अक्षर हैं।

(ख) याज्ञिक संग्रहालय की प्रतियाँ—

स्वर्गीय पं० मयाशंकरजी याज्ञिक के अनुज डॉ० भवानीशंकरजी याज्ञिक, ८ शाह नजफ़ रोड, लखनऊ ने अपने निवास स्थान पर मुझे याज्ञिक-संग्रहालय में विद्यमान भँवरगीत की ११ हस्तलिखित प्रतियों की सूचना दी थी, जो सम्प्रति नागरी प्रचारिणी सभा के याज्ञिक-संग्रहालय में विद्यमान हैं। याज्ञिक-संग्रहालय की इन ग्यारह प्रतियों का विवरण इस प्रकार है—

(१४) भमरगीत–

इस प्रति का अनुक्रमांक ६९५ औरह स्तलेख क्रमांक ४५७/३४ हैं। पोथी के पत्र क्रमांक ३९ से ५२ तक भमरगीत लिखा है। प्रत्येक पत्र का आकार ४·४''×६·१'' है और प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियाँ हैं। प्रत्येक पंक्ति में लगभग तेरह अक्षर हैं। अंतिम छन्द क्रमांक ७५ में कवि की छाप नन्ददास है। ग्रंथान्त में सूचना इस प्रकार है—

भ्रमर कों जो पढ़े, सुने सकल चित लाय: ॥
ताकों श्री जदूबीरजी, निसदिन रहेत सहाय: ॥७६॥

ईति श्री नन्ददासजी कृत भमरगीत संपुरणं ॥श्री गोपीजन बल्लभाय नम।

(१५) भवरगीत—

इस प्रति का अनुक्रमांक ७०४, हस्तलेख क्रमांक ७०० (घ)। १४, लिपिकाल संवत् १८८८ व लिपिकर्ता का नाम कालीदास ब्राह्मण है। पोथी में भवरगीत पत्र क्रमांक ४४ से ८० तक लिखा है। प्रत्येक पत्र का आकार ५" × ३·२" है। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग तेरह अक्षर हैं। ग्रंथ के अन्त में कवि की छाप कवीमुकुंद दी गई है। पोथी अत्यन्त अशुद्ध और खंडित है। पत्र क्रमांक ६४, ६५, ६६ आधे-आधे फटे हैं। अंतिम छन्द की संख्या ७३ है, जिसका पाठ इस प्रकार है—

गोपी आप दिखाय एक करिके वन चारि।
उधव को भरम निवारि डारि विमोह की जारी ॥
आपन रूप दिखाय के लीनों बहुरि दुराय। प्रेम रस पुंजनी ॥७३॥
इति श्री भवरगीत कबी मुकुन्द विरचितं सपूणं समाप्त ॥शुभं भवतु ॥

पोथी के अंत में दी गई पुष्पिका इस प्रकार है—

संवत् १८८८ वैसाख कृष्म ५ शनिवासरे लिखीतं चं. ब्राह्मामण कालीदास लखाइतं च गुजर देवकसन बाचवा...ही श्री कृष्म बंचजौ पोथी देवकसन की ॥

(१६) भवरगीत—

इस प्रति का अनुक्रमांक ७०० और हस्तलेख क्रमांक १६५।५६ है। कुल १८ पत्र उपलब्ध हैं। १८वें पत्र पर ७५वें छन्द की चौथी पंक्ति का पूर्वार्द्ध यथा-नन्ददास पावन भयो—ही उपलब्ध है। इसके आगे—जो यह लीला गाय ॥७५-पण्डित मयाशंकरजी ने अपने हाथों से लिखा है। अस्तु, मूल प्रति के अनुसार इस भवरगीत में कवि की छाप नन्ददास है। लिपिकाल और लिपिकर्ता का पता नहीं है। पोथी के पत्रों का आकार ६·५" × ५·१" है। अलग-अलग पृष्ठों पर पंक्तियाँ कम से कम ९ और अधिक से अधिक १२ हैं। प्रत्येक पंक्ति में लगभग चौदह अक्षर हैं। सारी रचना का पाठ परम भ्रष्ट है, यथा छन्द ६६ की प्रथम दो पंक्तियाँ देखिये—

प्रसत पाघ सबहित मैं प्रथम ही निवास्यो।
अङ्ग संग्या करत निदहौ सबहीन डासो ॥

(१७) भवरगीत—

इस प्रति का अनुक्रमांक ७०३, हस्तलेख क्रमांक ३३५।५६ और लिपिकाल संवत् १८५७ है। लिपिकर्ता ने अपना नाम नहीं लिखा है। अंतिम छन्द में कवि की छाप जनमुकंद है। पोथी खंडित है। प्रारम्भ के ६ छन्द नहीं हैं। पत्र क्रमांक ३ से २६ तक २४ पत्रों में केवल ६९ छन्द ही लिखे हैं। पोथी के पन्नों का

आकार ४.७" × ४.५" है। प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग तेरह-चौदह अक्षर हैं। ग्रन्थान्त में पुष्पिका है—ईती श्री भवरगीत संपूर्णः संवत् १८५७।

यह प्रति मारवाड़ियों की खातावही की तरह लिखी गई है। प्रतिलिपिकार ने पूरे पृष्ठ पर एक ही शिरोरेखा खींचकर गुजरातीनुमा देवनागरी अक्षर लिखे हैं, जिनके आधार पर यह कल्पना की जा सकती है कि इस प्रति के लिपिकार कोई गुजराती या मारवाड़ी सज्जन रहे होंगे।

(१८) भँवरगीत—

इस प्रति का अनुक्रमांक ७०५, और हस्तलेख क्रमांक ५५६।५६ है। पोथी में भँवरगीत पत्र क्रमांक ५१ से ६३ तक लिखा है। प्रत्येक पत्र का आकार ६·५" × ५·३" है। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग इक्कीस-बाईस अक्षर हैं। ६३वें पत्र पर ७१वाँ छन्द अपूर्ण है। अतः कवि की छाप, प्रतिलिपिकर्ता का नाम और लिपिकाल अलभ्य है। प्रायः सभी पत्रों को नीचे की ओर से दीमक खा गई है। प्रारंभ में केवल श्रीराधाकृष्मायाँ नमः॥ अथ भवरगीत लिष्यते॥ लिखा है।

(१९) भवरगीत—

इस प्रति का अनुक्रमांक ७०२ तथा हस्तलेख क्रमांक १६८।५६ है। प्रारम्भ के दो पत्र नहीं हैं, अतः प्रति खंडित है। प्रतिलिपिकर्ता का नाम और प्रतिलिपि का काल भी कहीं नहीं लिखा है। अंतिम पृष्ठ क्रमांक १८ पर कवि की छाप नंददास दी गई है। पत्रों का आकार ६·५" × ४·२" है। प्रत्येक पृष्ठ पर लगभग ८ या ९ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग १९-२२ अक्षर हैं। लिपि भ्रष्ट है। उदाहरणार्थ ७५ वें छंद की अन्तिम दो पंक्तियाँ और पुष्पिका देखिए—

> **अपनें स्वारथ के लीए गीत भर सूनात।**
> **नंददास पावन भयेः यह सुभ लीला गाय :**
> **पाय रस प्रेम को ॥७५॥**

ईति श्री नंददास विरंचितं भवगीत संपूण सुभं मस्तु श्री॥

(२०) भवरगीत—

इस प्रति का अनुक्रमांक ६९९ और हस्तलेख क्रमांक १८४/३३ है। इस पोथी में भँवरगीत पृष्ठ क्रमांक १०६ से १०९ तक लिखा है। प्रति अपूर्ण है। पृष्ठ क्रमांक १०९ तक केवल ४६ छंदहैं। टेक नारंगी स्याही से और शेष छंद काली स्याही से लिखे हैं। पूरी पोथी में लिपिकाल और लिपिकार का पता नहीं है। पत्रों का आकार

१०·२"×६·४" है। प्रत्येक पृष्ठ पर ३१ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग २३ अक्षर हैं। प्रारंभ में श्रीरामजी सहाय ।। अथ भवरगीत लिष्यते ।। लिखा है।

(२१) भवरगीत—

इस प्रति का हस्तलेख क्रमांक ६८/१३ है। पोथी में पत्र क्रमांक ७८ से ८५ तक नंददास कृत स्याम सगाई और पत्र क्रमांक १०३ से १२४ तक भवरगीत लिखा है। अंतिम छंद में नंददास की छाप है तथा पुष्पिका में—इति श्री नंददास वीरचितं भवरगीत संपूर्ण ।। शुभं ।। मस्तु ।। लिखा है ! लिपिकाल और लिपिकर्ता का उल्लेख नहीं है। पत्रों का आकार ६"×५" है। प्रत्येक पृष्ठ पर ९ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पक्ति में लगभग चौदह अक्षर हैं।

(२२) भवरगीत—

इस प्रति का हस्तलेख क्रमांक २८/१४ है। पोथी में पत्र क्रमांक ३५ से ४८ तक नंददास कृत स्याम सगाई और पत्र क्रमांक ५५ से ९० तक भँवरगीत लिखा है। अंतिम छंद में कवि की छाप नंददास है। पत्रों का आकार ६·५"×५·२ है। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग तेरह अक्षर हैं। ग्रंथान्त में पुष्पिका इस प्रकार है— इती श्री नंददास क्रत भवरगीत संपूरनं ।। सुभं मस्तु ।। मीती आसोज सुदी ।।२।। संमत १९१० ।। हम आक्ष परमा मिसुर के पठनार्थ लाला सीतलदास श्री अटलबिहारी सहाय राषै सुभं मस्तु ।। गोपालजी ।।

पुष्पिका के अनुसार इस प्रति के लिपिकर्ता कोई परमा मिश्र थे, जिन्होंने संवत् १९१० में लाला सीतलदास के पठनार्थ उक्त प्रतिलिपि तैयार की थी।

(२३) भवरगीत—

इस प्रति का हस्तलेख क्रमांक १६६/५६ है। कुल पत्र संख्या १३ है। पत्रों का आकार ८·६" × ३·८" है। प्रत्येक पृष्ठ पर ९ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग चौबीस अक्षर हैं। ग्रंथ के अंत में कवि की छाप जनमुकुंद दी गई है। लिपिकाल और लिपिकर्ता का नाम कहीं नहीं लिखा गया है।

(२४) भवरगीत—

इस प्रति का अनुक्रमांक ६९६ और हस्तलेख ८००/५६ है। सभा के रजिस्टर में भूल से इसका हस्तलेख क्रमांक ८००/१४ लिखा गया है। इस प्रति में २६ पत्र हैं। पत्रों का आकार ६·८"×६" है। प्रत्येक पृष्ठ पर ७ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग पन्द्रह अक्षर हैं। अंतिम छंद की चौथी पंक्ति में 'नंददा पावन भये, यह लीला सुभ गाई' लिखा है। 'नंददा' के ऊपर की ओर किसी ने 'स' लिखकर कवि की छाप

नंददास पूर्ण कर दी है। इसके अतिरिक्त इस प्रति में लिपिकाल और लिपिकर्ता का कोई पता नहीं है।

(ग) वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय का प्रतियाँ—

(२५) भ्रमरगीत–

इस प्रति का अनुक्रमांक ५५२७ और हस्तलेख क्रमांक ४६२७६ है। इस प्रति के पत्र क्रमांक ५ से १२ तक केवल ८ पत्र हैं, जिन पर छंदक्रमांक ८ से ५१ तक लिखे हैं। पत्रों का आकार ४·८'' × ६·६'' है। प्रत्येक पत्र पर १५ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग चौदह अक्षर हैं. विवरण-पुस्तक में इस प्रति का नाम भ्रमरगीत और कवि का नाम नंददास लिखा है।

(२६) उद्धव शतक–

इस प्रति का अनुक्रमांक ५४६० और हस्तलेख क्रमांक ४६२२१ है। कुल मिलाकर प्रारंम्भ के ४ पत्र उपलब्ध हैं, जिनमें छंद क्रमांक १ से २३ तक पूर्ण और २४ वाँ छंद अपूर्ण है। पत्रों का आकार ६·६'' × ५·३'' है। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग अठारह अक्षर हैं।

कदाचित् छंदों के वर्ण्य-विषय के आधार पर विवरणकार ने अपनी कल्पना से ग्रंथ का नाम उद्धव शतक लिखा है। मूलतः यह भँवरगीत है। मुद्रित विवरण में कवि का नाम नंददास छपा है।

(घ) निजी संग्रहालयों की प्रतियाँ—

१. श्री रामरत्न पुस्तक भवन की प्रति—

(२७) भवरगीत—

श्री रामरत्न पुस्तक भवन के संस्थापक श्री मुरारीलालजी केडिया, १४/११ नंदनसाहू लेन, वाराणसी-१ के निजी संग्रह में भँवरगीत की एक प्रति है, जिसका क्रमांक ३ है। इस प्रति में १६ पत्र हैं। प्रत्येक पत्र का आकार ५·६'' × ४·४'' है। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग उन्नीस-बीस अक्षर हैं। अंतिम छंद में कवि की छाप जनमुकुंद दी गई है, तथा पुष्पिका में लिपिकाल की सूचना इस प्रकार है—इती श्री भमरगीत जनमुकंदकृत संपूर्ण। मिती चैत्र सुदी ११, संवत् १८८६ उँ। इस प्रति में लिपिकर्ता का उल्लेख नहीं है।

२. बाबू ब्रजरत्नदासजी की प्रति—

(२८) भमरगीत—

बाबू ब्रजरत्नदासजी, बी० ए०, एल-एल० बी० १५/४, बी, चौक सुड़िया, वाराणसी-१, के निजी संग्रहालय में हस्तलिखित ग्रंथ क्रमांक ५२ से ५७ तक एक ही

जिल्द में बँधे हैं। इस पोथी में हरिरायकृत सनेहलीला, जनमुकंदकृत भँवरगीत, नरोत्तमदास कृत सुदामा चरित, दासकुंजकृत उषाचरित्र, नजीर के पद, चतुर्भुजदासकृत गोवर्धन लीला, और केसोदासकृत जोगलीला संकलित हैं। इस पोथी में भँवरगीत पत्र क्रमांक १४ से ३० तक लिखा है। पत्रों का आकार ५″×६·२″ है। प्रत्येक पत्र पर १२ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग तेरह-चौदह अक्षर हैं। छंद क्रमांक ७५ में तथा पुष्पिका में कवि की छाप जनमुकंद दी गई है। यथा पुष्पिका—इती श्री भमरगीत जनमुकंद कृत संपूर्ण ॥ केसोदास की जोग लीला की समाप्ति के बाद पत्र क्रमांक ९३ पर पोथी की प्रतिलिति का काल व अन्य विवरण इस प्रकार है–मिती दुतिय ज्येष्ट वदि ॥३०॥ मंगलवार संवत् १८९५॥ या द्रश लिषतं दृष्टा तादृशं लिषित मया ॥ यत सुद्धं न सुद्धं व मम द्रोस न दीयते ॥१॥ लिषितं श्री गोकुल मध्ये ब्राह्मण शालिग्राम ॥ जो बाँचें ताकूँ जें सी कृष्म जें गोपाल ॥२॥ श्र ॥ श्र ॥

हस्तलेख की एक रूपता के आधार पर उक्त भँवरगीत के प्रतिलिपिकर्ता गोकुल निवासी श्री शालिग्राम ब्राह्मण और लिपिकाल सवत् १८९५ मानना अनुचित नहीं होगा।

२. प्रयाग की प्रतियाँ—

(क) हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग की प्रतियाँ—

(२९) भवरगीत—

इस प्रति का अनुक्रमांक १४६६, हस्तलेख क्रमांक २६१२, लिपिकाल संवत् १९०४ और लिपिकर्ता का नाम भवरदास दादूपंथी है। कुल पत्र संख्या २१ है। प्रत्येक पत्र का आकार ६·३″×३·९″ है। प्रत्येक पृष्ठ पर ७ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग उन्नीस अक्षर हैं। अंत में छंद संख्या ७३ से ७५ तक एक पत्र नहीं है। सम्मेलन को यह प्रति श्री शिवदत्त नागर बूँदी से प्राप्त हुई है। ग्रंथान्त में पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री नंददास विरचितं भवरगीत सपूर्ण ॥श्लोक ॥ संख्या ॥१७९॥ मतीं मादवा बुधि ॥ २॥कृष्मपषे संवत ॥१९०४॥ लिखतं भवरदास दादूपंथी ॥ जौ कोई साक्ष बांध बिचारै तिसकों डंडौत प्रणमन्मस्कार बंचणाँ ॥ बीनती सहत ॥ नुंश्चयादैन्म ॥

(३०) भवरगीता—

इस प्रति का अनुक्रमांक १३५१, हस्तलेख क्रमांक २१३०, लिपिकाल सवत् १८१३ और लिपिकर्ता का नाम अज्ञात है। पुस्तक के दो नाम दिये गये हैं—भवरगीता और प्रेमरस पुंजनी कथा। ग्रंथारम्भ में श्री राधावल्लभो जयति ॥ अथ भवरगीता लिख्यते। प्रेम रस पुंजनी ॥" लिखा है और ग्रंथान्त में पुष्पिका इस प्रकार है–इति

श्री प्रेमरसपुंजनी कथा संपूरणं समापतं ।। संवत् १८१३ श्रावण शुदि ८ भौमवासरे ।।

इस प्रति में कुल छंद-संख्या ७२ है । अन्य प्रतियों में प्राप्त छंद संख्या ३२, ३३ और ५७ इसमें नहीं हैं । अन्तिम छंद में कवि की छाप जनमुकुंद दी गई है । लिपिकर्ता का नामोल्लेख नहीं है । कुल पत्र संख्या ७६ है । प्रत्येक पत्र का आकार ५.८''×५.६'' है । प्रत्येक पृष्ठ पर ग्यारह या बारह पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग चौदह-पन्द्रह अक्षर हैं ।

(३१) प्रेम रस पूजनी लीला–

इस प्रति का अनुक्रमांक १३३६ और हस्तलेख क्रमांक २०६३ है । लिपिकाल और लिपिकर्ता का उल्लेख नहीं है । पोथी खंडित है । कुल पत्र संख्या ११ है । प्रत्येक पत्र का आकार ५.८''×६'' है । प्रत्येक पृष्ट पर १८ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में अक्षर संख्या लगभग चौदह है । प्रथम पत्र नहीं है, अतः प्रारम्भ के सात छंद नहीं हैं । छन्दों की संख्या नहीं दी गई है । ग्रंथान्त में कवि की छाप जनमुकंद दी गई है । टिप्पणी इस प्रकार है–

इति श्री मुकंददास विरचिते प्रेम रस पूजनी लीला संपूर्णः ।।

पोथी के रेपर पर 'विशेष' लिखा है—भ्रमरगीत नन्ददास कृत है, परन्तु उसमें नाम मुकुंददास का दिया है—भाषा आदि उत्तम है—श्लो० सं० १६०, वि० ६''× ६''—नन्ददास और मुकुंददास एक ही व्यक्ति हैं ।

(ख) राजकीय अभिलेखागार, इलाहाबाद की प्रतियाँ––

राजकीय अभिलेखागार, उत्तरप्रदेश, ५३, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद के हस्तलेख संग्रहालय में भ्रमरगीत की दो हस्तलिखित प्रतियाँ हैं, जिनका विवरण निम्नानुसार है—

(३२) भुवरगीत–

इस प्रति का अनुक्रमांक ३४६२ है ग्रंथ का नाम भुवरगीत और कवि की छाप नन्ददास है । कुल पत्रों की संख्या १० है । प्रत्येक पत्र का आकार १०.६''×४.५'' है । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग इकतीस अक्षर हैं । ग्रंथान्त में पुष्पिका है । —इति श्री नन्ददास विरचित भुवरगीत संपूर्ण समाप्तमिदम् ।। अभिलेखागार को यह प्रति श्री चन्द्रशेखर पाठक मथुरा से प्राप्त हुई ।

(३३) भ्रमरगीत–

इस प्रति का अनुक्रमांक २६८३ है । ग्रंथ का नाम भ्रमरगीत और कवि की छाप नन्ददास है । कुल पत्रों की संख्या १३ है । प्रत्येक पत्र का आकार ५.४''×३.६'' है । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियाँ है और प्रत्येक पंक्ति में लगभग ३६ अक्षर हैं । यह

प्रति श्री रामकृष्ण टंडन, इलाहाबाद से अभिलेखागार को प्राप्त हुई है।

अभिलेखागार की दोनों प्रतियों में लिपिकाल और लिपिकर्ता का पता नहीं है।

३. आगरा की प्रति—

(३४) भवरगीत—

श्री क० मु० हिन्दी तथा भाषा-विज्ञान विद्यापीठ आगरा में बंध संख्या ५०१ के अन्तर्गत एक ही पोथी में भँवरगीत, सनेहलीला, साठिक, बागचेत, शृंगारचेत, उन्तिम चरित्र और (नंददासकृत) रासपंचाध्यायी की प्रतिलिपियाँ प्राप्त हैं। भँवरगीत का प्रतिलिपिकाल सवत् १८७४ है और लिपिकर्ता का नाम ललू दौलतिरामजू दिया गया है। भँवरगीत की पत्र-संख्या १६ है और प्रत्येक पत्र का आकार ६·२"× ४·४" है। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग उन्नीस-बीस अक्षर हैं। ग्रंथारम्भ में—श्री गणेशाय नमः ।। श्री सरस्वत्यै नमः ।। अथ भवरगीत लिपते ।। लिखा है। अंतिम छंद में कवि की छाप जनमकुंद दी गई है और पुष्पिका इस प्रकार है–इति प्रेम रस पूजनी लीला संपूर्न ।। समाप्तं ।। संवतु ।। १८७४ ।। सके ।। मिति भाद्र शुक्लो एकदम्या ११ ।। रविवासरे ।। याद्रशं पुस्तकं द्रष्टा ताद्रशं लिपतं माया ।। यद शुद्धमसुद्ध वा मम दोषों न धीयते ।। लिषतं ललू दौलतिरामजू ।। श्री रामजू ।। श्री ।।

४. भरतपुर की प्रतियाँ—

(क) जिला पुस्तकालय, भरतपुर का प्रतियाँ—

इस पुस्तकालय में भरतपुर स्टेट पब्लिक लायब्रेरी, जनरल कैटेलॉग में क्रम संख्या १७७, १८५, १९२, २०६, २२४, २५२, २५६ और २७१ पर ग्रंथ का नाम भँवरगीत दिया गया है। इनमें से ग्रंथ संख्या १९२ (भँवरगीत–किशोरीअली) तथा ग्रंथ संख्या २०६ (भँवरगीत–नन्ददास) हस्तलिखित विभाग में अप्राप्य हैं। शेष ६ प्रतियों का विवरण इस प्रकार है—

(३५) भवरगीत—

इस प्रति का अनुक्रमांक १७७ है। पोथी में भवरगीत पत्र क्रमांक ५४ से ७० तक लिखा है। कवि की छाप जनमुकुंद है। लिपिकाल और लिपिकर्ता का कहीं भी उल्लेख नहीं है। पत्रों का आकार ६·१"×६·२" है। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग बारह-तेरह अक्षर हैं।

(३६) भमरगीत

इस प्रति का अनुक्रमांक १८५ है। पोथी में भमरगीत पत्र क्रमांक १५९ से

१६८ तक लिखा है। कवि की छाप जनमुकुंद है। लिपिकाल और लिपिकर्ता का कहीं भी उल्लेख नहीं है। पत्रों का आकार ११.४" × ७" है। प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग चौदह-पन्द्रह अक्षर हैं।

(३७) भवरगीता

इस प्रति का अनुक्रमांक २२४/क है। पोथी की प्रथम रचना ही भवरगीत है, जो खंडित है। इसमें प्रारम्भ के सात पत्र और ३९ छंद नहीं हैं। शेष पत्र क्रमांक ८ से १३ तक छंद-क्रमांक ४० से ७५ तक प्राप्य हैं। अंतिम छंद में कवि की छाप नन्ददास है। अंत में पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री भवरगीता सपूरर्ण सभं भूयात् मंगलं दधात् ॥ इस प्रति के पृष्ठों का आकार-प्रकार ७ ३" × ५.८" है। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग उन्नीस-बीस अक्षर हैं।

(३८) भवरगीत—

इस प्रति का अनुक्रमांक २५२/क है। पोथी में भवरगीत पत्र क्रमांक ३४ से ५५ तक लिखा है। अंतिम छन्द में कवि की छाप जनमुकंद दी गई है। भँवरगीत के बाद पत्र क्रमांक ५५ से ५९ तक शिव की अस्तुति लिखी है। उसके बाद पुष्पिका है—इति श्री शिव की अस्तुति संपूर्णः ॥ शुभं भूयात् ॥ श्री रस्तू ॥ हस्ताक्षर मिश्र बल्ला के लिषाइतं लाला षुस्यालीराम जाति बैस्य काँमरि मध्ये मिती कार्तिक शुक्ला २, चन्द्रवासरे संवत् १८९१।

दोनों रचनाओं की लिपि की एकरूपता के कारण भँवरगीत का लिपिकाल संवत् १८९ और लिपिकर्ता का नाम बल्ला मिश्र मानना अनुचित न होगा।

इस पोथी के पत्रों का आकार ६.४" × ५.१" है। प्रत्येक पृष्ठ पर सात पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग अठारह अक्षर हैं। लिपिदोष की दृष्टि से यह रचना अत्यंत अशुद्ध है।

(३९) भवरगीत—

इस प्रति का अनुक्रमांक २५६/क है। भँवरगीत प्रारम्भ के ११ पत्रों में लिखा गया था, जिसमें से प्रारम्भ के दो पत्र नहीं हैं। अंतिम छन्द में कवि की छाप जनमुकंद दी गई है। पत्रों का आकार ६.५" × ४.७" है। प्रत्येक पत्र पर ९ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग सोलह अक्षर हैं। इस प्रति में लिपिकाल और लिपिकर्ता का उल्लेख नहीं है। प्रति खण्डित है।

(४०) भवरगीत लीला—

इस प्रति का अनुक्रमांक २७१/क है। पोथी में भँवरगीत पत्र क्रमांक १३९ से

१६६ तक लिखा है । अंतिम छन्द में कवि की छाप जनमुकुंद दी गई है और पष्पिका है—इति श्री भवरगीत लीला संपूर्ण ॥ शुभं ॥

भँवरगीत के पूर्व चत्रभुजदास कृत मधुमालती की कथा लिखी है, जिसके अंत में इस प्रकार की टिप्पणी है—इती श्री मधुमालती की कथा संपूर्ण, शुभं संवत् १८८६ मार्गसिर वदि ७, बुधवासरे, लिषतं मीसर गोवर्द्धन अषैढ़ मध्ये ॥ श्री कृष्मयनम ॥

लिपि की एकरूपता के आध.र पर उक्त भँवरगीत का लिपिकाल संवत् १८-८६ और लिपिकार का नाम गोवर्द्धन मिश्र मानना चाहिए ।

इस प्रति के पत्रों का आकार ६·५'' × ५·६'' है । प्रत्येक पृष्ठ पर ७ पंक्तियाँ हैं और प्रत्यक पंक्ति में लगभग बारह-तेरह अक्षर हैं । इस प्रति में छन्द क्रमांक ५७ छूट गया है और प्रतिलिपिकर्ता ने भूल से छन्द क्रमांक ५६ को ही ५७ लिखा है ।

(ख) स्टेट म्यूजियम की प्रति—

(४१) भमरगीत—

स्टेट म्यूजियम भरतपुर के शो केस में भँवरगीत की एक हस्तलिखित प्रति है, जिसके प्रथम और अन्तिम पृष्ठ पर किसी ने नीली स्याहो से नं० १०१२ लिखा है । कुल पत्रों की संख्या ३६ है । प्रत्येक पत्र का आकार ५·५'' × ४·२'' है । प्रत्येक पृष्ठ पर छः पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग बारह अक्षर हैं । अंतिम छन्द में कवि की छाप जनमुकंद दी गई है, जिसके बाद पुष्पिका है–इति श्री भमरगीत नन्ददासकृत संपूर्ण ॥ मीति कार्तिक सुदी ॥१०॥ संवत् १८६० ॥

इस प्रति में अनेक स्थलों पर छन्दों की संख्या गलत है । यथा—पत्र क्रमांक ४ पर छन्द संख्या ७ के बाद ८ के बदले में फिर ७ ही लिखी है । पत्र १६ पर छन्द संख्या ३७ के बाद पत्र २० पर छन्द संख्या ३८ के स्थान पर ३६ लिखी है, पत्र ३३ पर छन्द संख्या ६३ के बाद छन्द संख्या ६५ दी गई है । इसके बाद वाले छन्द को ६६ के बजाय ५६ लिखा है । पत्र ३७ पर छन्द संख्या ७१ के बाद फिर ७१ लिखी है । पत्र ३८ पर ७२ के बाद छन्द संख्या ७४ दी है और अन्तिम छन्द संख्या ७५ के बदले ७६ है ।

(ग) निजी संग्रहालयों की प्रतियाँ—

(४२) भवरगीत—

श्री विद्याधरजी पुरोहित, पुरोहित मोहल्ला, भरतपुर के निजी संग्रहालय में भँवरगीत की एव हस्तलिखित प्रति है, जिसकी ग्रंथ संख्या ५८ है । इस प्रति में ४१ पत्र हैं । पत्रों का आकार ५·२'' × ३·४'' है । प्रत्येक पत्रपर ५ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग तेरह-चौदह अक्षर हैं । अन्तिम छन्द में कवि की छाप जनमुकुंद है ।

लिपिकाल और लिपिकर्ता का उल्लेख नहीं है।

(४३) भवरगीत—

श्री प्रमुलालजी गोयल, ग्रंथपाल, श्री भरतपुर हिन्दी साहित्य समिति के निजी संग्रह में भँवरगीत की एक हस्तलिखित प्रति है। इस प्रति में १५ पत्र हैं। प्रत्येक पत्र का आकार ७·७''×४·४'' है। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग इक्कीस अक्षर हैं। अंतिम छन्द में कवि की छाप जनमुकद है। ग्रन्थान्त में टिप्पणी इस प्रकार है —इति श्री जनमुकुंद कृत्य प्रेमरसपुंजनी लीला संपूर्ण शुभं ॥

५. नाथद्वारा की प्रति–

(४४) भमरगीत—

विद्यामंदिर, निज पुस्तकालय, श्रीनाथद्वारा के भाषा बन्ध ६६, ग्रन्थ-संख्या १ प १३४ में भँवरगीत की एक प्रति है, जिसकी प्रतिलिपि प्रारम्भ के ४४ पत्रों में की गई है। पत्रों का आकार ६·५''×५·३'' है। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पक्ति में लगभग दस-ग्यारह अक्षर हैं। अंतिम छंद में कवि की छाप नन्ददास दी गई है। भँवरगीत के वाद पत्र ४४ पर ही अथ नन्ददासकृत पंचध्याई भाषा लिष्यते ॥ राग काफी ॥ लिखा है और आगे नन्ददासकृत रास पंचाध्यायी की प्रतिलिपि शुरू हो गई है।

(४५) भवरगीत–

विद्यामन्दिर, निज पुस्तकालय, श्रीनाथद्वारा के भाषा बन्ध ६२ में ग्रन्थ संख्या ११ के अन्तर्गत भँवरगीत की एक प्रति है। इसका लिपिकाल संवत् १६१७ और लिपिकार का नाम गणेश महावनिया है। पोथी में कुल ४० पत्र हैं। प्रत्येक पत्र का आकार ७·५''×५·६'' है। सामान्यतः प्रत्येक पृष्ठ पर ७-८ पंक्तियाँ हैं। प्रत्येक पंक्ति में लगभग नौ अक्षर हैं। हस्तलिखित प्रति के प्रथम पत्र के पूर्व किसी ने उस पत्र पर लिखे हुए छन्दों की प्रतिलिपि करके चिपका दी है। लिपि-दोष अधिक हैं। अंतिम छन्द में कवि की छाप जनमुकंद है। ग्रन्थान्त में टिप्पणी इस प्रकार है—इति श्री भवरगीत सूंपूर्णम् संवत् १६१७ मिति पोस वदि १२ लिखत गणेश महावनीया जो वाचे ताकु हमारे भगवत सुमरण वंच जो श्रीमत कल्याण मस्तुः ॥

कांकरौली की प्रति–

(४६) भ्रमरगीत—

विद्याविभाग काँकरौली से प्राप्त सूचना के अनुसार जब मैं काँकरौली पहुँचा तब गोस्वामी श्री व्रजेशकुमार जी ने मुझे यह बतलाया कि उक्त प्रति बड़ौदा चली गई है, अतः मैं उस प्रति को स्वयं नहीं देख पाया। तदनंतर गोस्वामी श्री व्रजेश-

कुमार जी ने बैठक, मदन झाँपा, बड़ौदा से दिनांक ८ अप्रैल १९६६ को उक्त प्रति की एक टंकित प्रतिलिपि मेरे पास भेजने की कृपा की। प्रतिलिपि पर दी गई सूचना के अनुसार श्री द्वारकेश पुस्तकालय काँकरौली में हिन्दी-साहित्य, पद्यकाव्य के अन्तर्गत बन्ध क्रमांक ५० में उक्त भँवरगीत की पुस्तक संख्या ५ है। अंतिम छन्द संख्या ७५ में कवि की छाप नन्ददास है और ग्रन्थान्त में–इति श्री नन्ददासजी कृत भ्रमरगीत भाषा में सम्पूर्ण-लिखा है।

अपने पत्र में गोस्वामीजी ने लिखा है कि—पुस्तक पर लेखन संवत् तो नहीं दिया है, विशेष प्राचीन तो नहीं है, तथापि १००-१५० वर्ष के बीच का अनुमान होता है।

इस प्रति में लिपिकर्ता का भी उल्लेख नहीं है। भाषा परिष्कृत है और प्रत्येक छन्द की चतुर्थ पंक्ति में द्वितीय चरण के पर्व, 'हो' शब्द अधिक है। यथा–

(१)

ऊधौ कौ उपदेस सुनौ ब्रजनागरी,
रूप सील लावन्य सबै गुन आगरी;
प्रेमधुजा रस रूपिनी, उपजावत सुख पुंज,
सुन्दर स्याम बिलासिनी, हो, नव बृंदावन कुंज,
—सुनौ ब्रजनागरी ।।

इसी प्रकार सभी छन्दों में चतुर्थ पंक्ति में रेखांकित, हो, टेक प्रयुक्त है, जो इस प्रति की निजी विशेषता है।

७. वृन्दावन की प्रतियाँ—

(क) शुद्धाद्वैत पुस्तकालय की प्रति––

(४७) भमरगीत–

श्री शुद्धाद्वैत पुस्तकालय, श्री सत्यनारायण मंदिर, अठखंभा, वृन्दावन में इस प्रति का हस्तलिखित ग्रन्थ क्रमांक २८ है। इस पोथी में भँवरगीत के पूर्व हरिरायजी कृत सनेहलीला, बालकृष्णकृत परतीत परीक्षा और नन्ददासकृत स्याम सगाई हैं भँवरगीत १ से १३ पत्रों तक लिखा है। पत्रों का आकार ५·४''×५·८'' है। प्रत्येक। पृष्ठ पर १३ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग सोलह-सत्रह अक्षर हैं। अन्तिम छन्द में कवि की छाप नन्ददास है। टिप्पणी है–इति श्री भमरगीत नन्ददासकृत संपूर्ण। लिपिकाल और लिपिकर्ता का उल्लेख नहीं है।

(ख) श्री राधाचरण पुस्तकालय की प्रतियाँ–

श्री राधाचरण पुस्तकालय, श्रीषड्भुज महाप्रभुजी का मन्दिर, राधारमण घेरा,

वृन्दावन का प्राचीन नाम श्रीकृष्ण चैतन्य पुस्तकालय था। इस पुस्तकालय में २२ बस्तों में अनेक प्राचीन ग्रन्थ बँधे हैं, जिन्हें खोलकर देखने के बाद लेखक को भँवरगीत की तीन हस्तलिखित प्रतियाँ मिलीं, जिनका विवरण इस प्रकार है—

(४८) भँवरगीत—

यह आदि और अंत से खंडित प्रति है। प्रारम्भ के ११ पत्र नहीं हैं। पत्र संख्या १२ से १८ तक छन्द २७ के अन्तिम शब्द 'वासनि' से छन्द ४६ के 'जीन परसें मम पांव रे, गयों स्याम रस' तक पाठ उपलब्ध है। ऐसी दशा में ग्रन्थ का नाम, कवि की छाप, लिपिकाल और लिपिकर्ता का नाम अज्ञात है। उपलब्ध पत्रों का आकार ६·५"×४·८" है। प्रत्येक पृष्ठ पर ७ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में लगभग चौदह-पन्द्रह अक्षर हैं।

(४९) भवरगीत—

इस प्रति में १९ पत्र थे, जिनमें से प्रथम पत्र नहीं है। पत्र क्रमांक २ से ६ तक बाँयी ओर ऊपरी भाग सड़ गया है, अतः ये पृष्ठ खंडित हैं। अंतिम छन्द में कवि की छाप जनमुकुंद दी गई है, तथा पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री भवरगीत संपूर्ण ॥ मासोत्तमेमासे ज्येष्ठ मासे कृष्म पक्षे तिथौ त्रयोदश्यां बुधवासरे ॥ सवत् ॥ १९११ ॥ राम इदं पुस्तकं लिषितं दुवे शिवलालजी ॥ ॥ यादृशी पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशी लिखितं मया ॥ यदि शुद्धमशुद्ध वा मम दोषो न दीयते ॥१॥ रामः ॥

उक्त पुष्पिका के अनुसार इस प्रति का लिपिकाल संवत् १९११ और लिपिकर्ता का नाम शिवलाल दुबे है। इस प्रति के पत्रों का आकार ६·४"×५" है। प्रत्येक पृष्ठ पर ९ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग सोलह अक्षर हैं।

(५०) भवरगीत—

इस प्रति में २० पत्र हैं। प्रत्येक पत्र का आकार ६·६"×३·७" है। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग तेईस अक्षर हैं। अन्तिम छन्द में कवि की छाप जनमुकुन्द दी गई है। अन्त में पुष्पिका इस प्रकार है–इति श्री भवरगीत संपूर्णम् ॥ श्री ॥ श्री ॥ सारी प्रति में लिपिकाल और लिपिकर्ता का उल्लेख नहीं है।

(ग) निजी संग्रहालयों की प्रतियाँ—

श्री व्रजवल्लभशरणजी अधिकारी, श्रीजी की बड़ी कुंज, प्रताप बाजार, वृन्दावन के निजी संग्रह में भँवरगीत की दो प्रतियाँ हैं—

(५१) भवरगीत—

इस प्रति की बंध संख्या ५५, ग्रन्थ संख्या ५७ है। लिपिकाल और लिपिकर्ता का उल्लेख कहीं नहीं है। कुल पत्रों की संख्या १४ है। प्रत्येक पत्र का आकार ६·५"× ४·७" है और प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग अट्ठाईस–उन्तीस अक्षर हैं। ग्रन्थान्त में कवि की छाप नन्ददास है और पुष्पिका है—इति श्री नन्ददास विरंचीतं भवरगीत संपूर्ण ॥ श्री रस्तु कल्याण मस्तु ॥ श्री रामचन्द्राय ॥

(५२) भँवरगीत—

इस प्रति की बंध संख्या ५३ और ग्रन्थ-संख्या ५० है। प्रति खंडित है। प्रारम्भ के १ से १४ पत्र तक केवल ७१ छंद लिखे हैं। अन्तिम पत्र नहीं है अतः कवि की छाप, लिपिकाल, लिपिकर्ता का नाम और पुष्पिका आदि के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा जा सकता। पत्रों का आकार ८·७"×४·३" है। प्रत्येक पृष्ठ पर ७ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग सत्ताईस अक्षर हैं।

लाला नन्दकिशोरजी, मुकुटवाले, प्रतापबाजार, वृन्दावन के निजी संग्रह में भँवरगीत की दो प्रतियाँ हैं—

(५३) प्रेमरसपूजनी लीला–

संवत् १८८० की एक पोथी में हीरामनि कृत रुक्मिनी चरित्र के १२ पत्रों के बाद भ्रमरगीत पत्र क्रमांक १ से १२ तक प्रेमरसपूजनी लीला के नाम से लिखा है। ग्रन्थान्त में कवि की छाप जनमुकंद है और पुष्पिका इस प्रकार है–इति श्री मुकंददास-कृत प्रेमरसपूजनी लीला संपूर्ण ॥१॥ पोथी के पत्रों का आकार ६·३"×६·१" है। प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग तेरह-चौदह अक्षर हैं। भँवरगीत के बाद पत्र क्रमांक १२ से २१ तक हरिरायजी कृत सनेहलीला लिखी है। हरिरायकृत सनेहलीला के गायक का नाम भी मुकुन्ददास दिया गया है। इसके बाद दामोदर लीला, परतीत परक्ष्या, रामदासकृत गोवर्द्धनलीला, ध्रुवचरित्र, फागुलीला, रसोई लीला, नन्ददासकृत रासपंचाध्याई और गोवर्द्धनलीला है। अन्तिम पृष्ठ क्रमांक १०२ पर टिप्पणी इस प्रकार है—

इति श्री गोवर्द्धनलीला सम्पूर्णं ॥११॥ फालगुण वदी ॥५॥ सम्वत् ॥१८॥ ८०॥ राम कृष्माय नमो नमः ॥

(५४) भवरगीत

संवत् १८८५ की इस पोथी में उषाचरित्र, भँवरगीत, और रुक्मिणी मंगल लिखे हैं। उषाचरित्र खण्डित है। प्रारम्भ के ३५ पत्र नहीं हैं। भँवरगीत पत्र ४२ (पृष्ठ २) से शुरू होकर पत्र ५७ पर समाप्त होता है। रुक्मिणी मंगल की पत्र संख्या १ से १६ तक दी गई है। अन्तिम पृष्ठ पर पुष्पिका है–इति श्री रामललाकृत रुकमिनी

मंगल सम्पूर्ण ॥ सम्वत् १८८५ अधिक आषाढ़ वदमा १२ भौमवासरे शुभंमस्तु। कल्याणरस्तु श्री रस्तु श्री राधाकृष्ण:। पोथी के पत्रों का आकार ८·४" × ५·३" है। प्रत्येक पृष्ठ पर ९ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग बीस अक्षर हैं। अन्तिम छन्द में कवि की छाप जनमुकंद दी गई है और ग्रंथान्त में टिप्पणी इस प्रकार है—

इति श्री भवरगीत संपूर्ण समाप्तम् शुभं भवतु ॥६॥

८. कांमा (कामवन) की प्रति—

(५५) भवरगीत–

श्री देवकीनन्दनाचार्य पुस्तकालय, श्री गोकुलचन्द्रमाजी का मन्दिर, कांमा, भरतपुर के रजिस्टर क्रमांक २, हस्तलेख विभाग, पृष्ठ ३८५ पर ऊपर से पाँचवीं पंक्ति में भँवरगीत की एक प्रति का उल्लेख है। इसमें ३९ पृष्ठ हैं। प्रत्येक पृष्ठ का आकार ६·४" × ४·९" है। प्रत्येक पृष्ठ पर ९ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग अठारह अक्षर हैं। अन्तिम छन्द संख्या ५० है। कवि की छाप नन्ददास और पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री नन्ददासजी कृत भवरगीत सम्पूर्ण ॥ इस प्रति में लिपिकाल, लिपिकर्ता आदि का उल्लेख नहीं है।

९. भँवरगीत की अन्यान्य प्रतियाँ—

उपरोक्त प्रतियों के अतिरिक्त मथुरा, वृन्दावन, गोकुल, कामवन, सूरत, गोवर्द्धन, बरसाना, वड़ौदा, आणंद, डाकोर, उज्जैन आदि स्थानों पर सम्प्रदाय के अनुयायियों, कीर्तनियों, साहित्य-प्रेमियों के पास भँवरगीत की अनेक अत्याधुनिक प्रतियाँ, जिनमें से कई संवत् १९५० के बाद की लिखी हुई थीं, हमारे देखने में आई कई प्रतियाँ सम्बन्धित व्यक्तियों ने स्वयं पठनार्थ लिखीं अथवा लिखवाई थीं। इन प्रतियों में प्राय: कवि की छाप नन्ददास ही है। पूर्ण प्रतियों में छन्द संख्या ७५ है। सभी प्रतियों में ह्रस्व और दीर्घ स्वरों की भूलें हैं, अत: आधुनिक, और पाठ-भ्रष्ट होने के कारण ये प्रतियाँ पाठानुसन्धान के लिए नहीं ली गईं। इसी तरह से खण्डित प्रतियाँ भी अनावश्यक विस्तार भय से विवरण के लिए नहीं ली गईं। विवरण के लिए न ली जाने वाली प्रतियों का संख्या ४८ है।

प्राप्त सामग्री का परीक्षण

मुद्रित प्रतियों में हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर सम्पादन एवम् पाठ-निर्धारण की प्रवृत्ति बाबू ब्रजरत्नदास द्वारा सम्पादित भ्रमरगीत, और नन्ददास-ग्रन्थावली तथा श्री उमाशंकर जी शुक्ल द्वारा सम्पादित नन्ददास में पाई जाती है। शेष प्रतियों में प्रामाणिक आधार के उल्लेख का अभाव उल्लेखनीय है, अत: ये प्रतियाँ पाठानुसन्धान की दृष्टि से विशेष महत्व नहीं रखतीं।

भँवरगीत की हस्तलिखित प्रतियों में स्रोतों के उल्लेख का अभाव है। इसका प्रमुख कारण व्यक्ति-वैचित्र्य, धर्म-दृष्टि और काव्य-प्रेम है। भँवरगीत के सभी रसिकों ने यत्र-तत्र अपनी-अपनी इच्छा से भँवरगीत की प्रतिलिपियाँ की और कराई हैं। प्रतिलिपि करते समय उन्होंने शब्द-रूपों की शुद्धि की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, फिर जिस प्रति से उन्होंने प्रतिलिपि की उसका भी कोई परिचय नहीं लिखा। परिणाम यह हुआ कि आज हमें भँवरगीत की प्रत्येक हस्तलिखित प्रति एक स्वतन्त्र इकाई के रूप में प्राप्त हो रही है।

हस्तलिखित प्रतियों में ग्रन्थ के नाम---

(क) हस्तलिखित प्रतियों के सूक्ष्म अध्ययन, मनन, विश्लेषण और वर्गीकरण के बाद हमें भँवरगीत की हस्तलिखित प्रतियों में ग्रँथ के तेरह नाम प्राप्त होते हैं—

१. **भमरगीत लीला**—प्रति क्रमांक १.

२. **भवरगीत**—प्रति क्रमांक ३, ३७.

३. **भवरगीत**—प्रतिक्रमांक ६, ८, ११, १२, १५, १६, १७, १८, १६, २०, २१, २२, २३, २४, २६, ३५, ३८, ३६, ४२, ४५, ४६, ५०, ५१, ५४, ५५.

४. **भवरगीत**—प्रति क्रमांक ४, ५, ७, ६, १४, २७, २८, ३६, ४१, ४४, ४७.

५. **भुवरगीत**—प्रति क्रमांक ३२.

६. **भवरगीत लीला**—प्रति क्रमांक ४०.

७. **भवरगीता । प्रेमरसपुंजनी कथा**—प्रतिक्रमांक ३०

८. **प्रेमरसपूजनी लीला**—प्रति क्रमांक ३१, ५३.

६. **भवरगीता—प्रेमरस पूजनी लीला**—प्रति क्रमांक ३४, ४३.

१०. **भ्रमरगीत**—प्रति क्रमांक ३३, ४६.

खंडित प्रतियों में शोधकर्ताओं ने या विवरण-लेखकों ने अपनी-अपनी कल्पना से ग्रन्थ का नाम लिखा है। खंडित प्रति क्रमांक २,१० और २५ में भ्रमरगीत, प्रतिक्रमांक १३ के लिये भ्रमरदूत, प्रतिक्रमांक २६ के लिए उद्धव शतक और प्रतिक्रमांक ४८,५२ के लिए भँवरगीत नाम इसी प्रकार दिये गये हैं।

पूर्ण और अपूर्ण प्रतियों का वर्गीकरण—

सात प्रतियाँ (क्रमांक ६, १७, १६, ३१, ३७, ३६ और ४६) आदि से खण्डित, पाँच प्रतियाँ (क्रमांक १८, २०, २६, २६ और ५२) अंत से खन्डित तथा पाँच प्रतियाँ (क्रमांक २, १०, १३, २५ और ४८) आदि अन्त दोनों ओर से खंडित हैं।

बारह प्रतियों (क्रमांक १, ५, ६, १२, १५, २२, २८, २६, ३८, ४०, ४५

और ४९) में लिपिकर्ताओं ने अपने नामों का उल्लेख किया है ।

हस्तलिखित प्रतियों में कवि की छाप—

भँवरगीत की प्रतियों में नन्ददास और जनमुकुन्द दोनों की छाप मिलती है। उपलब्ध प्रतियों में से २१ प्रतियों में नन्ददास, २५ प्रतियों में जनमुकुन्द, मुकुन्ददास, कवी मुकुन्द आदि और ३ प्रतियों में नन्ददास और जनमुकुन्द दोनों का उल्लेख है ।

१. **नन्ददास छाप वाली प्रतियाँ**—३, ८, ११, १४, १६, १९, २१, २२, २४, २९, ३२, ३३, ३७, ४४, ४६, ४७, ५१, ५५ । इनके अतिरिक्त प्रति क्रमांक १३, २५ और २६ में विवरणकारों ने कवि का नाम नन्ददास लिखा है।

२. **जनमुकुन्द छाप वाली प्रतियाँ**—इस छापवाली प्रतियों में कवि के ५ नाम मिलते हैं—

(अ) **जनमुकंद**—प्रतिक्रमांक १, ४, ७, १२, १७, २८, ३१, ३८, ३९, ४३, ४५, ५४ ।

(ब) **जनमुकुन्द** प्रतिक्रमांक २, ३, २७, ३०, ३५, ३६, ४०, ४२, ४९, ५० ।

(स) **मुकन्ददास**—प्रति क्रमांक ९, ५३ ।

(द) **कबीमुकुन्द**—प्रति क्रमांक १५ ।

(इ) **जनमकुन्द**—प्रति क्रमांक ३४ ।

३. **नन्ददास और जनमुकुन्द दोनों छापवाली प्रतियाँ**—प्रति क्रमांक ५, ६, ४१ ।

निश्चित लिपिकाल वाली प्रतियों का वर्गीकरण—

१. **नन्ददास छापवाली प्रतियाँ–**

(अ **उन्नीसवीं शताब्दी की प्रतियाँ**—(१) प्रतिक्रमांक ८, लिपिकाल सं० १८४९,
(२) प्रति क्रमांक ११, लिपिकाल सं० १८९०,

(आ) **बीसवीं शताब्दी की प्रतियाँ**–(१) प्रति क्रमांक २९, लिपिकाल सं० १९०४,
(२) प्रति क्रमांक २२, लिपिकाल सं० १९१०,
(३) प्रति क्रमांक ३, लिपिकाल सं० १९२४,

२. **जनमुकुन्द छापवाली प्रतियाँ—**

(अ) **उन्नीसवीं शताब्दी की प्रतियाँ**–(१) प्रतिक्रमांक ३०, लिपिकाल सं० १८१३,
(२) प्रतिक्रमांक १७, लिपिकाल सं० १८५७,
(३) प्रतिक्रमांक १, लिपिकाल सं० १८६६,
(४) प्रतिक्रमांक ५३, लिपिकाल स० १८८०,

(५) प्रतिक्रमांक ५४, लिपिकाल सं० १८८५,
(६) प्रतिक्रमांक २७, लिपिकाल सं० १८८६,
(७) प्रतिक्रमांक १५, लिपिकाल सं० १८८८,
(८) प्रतिक्रमांक ४, लिपिकाल सं० १८८६,
(९) प्रतिक्रमांक ४०, लिपिकाल सं० १८८९,
(१०) प्रतिक्रमांक ३८, लिपिकाल सं० १८९१,
(११) प्रतिक्रमांक २८, लिपिकाल सं० १८९५,
(१२) प्रतिक्रमांक ९, लिपिकाल सं० १८९८,
(१३) प्रतिक्रमांक १२, लिपिकाल सं० १८९८,

(आ) **बीसवीं शताब्दी की प्रतियाँ**–(१४) प्रतिक्रमांक ४९, लिपिकाल सं० १९११,
(१५) प्रतिक्रमांक ४५, लिपिकाल सं० १९१७,
(१६) प्रतिक्रमांक ७, लिपिकाल सं० १९४१,

३. **नन्ददास और जनमुकुन्द दोनों छापवाली प्रतियाँ**--

(अ) **उन्नीसवीं शताब्दी की प्रतियाँ**—(१) प्रतिक्रमांक ६, लिपिकाल सं० १८८१,
(२) प्रतिक्रमांक ४१, लिपिकाल सं० १८९०,

(आ) **बीसवीं शताब्दी की प्रतियाँ**—(३) प्रतिक्रमांक ५, लिपिकाल सं० १९१०,

भँवरगीत के कवि—जनमुकुन्द या नन्ददास ?

भँवरगीत की अधिकांश हस्तलिखित प्रतियों में जनमुकुन्द छाप देखकर कुछ विद्वानों का यह मत है कि भँवरगीत के मूल रचयिता जनमुकुन्द या मुकुन्ददास नामक कोई अल्पख्यातनाम कवि थे और बाद में यह रचना सुप्रसिद्ध कवि नन्ददास के नाम से प्रचलित हो गई।[1] कुछ विद्वान उसे किसी अन्य जनमुकुन्द की ही सम्भावित कृति मानते हैं।[2] कुछ लोग नन्ददास और जनमुकुन्द को एक ही व्यक्ति मान जनमुकुन्द नन्ददास का उपनाम मानने के पक्ष में हैं।[3] शेष लोग उसे नन्ददास की ही रचना कहते हैं।[4]

ऐसी शंकास्पद स्थिति में जनमुकुन्द का पता लगाना आवश्यक है। वार्ता-साहित्य में दो मुकुन्ददासों का उल्लेख मिलता है–

---

१. **नन्ददास और उनका भँवरगीत**—डॉ० पूर्णमासीराय, निवेदन, पृष्ठ छः।
२. **भ्रमरगीत**—सं० बाबू ब्रजरत्नदास, वक्तव्य, पृष्ठ १-२।
३. **देखिए**–हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के हस्तलेखक्रमांक २०६३ पर संशोधक की टिप्पणी या काशी नागरी प्रचारिणी सभा का खोज-विवरण, सन् १९२०, पृष्ठ ३२१, ग्रन्थ ११३ एफ.
४. **पुष्टिमार्ग के अनुयायी, भँवरगीत के विविध संस्करणों के संपादक।**

१. दिनकरदास मुकुन्ददास सिंहानिया कायस्थ—

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी में वल्लभाचार्य और उनके सेवकों की वार्ता नामक एक खंडित हस्तलिखित ग्रंथ है, जिसका हस्तलेख क्रमांक ३१६८।२०१५ है। आदि-अन्त के पन्ने फटे होने के कारण इस रचना के लिपिकर्ता, लिपिकाल और अन्य स्रोतों का पता नहीं है। इस प्रति के ४३ वें पत्र के पूर्वार्द्ध में मुकुन्ददास की वार्ता इस प्रकार दी गई है—

।। श्री आचारजजी के सेवक दीनकरदास मुकुन्ददास तीन दोउ जनेन की वारता ।। सो वे दीनकरदास मुकुन्ददास कवीत बहुत करते ।। श्री ठाकुरजी के तथा श्री आचारजजी के ।। उनन कवीत्त बहुत कीये हैं ।। अेक मुकुन्दसागर ग्रंथ उनंही को कीयो हे ।। सो एक वेर वे उज्येंन में कारकुंन होइ सकें गए हते ।। तव उहां के पंडीत ।। मुकंददास को आई के मीले ।। तव उन पंडीतन ने आइ कें कहीजो ।। मुकुंददास जी तुम हमारे पास ।। श्री भागवत सुनो तो हम कहें ।। तब मकुंददास नें उन पंडीत ।। ब्राहमनन सों कहीजो ।। तुमकों कहा हमारी ।। श्रीभागवत आवत हे ।। तुम कहा जानत हो ।। तव उन पंडीतन ने पूछी जो मुकुंददासजी ।। तुम्हारो श्री भागवत कहा न्यारो है ।। तव मुकुंददास ने ।। श्री भागवत के ।। अेक स्लोक को अर्थ ।। छ महीनां तांइ कही सुनायो ।। ताही तें मुकंददासजी ।। ओर काहु के पास ।। आप कथा ना सुनते ।। ओर हु कदाचीत ।। कोई व्याख्या न करते ।। तामें आप बहुत ही प्रवेश हते ।। ताको आप बहुत ही भली भांती सो श्रम करवावते ।। आप श्री सुवोधीनी में बहुत प्रवेश हते ।। श्री आचारजजी के चरणारवींद वीषें ।। उनकों वहुत ही दृढ़ता हतो ।। तातें उनकों श्री सुवोधीनीजी वहुत स्फुरदुश्य हती ।। एसें करत उनकी देह कीतनेंक दीन पाछें उज्येंन में छटी ।। तव काहु वैस्नव ने आइ कै ।। श्री आचारजजी के आगे कही जो ।। माहाराज ।। मुकुंददास ने अवतीका पाई ।। तव श्री आचारजजी नें ।। अपने श्री मुख तें कही जो ।। तुम यों मती कहो ।। तुम यों कहो जो ।। अवंतीका ने मुकुंददास पाए ।। वे मुकुंददास ऐसे भगवदीय हते जो ।। जीनकी सराहना आप ।। श्री मुख तें श्री आचारजजी वहुत ही करते ।। तातें उनके भाग की कहा कहीये ।। वे मुकुंददास ऐसे भगवदीय क्रीपापात्र हते।। श्री ।।

श्री गोकुलनाथजी कृत चौरासी वैष्णवन की वार्ता[1] में भाव प्रकाश करते हुए श्री हरिरायजी ने उक्त वार्ता का विस्तार इस प्रकार किया है—

अब श्री आचार्यजी के सेवक दिनकरदास मुकुंददास सिंहानिया कायस्थ मालवा देस में रहते तिनकी वार्ता और ताकों भाव—

---

१. **चौरासी वैष्णवन की वार्ता, सं० द्वारकादास पारीख, अग्रवाल प्रेस मथुरा, पृष्ठ १९७-२०४।**

[भाव प्रकाश—ये लीला में नन्दरायजी के भाई हतें। दिनकरदास तो धरानंद हैं और मुकुन्ददास ध्रुवनन्द हैं। सो ये मा...में एक कायस्थ के जन्में। सो इनके पिता उज्जेन में हाकिम...रहते। ो एक दिन हाकिम सों बोलाचालि ह्वै गई। तब दिनकरदास मुकुन्ददास को पिता चाकरी छोड़ घर उठि आयो। सो दिन दस पाँच में देह छोड़ी। तब दोउ भाई बरस दस बारह के भये। सो घर में द्रव्य को संकोच भयो। तब घर तें निकसि कें कासी गये। तहाँ द्रव्य बहोत कमाये। तब दोऊ जने घर चलन लागे। सो कासी तें कोस एक बाहर निकसे। तब एक सर्प निकस्यो। सो मुकुन्ददास कों काटिके बिल में घँसि गयो। सो जहर चढ़यो। तब दिनकरदास कासी तें उठाय ल्याये। सो बहोत झारनवारे जतन किये। परंतु विष उतरे नांहि। तब दिनकरदास ने पुकारिकें रुदन कियो। सो श्री आचार्यजी कासी में पुरुषोत्तमदास के घर बिराजत हते। कृष्णदास वजार कछू कार्यार्थ आये हते। सो कृष्णदास ने दिनकरदास को विलाप सुनि, भगवदीय को हृदय कोमल, सो पूछ्यो। ऐसो दुःख तुम क्यों करत हो? तब दिनकरदास ने कही पहले द्रव्य के दुःख सों निकसि इहां आये, द्रव्य कमाये। सो घर जात हते सो हमारे भाई को सर्प काट्यो। सो बहोत जतन कियो। परंतु जहर उतर्यो नांही। अब हमहूँ कासीजी में गंगाजी में डूबि मरेंगे घर जाय कहा करेंगे। तब कृष्णदास को दया आई। और देवी जाने।। सो श्री आचार्यजी को चरणामृत पास हतो। सो मुकुन्ददास को पानी में घोरि के पिवाये। सो तत्काल जहर उतर गयो। मुकुन्ददास उठि वैठे। चरणामृत सों बुद्धि ह्वे गई। सो मुकुददास ने कृष्णदास को भगवद्स्मरन करि दंडौत किये। और पूछे श्री आचार्यजी कहाँ बिराजे हैं। तब कृष्णदास ने कही तुम हमकों दडवत क्यों करी।......मुकुन्ददास ने कही तुम्हारे हृदय में श्री आचार्यजी बैठिकैं मोपर कृपा करी। नाहिं तो संसार समुद्र में हम परे हैं। सो श्री आचार्यजी हू कों नाहिं जाने। और तुमकों हू न जानें। परन्तु तुम कृपा करिकें जताये। तातें भगवदीय कों दन्डौत किये बाधक नाहिं हैं। तब कृष्णदास ने कही यह चरणामृत की बात श्री आचार्यजी सों मति कहियो। हमको सब आयकें दुःख देंगे। तब यहाँ रहनो कठिन परेगो। पाछे मुकुन्ददास ने कृष्णदास सों पूछी जो श्री आचार्यजी कहाँ बिराजे हैं। तब कृष्णदास ने कही जो श्री आचार्यजी सेठ पुरुषोत्तम के यहां बिराजे हैं। यह कहिकें कृष्णदास तो कारज कों गये। तब मुकुन्ददास ने कही भाई श्री आचार्यजी की सरनि चलो। तब दिनकरदास ने कही। श्री आचार्यजी कौन हैं? तब मुकुन्ददास ने कही साक्षात् भगवान हैं। मोकों उनके चरणामृत के पाये ज्ञान भयो। तुमहू जब दरसन करि चरणामृत लेहुगे तब श्री आचार्य जी के स्वरूप को जानोगे। तातें बेगे चलो। ढील मति करो। तब दोउ भाई आई श्री आचार्यजी को दन्डौत करि विनती किये महाराज हम महाअ...हैं। संसार के दुःख सुख में परे हैं सो हमारो उद्धार करो। तब श्री आचार्यजी कहें तुम कायस्थ हो सो यह पुष्टि मार्ग

कैसे सधेगो ? तब मुकुन्ददास ने कही महाराज आपकी कृपा तें सब सधगो ? आपकी कृपा सूद्र चांडाल पर होइ ता वासों हू सब सधे । आपकी कृपा बड़े पंडित ब्राह्मण पर न होय तो वासों न सधे । तातें आप हमको कृपा करिके सरनि लेहु । सो सरन के प्रताप ते हमारो कल्यान होइगो । तब श्री आचार्यजी प्रसन्न ह्वे कें कहे, हम जाने यह कृष्णदास मेवन को काम है । पाछे दिनकरदास मुकुन्ददास को न्हवाय के नाम निवेदन कराये । सो कछूक···उहाँ श्री आचार्यजी के पास रहिकें मारग की रीति सब सिर··· । पाछें विनती किये महाराज । आज्ञा होइ तो घर जैये । हमकों अब कहा कर्तव्य है ? तब श्री आचार्यजी ब्रह्म संबन्ध की पत्री लिखि हस्ताक्षर दिये । कहे इनके सेवा करियो । जो कछू खान पान करो सो इनकों भोग धरिकें लीजो । तब दोऊ भाई विदा होयकें मालवा में अपने घर आये । स्त्रीजन को रसोई करि, भोग धरि न्यारे धरि देय । काहे तें देवी नाहिं । श्री आचार्यजी के सेवक होन को मन नांही । सो मुकुन्ददास को श्री आचार्यजी को चरणामृत मिल्यो । तातें सगरे शास्त्र वेद पुरान कंठाग्र भये ।]

वार्ता प्रसंग–१

सो मुकुंददास कबित बहोत सुन्दर करते । श्री आचार्यजी के, श्री गुसाईंजी के, श्री ठाकुरजीके, एक से करते । और मुकुंददास ने एक मुकुंदसागर ग्रंथ भाषा में कियो है । तामें श्री भागवत द्वादस स्कन्ध (पर्यन्त) को अर्थ धरि दिये हैं । और मुकुंददास एक समय उज्जेन के कारकून ह्‌वै कें गये । सो उज्जैन के ब्राह्मण पंडित सब आइके मिलें । और कहें कहो तो हम तुमको श्री भागवत सुनावें । तब मुकुंददास ने कही अवकास नांही है । अवकास होइगो तब सुनेंगे ।

[भावप्रकाश—याको कारन यह जो श्री आचार्यजी के सुबोधिनी आदि ग्रंथ तिनके आगें तुम्हारी कथा सुनिवे कों अवकास कहाँ ? और ब्राह्मण का मन उदास न होय ताते कहें अवकास···गो तब सुनेंगे ।]

सो वह ब्राह्मण दूसरे चौथे मुकुंददास कों पूछें जो जब कहोगे तब श्री भागवत सुनावेंगे । ऐसे करत बहुत दिन बीते । सो एक दिन मुकुंददास चौपड़ खेलत हुते सो वह पंडित ने देख्यो । तब मन में विचार्यो आजु बात कहन को दाव पायो । इतने चौपड़ खेलि चुके । तब पंडित ने कही तुम कहो तो श्री भागवत तुमकों सुनाऊँ । तब मुकुंद-दास ने कही अवकास होयगो तब सुनेंगे । तब पंडित ने कही चौपड़ खेलिवे को अवकास हे (और) श्री भागवत सुनन कों कहे अवकास होयगो तब सुनेंगे । याको कारन कहा? तब मुकुन्ददास ने विचार्यो इनने तो प्रति उत्तर भारी दियो । अब अपन हु याकों देनौ । तब कहे हमारो श्री भागवत जानें हैं ? तब पंडित नें कही, तुम्हारो श्री भागवत कहा न्यारो है ?··· उनने कही हमारो भागवत न्यारो है । तब पंडित ने कही तुमही अपनो श्री भागवत सनावो । तब मुकुंददास ने कही कोई समय पायके तुमको सुनाय देंइगे ।

या प्रकार कहिकें टारे। परन्तु उह मार्गीय ब्राह्मण न हतो तातें वाके मुख की कथा न सुनें।

[भाव प्रकाश—तातें छासठ अपराध में लिख्यो है-अवैष्णवन श्री भागवत श्रवणं वृक्ष जन्म त्रयं, इत्यादिक। पुष्टिमार्गीय वैष्णवन को दोष लगें। इह जीव को बहोत संदेह है। क···भगवन्नाम में सबन को अधिकार है। सूद्रादि चांडाल पर्यंत···कहे सुने सो सबको कल्यांन होय। श्री भागवत में हूँ अजामिल आदि पवित्र भये हैं। सो यह माहात्म्य जगत में प्रसिद्ध है और पुष्टि मार्ग में भगवद्नाम कीर्तन श्री भागवत सुनन कों अन्यमार्गीय सो क्यों नांहि। जो भगवद्नाम सुने तें दोष कैसे। यह संदेह बड़ो गूढ़ है। तहाँ कहत हैं जो मर्यादामार्ग में तो मुक्तिफल है। और पुष्टिमार्ग में तो एकांगी पुष्टिभक्ति सों फल है। सो भक्ति श्री आचार्यजी के आश्रय तें होय। सो आश्रय और अन्याश्रय को भेद खोलत हैं। यह हृदय कमल है तहाँ आश्रय, प्रेम, सगरे धर्म, भगवान के बिराजिबे को ठिकानो है। सो हृदय में श्री आचार्यजी सम्बन्धी आनंद सर्व प्रकार तें प्रवेस करे तो आश्रय सिद्ध होय। सो हृदय में रस आनन्द जाइबे के इतने प्रकार। एक तो नेत्र सुन्दर देखिकें कछू वस्तु, हृदय में आनन्द होई। तातें श्री आचार्यजी सम्बन्धी ठाकुर के दरसन करि सुख पावनो। और ठौर के दरसन तथा लौकिक वैदिक कछू संसार सम्बन्धी आछी वस्तु···श्री आचार्यजी के सम्बन्ध बिना में आनन्द आवें सोऊ अन्याश्रय। यह नेत्र को अन्याश्रय महादोष। और श्रवण द्वारा दुःख सुख हृदय में रस जात हैं। तातें जाके मुखसों सुनिये ताकी जूठन कर्ण द्वारा हृदय में रस जाय। तातें जहाँ दास भाव राखनो तिनके मुख सों सुननों। दास भाव तो बल्लभकुल में के पुष्टिमार्गीय वैष्णव में। तातें उनहि के मुख सों सुननों जाते हृदय में धर्म दृढ़ होय। और के मुख सों सुने प्रीति सों तो अन्याश्रय (क्यों जो) ताको जूठो हृदय में गये श्री आचार्यजी के आश्रय दृढ़ न होइ। ऐसे कोइ को संकोच करि सुननो परे तो मन न लगावें। आपुनो अष्टा······में मन लगावें। तातें मुख्य सिद्धान्त तो एतन्मार्ग में यह है······और सों बचन विलास करनो नाही। वानी द्वारा मिलाप है।······त मौनं सर्वार्थ साधकः। तातें अन्य मार्गीय सों न भगवद्‌रस की बात पूछनी न अपनी कहनी। या प्रकार सगरी ईन्द्री मन श्री आचार्यजी के सम्बन्ध बिना सुख को न पावे। यह श्री आचार्यजी के आश्रय को साधन है। तातें मुकुंददास को तो श्री आचार्यजी को आश्रय दृढ़ है जो ये उह पंडित की कथा सुनते तउ इनको बाधक न होई। परन्तु इनकी देखादेखी और वैष्णव साधारण सुनते सो उनको बिगार होतो। ताते यह जताये जो हमकों इतनों ज्ञान दृढ़ (न होय तो) अन्यमार्गीय तें न सुनें। काहे तें मन है, वाके वचन में दृढ़ विश्वास ह्वै जाय तो सनैः सनैः एतन्मार्ग में ते मन वाके बताये साधन में जाय तातें हम न सुने। यातें कच्ची दसा वारे कों तो एक श्री आचार्यजी सम्बन्धी सों ही भगवद्धर्म कहनो सुननो।

और मुकुंददासजी चौपड़ खेलत हते । सो यातें जब जाने जो कोई अन्यमार्गीय अनेक कर्म-धर्म की बात कहन सुनन आवते तब मुकुंददास चौपड़ निकारि बैठतें । सो सगरे अन्यमार्गीय उदास ह्वै के उठि जातें । चौपड़ के मिस काहू को······मनावनो न परतो । लोग जानते चौपड़ में आसक्ति है । या प्रकार सों अपने हृदय में पुष्टिमार्गीय धर्म छिपाये हते ।]

सो एक समें सूर्य ग्रहण पर्‌यो । तब मुकुंददास नदी में न्हाय के भगवद्‌नाम नदी में ठाड़े लेत हते । ता समय वह पन्डित ने आयके कही भलो या समें अपनो श्री भागवत कछू सुनावो । तब मुकुंददास ने एक श्लोकश्री भागवत को कहिकें वाको अ··· करन लागे । सो सगरो दिन सगरी राति बीति··· । सवेरो भयो । गाँव के लोग नदी न्हान कों आये । तव वह पन्डित ने कही दूसरो दिन भयो । अब या श्लोक को अर्थ पूरो करोगे ? तब मुकुंददास ने कही । यह श्लोक को भाव छै महिना लों होइगो । तब वह पन्डित थकित ह्वै रह्यौ । कह्यो तुमकों ईश्वर की दीनी सामर्थ्य है । जीव कहा जाने ? तब मुकुंददास ने कही हमारो श्री भागवत ऐसो है । कछू जानत होय तों हमकों सुनाव । तब उह पन्डित हारि मानिके घर गयो । और पन्डित आय कछु पूछते तो वाके प्रश्न को बहुत दूषन लगाय प्रति उत्तर देते जो फिरि वह पन्डित न आवें । ऐसो श्री आचार्यजी को कृपाबल हतो । श्री सुबोधिनी आदि सब सास्त्र में प्रवेस हतो । ···मुकुंददास कछुक दिन पाछें मानसी सेवा की भावना करिकें देह छोड़ि लीला में प्रवेश भये । तव काहू वैष्णव आयकें श्री आचार्यजी सों कह्यो मुकुंददास अवंतिका पाई । तब श्री आचार्यजी वैष्णव कों वरजे जो ऐसे मति कहो । ऐसे कहो जो अवंतिका ने मुकुंददास पाये । सो मुकुंददास ऐसे टेक के भगवदीय भये ।।वार्ता १९ ।।

[भावप्रकाश—काहे तें जो संसारी लोग हैं तिनकों तीर्थ की··· । और तीर्थ हैं सो भगवदीय को चाहत हैं । जो भगवदीय को परस करें । जा तीर्थ के पास जाइ (सब पापन तें मुक्त होंय) और दिनकरदास बड़े भाई की वार्ता को विस्तार यातें नाँहि किये जो जा दिन तें उह श्री आचार्यजी के सेवक ह्वै मालवा में आये ता दिन तें श्री महाप्रभुजी के हस्ताक्षर ब्रह्म-सम्बन्ध कों प्रकार बाँचि नित्य माथो पीटि के रोवे । जो हम लीला में नन्दराय के भाई ह्वै के अब इतने दिन तें संसार में भटकत हैं । हमको धिक्कार या प्रकार विरह करन तीन महीना में लीला की प्राप्ति भई । तातें इनकी वार्ता अनिर्वचनीय विरह दसा की है । सो लोक में विरुद्ध चलेंगे । ताते बहोत प्रकास नाँहि किये । तातें दोऊ भाई दिनकरदास मुकुंददास बड़े भगवदीय कृपा पात्र हैं । वैष्णव ।।१९।।]

(२) मुकुन्ददास सेखड़--

दिनकरदास मुकुंददास सिंहानिया कायस्थ के बाद वार्ता-साहित्य में मुकुंददास सेखड़[1] की वार्ता मिलती है—

[अब श्री गुसाईंजी के सेवक मुकुंददास सेखड़ (क्षत्री) तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं-भावप्रकाश—ये सात्विक भक्त हैं। लीला में इनको नाम आराधिका है। ये श्री चन्द्रावतीजी की सखी हैं। केतकी तें प्रगटी हैं, तातें उनके भाव रूप हैं। सो ये पूरब में एक क्षत्री के जन्मे। सो बरस बारह के भये। तब इनके माता-पिता मरे। पाछे केतेक दिन में ये यात्रा कों चलें। सो प्रथम श्री गोकुल आए।]

वार्ता प्रसंग--१

सो एक समय मुकुंददास सेखड़ श्री गुसाईंजी के दरसन को गोकुल आए हते। सो ठकुरानी घाट के ऊपर श्री गुसाईंजी के दरसन किए। सो साक्षात् श्री पुरुन पुरुषोत्तम कोटि कंदर्प लावण्य ऐसे दरसन भए। तब मुकुंददास सेखड़ ने श्री गुसाईंजी सों बिनती करी जो महाराजाधिराज, मोकों सरनि लीजिए। मैं बोहोत दिन तें भटकत डोलत हूँ। तब आप आज्ञा किए जो श्री यमुनाजी में स्नान करि आओ। तब मुकुंददास सेखड़ तत्काल श्री यमुनाजी में स्नान करि आए। और दोऊ हाथ जोरि के बिनती करी, जो महाराज, मोपर कृपा करिके नाम देऊ। तब श्री गुसाईंजी ने कृपा करिके मुकुंददास सेखड़ को नाम सुनाए। पाछे आप मन्दिर में पधारे। तब श्री नृवनीतप्रियजी सन्निधान में ब्रह्मसम्बन्ध करवाए। तब मुकुंददास सेखड़ ने यथासक्ति भेंट करी। ता पाछें श्री गुसाईंजी आप श्री नवनीतप्रियजी की सेवा तें पहोंचि के अपनी बैठक में पधारे। पाछें आपु भोजन कों पधारे। सो भोजन करिके मुखसुद्धार्थ आचमन करिके पाछें मुकुंददास सेखड़ को जूठनि की पातरि धरी। तब मुकुंददास ने महाप्रसाद लियो। पाछें श्री गुसाईंजी पास आइ दंडवत करि बैठे। तब श्री गुसाईंजी आप मुकुंददास सेखड़ को अपनी खवासी में राखे। सो जहाँ आप पधारते तहाँ साथ रहते। सो श्री गुसाईंजी आप मुकुंददास सेखड़ के ऊपर सदैव प्रसन्न रहते। और कृपा करिके मार्ग की गोप्य वार्ता होई सो मुकुंददास सों कहते। सो मुकुंददास श्री गुसाईंजी को छोरिके कहूँ नाहीं गए।

[भावप्रकाश—सो या वार्ता में जताए जो सेवक को प्रभु तें छिन एक न्यारो न रहनो।]

---

१. गो० श्री हरिरायजी प्रणीत दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता (तीन जन्म की लीला वाली) तृतीय खंड, प्रथम संस्करण, सं० गो० श्री ब्रजभूषण शर्मा, भावना द्वारकादास पारीख, प्रकाशक—शुद्धाद्वैत एकेडेमी, काँकरौली, सं० २०१० विक्रमाब्द, पृष्ठ २६–२७

सो वे मुकुंददास सेवड़ श्री गुसाईंजी के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं, सो कहाँ ताँई कहिए। वार्ता १७६ ॥

(३) जनमुकुन्द और मुकुन्ददास--

नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हिन्दी पुस्तकों के संक्षिप्त विवरण में नन्द और मुकुंद दो भाइयों का विवरण प्रकाशित है, जिसके अनुसार नन्द का अन्य नाम अनन्द या आनन्द और मुकुंद का अन्य नाम जनमुकुंददास बतलाया गया है। ये जाति के भटनागर कायस्थ थे। इनके पिता का नाम चिंतामनि तथा निवासस्थान हिस्सार (पंजाव) के अंतर्गत जगर केटी था। ये दोनों भाई संवत् १६६० के लगभग विद्यमान थे। राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज, भाग-२, पृष्ठ १४१ पर आनन्द या नन्द को मानसकार तुलसी का शिष्य वतलाया गया है। ये आसन मंजरी, सार, कोक, कोकसार, भागवत महापुराण, तथा भ्रमरगीत के रचयिता कहे जाते हैं।[1] खोज विवरण के अनुसार मुकुंददास ने भागवत महापुराण के प्रथम से अष्टम स्कंध तक का पद्यानुवाद किया है।[2]

खोज विवरण सन् १६०२, पृष्ठ ६६-७० पर ग्रन्थ क्रमांक १०४ (२) के अन्तर्गत भँवरगीत के कर्ता जनमुकुंद बतलाए गये हैं। इसी प्रकार खोज विवरण सन् १६०६, पृष्ठ ३३३, ग्रन्थ क्रमांक २७३ (ए), खोज विवरण सन् १६२३, पृष्ठ क्रमांक १०५६-१०६०, ग्रन्थ क्रमांक २८५ में भँवरगीत के कवि जनमुकुंद कहे गये हैं। इनमें से अन्तिम प्रति का लिपिकाल संवत् १६०६ है।

खोज विवरण सन् १६०६, पृष्ठ क्रमांक २७१, ग्रन्थ क्रमांक १८४ के अन्तर्गत मुकुंददास को भँवरगीत का कवि लिखा गया है।

खोज विवरण सन् १६२०, पृष्ठ ३२१, ग्रन्थ क्रमांक ११३ (एफ) के अन्तर्गत भँवरगीत के कवि नन्ददास या जनमुकुंद माने गये हैं। पर ग्रन्थान्त में कवि की छाप जनमुकुंद ही दी गई है। इस प्रति के लिपिकर्ता मिरजापुर निवासी पण्डित शिवलालजी थे।

खोज विवरण सन् १६२६ के पृष्ठ क्रमांक ४५३-४५४ पर ग्रन्थ क्रमांक २४४ (डी) के अन्तर्गत भँवरगीत के रचयिता नन्ददास लिखे गए हैं। इस प्रति का लिपिकाल संवत् १८६३ है।

---

१. हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण—प्रथम खंड, पृष्ठ ४६५–४६६।
२. वही, द्वितीय खंड, पृष्ठ ६२।

इस तरह से भँवरगीत के प्रणयन का श्रेय नन्ददास, जनमुकुंद या मुकुंददास को दिया जाता है।

भँवरगीत का रचयिता--

उपरोक्त व्यक्तियों के सम्बन्ध में प्राप्त सामग्री के आधार पर विचार करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि—

१. चौरासी वैष्णवन की वार्ता में वर्णितं दिनकरदास मुकुंददास सिंहानिया कायस्थ उज्जैन के निवासी थे। वे एक सुकवि और विद्वान थे तथा महाप्रभु श्री वल्लभाचार्यजी के शिष्य थे। उनका नित्यलीलाप्रवेश आचार्यजी के जीवनकाल में (संवत् १५३५ से सं० १५८७) ही हो गया था। उनके द्वारा प्रणीत भँवरगीत का उल्लेख पुष्टि-सम्प्रदाय या इतिहास-ग्रन्थों में नहीं मिलता। उनके तथाकथित मुकुंद-सागर का भी कहीं पता नहीं है। मालवाप्रदेश में या उज्जैन के आसपास तथा पुष्टि-सम्प्रदाय के अनुयायियों के पास भी इस ग्रन्थ का पता नहीं है।

मुकुंददास जी का निर्वन उज्जैन में हुआ था। खोजयात्रा के क्रम में लेखक को श्री श्यामलाल जी गौड़, बी० ए०, एल-एल० बी०, एडवोकेट, सब्जीमन्डी, उज्जैन के के पास श्री रामदास गौड़ और श्री प्रभुलालजी गौड़ द्वारा संपादित तस्कीर-ए-सुचारु-वंशी नामक उर्दू ग्रन्थ देखने को मिला। इसमें कायस्थों और श्री गौड़ों की वंशावली दी गई है। खेद है, कि इस वंशावली में दिनकरदास मुकुंददास का उल्लेख नहीं है। उज्जैन में पुष्टि सम्प्रदाय के अन्य कायस्थों के पास भी दिनकरदास-मुकुंददास या मुकुंदसागर की प्रति के बारे में कोई जानकारी नहीं है।

चर्चा के बीच लोगों से पता चला कि उज्जैन के निकट आगर गाँव में पुष्टि-सम्प्रदाय के अनुयायी कायस्थों का एक प्राचीनतम घराना है। आगर जाने पर इस घराने का पता चला। आगरनिवासी श्रीयुत मोहनलालजी अटल, सराफा बाजार के पास श्री गुसाई जी की बधाई, उत्सव कीर्तन संग्रह के द्वितीय भाग की एक प्राचीन हस्तलिखित खण्डित प्रति है। इस प्रति के आदि और अंत के पन्ने फटे हैं। पत्रों का आकार १४·७" × १२·४" है। इस रचना के पृष्ठ क्रमांक ८५ पर मुकुंददासजी द्वारा रचित निम्नलिखित पद संकलित है—

राग आसावरी ॥

देखो देखो मे श्री वल्लभ त्रिविध ताप हारी ॥
श्री विट्ठलेस प्रगट भए, लीला अवतारी ॥१॥
श्री गिरिधर, गोविंदराय, भक्तन सुखकारी ॥
श्री बालकृष्ण आनन्दरूप, परम मंगलकारी ॥२॥

श्री गोकुलेस वल्लभकुल, तिलक मध्यधारी ॥
श्री रघुनाथ जदुनाथ बिराजत कोटि काम बलिहारी ॥३॥
श्री घनस्याम रूप अनूप, ब्रज के हितकारी ॥
यह लीला कोऊ पार न पावत, मुकुंददास बलिहारी ॥४॥

उक्त पद में गोस्वामी विट्ठलनाथजी और उनके सातों पुत्रों की स्तुति की गई है। गोस्वामी विट्ठलनाथजी का प्रथम विवाह संवत् १५८९ के लगभग और दूसरा विवाह संवत् १६२० में हुआ था।[१]

ऐसी स्थिति में वार्ता-साहित्य के अनुसार वल्लभाचार्यजी के नित्य लीला प्रवेश संवत् १५८७ के पूर्व स्वर्गवासी होने वाले मुकुंददास सिहानिया कायस्थ का वल्लभाचार्यजी के तिरोधान के लगभग दो वर्ष बाद प्रथम विवाह करने वाले गोसाईं विट्ठलनाथजी के पुत्रों के जन्मोत्सव पर बधाई के पद गाने के लिए पुनर्जीवित होना असंभव है। वार्ता के अनुसार मुकुंददास सिहानिया कायस्थ आचार्य वल्लभ के जीवनकाल में ही उज्जैन में स्वर्गवासी हो गये थे।

इससे स्पष्ट है कि गोस्वामी विट्ठलनाथ और उनके पुत्रों के जन्मोत्सव पर बधाई व कीर्तन के पद लिखने वाले मुकुंददास महाप्रभु वल्लभाचार्यजी के शिष्य मुकुंददास सिहानिया कायस्थ से भिन्न व्यक्ति थे।

मुकुंददास सिहानिया कायस्थ वल्लभ-सम्प्रदाय के ही व्यक्ति थे, अतः सम्प्रदाय में उनके द्वारा रचित भँवरगीत को उनके नाम पर ही प्रचलित रखने में कोई कठिनाई नहीं थी। किसी अन्य जनमुकुंद या मुकुंददास की रचना को नन्ददास के नाम पर चलाने में वल्लभ-सम्प्रदाय के लोगों का कोई लाभ या स्वार्थ न था। इसलिये इतना तो निश्चित है कि वल्लभ-सम्प्रदाय द्वारा यह रचना नन्ददास के नाम पर नहीं जोड़ी गई है। सम्प्रदाय में, कीर्तन में यह रचना नन्ददास के नाम से ही गाई जाती है और कीर्तनियों की परम्परा इसे नन्ददास की ही कृति मानती है। इस रचना का छंद-विधान नन्ददास के स्याम सगाई से मेल खाता है और दूसरी ओर महाकवि सूर के प्रसिद्ध पद ऊधौ कौ उपदेस सुनौ किन कान दै।[२] से प्रतिस्पर्धा करता हुआ सा दिखाई देता है।

नन्ददास की जीवनी से स्पष्ट है कि वे सूरदास के साथ रहे थे। अतः बहुत सम्भव है कि सूर के सम्पर्क में रहते समय उक्त पद को सुन सूर की भावुकता के मार्ग को त्याग नन्ददास ने तार्किक पद्धति पर प्रस्तुत भँवरगीत रचा हो। भँवरगीत में नन्ददास का अहम्, आचार्यत्व, वल्लभ-दर्शन की सैद्धांतिक मीमांसा, और कवित्व की प्रौढ़ अभिव्यक्ति लक्षित होती है, अतः मनोवैज्ञानिक आधार, कवि-प्रतिभा और परिस्थिति

---

१. **अष्टछाप परिचय—श्री प्रभुदयाल मीतल, द्वितीय संस्करण, सं० २००६, पृ० २४.**
२. **सूरसागर—सं० आचार्य नंददुलारे बाजपेयी, पृष्ठ १४७६, छंद ४७१४**

के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत भँवरगीत सूर के उक्त पद की प्रतिक्रियात्मक सृष्टि लक्षित होती है।

भवरगीत और स्याम सगाई में प्रयुक्त छंद के स्वरूप को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि भँवरगीत के छंद को कथात्मक एवं संवादात्मक पदों में प्रयुक्त करने में नन्ददास को अद्‌भुत सफलता मिली है। डॉ० दीनदयालु गुप्त के मतानुसार भँवर-गीत में प्रयुक्त छंद का आविर्भाव यदि सूर की वाणी से हुआ है तो यह कल्पना करना अनुचित नहीं है कि सूर के सान्निध्य में सूर की ही प्रेरणा से नन्ददास के मन में प्रतिस्पर्धा की भावना हुई और उसी प्रेरणा से उन्होंने सूर के छंद में सूर द्वारा वर्णित भ्रमरगीत प्रसंग को अपने ढंग से लिखा।

अतः इतिहास, परिस्थिति, ग्रंथ का स्वरूप, मनोविज्ञान और प्रमाणों के आधार पर प्रस्तुत भँवरगीत नन्ददास की ही कृति मानी जा सकती है, मुकुन्ददास सिंहानिया कायस्थ की नहीं। भँवरगीत की हस्तलिखित प्रतियों में मुकुंददास या जन-मुकुंद के नाम के आगे सिंहानिया या कायस्थ का उल्लेख कहीं नहीं है।

दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता में वर्णित मुकुंददास सेखड़ गोस्वामी विट्ठल-नाथजी के निजी सेवक थे। उनके कवित्व के सम्बन्ध में वार्ता-साहित्य मौन है, अतः यह कल्पना कोई आधार नहीं रखती कि मुकुंददास सेखड़ भँवरगीत के रचयिता थे।

नागरी प्रचारिणी सभा के खोज-विवरणों में जिन जनमुकुंद और मुकुंददास भटनागर कायस्थ का विवरण दिया गया है और जिन्हें भँवरगीत का रचयिता कहा गया है, वह कोई प्रामाणिक मन्तव्य नहीं है। किसी भी हस्तलिखित प्रति में यह नहीं लिखा है कि जनमुकुंद भटनागर कायस्थ थे। विवरणकारों ने इस विषय में कोई प्रमाण नहीं दिया कि उक्त भटनागर बंधुओं ने ही यह भँवरगीत लिखा है। न ये पता चलता है कि तथाकथित जनमुकुंद और मुकुंददास भटनागर कभी वल्लभ-संप्रदाय में दीक्षित हुए थे। यदि भँवरगीत जैसी वल्लभ-सम्प्रदाय की दार्शनिक विचारसरणि-प्रतिपादक रचना उक्त भटनागर बन्धुओं ने वल्लभ-सम्प्रदाय में दीक्षित होकर लिखी होती तो वार्ता-साहित्य में इस प्रसंग का या इन दोनों बन्धुओं का नामोल्लेख अवश्य होता। पर ऐसा नहीं हुआ। संप्रदाय के कीर्तन में अष्टछाप के कवियों के ही पद गाये जाते हैं, अतः सम्प्रदायेतर अस्तित्व रखने वाले उक्त जनमुकुंद भटनागर की रचना किसी भी हालत में नित्य कीर्तन के लिए नहीं ली जा सकती थी।

खोज विवरण के नन्द और मुकुंद को दिनकरदास मुकुंददास सिंहानिया कायस्थ भी नहीं माना जा सकता क्योंकि नन्द और मुकुंद भटनागर और दिनकरदास सिंहानिया कायस्थ थे। यदि गोत्र-भेद छोड़ दिया जाय तो भी वल्लभ-सम्प्रदाय की परिधि के बाहर साम्प्रदायिक सिद्धान्त-प्रतिपादक भँवरगीत जैसी कृति की रचना सहसा

अन्यमार्गीय व्यक्तिओं द्वारा होना कोई ठोस प्रमाण या आधार नहीं रखती। खोज विवरणकारों ने केवल नाम-साम्य के आधार पर ही उक्त भटनागर बन्धुओं का नाम भँवरगीत के साथ जोड़ दिया है। फिर खोज विवरणकारों के मतानुसार नन्द और मुकुंद ने श्रीमद्भागवत का पद्यानुवाद केवल अष्टम स्कन्ध तक ही किया है। भँवर-गीत-प्रसंग श्री मद्भागवत के दशम स्कन्ध के ४६ वें और ४७ वें अध्याय में है। अतः खोज विवरणकारों की ही मान्यता के अनुसार उक्त भँवरगीत तथाकथित श्रीमद्भा-गवत के पद्यानुवाद का अंश नहीं हो सकता। भँवरगीत की सभी उपलब्ध प्रतियों में प्राप्त पुष्पिकाओं के आधार पर भी भँवरगीत नन्द और मुकुंद भटनागर कायस्थ की रचना सिद्ध नहीं होता, अतः विवरणकारों द्वारा नाम-साम्य के आधार पर दिये गए विवरण निराधार अतः अमान्य हैं।

भँवरगीत वस्तुतः नन्ददास की ही कृति है। नन्ददास की अन्य रचनाओं से उसका भाषा और भाव साम्य द्रष्टव्य है। उदाहरण के लिए नन्ददासकृत रासपंचा-ध्यायी और प्रस्तत भँवरगीत के कुछ शब्दों और भावों का साम्य देखिए—

रासपंचाध्यायी—विष तैं जल तैं व्याल अनल तैं चपला झरतैं॥
क्यौं राखीं नहिं मरन दई नागर नगधर तैं॥
—नन्ददास-ग्रन्थावली, पृष्ठ १८, छंद ३

भँवरगीत—व्याल अनल विष ज्वाल तैं राषि लिए सब ठौर।
विरह अनल अब दाहिहौं हँसिहँसि नन्दकिसोर॥
चोरि चित ले गए।।—छंद ३४

उक्त अवतरणों में 'व्याल अनल विष-ज्वाल' का प्रयोग-साम्य स्पष्ट है।

रासपंचाध्यायी—कोउ मुरली संग रली, रंगीली रसहिं बढ़ावति॥
—नन्ददास-ग्रन्थावली, पृष्ठ २२, छंद १६.

अथवा

तेउ पुनि तिहि मग चली रंगीली तजि गृह संगम॥
—नन्ददास-ग्रन्थावली, पृष्ठ ९, छंद ५५.

भँवरगीत—रंगीली प्रेम की॥ छंद ४२.

रासपंचाध्यायी—बैठे पुनि तिहिं पुलिन, परम सानन्द भयो है।
—नन्ददास-ग्रन्थावली, पृष्ठ २०, छंद ८

भँवरगीत—जदुकुल सगरे कुसल, परम आनन्द सबन के॥ छंद ५

रासपंचाध्यायी—तब पिय पदवी पाइ बहुरि धरिहैं सुन्दर अँग॥
—नन्ददास ग्रन्थावली, पृष्ठ २८, छंद २६

भँवरगीत—यह नीची पदवी हुती गोपीनाथ कहाय ।। छंद ५६

रासपंचाध्यायी और भँवरगीत में ऐसे अनेक भाव, शब्दरूप, प्रयोग आदि के साम्य स्पष्ट दिखाई देते हैं। दार्शनिक विचारों की दृष्टि से भी यह रचना नन्ददास की ही लक्षित होती है। उक्त सभी विवेचन के आधार पर नित्य कीर्तन में प्रयुक्त भँवरगीत नन्द और मुकंद या अन्य किसी मुकुंददास की अपेक्षा महाकवि नन्ददास की ही कृति मानना अधिक युक्तियुक्त है।

जनमुकुन्द-छाप का स्रोत--

भँवरगीत की सम्पूर्ण हस्तलिखित प्रतियों को मनोयोगपूर्वक पढ़ने के बाद यह पता चलता है कि नन्ददास छाप वाली अधिकांश प्रतियों में भाषा और छंदक्रम की अशुद्धियाँ कम हैं। जबकि जनमुकुंद छापवाली प्रतियों में लिपिदोष और छंदव्यवस्था में त्रुटियाँ अधिक हैं। नन्ददास छापवाली प्रतियों के स्रोत अधिकांशतः साम्प्रदायिक रहे हैं, पर जनमुकुंद छाप वाली प्रतियाँ सम्प्रदायेतर व्यक्तियों के पास भी पाई जाती हैं। सम्प्रदाय वाले परम्परा से ही इसे नन्ददास की रचना मानते हैं और कीर्तनियों के प्राचीन घराने इसे नन्ददास कृत मानकर ही गाते चले आ रहे हैं।

प्रस्तुत विषय पर शोध करते समय कुछ ऐसे हस्तलिखित ग्रंथ हमारे सामने आये जिनसे यह सिद्ध हो जाता है कि जनमुकुंद या मुकुंददास कोई लिखिया थे, जिन्होंने प्रतिलिपि करते समय भँवरगीत के अन्तिम छंद और पुष्पिका में नन्ददास के बदले अपना नाम रख दिया और फिर प्रतिलिपि-परम्परा में नन्ददास की अपेक्षा जनमुकुंद, कबी मुकुंद आदि नाम भँवरगीत के साथ जुड़ गये।

प्राप्त प्रमाणों के अनुसार ये जनमुकुंद या मुकुंददास श्री हरिरायजी (जन्म संवत् १६४७ और नित्यलीलाप्रवेश संवत् १७७२)[1] के जीवनकाल के उपरान्त विद्यमान थे। इन्होंने हरिरायजी की प्रसिद्ध रचना 'सनेहलीला' की प्रतिलिपि संवत् १८८८ में की जो अपने मूल रूप में याज्ञिक संग्रहालय में (ग्रंथक्रमांक २१ । २७) विद्यमान है। इस प्रति के अंत में कवि की छाप इस प्रकार है—

> **यह लीला व्रजवास की गोपी कृष्ण सनेह ।**
> **जनमोहन जे गावही, ते पावें नर (नहिं) देह ।।**
> **जो गावे सीखे सुने, मन वच कर्म समेत ।**
> **(श्री) रसिकराय पूरनकथा, मन वाँछित फल देत ।।**
> **गोपी अरु ऊधो कथा, भू पर परम पुनीत ।**
> **तीन लोक चौदह भुवन, बरनी कबि सुभ गीत ।।**
> **इति श्री सनेह लीला संपूर्ण ।।**

---

१. अष्टछाप परिचय—श्री प्रभुदयालजी मीतल, द्वितीय संस्करण. पृष्ठ ८०,

ग्रन्थान्त की सूचना के बाद मुकुंददासजी ने एक दोहा लिखकर अपना नाम भी सनेहलीला में जोड़ा है—

श्री मुकुन्ददास मधुप जहाँ, श्री विष्णु दास अनुराग ।
जसुधा पूर्ण (प्रेम) प्रवाह ते, परो रहत बड़ भाग ।।

मूल ग्रंथ में अपना नाम जोड़ने की प्रवृत्ति उक्त मुकुन्ददासजी में थी ।

लाला नन्दकिशोरजी मुकुटवाले, प्रताप बाजार, वृन्दावन के निजी संग्रह में भँवरगीत की प्रेमरस पूजनी लीला के नाम से प्रतिलिपिकरने वाले यही मुकुंददास हैं, जिन्होंने नन्ददास के स्थान पर जनमुकुंद छाप जोड़ी है और हरिरायजी की सनेहलीला को निस्संदेह अपनी कृति घोषित करते हुए लिखा है कि—

यह लीला वृजवास की, गोपी कृष्ण सनेह ।।
जनमोंहन जो गामहीं, ते पामें नर देह ।।२१।।
जो गावें सीषें सुनें मन विच कर्म समेत ।।
श्री रसिकराय पूरन कृपा, मनवांछित फल देत ।।२२।।
गोपी अरु उद्धव कथा, भू पर परम पुनीत ।।
तीन लोक चौदे भमन, बंदनीक शुभ गीत ।।२३।।
नासत सकल कलेस कलि, अरु उपजत मन मोद ।।
जुगल चरन मकरंद मन मानत पर (म) विनोद ।।२४।।
श्री मुकुन्द मन मधुप जहाँ, सकल संत अनुराग ।
दसधा प्रेम प्रवाह में परे रहत बड भाग ।।२५।।
इति श्री मुकुन्ददासकृत सनेहलीला संपूर्ण ।।२।।

सनेहलीला के पूर्व ही नन्ददासकृत भँवरगीत मुकुंददासकृत प्रेम रस पूजनी लीला के नाम से लिखा है, जिसकी अन्तिम पंक्तियाँ और टिप्पणी इस प्रकार हैं—

गोपी आप दिषाइ एक कीनी बनवारी ।।
उद्धौ कौ भरम निवारि डारि व्यामोहक जारी ।।
अपनौं रूप दिषाइकें लीनौ वौहौरि दुराइ ।।
जनमुकंद पावन भयौ, सो यह लीला गाइ ।।
प्रेम रस पूजनी ।।
इति श्री मुकन्ददासकृत प्रेमरस पूजनी लीला सम्पूर्ण ।।

उक्त हस्तलिखित प्रति का लिपिकाल फाल्गुण वदी ५, संवत् १८८० है।[1]

---

१. देखिए—प्रस्तुत अध्याय में ही भँवरगीत की हस्तलिखित प्रतियों का परिचय, प्रति क्रमांक ५३.

इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि नन्ददासकृत भँवरगीत की हस्तलिखित प्रतियों में जनमुकुंद छाप का प्रयोग और टिप्पणियों में मुकुंददास का प्रयोग संवत् १८८० तक प्रचलित हो गया था। इस परम्परा की प्राचीनतम उपलब्ध प्रति संवत् १८१३ की है, जो हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग में है। इस प्रति का अनुक्रमांक १३५१ तथा हस्तलेख क्रमांक २१३० है। इस प्रति के प्रारम्भ में ग्रन्थ के दो नाम दिये गये हैं। अथ भवरगीता लिख्यते ॥ प्रेमरसपूजनी।—और अंत में कवि की छाप जनमुकुन्द दी गई है। ग्रंथांत में टिप्पणी इस प्रकार है—

इति श्री प्रेम रस पूजनी कथा संपूरर्ण समापतं ॥ संवत् १८१३, श्रावण सुदि ८ भौमवासरे ॥

लिखियाओं की विशेषता का लक्षण यह है कि नन्ददास के मूल भँवरगीत के तीन छंद यथा छंद क्रमांक ३२, ३३ और ५७ इस प्रति में छूट गये हैं। ग्रन्थों की प्रतिलिपि करते समय मूल रचना के कुछ अंश को छोड़ना या कुछ अपनी ओर से जोड़ना आज भी प्रतिलिपिकार करते हैं। बहुत संभव है कि ग्रन्थ का नाम बदलकर, कुछ अंश छोड़कर और अपनी छाप जोड़कर भँवरगीत को जनमुकुंद के नाम से प्रचारित करने वाले उक्त मुकुंददासजी हरिरायजी के निधनकाल संवत् १७७२ और प्रेमरस पूजनी लीला की उक्त प्रतिलिपि के लेखनकाल अर्थात् संवत् १८१३ के मध्य मथुरा या वृन्दावन में वर्तमान रहे हैं, और उन्होंने ही हरिरायजी की सनेह लीला की तरह नन्ददासकृत भँवरगीत को अपने नाम से चला दिया हो। इसके उपरान्त सम्प्रदाय में भँवरगीत नन्ददास के नाम से और लोक में प्रतिलिपिकारों के द्वारा प्रसारित प्रतियों में जनमुकुंद के नाम से चल पड़ा। साम्प्रदायिक साहित्य के प्रति सम्प्रदायवालों का मोह विलक्षण है। सम्प्रदाय के बाहर उनके साहित्य की क्या दशा है अथवा उसके उचित व्यवहार के लिए क्या किया जाय—इस दिशा में सम्प्रदायवालों की नीति उपेक्षा की रही है। यदि कोई व्यक्ति साम्प्रदायिक साहित्य को यथावत् शोधकर सही रूप में प्रतिष्ठित भी करना चाहे तो संप्रदाय के लोग उसे कम प्रोत्साहन देते हैं। यह प्रवृत्ति भारत के सभी सम्प्रदायों के साहित्य के लिए हानिकर है।

परिणाम यह हुआ कि वल्लभ-संप्रदाय की सीमा में नंददास छाप वाली प्रतियाँ कम और प्राय: साम्प्रदायिक क्षेत्र के बाहर जनमुकुन्द छापवाली प्रतियाँ खूब प्रचारित और प्रसारित हुईं।

शोध में उपलब्ध प्रतियों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि संवत् १८१३ के उपरांत संवत् १९१० तक भँवरगीत में नंददास और जनमुकुन्द दोनों की छाप विद्यमान थी। यथा—

प्रतिक्रमां ६—लिपिकाल सं० १८८१। कवि की छाप—नंददास।
टिप्पणी में ग्रन्थकर्ता का नाम—जनमुकुन्द।

प्रतिक्रमांक ४१—लिपिकाल सं० १८६० । कवि की छाप—जनमुकुन्द ।
पुष्पिका में ग्रन्थकर्ता का नाम—नंददास ।

प्रतिक्रमांक ५—लिपिकाल सं० १६१० । कवि की छाप—जनमुकुन्द ।
टिप्पणी में ग्रन्थकर्ता का नाम—नंददास ।

इस भ्रामक परिस्थिति का उद्भव संवत् १७७२ और १८१३ के मध्य हुआ ।

अस्तु, प्राप्त प्रमाणों और पूर्वोक्त विवेचन के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि भँवरगीत के रचयिता नंददास ही थे । सद्यः उपलब्ध जनमुकुन्द छाप वाली प्रतिलिपियाँ प्रतिलिपिकार मुकुन्ददास की देन हैं, जो ग्रंथ की लोकप्रियता के साथ उन्नीसवीं शताब्दी में और उसके बाद तक जनमुकुन्द के नाम से लोकजीवन में प्रचारित होती रही हैं ।

मुकुन्ददासजी में काव्य-प्रतिभा थी, जिसके द्वारा उन्होंने हरिरायजी की सनेह लीला में अपनी ओर से छन्द जोड़े हैं । संभव है, वे वल्लभ-सम्प्रदाय के ही व्यक्ति रहे हों और उन्होंने गुसाईंजी की बधाई के पद भी लिखे हों, जो सम्प्रति हमें कीर्तन पद-संग्रहों में उपलब्ध होते हैं ।

दूसरे की रचना को अपने नाम पर प्रचारित करने वाला व्यक्ति सामान्यतः अपनी रचना को दूसरे के नाम से प्रचारित नहीं करता, अतः यह कल्पना अनुचित है कि जनमुकुन्द ने अपनी रचना नंददास के नाम से चला दी है । नंददास के समय से ही भँवरगीत पुष्टि-सम्प्रदाय के मंदिरों में कीर्तन में प्रयुक्त होता चला आ रहा है, अतः उसे नंददास की ही रचना मानना चाहिए ।

हस्तलिखित प्रतियों की परम्पराएँ—

भँवरगीत की हस्तलिखित प्रतियों की परम्पराएँ दो रूपों में मिलती हैं । एक परम्परा उसे नंददास की और दूसरी परम्परा उसे जनमुकुन्द की रचना बतलाती है, किन्तु जैसा कि ऊपर निर्दिष्ट किया गया है, भँवरगीत की हस्तलिखित प्रतियों की प्रमुख धारा नंददास छापवाली प्रतियों में ही मिलती है । जनमुकुन्द छापवाली प्रतियों में लिपिकारों की भूलों की भरमार है, अतः जनमुकुन्द छाप वाली प्रतियाँ अधिक अशुद्ध हैं और उनका पाठ भी भ्रष्ट है । और तो और, जनमुकुन्द छाप ही पाँच रूपों में, यथा—जनमुकन्द, जनमुकुन्द, मुकुन्ददास, कबीमुकुन्द, जनमकुन्द, मिलती है । इन छापवाली प्रतियों में उपलब्ध शब्दरूपों की अशुद्धियों के लिए प्रस्तुत ग्रंथ में संपादित भँवरगीत की पाद-टिप्पणी में अंकित पाठभेद देखे जा सकते हैं ।

हस्तलिखित प्रतियों का छंदक्रम—

भँवरगीत की सभी हस्तलिखित प्रतियों में प्रायः ७५ छंद मिलते हैं, किन्तु

खोज में उपलब्ध हस्तलिखित प्रतिक्रमांक ८ में छंद क्रमांक ३६, ४८, ५०, ५१, ५३, ५५ और ५६ लिपिकर्ता द्वारा छूट जाने के कारण उसमें ७५ के बदले केवल ६८ छंद हैं। इसी तरह प्रति क्रमांक ३० में छंद क्रमांक ३२, ३३ और ५७ छूट जाने के कारण उसमें अन्तिम छंद का क्रमांक ७५ के बदले ७२ है। हस्तलिखित प्रतिक्रमांक ४० में लिपिकार ने छंद क्रमांक ५६ को ही ५७ क्रमांक दे दिया है और ५७ वाँ छंद उससे लिखते समय छूट गया है। शेष प्रतियों में प्रायः ७५ छंद हैं।

उपलब्ध सभी प्रतियों में छंदक्रमांक १ से ३० तक का क्रम बराबर है। शेष सभी प्रतियों में, जो पूर्ण हैं, हस्तलिखित प्रतिक्रमांक ८ और ३० में छंदों की क्रम व्यवस्था बहुत ही अस्त-व्यस्त है। बहुत संभव है, प्रतियाँ लिपिकर्ताओं ने अपना स्मरण-शक्ति के सहारे लिखी हों और स्मृति दोष से इन प्रतियों में छंद-क्रम दोष आ गया हो। इसी प्रकार की स्थिति हस्तलिखित प्रतिक्रमांक ४६ में भी एक स्थल पर दिखाई देती है। उसमें भी लिपिकर्ता ने सामान्य प्रतियों में प्राप्त छंद क्रमांक ६४-६५ को आगे-पीछे ६५ और ६४ क्रमांक पर लिखा है।

हस्तलिखित प्रतिक्रमांक ८ और हस्तलिखित प्रतिक्रमांक ३० की छंद-व्यवस्था निम्नानुसार है। अधोलिखित विवरण में आड़ी रेखाएँ छंद के छूट जाने को प्रतीक हैं—

पृष्ठ ५० की तालिका के आधार पर भँवरगीत की प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों में पाठानुसंधान की दृष्टि से छंद-लोप और छंद-विपर्यय की कल्पना की जा सकती है।

हस्तलिखित प्रतियों के छंदों में पंक्ति-क्रम—

भँवरगीत की उपलब्ध हस्तलिखित प्रतियों में विविध शब्दों की पंक्तियों का क्रम एक समान नहीं है। पंक्तियों के क्रम में लोप, आगम, विपर्यय, पंक्ति-अंश-परिवर्तन पाये जाते हैं। स्थानाभाव के कारण यहाँ सभी प्रतियों के पंक्ति-क्रम का विवेचन करना संभव नहीं है, फिर भी पंक्ति-क्रम-वैशिष्ट्य द्योतक कतिपय छंद यहाँ सप्रमाण उद्धृत किये जा रहे हैं।

(क) लोप

भँवरगीत के तृतीय छंद का सर्व सामान्य उपलब्ध और सद्यः निर्धारित पाठ इस प्रकार है—

सुनत स्याम कौ नाम ग्राम ग्रह की सुधि भली ॥
भरि आनंद रस ह्रदै प्रेम बेली दृग फूली ॥

छंद-संख्या		
सर्व सामान्य क्रम	प्र ते क्र० ८	प्रति क्र० ३०
३१	३२	३१
३२	३१	—
३३	३५	—
३४	३३	३२
३५	३४	३३
३६	—	३४
३७	३७	३५
३८	३६	३६
३९	३९	३७
४०	३८	३८
४१	४०	३९
४२	४१	४०
४३	४२	४१
४४	४३	४२
४५	४४	४३

छंद-संख्या		
सर्व सामान्य क्रम	प्रति क्र० ८	प्रति क्र० ३०
४६	४५	४४
४७	५१	४६
४८	—	४५
४९	५२	४८
५०	—	४७
५१	—	५१
५२	४७	४९
५३	—	५१
५४	५०	५२
५५	—	५४
५६	४६	५३
५७	४८	—
५८	४९	५६
५९	—	५५
६०	५३	५७

छंद-संख्या		
सर्व सामान्य क्रम	प्रति क्र० ८	प्रति क्र० ३०
६१	५४	५८
६२	५५	५९
६३	५६	६०
६४	५७	६१
६५	५८	६२
६६	६१	६५|६६
६७	५९	६३
६८	६०	६४
६९	६२	६७
७०	६३	६८
७१	६४	६९
७२	६५	७०
७३	६६	७१
७४	६७	७२
७५	६८	

पुलकि रोम सब अंग भये, भरि आए जल नैन ।।
कंठ घुटे गदगद गिरा, बोले जात न बैन ।।

विवस्था प्रेम की ।।

प्रतिक्रमांक ३० में उक्त छन्द का पाठ इस प्रकार है—

सुनत स्याम को नाम ग्राम घर की सुधि भूली ।।
भर आयो जल नैन, कन्ठ कुन्ठ गदगद गिरा ।।
बोल्ये जात न बैन, अवस्था प्रेम की ।।३।।

(ख) आगम--

भँवरगीत की हस्तलिखित प्रतियों में पंक्तियों में आगम का स्वरूप दो प्रकार का है–

१. पुनर्लेखन तथा २. नवीन-पंक्ति-योग । यथा–

(१) **पुनर्लेखन**—हस्तलिखित प्रतिक्रमांक १२ में छन्दक्रमांक २ का प्रथम चरण दो बार लिखा है ।

(२) **नवीन पंक्ति-योग**—लिपिकर्ताओं ने कहीं-कहीं अपनी ओर से मूल छन्द में कुछ पंक्तियाँ जोड़ कर मूल छन्द का आकार बढ़ा दिया है । उदाहरणार्थ प्रतिक्रमांक २० के छन्द क्रमांक ५ में रेखांकित दो पंक्तियाँ अधिक हैं—

कुसल राम अर स्याम कुसल सभ संगी उनके ।।
जदुकुल सकलो कुसल पर्म आनंद सभन के ।।
पूछन बृज कुसलात कों हम आयो इह तीर ।।
नंद रस रिदे प्रेम वेली दृग फूली ।।
पुलक रोम सभ अंग के भर आयो तुम तीर ।।
मिलिहे थोरे दिवस में जन जीय धरो अधीर ।।

सुनो ब्रजवासनी ।।

(ग) विपर्यय--

कुछ एक प्रतियों में छन्दों की पंक्तियाँ आगे-पीछे हो गई हैं । उदाहरणार्थ सभी प्रतियों में छन्द-क्रमांक २० का पाठ इस प्रकार है--

जो उनके गुन नाहि और गुन भये कहां तें ।।
बीज बिना तरु जमे मोहि तुम कहो कहां तें ।।
वा गुन की परछांह री माया दरपन बीच ।।
गुन तें गुन न्यारे भये अमल वारि ज्यों कीच ।।

सखा सुनि स्याम के ।।

किन्तु हस्तलिखित प्रतिक्रमांक ३४ में उक्त छन्द का पाठ इस प्रकार है—

जो उनको गुन और और गुन भये कहा ते ।।
वा गुन की परछाँह री माया दरपन बीच ।।
बीज बिना तर जमत मोह तुम कहो कहा ते ।।
गुन ते गुन न्यारे भये अमल वादि जल कीच ।।

सखा सुनि स्याम के ।।

उपरोक्त छन्द में दूसरी और तीसरी पंक्तियों का विपर्यय द्रष्टव्य है ।

(घ) पंक्ति-अंश-परिवर्तन—

प्रतिलिपिकारों ने कहीं-कहीं अर्थगत साम्य को दृष्टिगत रखते हुए पंक्तियों के अंश बदल दिये हैं । यथा—छन्द-क्रमांक ४ की प्रथम पंक्ति इस प्रकार है—

अरघासन बैठाय और परिकर्मा दीनी ।

हस्तलिखित प्रतिक्रमांक ४५ में उक्त पंक्ति का पाठ इस प्रकार है—

अरु सिंघासन बैठाई बोहोरि परिक्रमा दीनी ।।

स्पष्ट है कि उक्त पंक्ति के अंतिम शब्द को छोड़ लिपिकर्ता ने शेष पंक्ति में पूरा का पूरा परिवर्तन कर डाला है ।

(ङ) टेक परिवर्तन का विरोधी पाठ—

इसी तरह के कुछ प्रतियों में टेक-परिवर्तन पाये जाते हैं । उदाहरणार्थ प्रस्तुत भँवरगीत के छन्द क्रमांक ३४ में टेक है—चोरि चित लै गये ।।

पर, हस्तलिखित प्रतिक्रमांक ८ में उक्त छन्द की उक्त टेक का पाठ इस प्रकार लिखा है—

तुम्हें यो बूझिये ।।

कहीं-कहीं तो टेक-परिवर्तन से अर्थ का अनर्थ हो गया है। उदाहरणार्थ भँवर-गीत के छन्द-क्रमांक २५ में "सुनौ ब्रजनागरी।" टेक है, किन्तु हस्तलिखित प्रति क्रमांक १२ में उक्त टेक के स्थान पर "सषा सुनि स्याम के॥" लिखा गया है। परिणामतः उद्धव का कथन गोपियों द्वारा कथित हो गया है। इससे भँवरगीत का संवाद विस्खलित हो गया है और टेक परिवर्तन से अर्थ में अशुद्धि आ गई है। यह दोष लिपिकार की असावधानी का फल है।

प्रति क्रमांक ८ में टेक आधी-आधी लिखी गई है, जिसके आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि लेखक को पूरी टेक मालूम थी। केवल छन्दों को स्मरण रखने के लिए उसने उक्त प्रति में छन्द पूरा और टेक अपूर्ण लिखी हैं।

हस्तलिखित प्रतियों के शब्द-रूप---

यह बड़े खेद का विषय है कि आज नंददासजी के हाथों से लिखी हुई भँवरगीत की प्रति कहीं भी उपलब्ध नहीं है। शेष जितनी भी प्रतियाँ उपलब्ध हैं, वे अलग-अलग लिपिकारों द्वारा लिखी गई हैं। इन सभी प्रतियों में लिपिदोष इतने अधिक हैं कि उनमें से किसी एक ही प्रति को प्रामाणिक मानकर पाठ-निर्धारित करना असंभव है।

जनमुकुन्द छाप वाली संवत् १८१३ की हस्तलिखित प्रतिक्रमांक ३० में छन्द-क्रम अव्यवस्थित है और उसमें छन्द छूटे हुए हैं। यही हालत संवत् १८४६ में लिखित हस्तलिखित प्रति क्रमांक ८ की है। उसमें भी छन्द छूट गये हैं। शब्द रूपों की दृष्टि से भी ये दोनों प्रतियाँ असमान हैं, अतः प्राचीन होने पर भी ये प्रतियाँ पाठानुसंधान के लिए प्रामाणिक पाठ का आधार नहीं मानी जा सकतीं।

शेष प्रतियों में भी शब्द-रूपों की दृष्टि से अनेक असंगतियाँ हैं। उदाहरणार्थ छन्द क्रमांक १८ में प्रयुक्त "पियूषें" शब्द के अन्यान्य प्रतियों में आठ रूप मिलते हैं— १. पयूषः, २. पीउषे, ३. पयूष, ४. पियुषे, ५. पियूषी, ६. पियुके, ७. पियुषें, और ८. पीय पें आदि। इसी तरह छन्द क्रमांक १८ का पूजन शब्द १. पूजिये, २. पूजीयैं, ३. पूजियें, ४. पूजियै, ५. पूजई, ६. पूजीये, ७. पुजिए आदि रूपों में लिखा हुआ मिलता है।

ऐसी स्थिति में भँवरगीत के पाठ-निर्धारण के लिए निम्नलिखित पद्धति का अनुसरण किया गया है—

भँवरगीत का पाठानुसंधान—

भँवरगीत की पंक्तियों और छन्दों का क्रम सर्वसामान्य प्रतियों के ही अनुरूप

रखा गया है तथा एतद्विषयक अपवादों का उल्लेख पाद-टिप्पणी में किया गया है।

२. शब्द-रूपों के निर्धारण के लिए केवल हस्तलिखित प्रतियों को ही आधार माना गया है। अधिकांश प्रकाशित प्रतियों के पाठ आधारहीन अतः संपादकों की इच्छा पर आश्रित होने के कारण यहाँ पाठानुसंधान के लिए नहीं लिये गये हैं। उपलब्ध ५५ हस्तलिखित प्रतियों में, जिनका विवरण यहाँ दिया जा चुका है, कुल मिलाकर २ लाख, ६४ हजार, ५८७ शब्द थे। परस्पर मिलान करने पर ये शब्द छुट-पुट लिपि-भेद के साथ ६ हस्तलिखित प्रतियों में मिले अतः इन ६ प्रतियों को ही पाठानुसंधान की आधारभूत प्रतियाँ माना गया।[1]

३. क से झ तक की इन ६ हस्तलिखित प्रतियों को ऐतिहासिक क्रम से जमाकर उनमें उपलब्ध होने वाले एक-एक शब्द के पाठ रूपों का ऐतिहासिक विकास-क्रम खोजा गया और फिर उसमें भाव, भाषा और छन्द-विधान के अनुरूप श्रेष्ठतम पाठ चुन उसे ग्रन्थ के मूल पाठ के रूप में स्थान दिया गया। फलतः भँवरगीत के प्रस्तुत पाठ में लगभग २,५२८ शब्द हैं और इन शब्दों के ६,५३६ पाठ-भेद पाद-टिप्पणी में दिये गये हैं, जो आलोच्य ५५ प्रतियों के पाठ-भेदों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

४. श्रेष्ठतम पाठ-चयन के समय नंददासजी की अन्य रचनाओं की हस्तलिखित प्रतियों, विशेषकर रासपंचाध्यायी, भाषा दशम स्कन्ध, स्यामसगाई के पाठों से शब्द-रूपों का मिलान किया गया है। इससे प्राचीन शब्द-रूप-निर्धारण में बड़ी सुविधा हुई है।

५. जैसा कि पहले कहा जा चुका है, प्रस्तुत पाठ का चयन और निर्धारण पूर्णतः हस्तलिखित प्रतियों पर ही आधृत है, हमने उसमें अपनी ओर से एक अक्षर, अनुस्वार, अल्पविराम या मात्रा जोड़ने का साहस नहीं किया है। यह सब करते समय हमने नंददास की भाषा का स्तर और उनके युग की ब्रजभाषा की प्रवृत्ति को ध्यान में रखा है।

६. हस्तलिखित प्रतियों में स्वरों के ह्रस्व और दीर्घ लेखन की अनेक भद्दी भूलें थीं। यथा—

ह्रस्व स्वरों का दीर्घ लेखन—जीय, जीया, दीयै, लीयौ, पाईयें आदि।

दीर्घ स्वरों का ह्रस्व लेखन—मुली, फुली, भरपुर, धुरि आदि।

ऐसी दशा में उपलब्ध पाठों में से शुद्धतम पाठ ही मूल पाठ में चुना गया है,

---

१. **देखिये—भँवरगीत : पाठ और पाठभेद**,

जो भाषा की शुद्धि और छन्द-विधान की दृष्टि से पूर्णतः उपयुक्त है। लिपिदोषों का यह मार्जन नंददास के कवित्व और आचार्यत्व को लक्ष्य में रख कर किया गया है।

७. अशुद्ध, अस्पष्ट और भ्रामक पाठ सावधानीपूर्वक त्याग दिये गये हैं।

८. कुछ हस्तलिखित प्रतियों में इकार और उकार का अनावश्यक प्रयोग हुआ है और कहीं-कहीं आवश्यक होने पर भी उनकी उपेक्षा हो गई है। जैसे—

इकार का अनावश्यक प्रयोग—पुलिकित, भरिपूर, जिनिके इत्यादि।

इकार का लोप—बहुर, पुलकत, नाहन, ब्रजवनता, माह, नासका, सहत आदि।

उकार का अनावश्यक प्रयोग—नामु, बिनु, औरु, आदि।

उकार का लोप—मधपुरी, जदकुल, बस्त आदि।

हस्तलिखित प्रति क्रमांक ३४ में इ, ई स्वरों के साथ क्रमशः इ, ई की मात्राओं का भी प्रयोग हुआ है। यथा—वनाइि, लाइि, पाइिन, जाइि, पाईीये, होईी, कोईी आदि।

उक्त स्थितियों में शब्दों के शुद्धतम रूप ही मूल पाठ के लिए चुने गये हैं।

९. नंददास के पांडित्य और उनके संस्कृत पर पाये गये प्रभुत्व को ध्यान में रखते हुए संस्कृत के अनेक तत्सम शब्द भँवरगीत के मूल पाठ में ज्यों के त्यों ले लिए गये हैं। जैसे—ब्रह्माण्ड, ब्रह्म, कर्म, अमृत, त्रिभुवन, मुक्ति. स्वर्ग, सिद्ध, पद्मासन, सायुज्य, उपनिषद आदि।

१०. ब्रजभाषा में उपलब्ध संस्कृत के तद्भव शब्द-रूप तात्कालिक ब्रजभाषा के अनुरूप रखे गये हैं—

(क) **श के स्थान पर स का प्रयोग किया गया है**—उपदेस, सील, विस्व, सुद्ध, अकास, दरस, आवेस, स्याम आदि।

(ख) **ख के स्थान पर ष ही लिखा गया है**—आंषिन, देषो, अषित, मुष, सषा, सुष, षोजि, षंड आदि।

(ग) **य और व का लोप कर उनके बदले में पूर्वगामी व्यंजन पर ऐ और औ की मात्राएँ लगाई गई हैं**—समै, औसर, विषै, विस्मै, निरदै, हृदै आदि।

(घ) **ज्ञ सदैवग्य ही लिखा गया है। जैसे—ज्ञान-ग्यान**। —छन्द ७।

(ङ) **हस्तलिखित वर्ण रूपों के अनुरूप कृष्ण, कृष्म ही लिखा गया है।** —छन्द ६०।

(च) **ण के स्थान पर न का ही प्रयोग किया गया है**—गुन, पुन्य, दरपन, गुनातीत।

(छ) कुछ प्रतियों में ब के स्थान पर भ लिखने की प्रवृत्ति थी। जैसे—सभ, समन आदि, परन्तु सर्वत्र एकरूपता के लिए सब, सवन पाठ ही अधिक उपयुक्त थे अतः उनको ही स्वीकार किया गया है।

(ज) य के पूर्व अर्ध व होने पर भी व्यवस्था—विवस्था ही लिखा गया है। छन्द ३।

(झ) हस्तलिखित प्रतियों में ऋ के तीन रूप प्राप्त हुए—

ऋ—वृन्दावन, दृग।
रि—क्रिपाल, रिदे।
र्—ग्रह, क्रपाल।

उपरोक्त तीनों रूपों में प्रथम रूप को ही प्रधानता दी गई। तृतीय रूप गृह, ग्रह का प्रयोग केवल छन्द क्रमांक ३ में ही हुआ है। हस्तलिखित प्रतियों में इसका दूसरा हस्तलिखित रूप नहीं था। साथ ही ग्राम ग्रह में अनुप्रास का विधान देखते हुए गृह शब्द ग्रह ही रहने दिया गया है। हमने उसे अपनी ओर से सुधारने की चेष्टा नहीं की।

(ञ) सभी हस्तलिखित प्रतियों में चंद्रबिन्दु के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग हुआ है, अतः कुंवर, आंषिन, पांयन, भांत आदि शब्द चन्द्रबिन्दु के स्थान पर अनुस्वार युक्त ही लिखे गये हैं।

(ट) कुछ प्रतियों में र को रेफ में बदलने की प्रवृत्ति लक्षित हुई। जैसे-पर्म, बर्तत आदि, काव्य की उच्चारणगत मधुरता को ध्यान में रख ऐसे शब्दों में र स्वतंत्र ही रखा गया है, जैसे—परम, बरतत आदि। पर छन्द क्रमांक ४ में परिकरमा पाठ किसी भी प्रति में न होने के कारण परिक्रमा शब्द परिक्रमा ही रखा गया है।

(ठ) कुछ प्रतियों में न, म के पूर्वाक्षर पर अनुस्वार लगाने की प्रवृत्ति थी, जैसे जांनि, स्यांम, सुंमिरन, आनंन, ग्यांन, पाषांन, कौंन आदि, किन्तु सभी प्रतियों में इस तरह की एकरूपता नहीं थी और न किसी एक प्रति में सब स्थलों पर इस नीति का अनुसरण ही हुआ था, अत: प्राचीन पद्धति की लिखावट के अनुरूप होने पर भी ऐसे प्रयोग छोड़ दिये गये हैं। इसी तरह अनुनासिक रहित पाठ नदलाल, विहसत, कुवर, नही अशुद्ध माने गये हैं।

(ड) संयुक्त व्यंजन प्रायः स्वतंत्र और पूर्ण लिखे गये हैं, जैसे–विहवल, गदगद, परकास, निरलेप आदि।

(ढ) य के स्थान पर ज का प्रयोग ब्रजभाषा के अनुरूप ही किया गया है, जैसे-जसोदा, जदुकुल, जुगति, जोग, जे, जदुनाथ आदि।

(ण) हौं, सौं, कौं, तैं, मैं आदि के प्रयोग में एकरूपता रखी गई है।

(त) अधिकांश ओकारांत शब्द ब्रजभाषा में औकारांत लिखे जाते थे, अतः मानौ, ऊधौ, सुनौ, जनायौ, आयौ, सूधौ आदि शब्द शुद्ध पाठ माने गये हैं ।

इस तरह से प्रस्तुत ग्रंथ में शब्द रूपों के ऐतिहासिक, तुलनात्मक और प्रवृत्तिमूलक अध्ययन के उपरांत शब्द रूप निर्धारित कर भँवरगीत का पाठ निश्चित किया गया है । आशा है, अगले अध्याय में निर्धारित भँवरगीत का पाठ नंददासजी के भँवरगीत के मूलपाठ के निकटतम होगा । पाठ-संपादन करते समय हस्तलिखित प्रतियों के संकेत चिन्ह सहित पाठ-भेद पाद-टिप्पणी के रूप में दे दिये गये हैं जिनसे विद्वज्जन विविध पाठों के प्रामाणिक रूपों का भी अवलोकन कर सकते हैं ।

परिशिष्ट में नंददास कृत भाषा दशम स्कन्ध का अनूदित भँवरगीत भँवरगीत की अन्तर्कथाएँ और सन्दर्भ-ग्रंथ-सूची दे ग्रंथ को पाठकों के लिए संदर्भ-सुलभ बना दिया गया है ।

तृतीय अध्याय

भँवरगीत : पाठ और पाठभेद

महाकवि नन्ददास-प्रणीत भँवरगीत के पाठानुसंधान के लिए जिन आधारभूत हस्तलिखित प्रतियों का चयन किया गया है, उनके संकेत-चिन्ह एवम् अन्य विवरण इस प्रकार हैं—

पाठानुसंधान की आधारभूत प्रतियाँ और उनका विवरण—

संकेत चिन्ह	ग्रन्थ का नाम	कवि की छाप	लिपिकाल	रजिस्टर में क्रमांक	हस्तलेख क्रमांक	उपलब्धि-स्थल
क	भवरगीता प्रेमरस पुंजनी कथा,	जनमुकुंद	सं० १८१३	१३५१	२१३०	हिन्दी साहित्यसम्मेलन, प्रयाग, उत्तर प्रदेश
ख	भवरगीत	नन्ददास	सं० १८४६	२२०१२	१०५५।७३२	नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
ग	भवरगीत	जनमकुंद	सं० १८७४	बंधसंख्या ५०१	५०१।१	क०मु० हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ, आगरा.
घ	भमरगीत	जनमुकंद	सं० १८८६	—	३	श्रीरामरत्न पुस्तक भवन १४।११, नन्दन साहू लेन, वाराणसी-१,
ङ	भवरगीत	जनमुकुंद	सं० १८८६	—	२७१।क	जिला पुस्तकालय भरतपुर (राजस्थान)
च	भमरगीत	जनमुकंद	सं० १८९५	—	५२-५७	बावू व्रजरत्नदासजी, १५।४, चौक, सुड़िया, वाराणसी-१,
छ	भवरगीत	जनमुकंद	सं० १८९८	६००	३११३।१९५८	नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी,
ज	भवरगीत	जनमुकंद	स० १९१७	भाषा वन्ध ६२	११	विद्यामन्दिर, निजपुस्त-कालय, श्रीनाथद्वारा (राजस्थान)
झ	भ्रमरगीत	नन्ददास	सं० अज्ञात	पद्यकाव्य बंध ५०	५	श्री द्वारकेश पुस्तकालय, काँकरौली, राजस्थान,

भँ व र गी त

ऊधौ[1] कौ[2] उपदेस[3] सुनौ[4] ब्रजनागरी[5] ॥
रूप सील[6] लावन्य[7] सबै[8] गुनआगरी[9] ॥
प्रेम[10] धुजा[11] रसरूपिनी[12] उपजावन[13] सुष[14] पुंज[15] ॥
सन्दर स्याम[16] विलासिनी[17] नव वृंदावन[18] कुंज ॥
सुनौं[19] ब्रजनागरी[20] ॥१॥

---

१. ऊधो—क. च., उद्धव—ख. च., उधौ—ग. उधो—ज.

२. को—क. च. झ., कर—ख., कों—घ.

३. उपदेश—घ.

४. सुनौ—क. ख. घ. झ., सुनों—च. छ.

५. व्रजवासिनी—ग,, वृजनागरी—च. ज. व्रजनागरी—झ.

६. शील—ख. घ. ड., सीलि—च.

७. लावण्य—ख. घ. ड., ल्यावनि—ग., लाविंद—च.

८. सभै—क., सबैं—ख., सबै—ग. ड,, सबें—घ. च., सबे—ज.

९. अगरी—ग.

१०. पैमा—ग., प्रेंम—घ.

११. ध्वजा—ख. घ. ड. च., धजा—ग.

१२. रूपिनी—क. ख. च. छ. ज. रुपिणी-घ, रूपिणी—ड.

१३. उपजावन—क. उपजावत—ख. घ. च. झ.

१४. सुख—ख. झ., रस—ग. ड.

१५. पूज—ग.

१६. स्यांम—घ. च. छ. ज.

१७. वीलासनी—क. च. ज., विलासनि—घ.

१८. वृन्दाबन—क, व्रन्दावन—ख., व्रिन्दावन-ग., वृदावन-छ. ज.

१९. सुनो-क. ख. घ. छ. ज., सुनों-च.

२०. व्रज-क., वृजवासिनी-ग. ज., व्रजवासिनी-घ. ड., व्रजवासिनी—च., वृज नागरी-छ.

कह्यौ[१] स्याम[२] संदेस[३] एक[४] मैं[५] तुमपै[६] लायौ[७] ॥●
कहन[८] समै[९] संकेत[१०] कहूँ[११] औसर[१२] नहिं[१३] पायौ[१४] ॥
सोचत ही[१५] मन में[१६] रह्यौ[१७] कब[१८] पाऊँ[१९] इक[२०] ठाउ[२१] ॥
कहि[२२] सन्देस[२३] नन्दलाल[२४] कौ[२५] बहुरि[२६] मधुपुरी[२७] जाउं[२८] ॥
सुनौ[२९] व्रजनागरी[३०] ॥२॥

---

१. कह्यो—क. ग. घ. ड. ज. , कहन—ख. छ.
२. स्यांम—घ. च. छ. ज.
३. सन्देश—ख. ड. , संदेसु-ग सदेश-ध. उपदेस-झ.
४. ऐक-ग. ५. में—ख. घ. च. ज. , मै-ड. झ.
६. पें—क. ख. घ. च. , पर-ग. , तु पै-छ, , पैं-ज.
७. ल्याऊ—क. , आयो-ख. छ. ज. , ल्यायौ-ग. ड. , लायो-घ. च.
८. कहिन—ख. ग. , कहैंन-च. कहेन-ज.
९. समें—क. ज. , सको-ख, समें-घ. च. , समै-ड. स्याम-छ.
१०. एकांत—क. ख. , संदेश-ग. , संदेस-छ.
११. कहूं—क. ग. घ. , कहुं-ज.
१२. अवसर—क. , ओसर-ख. घ. च. ज.
१३. नंही—क. , नहि-ख.ज. , नही-ग. घ. च. छ. , नंहि-ड.
१४. पायो—क. ख. घ. च. छ. ज.
१५. ही—शब्द ग प्रति में नहीं है।
१६. एसे—ख. मै-ग. ड. छ. झ. , मे-घ, में-च. ज.
१७. रहो—क. , रह्यों-ख, रह्यो-घ. छ. , रहो-ज.
१८. कव—क. ग. घ. ड. च. ज.
१९. पावों—क, पाउं-ख. , पाउ-ग. , पाऊ-ध. ड. , पांऊं-च. पांऊ-छ. , पांउ-ज.
२०. एक—घ. ड. च. छ. ज. झ.
२१. एकांत—क. ख. , ठाउ-ग, ठांम-ध. च. ज. , ठांउ-ड. , ठांव-छ.
२२. कह—क. छ.
२३. सन्देश—ख. , सदेस-ग. घ. २४. नन्दलाल—ड. च २५. कों—घ.
२६. वहुर—क. , वहुर-ख. , वहुरि-छ. ज.
२७. मधपुरी—क., मधपुरी-ग. , मधुपरि-छ.
२८. जात—क. ख. , जाउ-ग. घ. ज. , जाऊ-ड. छ. जांउ-च. २९. सुनों—च. छ.
३०. व्रजनागरी—शब्द ख प्रति में नहीं है, व्रजवासिनी-ड.

● छ प्रति में यह पंक्ति दो बार लिखी है।

सुनत[1] स्याम[2] कौ[3] नाम[4] ग्राम[5] ग्रह[6] की सुधि[7] भूली[8] ॥
● भरि[9] आनन्द[10] रस[11] हृदै[12] प्रेम[13] बेली[14] दृग[15] फूली[16] ॥
● पुलकि[17] रोम[18] सब[19] अंग भये[20] भरि आए[21] जल नैन[22] ॥
● कंठ[23] घुटे[24] गदगद[25] गिरा[26] बोले[27] जात[28] न बैन[29] ॥
विवस्था[30] प्रेम[31] की ॥३॥

---

१. सुन्यो—ख., सुनंत-ज., सुनि-झ
२. स्यांम—ग. घ. च. छ. ज., मोहन-ख.
३. कों—ख. ग. च. ज., कों-घ. ड.
४. नामु—ग., नांम-च,
५. वाम—ख., ग्राम शब्द ग प्रति में नहीं है, ग्रांम-घ., गांम-च. ज.
६. घर—क. ख. ग. ७. सुध—च. ८. भुली—छ. ९. भर—ख.
१०. आनन—ख., आनन्द-च., आंनद-छ.
११. जल—ख.
१२. हृदो—क. छ. ज., अलक-ख., ह्रदो-ग. ड., हृदों-घ., हृदय-च.
१३ प्रेम—ग. प्रेम-च.
१४. वल्ली—ख., वोली-ग.
१५. द्रुम—ख. ज., द्रग-ग. घ. झ.
१६. फुली—ज.
१७. पुलक—क. ख. ड.
१८. भयो—क. ज., रौम-घ., रोम-च.
१९. सव—ग. ड.
२०. में—क., अग भषौ-ग., भयो-ड., पुलकि अंग अंग रोम सब-झ.
२१. अऐ—ग., आऐ-च.
२२. नंन—क., नेंन-ख. घ. च. ज.
२३. कंप—ख.
२४. घुटिउ—क. च., घुटि-उ., गुटे-झ.
२५. गद्गद—ड. २६. गीरा—ख. २७. बोल्यो—ख., बोलो-ग. २८. जांत—ज.
२९. वैन—क., वैन-ख., ग. छ., वेंन-घ. ड. च. ज.
३०. विवस्या—ख., विविस्था-च., विवस्तां-ज., बिवस्था-झ.
३१. प्रथम—ग., प्रेम-घ. च. ज.

● क प्रति में चिन्हित पंक्तियों का पाठ इस प्रकार है—
भर आयो जल नैन, कंठ कुंठ गदगद गिरा ॥
वोल्ये जात न वैन, अवस्था प्रेम की ॥३॥

अरधासन[१] बैठाय[२] और[३] परिकर्मा[४] दीनी[५] ।।
स्याम[६] सषा[७] निज जानि[८] बहुरि[९] सेवा बहु[१०] कीनी[११] ।।
बूझत[१२] सुधि[१३] नन्दलाल[१४] की विहंसत[१५] मुष[१६] ब्रजबाल[१७] ।।
नीके[१८] हैं[१९] बलबीरजू[२०] बोलत[२१] बचन[२२] रसाल ।।
सषा[२३] सुनि[२४] स्याम[२५] के[२६] ।।४।।

—केवल क प्रति में छंद-क्रमांक ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८, २०, २४, २६ के पूर्व गोपीवचन, छंद-क्रमांक २२ के पूर्व गोपीवाच, छंद-क्रमांक ३२ के पहले गोपी विलाप, छंद-क्रमांक ७, ११, १३, १५, १७, १९, २७ के पूर्व ऊधो वचन, तथा छंदक्रमांक २१, २३, २५ के पूर्व ऊधोवाच लिखा है। अन्य प्रतियों में ऐसा कोई उल्लेख नहीं है

१. **अर्धआसन**—क. , अर्द्धासन-ख. झ. , अर्धासन-ग. च.
२. **वैंठाइ**—क. ड. , वैठारी-ग. , वेठाय-घ. , वैठाइ-झ.
३. **ओर**—क. ख. घ. च. , ओरु. ग.
४. **प्रारकम**—क. , परीक्रमा-ग. , परकरमा-घ. परकंर्मा दी-छ. अरु सिंघासन वेठाइ वोहोरि परिक्रमा-ज, परिक्रंमा-झ.
५. **कीनी**—ख. ६. **स्याँम**—ख. ज. ७. **सखा**—ख. च. झ. ८. **जान**—क. जांनि-ग. च. झ.
९. **बहुर**-क. वहुत ही-ख. बहुत-ग. , वहुरि-घ. ड. च. , बहूरि-छ.
१०. **बहु** —शब्द ख प्रति में नहीं है , उन-ग. वहु-घ. ड. च. छ. , भली-ज
११. **कीनो**—ख.
१२. **पूछेत**—क. पूछत-ख. , बूझति-ग. झ. , वुझत-छ. ज.
१३. **सुध**—क. ख. १४. **नदलाल**—च. छ.
१५. **विहसत**-क. ख. घ. ड. च. , विहसति-ग. ज. झ.
१६. **मुख**—ख. च. झ.
१७. **ब्रजवाल**—क. ख. ग. घ. ड. च. छ. , वृजवाल-ज.
१८. **नीकें**—छ.
१९. **हे**—क. घ. , हें-ख. , है-ग. ड. , हो-ज.
२०. **वलवीर हो**—ख. , नीके वलवीरजू-च. वलवीरजु-छ.
२१. **तम बोलो**—ख. वोलति- ग. , वोलत-ड. च.
२२. **बचन**—छ. झ. ,
२३. **सखा**—ख. झ. , सख-च.
२४. **सुन**—क. छ.
२५. **स्यांम**—ख. ज.
२६. **को**—ज.

कुसल[1] स्याम[2] अरु[3] राम[4] कुसल संगी[5] सब[6] उनके ।।
जदुकुल[7] सगरे[8] कुसल परम[9] आनन्द[10] सबन[11] के[12] ।।
बूझन[13] ब्रज[14] कुसलात[15] को[16] हौ[17] आयौ[18] तुम[19] तीर ।।●
मिलिहैं[20] थोरे[21] दिवस[22] मै[23] जिनि[24] जिय[25] होहु[26] अधीर ।।
सुनौ[27] ब्रजनागरी[28] ।।५।।

---

१. कुशल—घ.
२. स्यांम—घ. ज.
३. औ—ग. छ.
४. राम अर स्याम—क., रांम-घ. च.
५. सभ—क., सव-च, सब ज.
६. संगी—क. च. ज. झ., सव-घ. ड.
७. यदुकुल—ख. जदकुल-ग.
८. सकलो—क., सिगरें-ग., सारे-ड. छ.
९. पर्म—क. १०. आनंद—च.
११. सभन—क., सवनि-ग. ड. सवन-घ. च. छ. ज.
१२. कँ—ग.
१३. पूछन—क. बूझत-ड. च., वुझत-छ. ज.
१४. वृज—क. ज. १५. कुसरात—ड.
१६. कों—छ. झ., कूं-ख. ज., कौ-ग. च.
१७. हम—क., हों-ख. घ. च., हौं-शब्द ग. छ. झ. प्रतियों में नहीं है, हो-ड., हौ-ज.
१८. आयो—क. ग. घ. च. छ. ज., पठयो-ख.
१९. इह—क., तुमरी-ख. तुमरे-घ., तुम्हरे-च. छ.; तुम्हारे-ज. तुमारे-झ.

● क प्रति में चिन्हित पंक्ति के आगे निम्नलिखित पंक्तियाँ अधिक हैं—

नन्द रस रिदे प्रेम बेली द्रुग फूली ।।
पुलक रोम सभ अंग के भर आयो तुम तीर ।।

२०. मिलहे—क., मिलिहे ख. घ. ज., मिलिहै-ग. ड. मिलहें-च. मिलहैं-घ.
२१. थोरों—ग. २२. द्यौस—ड., द्यास-छ.
२३. मै—में-क. मै-ग. ड., मैं-छ.
२४. जन—क. तुम-ख. जिन-घ. ड. च. छ.
२५. जीय—क. ग. च., जन जिय-ख., जीया-झ.
२६. धरो—क. होउ-घ. च. ज., होइ-झ.
२७. सुनो—क. ख. घ. ज., सुनों-च. छ.
२८. व्रजवासनी—क. ग. व्रजनागरी-शब्द ख प्रति में नहीं है, व्र.-वृजवासिनी-ड. च.

सु नि[१] मोहन[२] संदेस[३] रूप[४] सुमिरन[५] ह् वै[६] आयौ[७] ।।
पुलकित[८] आनन[९] कमल[१०] अंग आवेस[११] जनायौ[१२] ।।
विह्वल[१३] ह् वै[१४] धरनी[१५] परीं ब्रजवनिता[१६] मुरझाय[१७] ।।
दै[१८] जल-छींट[१९] प्रबोधहीं[२०] ऊधौ[२१] बैन[२२] सुनाय[२३] ।।
सुनौ[२४] ब्रजनागरी[२५] ।।६।।

---

१. ुन—क. ख. छ., सुनि-ज.
२. मोंहन—घ.
३. संवेह—ख., संदेसु-ग., सदेहै-ज.
४. रूप—ख. रुप-छ., सरूप-ज.
५. सुमरन—क. ख. छ., सुमिरनु-ग. सुंमिरन-ज.
६. वैं—ख. ह् यो-ग., ह् वे-घ. ज., ह् वें-च.
७. आयो—क. ख. च. छ. ज., कौलायो-घ.
८. पुलिकित—ख. छ., पुलकत-क. घ. ज.
९. आनंन—घ., अनांन-च.
१०. अलक—क. ग. घ. ड. च. ज. झ., अमल-ख.
११. आवेश—ख. ज., अविश-घ., आबेस-छ. झ.
१२. जनायो—क. घ. च. ज., दिखायो-ख.
१३. विहबल—क., विह्वल-ख. घ. च., विह् वल-ग., व्याकुल-ज.
१४. होइ—क., है-ख, ह् वो-ग. ह् वे-घ. है-ड. ह् व-ज.
१५. धरती—ग. छ. ज., धरणी-ड.
१६. व्रजवनता—क. व्रजबनता-छ., व्रजवनिता-ज.
१७. मुरजाइ—क., मुरझाइ-ग. ड. झ.
१८. दे—क. घ. ड. ज., दे-च.
१९. छिट—ग.
२०. प्रबोही—क. ख., प्रमोदही-ग. च., प्रवोधही-घ. ड. छ. ज., प्रबोधतु-झ.
२१. ऊधो—क. घ. च., उद्धव-ख. ज, उधौ- ग. छ., ऊधों-ड.
२२. बात—क. च. छ. झ., वात-ग. घ. ड. ज.
२३. बनाइ—क. झ., वनाई-ग. वनाय-घ. ड. च. ज., सुनाई-छ.
२४. सुनो—क. ख. घ. च. ज., सुनों-छ,
२५. व्रजवासनी—क. ग., व्रजनागरी-शब्द ख प्रति में नहीं है, व्र-घ., व्रजवासिनी-ड. च.

वे[1] तुमतैं[2] नहिं[3] दूर[4] ग्यान[5] की[6] आंषिन[7] देषौ[8] ॥
अषिल[9] विस्व[10] भरपूर[11] ब्रह्म[12] सब[13] रूप[14] बिसेषौ[15] ॥
लोह दारु[16] पाषान[17] में[18] जल थल मांहि[19] अकास[20] ॥
सचर अचर[21] बरतत[22] सबै[23] जोति[24] ब्रह्म[25] परकास[26] ॥
सुनौ[27] ब्रजनागरी[28]॥७॥

१. वै—ख., वे-छ.
२. तुमतैं—क., ते-ख., तैं-ग. तें-घ. च. छ., तुंमतें-ज.
३. नहीं—क. ग. घ. च. छ., नहिं-ख. ड. ज.
४. दूरि—ख. घ. ड. च. छ.
५. ग्यांन—घ. ज., ज्ञान-ड. च-झ.
६. करि—ज.
७. आषन—क. आंषिनि-ग., आषें-ड. आखें-च., आंखिन-झ.
८. देषो—क. घ. छ., देखो-ख. च. ज., देखौ-झ.
९. अलष—क., अखिल-घ. ड. च. झ.
१०. विश्व—ख. घ. ड. ज.
११. सम्पूर्ण—ख. भरिपूरि-ग. ड., भरपुर-छ., भरिपुर-ज.
१२. ब्रंह्म—घ. च., वृह्म-ज. १३. सभ—क.
१४. रू—क. रूपनि-ग., रुप-ज.
१५. विसेषो—क. ज., बिसेखो-ख. च., लेषौ-ग., विशेषों-घ. विसेषौ-ड., विसेखौ-झ.
१६. दार—क. घ. च. छ. ज., दारु-ख. ड., महादारु-ग.
१७. पाषांन—घ. छ., पाखांन-च., पांषांन-ज.
१८. में—ग. ड. च. ज., मे-घ.
१९. माह—क., मही-ख., माहि-ग. घ. ड., मांहीं-छ.
२०. आकाश—ख. २१. सचराचर—क. छ.
२२. परवत—क. ड., बर्त्तत-ख., पर्वत-ग., वर्तत-छ.
२३. सभे—क., सदा-ख., सवै-ग. ड. छ., सवे-घ. ज., सवें-च.
२४. जोत—क. जो न-ख. ज्योती-झ.
२५. ब्रहम—ग., व्रंहम-घ., वृहम-च. ज.
२६. परगास—क. घ., को वास-ख. प्रकास-झ.
२७. सुनो—क. ख. घ. छ. ज., सुनों-च.
२८. ब्रजवासनी—क. छ., ब्रजनागरी-शब्द ख प्रति में नहीं है, ब्रजवासनी-ग. ड., व्रज-घ., वृजवासिनी-च. ज.

कौन[१] ब्रह्म[२] की[३] जोति[४] ग्यान[५] कासों[६] कहैं[७] ऊधौ[८] ॥
हमरे सुन्दर स्याम[९] प्रेम[१०] कौ[११] मारग[१२] सूधौ[१३] ॥
नैन[१४] बैन[१५] स्त्रुति[१६] नासिका[१७] मोहन[१८] रूप[१९] दिषाय[२०]॥
सुधि बुधि[२१] सब[२२] मुरली हरी[२३] प्रेम[२४] ठगौरी[२५] लाय[२६] ॥
सषा[२७] सुान[२८] स्याम[२९] के ॥८॥

---

१. **कोन**—क. ज., कौन-ख., कोंन-व. ड. ज., कौंन-छ.
२. **व्रह्म**—क. ड. छ., ब्रह्म-ख. ब्रह्म ग. ब्रंम्ह-घ., वृंह्म-च. ज.
३. **को**—क. ख. छ. ज., कौ-ग. ड.
४. **जोत**—क. जानि-ग., जात-घ., जाति-ड., ज्योति-ज., ज्ञान-झ.
५. **ज्ञांन**—घ. च. ज., ज्ञान-ड. ब्रह्म-झ.
६. **कांसों**—क., काकौ-थ. ग. ड., कासुं-छ., कासो- ज. कहा सों-झ.
७. **कहे**—क., कहि-ख., कहै-ग., कहों-घ., कह्यौ-ड., कहि-च. कह-छ, कहो-ज
८. **ऊधो**—क. ग. च., उधो-ख. छ. ज., ऊधों-घ.
९. **स्यांम**—घ. च. छ. ज.
१०. **प्रेंम**—घ. च. ज., प्रेम-ड.
११. को—क. छ. ज., कौं-घ. कों-ड. ज.
१२. **पैठो**—क.
१३. **सुधो**—ख. ड. च. ज., सूधों-घ., सूधो-च.
१४. **सुन्दर**—ग., नेंन-घ. च. ज., नैन-छ.
१५. **मुख**—ग., वेंन-घ. च., वेन-ज.
१६. **श्रुत**—क., मुख-ख., श्रुति-ग. घ. ड. च. छ., मुष-ज.
१७. **नासका**—क. नांसिका-ज.
१८. **सुन्दर**—क., मोंहन-ड. च.
१९. **रुप**-छ.
२०. **दिषाइ**—क. ड., दिषाइि-ग., दिखाइ-घ. च. ज.
२१. **सुधबुध**—क. झ., बुधि-ग. छ.
२२. **सम**—क. २३. हरि—ज.
२४. प्रैम—क., प्रेंम-घ. ज.
२५. **ठगोरी**—क. ख. घ. च. छ. ज.
२६. **लाइ**—क. घ. ड. च. छ. झ., लाइि-ग.
२७. **सुषा**—क., सखा-झ.
२८. **सुन**—क. छ., ड. और च. प्रतियों में इसके बाद टेक का शेष अंश नहीं है।
२९. **स्यांम**—छ. ज.

जो[1] मुष[2] नाहिंन[3] हुतो[4] कहौ[5] किन[6] माषन[7] षायौ[8] ॥
पांयन[9] विन[10] गौ[11] संग[12] कहौ[13] को[14] बनबन[15] धायौ[16]॥
आंषिन[17] में[18] अंजन[19] दियौ[20] गोबर्द्धन[21] लियौ[22] हाथ ॥
नंद जसोदा[23]पूत[24] हैं[25] कुंवर[26] कान्ह[27] ब्रजनाथ[28] ॥
सषा[29] सुनि[30] स्याम[31] के ॥१०॥

---

१. जे—क.
२. मुख—ख. ब. च. झ., सुख-ज.
३. नाहन—क., नही-ख. नाहो-ग., नाहिन-घ. ड. छ. ज.
४. तो —ख., हतौ-घ. च. झ., हुतों-ड.
५. कहो—क. ख. घ. च. छ. ज.
६. कौन धो—ख., किनि-ड. ज. झ.
७. मांखन—ख. ज. झ., माखन-च.
८. षायो—क. छ. ज., खायो-ख. च., खायौ-झ.
९. पायन—क. घ. ज., पाइन-ख. ड. छ., पाइिन-ग., पाइ-च.
१०. विन—क. ख. ग. घ. ड. छ. ज., विनां-च.
११. गौउ—क. गो-ख. घ. ड. च. छ., गउ-ग., गोसन ज., कहौ गौग्रन-झ.
१२. संग्र—ग. १३. कहो—क. ख. घ. च. छ. ज. १४. बन—क., कौ-थ ज.
१५. क्यो—क., वन वन-ख. ग. घ. ड. च. छ. छ.
१६. ध्यायो—क., धायो-ख. घ. ज., धाधों-च.
१७. आषन—क., आंखिन-ख. झ., अंषनि-ग., आषिन-ड.
१८. में—ख. ध. च. ज. झ., मै-ग.
१९. अंजनु—ग.
२०. दीयो—क. च. ज., दियो-ख. छ., दीयौ-ग., दीजों-घ.
२१. गोवरधन—क. छ. - गोवर्घन-ग., गिरि गोवर्द्धन-झ.
२२. लीयो—क. घ. छ. ज., लीनो-ख., लीयौ-ग., लायो-च.
२३. जसोधा—ग. २४. पुत—क. ख. छ.
२५. हे—क. ख. ज., हें-ग. घ. ड. च.
२६. अहो कुसल—ख., कुवर-ग. घ. ड. च. छ.
२७. कान—क., कांन्ह-ख. घ. ड. च. ज.
२८. वृजनांथ—ज. २९. सखा—झ.
३०. सुन—क. छ.
३१. स्याम के—शब्द ख प्रति में नहीं है, स्यांम-घ. ड. छ. ज. झ.

जाहि[1] कहौ[2] तुम[3] कान्ह[4] ताहि[5] कोउ[6] पिता[7] न[8] माता[9] ॥
अखिल[10] खंड[11] ब्रह्मांड[12] विस्व[13] उनहीं[14] तैं[15] जाता[16] ॥
लीला गुन[17] अवतार[18] कै[19] धरि[20] आए[21] तन स्याम[22] ॥
जोग[23] जुगति[24] ही पाइये[25] पारब्रह्म[26] परधाम[27] ॥
सुनौ[28] ब्रजनागरी[29] ॥११॥

---

१. जाह्-क. जाइ-ग. , जाय-घ.
२. कहो—क. , कहत-घ. च. छ. , कहेत-ज.
३. तुम—ज. ४. कान—क. , कांन्ह-ड. ज. ५. ताह—क,
६. को—क. , कोऊ-ख. घ. ड. च. , कोइ न-ग.
७. नही—क. ख. , पित-छ.
८. पितु—क. ख. ग. , नही-छ.
६. मासा—क.
१०. अषल—क. , अखिल—ख. घ. झ. , अपि-च.
११. अंड—क. ख. ग. घ. ड. छ. ज. , मंड-च.
१२. ब्रह्मंड—क. , वृह्मांड-ख. ज. , ब्रह्माड-ग. ब्रम्ह्ंड-घ. वृह्मांड-ड. वृह्मंड-च. व्रह्मंड—छ.
१३. सकल—क. विश्व-ख. ड. ज. , विड- घ.
१४. तिनहूं—क. , वाहि-ख. , उनही-ग. ड. च. ज. , नही-घ.
१५. ते—क. ड. , में-ख. घ. च. ज. , तै-ग. , मैं-छ.
१६. समाता—ख. , ताता-ग. , ज प्रति में यह पूरी पंक्ति छूट गई है ।
१७. को—क. ख. , गुण-च.
१८. अवतारि—ग. ड. छ.
१९. कर—क. , हें-ख. , के-ग. च. , के-घ. , कें-छ. को-ज.
२०. धर—क.
२१. आये—ख. घ. छ. ज., आऐ-ग. च.
२२. स्यांम—घ. छ. ज. झ. , २३. योग—ड. छ. २४. जुगत—क. ख. , युक्ति-छ.
२५. पाईये—क. घ. , पाइहैं-ख. पाइयै-ग. , पाइयै-ड. , पाईहें-च. पावें नहीं-छ. पाईयं-ज. २६. पारब्रम्ह—ग. , पारवृह्म-ज.
२७. पुरधाम—क. घ. छ. , पद घ्यान-ख. , को-ग. , पुरधामु-ड. , पुरधांम-च. , परधांम-ज.
२८. सुनो—क. ख. घ. छ. ज. , सुनों-च.
२९. ब्रजवासनी—क. ज. , ब्रजनागरी-शब्द ख प्रति में नहीं है, ब्रजवासिनी-ग. घ. ड. च. छ.

ताहि[1] बतावो[2] जोग[3] जोग[4] ऊधौ[5] जिहि[6] पावौ[7] ॥
प्रेम[8] सहित[9] हम[10] पास[11] नंदनंदन[12] गुन[13] गावौ[14] ॥
नैंन[15] बैन[16] मन[17] प्रान[18] में[19] मोहन[20] गुन[21] भरपूर ॥
प्रेम[23] पियूषै[24] छांडि[25] कैं[26] कौन[27] समेटै[28] धूर[29] ॥
सषा[30] सुनि[31] स्याम के[32] ॥१२॥

---

१. ताह—क. , ताय-घ. , ताइ-च. , जाइ-झ.
२. बतावों—क. , बतओ-ख. , बताओ-ख. च. , बतावहु-ङ. ज. , बताओ-झ.
३. जोग्य—ख. , योग-ङ.
४. जोग्य—क. ख. छ. , जो-ग. जोगहि-ज.
५. ऊधो—क. च. , उद्धव-ख. , उधो-ग. ज. , ऊधौं-ङ. , उधौ-छ.
६. जाहि—क. जोहि-ख. , जह-ग. , जहा-घ. , जहां-ङ. छ. ज. , तहां-च.
७. पावो—क. च. , पावे-ख. , पावै-ग. , पावों-घ. पायो-ज. पायौ-झ.
८. प्रैम—ग. , प्रेम-च. ज.
९. सहत—क. १०. हरि—घ. ११. ही पे—ख. , पासि-घ.
१२. नंदनंदन—ख. घ. छ. १३. गुण—ख. , गुंन-ज.
१४. गावो—क. घ. च. छ. , गावें-ख. , गावैं-ग. , गायो-ज.
१५. नैंन—ख. , नेंन-घ. च. ज.
१६. वैंन—ख. . वेंन-छ. , वेन घ. ज. , वैन-ङ. च.
१७. तन—ज. १८. प्रांन—क. च. ज. १९. म—क. ग. ङ. , में-च. ज. झ.
२०. मोंहन—च.
२१. गुण—ख.
२२. भरिपुर—ङ. ज.
२३. प्रै म—ग. , प्रेम-च.
२४. पयूषह—क. , पीउषें-ख. , पियूषि-ग. , पियूषी-घ. ङ. च. , पियुषैं-छ. , पीयूष-ज.
२५. छाड—क. ख. , छाडि-ङ. छ. ज.
२६. के—क. ज. , कें-ख. घ. च. , कैं-छ,
२७. कोन—क. ख. , कोंन-घ. ङ. च. , कौंन-छ.
२८. समेटे—क. ज. , बटोरे-ख. . समेटे-घ. , समेंटे-ङ. समेंटें-च. समेंहैं-छ.
२९. धूरि—ग. घ. ङ. , धुरि-छ. ज.
३०. सखा—झ.
३१. सुन—क. ख. छ.
३२. स्याम के—शब्द ख प्रति में नहीं है, स्यांम-छ. ज.

धूर[1] बुरी[2] जो होइ[3] ईस[4] क्यों[5] सीस[6] चढ़ावै[7] ।
धूर[8] छेत्र[9] में[10] आइ[11] कर्म[12] करि[13] हरिपद[14] पावै[15] ॥
धूरहिं[16] तें[17] यह[18] तन भयौ[19] धूरहि[20] तें[21] ब्रह मंड[22] ।
लोक चतुर्दस[23] धूर[24] तें[25] सप्तदीप[26] नवषंड[27] ॥
सुनौ[28] ब्रजनागरी[29]॥१३॥

---

१. धूरि—ग. घ. ड. च. , बुरि-छ. , धुर-ज.
२. बुरी—ग. घ. ड. च. ज. ३. होय—ख. घ. छ. , होई-ज. ४. ईस—ग. , सीस-घ.
५. कहा—क. क्यौं-ग. ड. , क्यों-छ. क्यो-ज.
६. ईस—छ. इस-ज.
७. लगावे—क. ज. , चढावैं-ख. छ. , लगावैं-ग. ड. , चढ़ाबें-घ. च.
८. धूरि—ग. घ. ड. च. ज. , बुरि-छ.
९. क्षेत्र—घ. च.
१०. मह—क. , में-ख. घ. च. , मै ग. ड. , मे-ज.
११. आय—ख. घ. ज. , जाइ-झ.
१२. करम—ख. ज.
१३. के—क.
१४. हरपद—क. , हरपदवी-ख.
१५. पावे—क. च. , पावे-ख. घ. , पावें-छ. , गापे-ज.
१६. धूरह—क. धूरिहीं-ख. ग. घ. , धुरहीं-छ. , धुरिही-ज. , धूरही-ज.
१७. ते—क. घ. ज. , सों-ख. , त-ग. , तें-ड. च.
१८. येह—ग.
१९. भयो—क. ख. घ. च. छ. ज.
२०. धूरह—क. धुरहीं-छ. , धुरिही-ज. , धूरही-ज.
२१. ते—क. ड. , के-ख. तैं-ग , तें-घ. , केतें-च.
२२. ब्रहमंढ—क. ब्रह्मांड-ख. झ. ब्र ह् मंड-घ. ब्रह् मड-ड. ब्रह् मंड-छ , बृ ह् मांड-ज.
२३. चतुरदस—क. चतुरदीसें-ख. चतुर्दश-घ. छ. , चतुर्दस-ड.
२४. ूरि—ख. ग. घ. ड. च. छ. , धुरि-ज.
२५. ते—क. ड. , कें-ख. , तै-ग. छ. ज. तें-घ. , केतें-च.
२६. सपतदीप—क. सप्तद्वीप-ख. , सप्तद्दीप-झ.
२७. नवखण्ड—ख. झ. वनषंड-ग.
२८. सुनो—क. ख. ग. घ. छ. ज. , सुनों-क.
२९. ब्रजवासनी—क. ब्रजनागरी-शब्द ख प्रति में नहीं है, ब्रजवासिनी-ग. च. छ । ब्रज-घ. ड प्रति में इस छंद का क्रमांक लिखते समय छूट गया है । बृजवासिनी-ज.

कर्म धूर[१] की बात[२] कर्म[३] अधिकारी[४] जाने[५] ॥
कर्म धूर[६] कौं[७] आनि[८] प्रेम[९] अमृत[१०] में[११] साने[१२] ॥
तब[१३] ही[१४] तौं[१५] सब[१६] कर्म[१७] हैं[१८] जब[१९] लौं[२०] हरि[२१] उर नाहिं[२२]॥
कर्म[२३] बंध[२४] सब[२५] विस्व[२६] के[२७] जीव[२८] विमुष[२९] ह्वै[३०] जाहिं[३१] ॥
सषा[३२] सुनि[३३] स्याम[३४] के ॥१४॥

---

१. धर्म—क. ख. धूरि-ग. घ. ड. च. छ. धुरि-ज.
२. बात—ख. ग. ड. च. ज.
३. करम—ज.
४. अधकारौ—क., अकारी-च.
५. जाने—क. ख. घ. च. ज., जानौ-ग, जानें-छ.
६. धूरि—क. ग. घ. ड. च. छ., धुर-ख., धुरि-ज.
७. को—क. क्यों-ख. कौ-ग. ड. ज. कों-घ. च.
८. आन—क. ख., आंनि-घ. ज. झ.
९. प्रैम—ग., प्रेम-ज.
१०. अम्रत— ग., अंमृत-घ. छ. ज., अंत-च.
११. मै—क. ग. ड., में-ख. घ. च. ज. झ.
१२. साने—क. साने-ख. घ., सानों-ग., सानै-ड. सांने-च., सानैं-छ., सांने ज.
१३. तबं—क. जब-झ. १४. लो — ख. लौं-झ.
१५. लों — क. घ. च. ज. ही-ख. झ.
१६. सभ — क. सबु-ग., ये-झ. १७. करम — ज.
१८. हे — क. ग. ड. छ., हैं-ख. घ. च. ज.
१९. जब — ग. घ. ज., तब-झ.
२०. लो — क. घ. ज., लगि-ख., लौ-ग. ड. ज., लों-च.
२१. हर — क. ज., हारि-ग.
२२. नाहु — क. नाहि-ख. ग. घ. ड. ज., नांहि-च., नांहिं-छ.
२३. करम—ज. २४. वेद — ग. वंधु घ. वंध-ड. च. छ. ज. २५. सभ — क.
२६. विश्व — क. ख. ग. ड. २७. हे — ख. कौ-ग. २८. जे — क.
२९. वेमुष — क., विमुख-ख. च. झ. विमुंष-ज.
३०. हर — क., हरि-ग. ह्वै-घ. च., ह्वे-ज.
३१. जाइ — क. घ., जाहिं-ख. ग. ड. च. ज., जाहि-छ.
३२. सखा — ख. च. झ. ३३. सुन — ख.
३४. स्याम के — शब्द ख और घ प्रतियों में नहीं है। स्याम — च. छ. ज.

कर्महिं[1] निंदौ[2] कहा[3] कर्म तें[4] सदगति[5] होई[6] ॥
कर्म रूप[7] तें[8] बली[9] नाहिं[10] त्रिभुवन[11] में[12] कोई[13] ॥
कर्मन[14] तें[15] उतपत्ति[16] है[17]; कर्मन[18] तें[19] है[20] नास[21] ॥
कर्म[22] किये[23] तें[24] मुक्ति[25] है[26] पारब्रह्म[27] पुरवास[28] ॥
सुनौ[29] ब्रजनागरी[30] ॥१५॥

---

१. **तुम कर्मे**—ख. घ., तुम कर्मैं-ग. ड. झ., तुम कर्म-च. छ., तुम कर्मन-ज.
२. **निंदो**—क. ख. छ., निंदे-ग., निंदों-च. को दोष-ज.
३. **कहो**—ज., सु-झ.
४. **ते**—क. च. ज., तें-ख. घ. ड., तैं-ग., करि-झ.
५. **सदगत**—क. सदगति-ख. ६. **होडी**—ग., होइ-घ.
७. **रूप**—क. रुप-छ. ज.
८. ते—क. ख. ज., तैं-ग., तें-घ. ड. च.
९. **वली**—ख. ग. घ. ड. च. छ. ज.
१०. **नहन**—क., नही-ख. नाहि-ग. घ. ड. ज.
११. **त्रभुवन**—ग. त्रभुवन-च. त्रिभवन-छ. ज.
१२. **मह**—क. में-ख. घ. च. मैं-ग. ड., मे-ज. झ. १३. **कोडी**—ग.
१४. **कर्में**—क. कर्महि-ख. कर्मनि-ग. घ. ड., करमन-झ.
१५. **तैं**—शब्द क प्रति में नहीं है, त-ख. तैं-ग. तें-घ. ड. च., ते ज.
१६. **उतपत**—क. उतपत्य-ख., उतपति-ग., उत्पति-छ. उतपति-छ. उतपत्ति-ज.
१७. **होइ के**—क., ये-ख, हे-घ. ज., हैं-छ.
१८. **कर्में**—क., कर्महि-ख. कर्मनि-ग. ड., करमन-झ.
१९. **ते**—क. ख. घ. ज., तें-ग. च. छ.
२०. **सभ**—क., हें-घ. च., हे-ज.
२१. **नासु**—घ.
२२. **कर्म**—क.
२३. **करे**—क., किये-ख. छ. ज., कीयैं-ग. व., कीयें-च.
२४. **तो**—क., ते-ख. घ. ज., तैं-ग., तें-ड. च.
२५. **मुक्त**—क., मुग्र-ख.
२६. **होंइ**—क. ड. च. छ., हें-ख., होइि-ग., होय-घ. ज.
२७. **पारव्रम्ह**—ग. झ., पारवृंह्म-घ. च.
२८. **पुरुवास**—क. पुरधाम-ग. पुरवासु-घ.
२९. **सुनो**—क. ख. घ. ज., सुनों- च. छ.
३०. **व्रजवासिनी**—क. ग. घ. च. छ. ज., ब्रजनागरी-शब्द ख प्रति में नहीं है ।

कर्म[१] पाप अरु[२] पुन्य[३] लोह सोने[४] की बेरी[५] ।।
पांइनि[६] बंधन[७] दोउ[८] कोउ[९] मानौ[१०] बहुतेरी[११] ।।
ऊँच[१२] कर्म[१३] तैं[१४] स्वर्ग है[१५] नीच[१६] कर्म[१७] तैं[१८] भोग ।।
प्रेम[१९] बिना[२०] सब[२१] पचिमरे[२२] विषै[२३] वासना रोग ।।
सषा[२४] सुनि[२५] स्याम[२६] के[२७] ।।१६।।

---

१. कर्मे—ग.
२. ओर—ख. और-छ.
३. पुन्य—शब्द ख प्रति में नहीं है, पुंण्य-घ.
४. सौनौ—ग., सौने-ड.
५. वेडी—ख.
६. पायनि—ज.
७. वँधन—ख. ग. ज., वंदन-च.
८. होय—ख. ज., दोऊ-घ. ड. च. छ., दोय-झ.
९. कोऊ—क. घ. ड. च. छ. कोंन-ज.
१०. माने—क. मानो-ख. घ. ज., मानो-ड. ज., मांनो-छ.
११. वौहतेरी—ग., वहुतेरी-घ. ड. छ. ज., बहोतेरी-झ.
१२. उच—क. ग. घ. ज.
१३. करम—झ.
१४. ते—क. घ. ड. ज., तै-ग., तें-च.
१५. हे—क. च. ज., हें-ख., हैं-छ.
१६. नीचु—घ.
१७. करम—झ.
१८. ते—क. ख. घ. ड. ज., तै-ग. तें-च.
१९. प्रेम—घ. च.
२०. वीना—ज.
२१. सभ—क., सव-ग. घ. ड. च. छ. ज.
२२. पचमुई—क., पचमुये-ख., पचिमुये-घ., पचमरे-झ.
२३. विषे—क. ख., विषें-घ. च., विषै-छ. बिखे-ज.
२४. सखा—ख. झ.
२५. सुन—क. ख. छ.
२६. स्यांम—च. छ. ज.
२७. कें—ख.

कर्म बुरे[1] जो[2] होंय[3] जोग काहे[4] कों[5] धारें[6] ॥
पद्मासन[7] सब[8] द्वार[9] रोकि[10] इंद्रिन[11] कों[12] मारें[13] ॥
ब्रह्म[14] अग्नि[15] जरि[16] सुद्ध[17] ह्वै[18] सिद्ध[19] समाधि[20] लगाइ[21] ॥
लीन होइ[22] सायुज्य[23] में[24] जोतिहि[25] जोति[26] समाइ[27] ॥
सुनौ[28] व्रजनागरी[29] ॥१७॥

---

१. बुरे--घ. ड.
२. जौ--ग., जोई-ज.
३. होइ—क. छ. ज. ४. कोऊ--ख.
५. को--क. ज., काहे-ख., कौ-ग. ड., कौं-छ.
६. धारे--क. ख. घ. च. ज., धारै-ग. ड. झ.
७. पद्म आसन—क. ख.
८. सभ--क. सव-ग. ड. ज.
९. धार--क. १०. रोक—क., रोग-ख.
११. इन्द्रन—क. च., सबई-ख. इन्द्रिनि-ग., इंद्रिनि-ड., इंद्रन-ज
१२. को—क., दिन-ख. कौ-ग. ड., कौं-छ.
१३. मारं—क. ज. मरै-ग. मारें-च. छ., मारै-झ.
१४. पद्म—ख., ब्रह्म-ग. ब्रंह्म-घ. बृह्म-च. ज., ब्रम्ह-झ.
१५. अग्न—क. ख., अगिनि-ग.
१६. जर—ख. छ., ज्वुर-ज
१७. सुध—क. ख. ग. छ., शुद्ध-घ. झ.
१८. ह्वै—शब्द क प्रति में नहीं है, होंइ-ग. ड. च. छ., होय-घ. ज.
१९. सुन--क., सून-ख., सुन्य ग. छ., शून्य-घ., सून्य-ड., सुंन्य-च.
२०. समाध--क.
२१. लगाई—क., लगाय-ख. ज., लगाइ-ग.
२२. होय--ख. ज., होइ-ग. होत-घ. छ.
२३. साजुज--क. ख., साजोज-ग., सायोज्य-घ. ड. ज., साजोज्य-छ.
२४. मैं—क. घ. च. ज., मै-ग. ड., मौं-छ.
२५. जोतीमें—क. जोती-ख. जोते-ग. जोतिही-घ. ज्योति में-ड. जोतिमें-च. जोति-छ.
२६. जोत--क. ख.
२७. समाय—ख. घ. च. ज., समाइ-ग
२८. सुनो—क. ज., सुन-ख, सुनों-च. छ.
२९. व्रजवासनी—क. छ., व्रजनागरी शब्द ख प्रति में नहीं है, व्रजवासिनी-ग. च.

जोशी[१] जोतिहि[२] भजै[३] भक्त[४] निज रूपहि[५] जानै[६] ॥
प्रेम[७] पियूषै[८] प्रगट स्यामसुन्दर[९] उर[१०] आनै[११] ॥
निरगुन[१२] गुन[१३] जो[१४] पाइये[१५] लोग[१६] कहैं[१७] ये[१८] नाहिं[१९] ॥
घर आयौ[२०] नाग[२१] न पूजहीं[२२] बामी[२३] पूजन[२४] जाहिं[२५] ॥
सषा[२६] सुनि[२७] स्याम के ॥१८॥

---

१. जागि—ख. , जोग-च.

२. जोतः—क. जोतहिं-ख. , जोतैं-घ. छ. , जुगतिही-च. झ. , जोते-ज.

३. भजे—क. ज. , भजैं-ख. छ. , माजै-ग. , भजें-घ . भवित में-च.

४. भक्ति—घ. भगति-ङ. जें-च. , भगत-ज.

५. रूपः—क. रपहि-ग. रूपे-ङ रूपही-च. , रूपैं-छ.

६. जाने—क. घ. ज. , चानें ख. , जानें-ङ. छ. , जानैं-च.

७. प्रेम—घ. च.

८. पयूषः—क. पीउषें-ख. पयूषे-ग. , पियुषै-घ. पियुषी-ङ. पियुके-च. पियुषैं-छ. पीयषें-ज.

९. स्यामसुन्दर—क. ख. ग. , स्यांमसुन्दर-च. छ. ज.

१०. कर—क. , को-ज.

११. आने—ख. आनि-ग. आनें-घ. , आंनें-च. आनैं-छ. , जानें-ज.

१२. निर्गुन—ग. घ. च. छ. ज. , निर्गुण-ख. ङ. , निर्गुन तैं-झ.

१३. गुण—ख. ङ.

१४. जो शब्द झ प्रति में नहीं है ।

१५. पाईए—क. पारीये-ख. , पाइये-ग. ङ. , पाइयें-घ. , पाईये-च. , पाइयें-छ.

१६. लोक—क.

१७. कहे—क. ख. घ. ज. , कहै-ग. ङ. , कहें-च.

१८. इह- -क. , ए-ख. ग. घ. च. ज. यह-झ.

१९. नाह—क. नाहि-ख. घ. ङ. छ. ज. , नांहि-च.

२०. आए—क. ख. , आऔ-ग. आयो-घ. च. छ. ज. , आयें-ङ.

२१. साप—क. , नागु-ग.

२२. पूजिये—ख. घ. , पूजीयै-ग. पूजियै-ङ. पूजियें-च. , पूजई-छ. पुजीये-ज. , पूजिए-झ.

२३. बाबी—क. , बामी-ख. ग. च. , बांवी-घ. ङ. , बंवई-छ. , बावी-ज.

२४. पूजनह—क. पुजन-छ. ज. २५. जाय—ख. च. जांहि-छ.

२६. सखा—झ. २७. सुन—क.

२८. स्याम के—शब्द ख प्रति में नहीं है । स्यांम-च. छ. ज.

जो[1] उनके[2] गुन[3] होंय[4] वेद[5] क्यों[6] नेति[7] बतावै[8] ।।
निरगुन[9] सगुन[10] आत्मा[11] रचि[12] उपनिष:[13] जो[14] गावै[15] ।।
वेद[16] पुरानन[17] खोजि[18] कै[19] पायो[20] किनहु[21] न[22] एक ।।
गुनहू[23] के[24] गुन होंहि[25] जो[26] कहौ[27] अकास किहिं[28] टेक ।।
सुनौ[29] व्रजनागरी[30] ।।१६।।

---

१. **जो**—ग.
२. **हर के**—क. हरि के-ख., उनिकैं-ङ. उनकें-च.
३. **गुण**—ख. गुन-ज.
४. **होइ के**—क. होय-ख. घ. ज., हौहि-ग., होंहि-ङ. होइ-च. छ.
५. **बेद**—छ. ६. **क्यौ**—क. ग. ङ., क्यो-घ. सों-च.
७. **नीत**—क. निर्गुन-ख. घ. च.
८. **बतावें**—क. वतावे-ख. बतावे-ग. वषानें-घ. छ., बखांने-च. वषाने-ज. वखाने-झ.
९. **निगुन**—क. निर्गु-ख. निर्गुन-च. झ., निर्गुण-ङ.
१०. **सुगन**—क. सर्गुण-ख. सर्गुन-घ. च., सगुण-ङ. सरगुन-छ. सरर्गुन-ज.
११. **आत्म**—ख. ग. ज., आतमा-घ. च., अतम-ङ., आतम-छ.
१२. **रचा**—क., तमां रिचा-ख. रुचि-ग., रचित-च., रज-ज., चार-झ.
१३. **वेद उपनिप**—क. उपनषद-च. छ., उपजीपद-ज.
१४. **जो**—शब्द क. ख. झ. प्रतियों में नहीं है, जु-घ., जो-ज.
१५. **लगावे**—क. गावै-ख. गांने-घ., गाने-च., गानें-छ., गावे-ज. गानैं-झ.
१६. **बेद**—छ. १७. **पुरानहि**—ग., पुरानें-ङ., पुराननि-झ.
१८. **षोज**—क. खोज-ख., खोजि-च. झ., षाजि-छ.
१९. **के**—क. ख. ज., के-च. छ. २०. **पायो**—क. घ. च. छ. ज., नहि-ख.
२१. **कहू**—क. पायो-ख. किनहि-ग. घ. ङ. च., किनह-छ. किनिहि-ज.
२२. **नि**—छ.
२३. **गुनही**—क. गुणही-ख. विनगुन-ग. गुनहू-घ. ङ., गुणहु-ज., गुनके-झ.
२४. **के जो**—ख. कै-ङ. कें-च. ते-ज. ई-झ.
२५. **होइ**—क. झ. होय-ख. घ. च., होहि-ग. हूंहि-छ. होहि-ज., होइ-झ.
२६. **गुण**—ख. जो-ग. हे-झ. २७. **कह**—क. कहों-घ., कहां-च., कहि-झ.
२८. **किह**—क. की-ग. घ. च. छ. ज. झ.
२९. **सुनो**—क. ख. घ. ज., सुनों-च. छ.
३०. **व्रजवासनी**—क. व्रजनागरी-शब्द ख प्रति में नहीं है। व्रजवासिनी-ग. च. छ. वृजनागरी—ज.

जो[1] उनके[2] गुन[3] नाहिं[4] और[5] गुन[6] भये[7] कहां[8] तें[9] ॥
+बीज[10] बिना तरु[11] जमै[12] मोहि[13] तुम कहो[14] कहां[15] तें[16] ॥
+वा[17] गुन[18] की परछांह[19] री[20] माया दरपन[21] बीच[22] ॥
गुन[23] तें[24] गुन[25] न्यारे[26] भये[27] अमल[28] वारि[29] ज्यों[30] कीच ॥
सखा[31] सुनि स्याम[32] के[33] ॥२०॥

---

१. जौ–ग.
२. उनको—ग. गुनकें-घ. उनके-ड. उनकें-च.
३. गुण—ख. गु न-ज.
४. नाह—क. ओर-ग. नहीं-झ.
५. ओर—क. ग. घ. च. ज., अउर-ख.
६. गुण—ख., गुंन-ज. ७. भए—ख. घ. झ., भए हैं-ज.
८. कहा—ग. घ. ड. ९. तें—क. ख. घ. ड. च., तैं-ग., ते-छ. ज.
१०. वीज—ग. घ. ड. च. छ. ज.
११. तर—क. ग. घ.
१२. जमत—क. ख. ग. ड., जमें-घ. च. ज., जगत-झ.
१३. मोह—क. ग. घ. छ., मांझ-झ.
१४. कहौ--ग. ड., भए-ज.
१५. होंत जहां--ख. कहा-ग. घ. ड., होत कहां-झ.
१६. तें—क. ख. घ. च., ते-ग. ड. ज. झ.
१७. वे—क. १८. गुण—ख., गु न-ज.
१९. परछाह—क. ग. घ. ड. परछाव-ज., परछांहि-झ.
२०. हरि—ख. २१. दर्पन—क. ख. घ. च. छ. ज. २२. वीज—घ. २३. गुणी-ख.
२४. तें—क. ख. ड. च. छ., तैं-ग. ते-घ. ज.
२५. गुण—ख. २६. न्यारो ख.
२७. भए—क. ग. घ. ज. झ., नहीं-ख., भऐ-छ.
२८. अमर—घ.
२९. वादि—क. ख. ग. छ. ज. व्यार-ड.
३०. जन—क., मिल-ख, जल-ग. घ. ड. च. छ. ज.
३१. सखा—झ.
३२. स्याम के—शब्द ख प्रति में नहीं है, स्यांम-च. छ. ज.
३३. क प्रति में यह पंक्ति नहीं है।

+ ग प्रति में दूसरी पंक्ति तीसरे क्रमांक पर तीसरी पंक्ति दूसरे क्रमांक पर दी गई है।

माया के गुन[1] ग्रौर[2] ग्रौर[3] हरि[4] के[5] गुन[6] जानो[7] ॥
वा गुन[8] कों[9] इन[10] मांझ[11] ग्रानि[12] काहे को[13] सानो[14] ॥
जाके[15] गुन[16] ग्ररु[17] रूप[18] कौं[19] जानि[20] न पायौं[21] भेद ॥*
तातें[22] निरगुन[23] ब्रह्म[24] कों[25] बदत[26] उपनिषद[27] बेद[28] ॥
सुनौं[29] व्रजनागरी[30] ॥२१॥

---

१. गुण—ख. ग. २. ग्रोर—क. ख. ग. घ. च. ज. ३. ग्रोर—क. ख. ग. ध. च. ज.
४. हर—क. गुण-ख. गुन-ज. ५. हरि—ख. ज. ६. के—ख. ज.
७. जानो—क. ख. ड., जानों-ग. घ. च. छ., जाने-ज.
८. गुण—ख.
९. को—क. कों-ख. ग. घ. च. छ.
१०. ईन—ख. इना-ग. उन-झ.
११. माह—क. ग. माझ-ड. झ.
१२. ग्रान—क. ग्रांन-ख. ग्रांनि-घ.
१३. को—क. ख., कहेको-ग. कौं-छ.
१४. सानो—क. ख., सांनों-घ. च., सानौं-ड. छ.
१५. वाके—च. छ. १६. गुण—ख. १७. ग्रोर—ख. १८. रुप—ग. छ
१९. की—क. को-ख., कौं-घ., कों-च. छ
२०. जान—क. ग. ड. च., जांन-घ.
२१. पाए—क. पैऐ-ख., पायो-घ. च. छ.
२२. तातें—क. ख. ड., तातैं ग. ताते-घ. ज., ताके-छ.
२३. निर्गुन—ग. घ. च. छ. ज., निर्गुण-ख. ड.
२४. ब्रम्ह—ग. बृह्म-घ.
२५. को—क. ख., कौ-ग. छ., कों-झ.
२६. विदत—क.
२७. उपनिषत—क., उपानिष-ग., उपनीपद-ज.
२८. भेद—ख. देव-ग. वेंद-ज.
२९. सुनो—क. ख. घ. च. ज., सुनों-छ.
३०. ब्रजवासनी—क., व्रज नागरी-शब्द ख प्रति में नहीं है। ब्रजवासिनी-ग., व्रज-घ वृज नागरी-ज.

+चिन्हित पंक्ति ज प्रति में छूट गई है और अगली पंक्ति के आगे दो पंक्तियाँ इस प्रकार दी गई हैं

वा गुन को इन माझ ग्रानि ग्रमृत मे जानो ॥
जाके गुन ग्रोर रुप को जांन न पायो भेद ॥

बेदहु[1] हरि[2] के[3] रूप[4] स्वास[5] मुष[6] तँ[7] जो[8] निसरे[9] ॥
कर्म क्रिया[10] आसक्ति[11] सबै[12] पिछली[13] सुधि[14] बिसरे[15]॥
कर्म[16] मध्य[17] ढूंढे[18] सबै[19] किनहु[20] न[21] पायौं[22] देषि[23] ॥●
कर्म रहित[24] ही[25] पाइये[26] तातैं[27] प्रेम[28] बिसेषि[29] ॥
सषा[30] सुनि[31] स्याम[32] के ॥२२॥

---

१. बेदहू—क. ख. घ. च. २. हर—क. ३. के कोऊ—ख. को-ज. ४. रूप—ज.
५. स्वांस—ख. ६. मुख—ख. च. झ. ७. ते—क. ख. ग. घ. च. ज., ते-झ.
८. जो—च. छ.
९. निकरे—क. निसरे-ख. निकसे-घ., निकारे-च. निसरैं-छ. निकरै-छ. निकरें-झ
१०. काया—घ. ड. छ. ज. क्राया-च.
११. आसकत —क., आसक्त-ख. ग. ड. झ.
१२. सभै—क. सवें-ख. सवैं-ग. ड. छ., सवें-घ., सवे-च. ज
१३. पिछिली—ड., पाछे-झ.
१४. सुध—छ.
१५. विसरै—क. ज., विसरें-ख. घ., विसरे-ग. ड., विसारे-च. बिसरें-छ.
१६. कर्मनि—झ.
१७. मधि—ग. झ., धर्म-ज.
१८. ढुढो—क ढूँढें-ख., ढूढें-ग. घ. ड., ढुढें-छ., ढुढे-ज.
१९. सवै—क., सवें-ख. घ. च., सवे-ज.
२०. मोह—क., किनही-ख. ग., किनिहि-घ., किनहि-ड च. ज., किन्हि-छ.
२१. नहि—ख. २२. पायो—क. ख. घ. घ. च. छ. ज.
२३. देष—क., गुण देख-ख., देखि-च. ज. झ.
२४. रहत—क. ख.,
२५. जो—झ.
२६. पाइए—क. झ., पायये-ग., पाइयें-घ. च., पाइये-ड.
२७. ताते—ख. च. ज., तातें-ग. घ. ड.
२८. प्रेंम—च.
२९. वसेष—क. विशेष-ख. विशेषि-ग. बिशेंषि-ड. विसेखि-च., विसेष-छ. विसेख-ज.
३०. सखा—झ.
३१. सुन—क. ख. छ.
३२. स्याम के—शब्द ख प्रति में नहीं हैं।
+ चिन्हित पंक्ति ग प्रति में छूट गई है।

प्रेमहु[1] कोऊ[2] बस्तु[3] रूप[4] देषत[5] लौ[6] लागै[7] ।:
बस्तु[8] दृष्टि[9] बिन[10] कहौ[11] कहा[12] प्रेमी[13] अनुरागै[14] ।।
तरनि[15] चंद्र[16] के[17] रूप[18] कौं[19] गुन[20] नहिं[21] पायौ[22] जान[23] ।।
तौ[24] उनकौ[25] कहा[26] जानिये[27] गुनातीत[28] भगवान[29] ।।
सुनौ[30] ब्रजनागरी[31] ।।२३।।●

१. प्रेमहु—क. प्रेमहि-ख. ग., प्रेमहूं-घ. छ., प्रेमहूं-च. प्रेमउ-झ.
२. के को—क. कोउ-ग. छ. ज.
३. वस्त—क. ज., बस्त-ख., बस्तू-छ. ४. रूप—ज.
५. देखत—च. ज. छ.
६. लिव—क., जौं-ग. लौं-घ. च. ज.
७. लावे—क. लागें-ख. ड. जागे-ग., लागे-घ. च. ज., लागें-छ.
८. वस्त—क. बस्त-ख.
९. द्रिष्ट—क., दिष्ट-ख., द्रष्टि-ग. छ. ज., दृष्ट-घ.
१०. विनु—ग. च. ज. बिना-झ. ११. कहौ—ग. ड.
१२. काहे—ख., कहां-छ., प्रेमी-झ.
१३. प्रेमे—क. प्रेमी-ग. घ., प्रेम-ज., काहे-झ.
१४. अनुरागे—क. ज., अनुरागें-ख. घ. च., अनुरागे-ड.
१५. तर्न—क. तरुन-ख. ज. तरन-ग. तरण-ड., तारन-झ.
१६. चंद—छ. ज., चंदन-झ.
१७. को—ख. के-शब्द झ प्रति में नहीं है। १८. रूप—ज.
१९. को—क. ज. कौ-ग. झ., कौं-छ.,
२०. गुन—शब्द ख प्रति में नहीं है।
२१. न—क. नहि-ख. ड. छ. ज., नहीं-ग. घ. च.
२२. पाईए—क. पै अत गुण-ख.
२३. जानि—क. ख. ड. ज. जनि-ग. जांनि-घ. च.
२४. तो—क. ख. घ. च., ता-ग. तौं-ड. उव-ज.
२५. उनको—क. ख. ज., उनकौ-ग., उनकों-छ.
२६. गुण—ख., कह-ग., कहां-ज.
२७. जानीए—क., जानीयैं-ग. जांनियें-घ. जानिये-ड. जानियें-च., जानिहो-झ.
२८. गुनअतीत -क., गुणातीत-ख. घ. ज., रूप जोति-ग., गुनातीर्थ-च.
२९. भगवांन—ख. घ. च., ही मानि-ग.
सुनो—क. ख. ग. घ. ज., सुनों-च. छ.
३१. वृजवासिनी—क. ज., ब्रजनागरी-शब्द ख प्रति में नहीं है। व्रजवासनी-ग.
ब्रजवासिनी- घ. ड. च.

● चिन्हित पंक्ति ग प्रति में छुट गई है।

तरनि[१] अकास[२] प्रकास तेज[३] मैं[४] रह्यो[५] दुराई[६] ।
दिव्य[७] दृष्टि[८] ही[९] रूप[१०] मले[११] वह[१२] देख्यौ[१३] जाई[१४] ।।
जिनके[१५] वे[१६] आंखे[१७] नहीं[१८] देखैं[१९] क्यों[२०] वह[२१] रूप[२२] ।।
तिनकों[२३] विस्मै[२४] कहा[२५] है[२६] परे[२७] कर्म[२८] के कूप[२९] ।।
सषा[३०] सुनि[३१] स्याम[३२] के ।।२४।।

---

१. तरन—क. ज. , तरुणाकार-ख. , तरुण-घ. , तरनाकास-ड.
२. आकाश – ग. , आकास-भ.
३. तें—ग. ड. च. , तेंज-ज.
४. मे—ख. जामै-ग. , में-घ. भ. जामैं ड. , जामें-च. मय-छ.
५. रह्यो—क. ख. घ. छ. ज. ,
६. दुराय—ख. च. , दुराइ-ग. , लुभाई-भ.
७. द्रव्य—च. , दिवि-छ.
८. टिष्टि— -क. दिष्ट-ख. ज. , दिष्टि-ग. छ. द्रष्टि-भ.
९. बिन—ख. , हि-ज.
१०. रूप—शब्द क प्रति में नहीं है। कहो-ख. कों-ग.
११. भलें—क. छ. , कोन-ख. , भले-ग. ड. भलें-घ. च.
१२. पै—ख.
१३. देखो—ल. देषौ-ग. , देख्यो-च. देषो-छ. देख्यो-भ.
१४. जाइ—ख. च. ज. , जाडि-ग. , ज्याई-छ.
१५. तिनिके—ग. , जिनिके-घ. , जिनकें-ड. च. ,
१६. बे—छ.
१७. आखें—ख. , आंषै-ग. आंखें-च. , आखे-ज. , आखैं-भ.
१८. नही—ख. ग. घ. ड. च. छ. नहि-ज.
१९. देषन—ख. ड. , देषौ-ग. देषें-घ. क्यों-च. , देख्यो-छ. , देखे-ज देखै-भ.
२०. क्यौं—क. को-ख. क्यौ-ग. को-ड. देखें-च. क्यो-ज.
२१. उह—ख. वे-ज. भ.
२२. रूपु—ग. रुपे-च.
२३. तिनको—क. ख. ज. तिनको-ग. , तिनकों-घ. ड. च. भ. , जिनको-छ.
२४. विस्मै—क. विस्वास-ग. घ. ड. च. छ. ज. भ.
२५. क्यौ—क. छ. , कौ-ग. क्यों-छ. ड. ज. भ. नही-च.
२६. होवे—क. , ऊपजे-ग. घ. ड. च. छ. भ. उपजे-ज.
२७. परे शब्द के पूर्व ग. घ. ड. च. छ. ज. प्रतियों में जे शब्द लिखा गया है ।
परत—ख. , परें-ड. , २८. प्रेम—घ.
२९. रूप—क. कुप-छ. रुप-ज. ३०. सखा—ख. भ. ३१. सुन—क. ख.
३२. स्याम के—शब्द ख. घ. प्रतियों में नहीं हैं। स्यांम-च. छ. ज.

जब[1] करिये[2] निज[3] कर्म भक्ति[4] हू[5] तामैं[6] आई[7] ॥
कर्म रूप[8] तें[9] कहो[10] कौन[11] पै[12] छूट्यो[13] जाई[14] ॥
कर्म कर्म ही[15] किये[16] तें[17] कर्म नास[18] ह्वै[19] जाय[20] ॥
तब[21] आत्मा[22] निहकर्म[23] ह्वै[24] निरगुन[25] ब्रह्म[26] समाय[27] ॥
सुनौ[28] ब्रजनागरी[29] ॥२५॥

---

१. **जबह** — क. जित-ख. ड. जो-ग. जव-छ.
२. **करह** — क. करियें-ख.ख., करिये-ग., करियै-घ. करियैं-ड. च. करिए-झ.
३. **तिन**—ख.
४. **भक्त** — क., ख.
५. **ह्वें** — क., ही-ख. है-ग. हूं-ड.
६. **यामें** — क. तामें-ख., घ. तामे-ग. ड., तामैं-च. ताते-ज.
७. **आइो**—ग., आई-घ. आइ-ज. ८. **कूप**—छ.
९. **ते** — क. ग. ज. - जे-ख. तें-घ. ड. च. छ.
१०. **कहों** — क., कहौ-ग. ड. च. झ.
११. **कौंन** — क. ख. कौंन-घ. ड. च., करन-ज.
१२. **पैं** — ख., पे-घ. च., तै-झ.
१३. **छूटे** — ख. छटौ-ग., छूट्यों-घ., छूट्यौ-ड., झ. छुयो-ज.
१४. **जाइी**-ग. जाइ-ज.
१५. **कर्म कर्म कर्मः** — क., कर्म कर्म कर्में—ख., कर्म कर्महि-ग. ज., कर्म कर्म के-ड. कर्म कर्म कर्म ही-छ.
१६. **कीए**—क. घ., कीये-ख. ग. ज., किये-ड. किए-झ.
१७. **तें** — शब्द क. ख. ग. ड. छ. ज. प्रतियों में नहीं है।
१८. **नाश** — ख.
१९. **होइ** — क. ह्वैं-ख., होइि-ग. ह्वें-घ. च., ह्वे-ज.
२०. **जाइ**—क. ख. ड., जाइि-ग.-जाही-घ. जाई-च. छ. ज. २१. **जब** — ग.
२२. **आतम**—क. च. छ. ज., आतम-ख. ग. ड. आत्तम-घ.
२३. **निःकर्म** — क. निहिकर्म-ग. नहीकर्म-घ. च. निहम-ज. इनि कर्म थझ.
२४. **ह्वै**—ख. करि-ग. घ. ड. च. छ. ज. झ.
२५. **निर्गुण** — ख. घ. ड. निर्गुन क. ग. च. छ. ज.
२६. **ब्रह्म**—क. ड. छ., ब्रम्ह-ग. झ. ब्रंम्ह-घ. च.
२७. **समाई** — क. ग. समाइि-ग., समांहि-छ., समोइ-ज.
२८. **सुनो** — क. ख. घ. ज., सुनों-च.
२९. **ब्रजवासनो** — क., ब्रजनागरी-शब्द ख प्रति में नहीं है। ब्रजवासिनी-ग. ड. च. ब्रज-घ., वृजवासिनी-ज., सषा सुनि स्यांम के-छ।

जो[1] उनके[2] नहिं[3] कर्म कर्म बंधन ह्वै[4] आवै[5] ॥
तौ[6] निरगुन[7] है[8] वस्तु[9] मात्र परमान[10] बतावै[11] ॥
जौ[12] उनके[13] परमान[14] है[15] तौ[16] प्रभुता[17] कछु[18] नाहिं[19] ।
निरगुन[20] भये[21] अतीत के[22] सगुन[23] सकल जग माहिं[24] ॥
सषा[25] सुनि[26] स्याम[27] के ॥२६॥

---

१. जौ—ग.
२. हरि कैं—ख., उनिको- ग., उनकैं-ड., उनकें-च.
३. नही—क. ग. घ. च. निह-ख.
४. होइ—क. है ग. ह्वै-ज.
५. आयो—क. को बंधन आयो-ख., आवें-घ. च., जावै-छ., आवे-ज.
६. तो—क. ख. च. ज., तों-ड.
७. निर्गुण—ख, घ., निर्गुन-ग. ड. च. छ. ज.
८. होइ—क. ह्वैं-ख., ते-घ. ह्वै-ड., हे-ज. तौ-भ.
९. वस्त—ख. ब्रह्म-ज.
१०. वस्त परमान—क., प्रमाण-ख. निर्गुन वस्त परमान-च. परमांन-ज.
११. दिषायो—क., बतायो-ख., बतावें-घ., बतावे-ज.
१२. जौ—ग.
१३. उनको—क., उनकै-ग. उनकों-ड., उनकें-च.
१४. परमाण—क. प्रमान-ख., परमांन-च. छ. ज.
१५. हैं—क. च., हैं-ख., हे-घ. ज.
१६. तो—क. ख. च., ज. तों-ड.
१७. प्रभता—क. उनके-ज
१८ कुछ—ख., कछू-घ.
१९. नाह—क. नाही-ख.
२०. निर्गुन—क. च. छ. निर्गुण-ख. घ. ड., निगुन-ग.
२१. भए—क. ख. ग. छ. ज. भ.
२२. सेवा असद की—ख. कें-घ. च.
२३. सुगुन—क. सगुण-ख. घ., सुगुन-च., सरगुन-ज
२४. माह—क.
२५. सखा—भ.
२६. सुन—क. ख. छ.
२७. स्यांम- ड. च. ज., स्याम के-शब्द ख. घ. प्रतियों में नहीं हैं।

जो[1] गुन[2] आवं[3] दृष्टि[4] मांझ[5] नस्वर[6] हैं[7] सारे[8] ॥
ये[9] सबहिन[10] तें[11] वासुदेव[12] अन्युत[13] हैं[14] न्यारे[15] ॥
इंद्रिय[16] दृष्टि[17] विकार[18] तें[19] रहित[20] अधोक्षज[21] जोति[22] ॥
सुद्ध[23] सरूपी[24] ज्ञान[25] ते[26] प्रापति[27] तिनकों[28] होति[29] ॥
सुनौ[30] व्रजनागरी[31] ॥२७॥

---

१. जे—क.
२. गुण—ख. घ
३. आवे—क. ज. आमें-घ. आवें-च.
४ द्रिष्ट—क. दिष्ट-ख. दृिष्टि-छ. द्रष्टि-च., द्रष्टिन-झ.
५. मात्र—क. माहि-ख., मद्ध-ग. में-झ.
६. नसुर—क. निश्चर-च., उन रच-झ.
७. हे—क. ज. है-ग. ड. हें-घ. च., रहे-झ.
८. सौं—ग. सारे-ख. घ. च.
९. ए—क. ड. झ., इन-ख.
१०. सभन्ये—क. सवहन-ग. सबहीन-छ., सबहिन-च.
११. ते—क. तै-ग. तें-घ. ड. च. ज.
१२. वासदेव—ख.
१३. अचुत—क. च.,
१४. हे—क. ज. हें-ख. घ. च. है-ग. ड. १५. न्यारे—ख.
१६. इंद्री—क. ग. ड. च. छ., इंद्री-ख. इंद्रो-ध. इद्री-ज.
१७. द्रिष्ट—क. दिष्ट-ख. छ. दिष्टि-ग. द्रष्टि-झ.
१८. विचार—ख. १९. तें—क. ग. ड. ज.
२०. रहत—क. ख. घ. छ. ज. रहेत-ड. च.
२१. अधोषज—क. अधोछज-ग., अधोक्षत-छ. अधोक्षज-ज.
२२. जोत—क. ख. भाँत-ज. ज्योति-झ.
२३. सिध—क.-सुध-ख. ड. छ., सुधि-ग. सुधी-ज.
२४. सरुपी—क. ज.
२५. ज्ञान—घ. ड. ज., ग्यांन-च. ज्ञांन-छ. जानि-झ.
२६. की—ख. घ. च. छ., तें-शब्द ज प्रति में नहीं है, जिन-झ.
२७. प्रापुत—क. प्राप्त-छ. प्राप्ति-झ.
२८. जिनके—क. तिनही में-ख. पिनकी-ग. जिनकों-घ. छ. जिनको-ज. जानते-झ.
२९. होय—च. हेत-ज.
३०. सुनो—क. ख. घ. ज., सुनौं-च. छ.
३१. व्रजवासनी—क. छ., व्रजनागरी-शब्द ख उति में नहीं है।, व्रजवासिनी-ग.ड.च. व्रज-घ. वृजवासिनी-ज.

नास्तिक[1] हैं[2] जो[3] लोग[4] कहा जानैं[5] निज[6] रूपै[7] ॥
प्रगट भांन[8] कों[9] छाँडि[10] गहैं[11] परछांही[12] धूपै[13] ॥
हमरे[14] बिन[15] यह[16] रूप ही[17] और[18] न कछू[19] सुहाय[20] ॥
ज्यौं[21] करतल[22] आमलक[23] के[24] कोटिक[25] ब्रह्म[26] दिषाय[27] ॥
सखा[28] सुनि[29] स्याम[30] के ॥२८॥

---

१. नास्तकी—क. नास्तीक-ख. ङ., नास्तिकें-ज।
२. जो—क. हे-ग. घ., हें-च.
३. यो—क. ए-ख. जो-घ. चे-शब्द ङ और छ प्रतियों में नहीं है, सब-झ.
४. लोंक—क.
५. जाने -क. घ. ज., जानें-ख. च. जानै-ग. ङ.,
६. तिह—क. तें-ञ.
७. रूपें—क. ग. छ. रूप-ख. रूपें-ग. च., रूपे-ज.
८. भान—क. ग. ङ., भानु-ख.
९. को—क. घ. च. ज. का-ख. कौ-ग. कों-छ.
१०. छाड—क. ख., छाडि-ङ. छ., जांनि छांडि-ज.
११. गहे—क. ज., गहत-ख. च., गहे-ग. ङ., गहें-घ. ग्रहे-झ.
१२. परछाही—क. छायाफिर-ख. परछाही-ग., अरछाया-ङ. परछाइ-च. परछांइ-ज. परछांई-झ.
१३. धूपः—क. धूपें-ख. छ., धूपे-घ. च., धुपें-ज. १४. हमारें—ज.
१५. तो—ख. यह-झ.
१६. वह—क. बिन-झ.
१७. के—क. बिन-ख.
१८. ओंर—क. ग. घ. च. ज., औरु-झ.
१९. कछु—क. छ. ज.
२०. सुहाइ—क. ज. झ. सुहाइ-ग. सुहाई-छ.
२१. जो—ख. जौ-ग. ज्यो-घ. ज्यों-च. झ. जो-छ. ज.
२२. करतलक—क. करन-ज.
२३. अमलक—क. आलमक कें-च. आभास-झ.
२४. के—ख. घ., कै-ङ. ज्यौं-च.
२५. कोटक—क. कौतिक-ग. कौतक-ङ. कोटि-झ.
२६. ब्रह्म—ग. वृंह्म-च., वृह्म-ज. ब्रह्मांड-झ.
२७. दिषाइ—क. ज., दिखाय-ख. दिखाइ-ग. दिखाइ-च. छ. २८. सखा—ख. झ.
२९. सुन—क.
३०. स्याम के—शब्द ख और घ प्रतियों में नहीं है। स्यांम-च. छ.

ऐसे[१] में[२] नंदलाल[३] रूप[४] नैनन[५] के[६] आगे[७] ।।
आय[८] गये[९] छबि[१०] छाय[११] बने[१२] पियरे[१३] उर[१४] बागे[१५] ।।
ऊधौं[१६] सों[१७] मुख[१८] फेरिके[१९] तिनहीं[२०] सों[२१] कहु[२२] बात[२३] ।।
प्रेम मृत मुख[२४] तें[२५] स्रवै[२६] अम्बुज[२७] नैन[२८] चुवात ।।
तरक[२९] रस रीति[३०] की[३१] ।।२६।।

---

१. एसे—क. अैसें—ख. ग. ड. अेसे-घ. च., अैसे-छ. अेसैं-ज.
२. ही में—क. ग. च. में-ख. ही में-घ. हीं मे-ड. ही-झ.
३. नदलाल—ग. नंदलाला-ज.
४. रुप—ग. च. ज.
५. नैननि—ग. नेंननि-घ. नेंनन-च., नेनन-ज.
६. में—क. के-ग.
७. आगें—क. ख. च., आगै-ग. ड. आगे-छ.
८. आइि—ग. आइ-ड. च ज. झ.
९. गये—ग. ड. च. ज., गए-घ. झ.
१०. छब—क. छवि-ग. घ. ड. च. छ.
११. फबो—क. छाइि-ग. छाइ-घ. च.
१२. बन्यो—ख. बनै-छ. वने-घ. ड. च. ज.
१३. वीरा—क. च. पीरे-ख. वीरी-ग. घ. ड. ज. वारी-छ.
१४. अरु—क. ग. घ. ड. च. छ. ज.
१५. वागे—क. घ. ज., वागें-ख. वागै-ग. ड. । वागैं-च. छ.
१६. ऊधों—क. ड., उधौ-ख. ग. उधौं-छ., उधो-ज. उद्धव-झ.
१७. सों—ख. ग. घ. ड. सौं-छ.
१८. मुख—ख. च. ज.
१९. मोरके—क. मोरकें-ख., फेरिके-घ. ज. फेरिकें-च., फेरिकें-छ.
२०. करत—ख. उनही-ज., उनहीं-झ.
२१. सों—शब्द क प्रति में नहीं है। जो-ख. सौ-ग. सौं-ड. छ. सो-ज.
२२. के हे—क. तासों-ख. कहै-ग. ड. कहे-घ. ज., कहें-च. करै-झ.
२३. वत—ग. २४. मुख—ख. च. ज. झ.
२५. तै—ग. सों-च. ते-ज.
२६. श्रवे—क. श्रवें-ख. श्रवे-ग. श्रवत-घ. ड. च. छ. श्रवन-ज.
२७. अंभुज—क.
२८. नेंन—ख. घ. च., नैंन-छ. नेन-ज.
२९. सरस—ख. तर्क-ग. तरकि-छ. ज.
३०. रीत—क. प्रेम-ख.
३१. को—ख. की-शब्द ग प्रति में नहीं है।

अहो नाथ[1] अहो[2] रमानाथ[3] जदुनाथ[4] गुसाईं[5] ॥
नंदनंदन बिड़रात[6] फिरत तुम[7] बिन[8] बन[9] गाईं[10] ॥*
काहे[11] न फेरि[12] कृपाल[13] होउ[14] गो[15] ग्वालन[16] सुधि[17] लेहु[18] ॥
दुख जलनिधि[19] हम[20] बूड़हीं[21] कर[22] अवलम्बन[23] देहु ॥
निठुर[24] ह्वै[25] कहँ[26] रहे[27] ॥३०॥

---

१. नाँथ—च.
२. रमानाथ—ड. छ. रमानांथ-ज.
३. ओर—घ. ज. और-ड. छ., रमांनांथ-च.
४. जदनाथ—क. जदुनांथ-च.
५. गुसइी—ग. गुसाई—घ.
६. बिडहोत—ज.
७. वे—ड.
८. बिन—ज.
९. वे—ख. वन-ग. च. थांन-ज.
१०. * क प्रति में यह पंक्ति छूट गई है। न गाइि-ग. माई-च. गई-ज., माहीं-झ
११. काह—क. कहे-ग.
१२. फेर—क. छ. पीड़-ञ. होउ-घ. ड. च. कोन-ज.
१३. क्रिपाल—क. क्रपाल-ग. झ.
१४. होइ—क.
१५. गोऊ—क. गो-ख. गउ-ग. ज. गऊ-घ. ड. च. छ.
१६. ग्वानं—क. वालक-ख. अर-ग. ग्वारन-ड. ग्वारति-छ.
१७. सुष—घ. छ. ज. सुख-झ.
१८. सुप्रल—क. देउ-घ. देत-च. लेहु-शब्द ज प्रति में नहीं है, देहु-झ.
१९. निधजल—क. जलनिध जल-ख. नित जव-ग. निधिजल-झ.
२०. महं—क. मै-ग. मे-घ. ज., में-च. झ. मैं-छ.
२१. डूबहीं—क. बूडिहें-ख. बूडई-घ. बूडिही-च. डूबिहो-छ. वुडही-ज. डूबही-झ.
२२. कह—क. करि-घ. च. छ. ज. झ.
२३. अवलंभन—क. आलंबन-ग. घ. ड. च. ज. झ. आलंवन-छ.
२४. निडर—क. ड. निठर-छ.
२५. हो—क. ह्वैं-ख. कह-ग. ह्वे-घ. ज.
२६. कहा—क. काहू-ख. हे-ग. कहा-ड. च. कहां-छ. ज. झ.
२७. रहां—क. रहो-ख. रहें-घ.

कोऊ[1] कहै[2] अहो[3] दरस[4] देहु[5] जो[6] बेनु[7] सुनावौ[8] ।।
दुरि दुरि[9] बन[10] की ओट[11] कहा[12] हिये[13] लौन[14] लगावौ[15] ।।
हमकों[16] तुम[17] पिय[18] एक[19] हौ[20] तुमकों[21] हमसी[22] कोरि[23] ।।
बहुत भांत[24] के[25] रावरं[26] प्रीति[27] न डारौ[28] तोरि[29] ।।
एक[30] ही बार में[31] ।।३१।।*

---

१. कोउ—ख. ङ. ज. झ.
२. कहे—क. च. कहत-ख. कहें-घ.
३. पीय—ख.
४. दर्स—क.
५. देह—क. देत-ख. देहु-घ. झ.
६. तो—क. च. छ. ज. त्यों-ख. धों-घ. तों ङ. धों-झ.
७. वेन—क. ज. वैन-ख. वेन-ग. ङ. छ. वेन-घ. च.
८. सुनावो—क. च. ज. सुनावें-ख. , सुनावों-घ.
९. दुर दुर—क. ख. दूरि दुर-छ.
१०. वन—ख.
११. ओटि—छ.
१२. रिदे—क. हृदे-ख. ह्रदे-ज.
१३. कहा—क. ख. ह्रदें-ग. ङ. झ. ह्रदे-घ. हृदें-च. धौं-छ. कहां-ज.
१४. लोन—क. ज. लोम-ख.
१५. लगावो—क. च. ज. लगावें-ख. लगायो-घ.
१६. हमकौ—क. ख. ज. , हमको-ग. ङ. , हमकों-छ.
१७. पीय—ख. पिय-झ.
१८. पीय—क. ग. ज. तुम-ख. प्रिय-घ. तुम-झ.
१९. येक—ग. ऐक-च.
२०. हों—घ. ज.
२१. तुमको—क. तुमकौ-ग. तुमकौं-छ. तुमसी:ज.
२२. हमको—ज. हमसे-झ.
२३. कोर—करोरि-ख. कोटि-च. कोर-झ.
२४. वहुताइत—छ. बोहोताइत-झ. २५. की—ख.
२६. रावरें—ख.
२७. प्रीत—क. घ. प्रति-ज.
२८. ढारों—क. डारौं-ङ.
२९. तोरा—क.
३०. येक—ग. च.
३१. ए—क. यो-ख. जो-ज

* ख प्रति में यह छंद क्रमांक ३२ पर दिया गया है ।

कोऊ[१] कहै[२] अहो दरस देत[३] फिरि[४] लेत दुराई[५] ॥
यह[६] छल विद्या[७] कहौ[८] कौन[९] पिय[१०] तुमहिं[११] सिषाई[१२] ॥
हम सब[१३] दरस[१४] अधीन[१५] हैं[१६] तातैं[१७] बोलत[१८] दीन ॥
जल विनु[१९] कहौ[२०] कैसें[२१] जियें[२२] पराधीन[२३] जे[२४] मीन[२५] ॥
विचारौ[२६] रावरे[२७] ॥३२॥*

---

१. कोउ—ग. छ. ज. झ.
२. कहत—क. ख. कहे-घ. ज.
३. देउ—झ.
४. फिर—क. छ. पुन-ख.
५. दुराई—ईह-ख. वह-ग.
६. ईह—ख. वह-ग.
७. विध्या—ग.
८. कहों—क. ख. घ. च. छ. ज.
९. कोंन—क. ड. छ. कोग-ख. ज. पिय-घ. पिया-च.
१०. तुमहि—क. ड. छ. पीय-ख. आदि पीय-ग. तुम्हे-घ. तोहि-च. पे-ज.
११. तुमही—ख. तुहमे-ग. कोन-घ. च., तुमे-ड. तुंमहि-ज.
१२. सिखाई—ख. झ., सिपाइ-ग. सिपाइ-ज.
१३. रस—घ. सव-ज.
१४. सव—ग. रस-ज. झ.
१५. आधीन—क. घ. ड. च. छ. ज. झ.
१६. है—ग. ड. हे-घ. हें-च. ज.
१७. तातै—ग. ताते-ज.
१८. वोलै—क. छ., वोलें-ग. वोले-घ. च.
१९. विन—क. ख. घ. ड. च. छ. ज., विनु-ग.
२०. कहो—क. ख. छ. च. ज., काह-ग. कहों-घ.
२१, कैसे—ख. च., केसें-ग. ड. केसे-घ. ज.
२२. जिय—क. छ. जिवें-ख. जीवै-ग. जीवें-घ. च. ज., जिये-ड.
२३. परमातुर—ख. पीराधीन-ग.
२४. ये—क. ख. ग. छ. ए-घ. वे-झ.
२५. मेंन—ग.
२६. विचारो—ख.
२७. राव—घ.

* ख प्रति में यह छंद क्रमांक ३१ पर दिया गया है। ज प्रति में यह छंद छूट गया है।

कोऊ[1] कहै[2] अहो[3] स्याम[4] कहा इतराय[5] गये[6] हौ[7] ।।
मथुरा कौ[8] अधिकार पाय[9] महाराज[10] भये[11] हौ[12] ।।
ऐसी[13] कछु[14] प्रभुता अहो जानत[15] कोऊ[16] नाहिं[17] ।।
अबला वध[18] सुनि[19] डरि[20] गये[21] बली[22] डरे[23] जग[24] माँहि[25] ।।
पराक्रम[26] जानि[27] कै[28] ।।३३।।*

---

१. कोउ--क. ग. छ. ज. झ.
२. कहे—क. ख. कहें-च. ज.
३. हो—झ.
४. स्यांम—च. छ. ज.
५. इतराइ—ग. इतराइ-च. छ. ज. झ.
६. गए—घ. ङ. छ प्रति में यह शब्द नहीं है।
७. हो--घ. च. ज. हों-ङ. गहो-छ.
८. को—क. ख. घ. च. छ. ज.
९. पाइ—ग., पाइ-घ. ङ. च. छ. ज. झ.
१०. महराज—क. च. ज.
११. भए--क. ग. घ. छ. झ.
१२. हो—क. ख. घ. च. छ. ज. हों-ङ.
१३. एसें—क. असे-ख. ग., एसे-घ. असें-ङ. ऐसे-च. असैं-छ. असे-ज.
१४. कछू—घ. च.
१५. कोऊ—ख. जांनत-च.
१६. कोउ—क. च. छ. जानत-ख. घ. कौउ-ग. कोंउ-ज.
१७. नही--ख., नाहि-घ. नांहि-च.
१८. वधि--ख. घ. ज. बिधि-छ. बधि-झ.
१९. सुन--ख. झ. सव-च. सुंनि-ज.
२०. दुरि—क. ख. ङ., डरी-ग. ज. डर-छ.
२१. दुरके--क. गए-घ. झ. ये-ज.
२२. वलि—ख. ज.
२३. डारें--ख. ठहरे-झ.
२४. जुग—क. च.
२५. माही—ख. माहि-ग. घ. ङ. च. ज.
२६. परक्रम—क. ग. ज. प्राक्रमी-ख. पराक्रम-च. क्रपाक्रम-छ.
२७. जनें—ख.
२८. के—ख. कें-ग. च., कै-छ.

* ख प्रति में यह छंद क्रमांक ३५ पर दिया गया है।

कोऊ[१] कहै[२] अहो स्याम[३] चहत[४] मारन[५] जो[६] ऐसे[७] ॥
गिरि[८] गोवर्द्धन[९] धारि[१०] करी रक्षा[११] तुम[१२] कैसे[१३] ॥
ब्याल अनल[१४] विष[१५] ज्वाल[१६] तें[१७] राखि[१८] लिये[१९] सब[२०] ठौर[२१] ॥
बिरह[२२] अनल[२३] अब[२४] दाहिहौ[२५] हंसि हंसि[२६] नंदकिसोर[२७] ॥
चोरि[२८] चित[२९] लै[३०] गये[३१] ॥३४॥*

१. कोउ—ग. छ. ज.
२. कहत—क. कहे-ख. कहें-घ. कह-च. कहो-ज.
३. स्यांम—छ.
४. चाहत—ख. ग. घ. ड. च. छ. च. झ.
५. मरन—ग. मारग-घ. मार-ज.
६. जौ—ग. मों-घ.
७. एसें - क. अैसें-ख. अैसै-ग. अेसें-घ. च. अेसें-ड. छ. ऐसे-ज.
८. गोवर्धन—क. गोवर्द्धन-ख. गिर-छ. ज.
९. धर—क. कर-ख. गोवरधन-छ. गोवर्धन-ज.
१०. हाथ—क. धरि-ख. डारि-ज.
११. रछा—ख. ग. छ. ज. , इछा-घ. तुम-च. १२. रछ्या—च.
१३. कैसे—क. कैसें-ख. ड. छ. केसें-घ. केसे-ज.
१४. अनिल—घ. च. छ. ज.
१५. अरु—ग. घ. ड. छ. ज. झ. १६. ग्वाल—घ.
१७. तें—क. ख. घ. तैं-ग. ते-ड. ज. । च प्रति में व्याल अनल विष ज्वाल तैं शब्द नहीं हैं ।
१८. राख—क. राख-ख. राखि-झ.
१९. लई—क. ख. लये-ग. लीये-च. छ. ज. लिए-झ.
२०. सम—क. तुम सव-च.
२१. ठोर--क. ख. घ. छ. ज. ठोंर-च.
२२. बिरह—ड.
२३. अनिल—ग. घ. ज. विरहानल-झ. २४. अरु—झ.
२५. दाहकों—क. जरत हें-ख. दाहिहो-घ. च. दाहिहों-ड. दाहिहूं-छ. दाहियो-ज. दाहतें-झ.
२६. हसि हसि—क. ग. घ. ड. च. हस हस-ख. छ.
२७. नंदकीसोर—छ. २८. चोर—क. ग. छ. २९. चितु—ग.
३०. लें—क. ग. घ. च. ज.
३१. ख प्रति में सम्पूर्ण टेक इस प्रकार दी गई है-तुम्है यो बूझिये ।।, गऐ-छ. ज.
* क प्रति में यह छंद क्रमांक ३२ पर और ख प्रति में क्रमांक ३३ पर दिया गया है ।

कोऊ[1] कहै[2] ये[3] निठुर[4] इन्हैं[5] पातक[6] नहिं[7] व्यापै[8] ॥
पाप[9] पुन्य[10] के करनहार[11] ये ही[12] हैं[13]आपै[14] ॥
इनके[15] निरदै[16] रूप[17] में[18] नाहिन[19] कछू[20] विचित्र[21] ॥
पय[22] प्यावत[23]प्रानन[24] हरे[25] पूतना[26] बाल[27] चरित्र[28] ॥
मित्र ये[29] कौन[30] के ॥३५॥*

---

१. कोउ—ग. ज. झ.
२. कहे—क. ख. घ. च. ज. कहैं-छ.
३. अहो—क. , यह-ख. एके-च. यो-छ. ऐ-ज. ए-झ.
४. निठर—क. निठुरई-ख. निठू रा-च. निठूर-छ.
५. इनह—ख. ह्वै कहा-ख. इन्हे-ग. इन्हें-घ. इनें-च. , इनहि-छ. ह्वे-ज.
६. तापक – क. नहि-ख. पातिक-घ. ड. च. छ. ज.
७. कहा – क. पातक-ख. नहि-घ. ड. छ. ज. नही-ग. च.
८. व्यापे – क. ज. लागे-ख. व्यापैं-घ. च. , लागैं-झ.
९. पुण्य – झ.
१०. पुण्य – ख. पुनि-ग. पाप-झ. ११. कर्नहार – क.
१२. एही – क. घ. झ. ए-ख. येहि-ग. येइ-छ.
१३. हे – क. ज. आपहि-ख. है-ग. ड. छ. हें-घ. च.
१४. आपे – क. ज. आगें-ख. आपें-घ. च. , आपैं-छ.
१५. इनके – ग. ईनके-छ.
१६. निरदया – क. निर्दय-ख. ड. झ. निरदें-घ. च. निरदैं-छ. किरनदै-ज.
१७. रूप – च. ज. १८. मे – ग. घ. मै-ड. मैं-छ.
१९. नाहन – क. कोऊ-ख. नाहिने-ग. नांहिन-च. छ.
२०. कोऊ – क. घ. ड. च. छ. , नाहीं-ख.
२१. चित्र – क. ख. ग. घ. ड. च. छ. ज.
२२. पै – ख. ड. च. छ. पें-घ. पे-ज.
२३. पीबत – ख. प्यवत-ग. पावत-झ.
२४. हर – क. हरे-ख. ड. , प्राननि-ग. प्रांनन-च. ज.
२५. प्रानरी – क. ड. प्रानरि-ख. हर्यों-घ. हारे-ज.
२६. पूतन – क. पुतना-ख. ज.
२७. वाल – घ. ड. च. ज.
२८. चिरित्र – छ.
२९. यह – क. ज. तुम-ख. ए-घ. झ.
३०. कोन – क. ख. ज. कोंन-घ. च. कौन-छ.

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ३३ पर और ख प्रति में क्रमांक ३४ पर दिया गया है ।

कोऊ[१] कहै[२] री[३] आज[४] नहीं[५] आगे[६] चलि[७] आई[८] ॥
रामचद्र[९] के[१०] धरम[११] रूप[१२] में[१३] ही[१४] निठुराई[१५] ॥
जग्य[१६] करावन[१७] जात है[१८] विस्वामित्र[१९] समीप ॥
मग[२०] में[२१] मारी[२२] ताडिका[२३] रघुवंसी[२४] कुलदीप[२५] ॥
बाल[२६] ही[२७] रीति[२८] यह[२९] ॥३६॥*

---

१. कोउ—ख. ज. झ.
२. कहे—क. ख. ज. कहें-घ. च.
३. इह—क. रे-झ.
४. आजु—ग. ङ. छ.
५. नाह—क. नहिं-ख. नही-ग. घ. ङ. च. छ. ज.
६. आगै—क. घ. आगें-च. ज.
७. चल—क. ते चलि-ख. ङ. ८. आइी—ग.
९. रामचंद—क. ज. रांमचंद्र-घ. च. ११. कौ—ग.
११. रूप—क. ख. ग. घ. ङ. च. ज. , रुप-छ.
१२. धर्म—क. ख. घ. ङ. च. छ. धरम-ग. ज.
१३. ही—क. में-ख. घ. मैं-ग. ङ. में-च. छ. ज.
१४. में—क. हो-ग. ई-च.
१५. निठुराइी—ग. निठुराइ-ज.
१६. यज्ञ—ख. ज्याय-घ. यग्य-च. जिग्य-छ. एक-झ.
१७. ए वन—झ.
१८. हैं—छ. हें-ज. हे-झ.
१९. विश्वामित्र—क. ख. घ. ङ. बिस्वामित्र-छ.
२०. मध—ग. मघ-ज.
२१. मे—ग. में-घ. च. ज. झ. मै-ङ.
२२. मारि—ज.
२३. ताडका—क. तारिका-ग. घ. ङ. च. छ. ज.
२४. रघुवशी—क. ख. घ.
२५. कुकदीप—ग.
२६. वाल—ख. घ. ङ. च. ज.
२७. हीं—क. की-ख. छ. । ग प्रति में 'बाल ही' के स्थान पर 'बताइि', झ प्रति में 'ही' पाठ है ।
२८. रीत—क. रिति—ग.
२९. वह—ग. यहै-झ.

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ३४ पर दिया गया है तथा ख प्रति में यह छंद छूट गया है ।

कोऊ[1] कहै[2] यै[3] परम[4] धरम[5] स्त्रीजित[6] पूरे[7] ॥
लक्ष[8] लक्ष[9] संधान[10] धरे[11] आयुध[12] के[13] सूरे[14] ॥
सीताजू[15] के कहे[16] तें[17] सुपनषा[18] पै[19] कोप[20] ॥
छेदे[21] अंग[22] विरूप[23] करि[24] लोगन[25] लज्जा[26]·लोप[27] ॥
कहा[28] ताकी[29] कथा[30] ॥३७॥●

१. केऊ—क. कोउ-ग. ड. ज. झ.
२. कहैं--क. घ. कहै-ख. च. ज. कहैं-छ.
३. इह—क. यह-ख. री-ग. च. ए-घ. झ. एक-ज.
४. धर्म—क.
५. धर्म—क. ख. ग. घ. ड. च. छ.
६, इस्त्रीजित—क. घ. ड. इस्त्रीजुत-ख. अस्त्रजित-ग. इस्त्रिजि-छ. स्त्रीजीत-ज.
७. पूरें--ख. घ. पुरें-ज.
८. लघ—क. लघु-ख. लछ-ग. छ. लपि-ड.
९. लाघवता—क. लाघव-ख. लछ-ग. लक्षान-घ. संधाने-ड. लक्षांत-च. झ. लछान-छ.
१०. बान—क. वान-ड. संधानं-च.
११. वान—ख. धरै-ग. धरैं-ड.
१२. अयुध—ग. आयू धर्म-ज.
१३. हैं—ख.
१४. सुरैं—ख., सूरैं-घ. सरै-ज.
१५. सीताजी—च. ज. झ. सीतांजू-छ.
१६. कहै—ग. ड., कहें-च.
१७. तैं—क. छ. तें-ख. ग. ड. च., तै-ग. त-ज.
१८. सूपनषा—क. सूर्पनषा-ख. ड., सूपनखा-च. झ. सपनषा-ज.
१९. पै—क. घ. ज., पर-ख. पें-च.
२०. कौपु—ग. कोपि-घ. छ.
२१. छेद—क. जद्यपि-ख. छैदि-झ.
२२ उनहें—ख. सव अग-ग. सव अंग-ड.
२३. विपरीत—क. विरूप-ख. निरूप-झ.
२४. के—क. कर-ख.
२५. लोकन—क. ख. अतिकुल-ड. लोगनि-छ. ज.
२६. लजा—क. लाज्या-ख. लज्यो-घ. लज्या-ड. च. छ. ज.
२७ लों—ज.
२८ कही--ड. चोरचित-छ २९. तांकी—क. लों-छ. ३० गयो—छ.

● क प्रति में यह छंद क्रमांक ३५ पर दिया गया है।

कोऊ[1] कहै[2] री[3] सुनौ[4] और[5] इनकै[6] गुन[7] आली ॥
बलि[8] राजा पै[9] गयै[10] भूमि[11] माँगन[12] बनमाली[13] ॥
माँगत[14] वांमन[15] रूप[16] धरि[17] परबत[18] भयै[19] अकाय[20] ॥
सत्य[21] धर्म[22] सब[23] छाँडि[24] कै[25] धर्यौ[26] पीठ[27] पै[28] पाय[29] ॥
लोभ की नाव[30] ये[31] ॥३८॥*

---

१. कैऊ—क. कौउ-ज. झ.
२. कहे—क. ख. घ. ज. कहें-च. कहै-छ.
३. अहौं—ख. छ. ज.
४. सुनौ—क. ख. सुनों-घ. च. छ. ज.
५. क और छ प्रतियों में री शब्द नहीं है।
६. यांकें—क. इनके-ग.
७. गुण—ख.
८. बल—क. वल-छ.
९. पें—क. घ. पें-च. के-ज.
१०. जाइ—क. जाय-ख. गए-घ. ड. छ. झ.
११. भूम—क. भूंमि-च. मुम-छ. मुमी-ज.
१२. मागी—क. मांग्यो-ख. मागन-ग. घ. ड. ज. १३. वलमाली—क.
१४. मागत—क. ग. घ. ड. च.
१५. वांमन—घ. च. ज. दावन-ड. छ.
१६. रूप—ज. १७. कै—क. ह्वै-ख. करि-घ. घ. ड. छ. ज.
१८. पावत—क. नापत-ख. ड. पर्वत-ग. घ. च., परव-ज.
१९. भएं—क. ख. घ. छ., भऐ-च. ज. भयौ-झ.
२०. अकाइ—क. च. अकास-ख. ड. अकार-ग. घ. ज.
२१. सत—ग. च. अन्य-ज.
२२. धरम—झ.
२३. दोऊ—क. ख. सव-ग. च.
२४. छाड—क. ज. छाडि-ख. ग. ड. छ. छोड़ि-च.
२५. के—क. ज. कें-ख. ग. च. कैं-छ.
२६. धर्य—क. घ. छ. ज., धरै-ख. धरों-झ.
२७. पीठि—ग. घ. ड. च. ज.
२८. पर—ख. ड. ज. झ. पें-च. पै-छ.
२९. पाइ—क. ड., पाडि-ग.
३०. नाउ—क. नाम-घ.
३१. य:—क. ए-घ. छ. ज. हे-झ.

* क और ख प्रतियों में यह छंद क्रमांक ३६ पर दिया गया है।

कोऊ[1] कहै[2] री कहा[3] हरनकस्यप[4] तें[5] बिगर्यौ[6] ॥
परम[7] ढीठ[8] प्रह्लाद[9] पिता[10] सनमुष[11] ह्वै[12] झगर्यौ[13] ॥
सुत अपने[14] को[15] देत[16] हो[17] सिच्छा[18] दंड[19] बंधाय[20] ॥
इन[21] वपु[22] धरि[23] नरसिंघ[24] कौ[25] नषन[26] विदार्यौ[27] जाय[28] ॥
बिना अपराध[29] ही[30] ॥३६॥ ●

१. केऊ—क. कोऊ-ग. ज. झ.
२. कहैं—घ. च. कहे-ज.
३. अहो—क. ख. च. प्रतियों में 'कहो कहा' तथा घ प्रति में 'कहों कहा पाठ मिलता है, कहौ-ड.
४. हिरण्यकश्यप—ख. ड. ज. हिरनकस्यप-ग. हिरण्यकशिप-घ. हिरण्यकश्यप-च. हिरनकसिप-छ. हिरन्यकस्यप-झ.
५. तें—क. ख. घ. ज। तैं. च. ६. बिगरे—ख. बिगरौ-झ. ७. पर्म—क.
८. डीढ—क. ढीढ-घ.
९. पेहेलाद—ग. प्रह्लाद-प्रल्हाद-झ.
१०. पीता—ख. पित-ग.
११. ख—प्रति में 'सनमुष' के पूर्व 'सों' तथा च प्रति में 'के' शब्द अधिक है। सनमुख-घ. ज. झ.
१२. के—. ह्वैं-छ. ह्वे-ज.
१३. झगरे—ख. झगर्यो-छ. ज. झगरौ-झ.
१४. अपने—ग. अपनें-छ. अपनो-ज. अपुने-झ.
१५. को—क. छ. ज. कौसी-ख. कौ-ग. ड. १६. देतु—ग. हेत-ज.
१७. है—क. हों-घ. हौं-ज. हौ-ड.
१८. सिक्षा—क. घ. ड. च., सिछा-ख. ग. सिछ्या-घ. सिध्या-ज.
१९. डंढ—क. दंत-ज.
२०. वधाइ—क. घ. ड. ज. चार वधाई-ख. वधाइ-ग. व्रत छाय-झ.
२१. इिनि—ग. इनि-घ. इंन-छ. न-ज २२. रूप—ग. बप-च. २३. धर—क.
२४. नरसिंह—ड. नरस्यंघ-छ. नरसिंघ-ज.
२५. को—क. ख. च. छ. ज. कों-घ.
२६. नखहि—ख. नषनि-ग. ड. नखन-च. ज. झ.
२७. विदार्यौ—क. ख. घ. ज., विदरे-ग. विडार्यो-छ. विडारौ-झ.
२८. आइ—क. ताई-ख. जाइ-ग. ड. ज., ताय-घ. जाई-छ.
२९. अप्राध—क. अपराधी-ख.
३०. ख—प्रति मैं 'ही' शब्द नहीं है।

● क प्रति में यह छंद क्रमांक ३७ पर दिया गया है।

कोऊ[१] कहै[२] इन[३] परसराम[४] ह्वै[५] माता मारी ॥
फरस[६] कंध[७] धरि[८] फेरि[९] भूमि[१०] छत्री[११] संघारी ॥●
सोनित[१२] कुंड[१३] भराय[१४] कै[१५] पोषे[१६] अपने पित्र ॥
इनके[१७] निरदै[१८] रुप[१९] में[२०] नाहिन [२१] कोऊ[२२] मित्र[२३] ॥
बिलग[२४] कहा[२५] मानिये[२६] ॥४०॥*

---

१. केऊ—क. कोऊ-ख. ज. कोडी-ग.
२. कहे—क. ख. ज. कहैं-घ. च. कहैं-छ.
३. इिनि—ग. इनि-ड. इनपनि-छ. यनि-ज.
४. पर्सरांम—क. परसुराम-ख. परसरांम-घ. च. ज.
५. हे—ग. ह्वे-घ. ह्वैं-च. ह्वे-ज.
६. परसा—ख. फरसा-ग. ड. ज. फरसि-झ.
७. हाथ—ख. कंधा-घ
८. धारि—च.
९. फिरे—ग.
१०. भूंमि—घ. च. भुमी-छ.
११. क्षत्री—क. ख. छत्रन-च. छत्र-ज.
● क प्रति में यह पंक्ति छूट गई है।
१२. सोणत—क. श्रोनित-ख. च. सोणित-ड. झ. सौतिन-छ. सोतिन-ज.
१३. कंध—क. कुंट-ग. कुड-ज.
१४. फहराइ—क. मराइ-ख. घ. ज., मराइि-ग.
१५. के—क. ज. कें-ख. घ च.
१६. पोशे—ड. पोखे-झ.
१७. तिनके—क. इनिके-ख.
१८. निर्दया—क. निदेय-ख. ड. निरदे-घ. च. ज. निरदय-झ.
१९. रूपि—ग. रूप-ज.
२०. में—ख. घ. च. कौ-ग. मै-ड. मे-ज.
२१. अब—क. नहिन-ख. नहिनै-भीयो-ग. नाहिन-झ.
२२. काहे को—क. कोउउ-ग. कौउ-ज.
२३. चित्र—क. ख. ग. घ. ड. च. छ. ज.
२४. विलगु—ख. ग. ड. ज.
२५. कह—ग. कहां-ज.
२६. मानीए—क. मानिये-ख. ड. मानीये-ग. मांनियें-च. माँनियें-छ. मानिए-झ.

* क और ख प्रतियों में यह छंद क्रमांक ३८ पर दिया गया है।

कोऊ[1] कहै[2] री[3] कहा[4] दोस[5] सिसुपाल[6] नरेसै[7] ॥
व्याह करन को[8] गयौ[9] नृपति[10] भीषम[11] के[12] देसै[13] ॥
दल बल[14] जोरि[15] बरात[16] कों[17] ठाढ़ो[18] हो[19] छबि[20] बाढ़ि[21] ॥
इन[22] छल[23] करि[24] दुलही[25] हरी[26] छुधित[27] ग्रास[28] मुष[29] काढ़ि[30] ॥
आपने[31] स्वारथी ॥४१॥●

---

१. कोउ—ख. ग. ज. झ.
२. कहे—क. ख. घ. च. ज.
३. सखी—ख. रे-झ.
४. कहो—क.
५. दोष—ख. घ. च. ज., दोषु-ग.
६. शिशुपाल—ख. सासिपाल-ग. ससिपाल-घ. ङ. च., सिसपाल-छ. सिशुपाल-ज.
७. नरेसे—क. ख. ज. नरेसे-ग. नरेसें-घ. च. नरसें-छ.
८. को—क. ज. को-ग. ङ. कों-छ.
९. गयो—क. ख. घ. च. छ. ज.
१०. नृपत—क. ज. नॅपति-ग.
११. भीक्षम—क. भिषम-ज.
१२. कैं—छ.
१३. देसे—क. ख. घ. च., देसें-छ. देशे-ज.
१४. वल—ख. ग. घ. ङ. च. ज. वादल-झ.
१५. जोर—क. जोरी-ग.
१६. वरात—ख. ग. घ. ङ. च. छ. ज.
१७. को—क. घ. ज. कें-ख. को-ग. ङ. कों-छ.
१८. ढाढे—क. ठाढ़ें-ग. ठाढो-ङ. ठाडो-च. ठाडों-झ.
१९. हे—क. है-झ.
२०. छब—क. छिवि-छ.
२१. बाढ़—क. झ. वाढ़-ज. २२. इन—ग. २३. बल—ख.
२४. कर—क. वर-ख. हरि-घ.
२५. दुलहिन—ख. दुही-छ.
२६. हेरी—ख.
२७. छुधत—क. छुदित-घ. च. ज. छदत-छ. क्षुधित-झ.
२८. गाम—ग.
२९. मुख—च. झ.
३०. काढ़—क. काढी-ख. काढि-ङ. कोढ़-ज.
३१. आपनी—क. आपनो-ख. आपने-ग. अपने-ज. आपुने-झ.

● क प्रति में यह छंद क्रमांक ३९ पर दिया गया है।

इहि[१] विधि[२] ह्वै[३] आवेस[४] परम[५] प्रेमी[६] अनुरागी ।।
और[७] रूप[८] पिय[९] चरित[१०] तहां[११] ते[१२] देषन[१३] लागी ।।
रोम[१४] रोम[१५] रहे[१६] व्यापिकैं[१७] जिनके[१८] मोहन[१९] आय[२०] ।।
तिनके भूत[२१] भविष्य[२२] कों[२३] जानत[२४] कौंन[२५] दुराय[२६] ।।
रंगीली[२७] प्रेम[२८] की[२९] ।।४२।।*

---

१. इह—क. इहि-स.
२. विध—क. विध-छ.
३. हो—क. हे-ग. के-घ. ह्वें-च ह्व-छ.
४. आवेश—ख. छ. ज.
५. धर्म—क.
६. ब्रह्म—क. सवे पारब्रह्म-ख. प्रेम-ग. ज. प्रेमे-ड. प्रेंमी-च.
७. ओर—क. ख. ग. घ. च. ज.
८. रुप—ग. ड. छ. ज.
९. पीया—क. पीय-ख. ग. च. ज.
१०. चरित्र—क. ख. ग. चक्र-घ. चिरत-छ. चक्रत-झ.
११. उहां—क. उहा-ख. ड. तेऊ-ग. तहा-घ वहां-च. तहीं-झ.
१२. देषन—क. विवस्था-ख. हौ-ग. देपण-घ. तें-च. छ.
१३. ही—क. सोचन-ख. सब-घ. देखन-च. देपन-छ. देखन-ज. झ.
१४. रोम—घ. च.
१५. रोंम—घ. च. राम-छ.
१६. पीय—क. रहे-ख. रह्यौ-झ.
१७. रम रहे—क. व्यापि के-ख. घ. च. व्यापिको-ग. व्यापकें-छ. व्यापिके-ज.
१८. मण में-ख. जिनिके-ग. जिनके-ड. जिनकें-च. जिनकैं-छ. तिनको-झ.
१९. मोहन—च.
२०. पाय—ख. आए-ग.
२१. बहुत—ख. भुत-छ. ज.
२२. भवक्ष—क. वियोग-ख. भविस्य-च. विभिष्य-छ
२३. को—ख. छ. ज. को-ग.
२४. जानन—क. ग्यानन-ख. जांनत-च. ज.
२५. कोन—ख. कोन-ड. च. ज., कौंन-छ.
२६. दुराग—क. दुरायु-ग.
२७. पायरस—ख. रगीले-ग. रगीली-घ. रगली-छ.
२८. प्रैम—ग. प्रेम-च.
२९. को—ख.

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ४० पर दिया गया है।

देखत[1] उनकौ[2] प्रेम[3] मरम[4] ऊधौ[5] कौ[6] भाज्यौ[7] ।।
तिमिर[8] भाव आवेस[9] बहुत[10] अपने[11] मन[12] लाज्यौ[13] ।।
मन में[14] कहै[15] रुचि[16] पाइ[17] कै[18] लै[19] माथे[20] रज[21] धार[22] ।।
परम[23] कृतारथ[24] ह्वै[25] रह्यौ[26] त्रिभुवन[27] आनंद[28] वार[29] ।।
बंदना[30] जोग[31] ये[32] ।।४३।।*

---

१. देखत—ख. च. झ. देख-ज.
२. इनको—क. ख. घ. ज. . इनकों-च. ड. को-छ.
३. प्रम-ग. प्रेमं-घ. च.
४. नेम—ख. झ. मर्म-घ. ड. च. छ.
५. ऊधो—क. ख. घ. च. छ. उधो-ज. ऊधों-ड.
६. को—क. ख. घ. छ. ज. , कों-ड. च.
७. भाजो—क. ज. भाज्यो-ख. घ. च. , भाजौ-झ.
८. तिमा—क. ग. च. छ. ज. , तिमिरि-ग.
९. अभ्यास—क. आभास-ख. आवेश-छ. आवेश-ज.
१०. बहुर—ख. होत-झ. ११. आपने—ग. अपनें-छ. १२. जिय—ख.
१३. लाजो—क. लाज्यो-ख. घ. च. छ. ज. लाजौ-झ.
१४. मे—क. में-ख. घ. च. , ही-छ. ज. झ.
१५. कहें—ख. कही-ग. ही-घ. च. मै-छ. मे-ज. मन-झ. १६. रुच—क.
१७. पाय—ख. झ. पाइ-ग.
१८. के—क. ज. कें-ख. घ. च. , कैं-छ.
१९. कर—क. ले-ख. ग. च. ज.
२०. माथें—घ. च. माथे-ड. माथैं-छ.
२१. नि—क. निजु-ग. ड. नित-घ. निज-च. छ. ज. झ.
२२. धरि—ज.
२३. पर्म—क.
२४. क्रितार्थ—क. क्रतारथ-ग. झ.
२५. ह्वौ—ग. ह्वें-घ. ह्वे-ज.
२६. रह्यो—क. ख. घ. छ. ज. , गयो-झ.
२७. त्रिभवन—क. छ. तरोजो-ख. त्रभुअन-च. ज.
२८. भवनिधि—ख. आनद-ग. छ. आंनदं-च.
२९. वारि—ख. ड. च. छ. , चारि-ग.
३०. निंदनं—क. वंदवे-ख.
३१. योग—क. ग.
३२. ए—क. ख. की-च. है-झ.

* क प्रति में इस छंद का क्रमांक ४१ दिया गया है।

कबहुं[1] कबहैं[2] गुन[3] गाय[4] स्याम[5] के[6] इनहि[7] रिझाऊँ[8] ।।
तौ[9] भले[10] प्रेमाभक्ति[11] स्यामसुंदर[12] की[13] पाऊँ[14] ।।
जिहि किहि[15] विधि[16] ये[17] रीझहीं[18] सो विधि[19] करूँ[20] बनाय[21] ।।
तातें[22] मो[23] मन[24] सुद्ध[25] ह्वै[26] दुविधा[27] ग्यान[28] मिटाय[29] ।।
पाय[30] रस प्रेम[31] कौ[32] ।।४४।।*

---

१. **कब:**—क. कवहु-ख. ड. कवहूं-घ. च. च. कवहिं-थ. झ.
२. **कहे**—क. ज. कहें-ख. घ. च., कहें-छ. ३. **गुण**—ख.
४. **गाउ**—क. गाइि-ग. गाइ-ड. ज. झ. ५. **स्यांम**—च. ज. ६. **कों**—घ.
७. **इनहू**—क. इनही-ख. यिन्हे-ग. इनिहि-घ. इनें-च. इह-छ.
८. **रिजावों**—क. रिझाउ-ख. ग. ज. रिझाऊ-छ. घ., रिझांऊं-ड. च.
९. **तेऊ**—क. तो-ख. च. ज., तों ड.
१०. **भली**—ख. भलैं-घ. ड. भलों-घ. भलें-च. ज. भले-छ.
११. **परमान भक्त**—क. भक्ति-ख. प्रैममक्ति-ग. प्रेंमामक्ति-च. प्रेममक्ति-ज.
१२. **परमानंद स्यामसुंदर**—ख. स्यांमसुंदर-च. ज.
१३. **कों**—झ.
१४. **पावों**—क. पाउं-ख. पाउ-ग. ज. पाऊं-ड. पांऊं-च. छ.
१५. **जिह किह**—क. जिहि तिहि-घ. च. ज. जिह तिह-छ. जेहि-तेहि-झ.
१६. **विध**—क. विधी-छ.
१७. **ये**—क. ख. यै-ग. यह-झ.
१८. **रीझिहें**—ख. रीझिही-च. ज. रीह यहीं-छ. रीझही-झ.
१९. **विध**—क. हौं-ख. विध-छ.
२०. **करों**—क. घ. ज. करो-ख. घ. ड. च. छ. करौ-ग.
२१. **बनाइ**—क. ड. ज. उपाय-ख. वनाइि-ग. बनाई-छ.
२२. **तांते**—क. जाते-ख. तामे-ग. ताते-व. ज. तातें-ड. च.
२३. ख प्रति में मोहन पाठ मिलता है, मो-ग.
२४. **मनु**—ग.
२५. **सुध**—क. ग. छ. ज. सुधि-ख. शुद्ध-घ. ड.
२६. **होइ**—क. ड. च. ज., होइि-ग.
२७. **दुबधा**—क. दुमद्या-ख.
२८. **ज्ञान**—ख. ड. छ. ज. झ. ज्ञांन-घ. ग्यांन च.
२९. **मिटाइ**—क. ड. मिटाइि-ग. मिटि जाय-च. मिटाई-छ.
३०. **पाइ**—ड. छ. ज., पा-ग.
३१. **प्रैम**—ग. प्रेंम-घ. च.
३२. **को**—ग. कों-घ.

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ४२ पर दिया गया है ।

ताही[1] छिन[2] इक[3] भंवर[4] कहूं[5] ते[6] उड़ि[7] तहं[8] आयो[9] ॥
ब्रजबनितन[10] के पुंज[11] मांझ[12] गुंजत[13] छबि[14] छायो[15] ॥
बैठ्यो[16] चाहत[17] पांय[18] पर अरुन[19] कमल[20] दल जानि[21] ॥
मानौं[22] मन ऊधौ[23] भयौ[24] प्रथमहिं[25] प्रगट्यौ[26] आनि[27] ॥
मधुप[28] कौ[29] भेष[30] धरि[31] ॥४५॥ *

---

१. ताहीं—क. ताहि-ख. ज.
२. छिंन—क. दिन-ग. समय-च.
३. एक—ख. ग. ड. ज. ऐक-च.
४. भवर—क. ख. ग. ड छ. ज. भमर-घ. च.
५. कहू—ग. कहु-छ. कहुं-ज.
६. तै—ख. तैं-छ.
७. हीं—क. ग. ड. उड़-ख. उडि-छ.
८. ठां—क. उडि-ग. ड. कर-घ. करि-च. ज. कैं-छ. कै-झ.
९. आयो— क. ख. घ. च. छ. ज.
१०. ब्रजवनता—क. ब्रजवनिता-ख. ग. छ. वृजवनितन-ज.
११. वृंद—ख.
१२. माझ—क. ख. घ. ड. छ. यो-ग. १३. गुंजन—ख. १४. छब—क. छिवि-छ.
१५. छाए—क. पायो-ख. पायौ-ग. छायो-घ. च. छ. ज.
१६. बैठे--क. ख. झ. वेंठ्यो-घ. वेंठ्यौ-च. वेठ्यो-ज.
१७. चाहे—क. चांहत-ज.
१८. हे पाउ – क. पाय-ख. पाउ-ग. वृक्ष-घ. पाव-ड. ज. पाअ-च. पांव-छ.
१९. अर्न – क. अरुण-घ.
२०. कवल – क.
२१. जान – क. जांनि-ख. घ. च. नेंन-ज.
२२. मनो – क. मानो-ख. घ. ज., मो-च. मानों-झ.
२३. ऊधों – क घ. च., उद्धव-ख. उधौं-छ. ज.
२४. को भयौ – ग. कों भयौं-ड. कौ भयौ-झ.
२५. प्रथमें – क. प्रेमहि-ख. प्रथहों-घ. प्रथमही-च. प्रथंही-छ. प्रथहि-ज.
२६. प्रगटो – क. प्रगट्यो-ख. च. छ. ज., प्रगट्यों-घ.
२७. आन – क. आंनि-घ. च., जानि-झ.
२८. मधप – क.
२९. क – ख. कों-घ.
३०. रूप – क.
३१. धर – क. ह्वें-ख.

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ४३ पर दिया गया है।

ताहि[१] भँवर[२] सों[३] कहैं[४] सबै[५] प्रतिउत्तर[६] बातें[७] ॥
तर्क[८] वितर्कन[९] युक्त[१०] प्रेम[११] रस रूपी[१२] घातें[१३] ॥
जिनि[१४] परसौ[१५] मम[१६] पांव[१७] रे[१८] कै[१९] तुम[२०] मद[२१] रस[२२] चोर[२३]॥
तुमही[२४] सों[२५] कपटी हुते[२६] मोहन[२७] नंदकिसोर ॥
इहाँ[२८] तें[२९] दूरि[३०] हो[३१] ॥४६॥*

---

१. ताही—ग. घ. ड. च. च. ज.
२. भमर—घ. च., भ्रमर-भ.
३. सो—क. घ. ज., सों-ख. च. सौ-ग. छ प्रति में सों शब्द नहीं है। सौं-भ.
४. कहें—क. घ. कहत-ख. छ., कहै-ग. ड. कहे-च. ज.
५. सभै—क. सवें-घ. च., सैवे-ज.
६. प्रतउतर—क. प्रीतउतर-ज.
७. वातें—क. वाते-ख. ज. वातै-ग. वातें-घ. ड. ज., वातैं-छ. ८. तरक—च.
९. वतर्कन—क. व्रितर्कनि-ग. घ. ड. छ., वितरकन-च.
१०. जुक्त—क. छ. ज., युक्ति-ख. जुगुति-ग. जुगति-ड. बूझ-च.
११. प्रेम—च.
१२. रुपी—घ. च. छ. ज.
१३. घाते—क. ज. वाते-ख. वातै-ग. धातैं-घ. ड. च.
१४. जिन—क. ख. ग. ड. च. छ. ज. भ.
१५. परसो—क. ख. घ. च. ज. परसौं-ड. छ. १६. रस—ग.
१७. पाउ—क. पाय-ख. घ., पाव-ग. ड. छ. ज. पांम-च.
१८. हो—ख. कौं-भ.
१९. के शब्द ख प्रति में नहीं है। च प्रति में 'के तुम मद रस चोर' के स्थान पर केवल 'नंदकिशोर' लिखा है।
२०. गये—क. ग. घ. ड. ज. आनंद-ख. तुमहि-भ.
२१. रस—क. चिर-ख. नंद-ग. घ. ड. ज. भ.
२२. नंद—क. सत-ख. रस-भ.
२३. चकोर—क. चोर-भ. २४. तुमहीं—क. तुमही-भ.
२५. सों—क. ते-ख. सौ-ग. भ. सो-घ. च. से-ड. ज.
२६. हुतो—क. छ. ज. हुतें-ख. हतौ ग. भ. हतो-घ. च.
२७. नागर—ख. मौंहन-ग. मोंहन-च.
२८. ईहां—क. इहा-ख. घ. इिहा-ग.
२९. तें—क. ड. ते-ख. ग. घ. च. ज.
३०. दूर—क. ख. दुरि-ज.
३१. होउ—घ. च. ज. होंहु-ड.

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ४४ पर दिया गया है।

कोऊ[1] कहै[2] री[3] विस्व[4] मांझ[5] जेते[6] हैं[7] का[8] ॥
कपटी[9] कुटिल[10] कठोर[11] परम[12] मानस[13] मसिहारे[14] ॥
एक[15] स्याम[16] तन परसि[17] कं[18] जरत आज[19] लौं[20] अंग ॥
ता[21] पाछे[22] फिरि[23] मधुप[24] यह[25] लायौ[26] जोग[27] भुजंग[28] ॥
कहा[29] इनकों[30] दया[31] ॥४७॥*

---

१. केऊ—क. कोऊ-ग. कोउ-घ. छ. ज. झ.
२. कहें—क. च. , कहे-ख. घ. ज.
३. सषी—ख. , रे-झ.
४. सुनो—क. विश्व-ख. घ.
५. विघ्म—क. मांह-ख. माभ-ग. ड. माह-घ.
६. जेतक—क. जेतिक-ख. जोते-ग.
७. हें—क. च. हे-ख. घ. ज. हे-ग. ड. ८. कारे—ख. ९. कपट—क. ग.
१०. कुट—ख. कुटि-ग. कोटि के-च. कुडलक के-ज.
११. के वेस—क. के कोटि-ग. घ. ड. छ. परम कुटिल-च. के कोटि-ज.
१२. स्वरे—ख. धरम-घ. के कोटि पर-च.
१३. मानिष—क. च. मानुष-ख. मान-घ. ज.
१४. मसयारे—क. विषयारे-ख. पसिहारे-ग. समहारे-घ. मति सब हारे-च. मसहारे-छ. ससिहारे-ज. मुसिहारे-झ.
१५. येक—छ. १६. स्यांम—च. छ. ज. १७. पर्स—क. परस-ख.
१८. कें—क. ख. घ. च. कौ-ग. कैं-छ. के-ज.
१९ अबों—क. अजहू-ख. आज-घ. च. ज.
२०. अलग—क. लो-ख. ज. , लौ-ग. ड. लों-घ. च.
२१. तहि—ख.
२२. पाछे—क. ज. कारन-ख. पाछें-घ. च. पाछै-ड.
२३. या—क. कारेन-ख. फेरि-घ. फिर-छ.
२४. मधप—क. को-ख.
२५. सषी री—क. कबहू-ख. वें-छ. ज. ह्वै-झ
२६. ल्यायो—क. न-ख. ल्यायौ-ग. ड. लायो-घ. च. लाये-छ. ज.
२७. योग—क. कीजे-ख.
२८. भुयंग—क. संग-ख.
२९. कहां—क. ग्यान-ख.
३०. ताकी—क. के-ख. इनको-ग. इनकी-घ. च. छ. ज. इनकै-झ.
३१. कथा—क. भुजंग की-ख.

× क प्रति में यह छंद क्रमांक ४६ पर और ख प्रति में क्रमांक ५१ पर दिया गया है।

कोऊ[१] कहै[२] रे[३] मधुप[४] भेष[५] उनही[६] कौ[७] धार्यौ[८] ॥
स्याम[९] पीत[१०] गुंजार[११] बेनु[१२] किंकिनि[१३] झनकार्यौ[१४] ॥
वा पुर गोरस[१५] चोरि[१६] कै[१७] फिरि[१८] आयौ[१९] या[२०] देस[२१] ॥
इनकौ[२२] जिनि[२३] मानौ[२४] कह्यौ[२५] कपटी[२६] इनकौ[२७] भेष[२८] ॥
चोरि[२९] जिनि[३०] जाय[३१] कछु[३२] ॥४८॥*

---

१. केऊ—क. कोउ-ख. ग. छ. ज.
२. कहे—क. घ. कहें-च. कह-ज.
३. अहो—क., ग प्रति में रे-शब्द नहीं है, ४. मधप—क. ५. बेष—क.
६. उनको—घ. च. छ. उनके-ज., बिनई-झ.
७. को—क. क्यों-घ. च. कों-ड. क्यौं-छ. क्यो-ज.
८. धार्यो—क. घ. छ. ज. धारौ-झ.
९. स्यांम—च. छ. ज.,
१०. प्रीति—ख. ड. च. पीति-ग.
११. गुजार—ख. छ., गुंजा-झ.
१२. बैन—क. वेणु-ख. वैन-ग. वेण-घ. ज. वेंन-ड. वेंण-च. वेन-छ.
१३. किंकन—क. किंकणि-घ. किंकनी-च. किंकिन-छ. किंकनी-ज.
१४. झुनकारो—क. झनकार्यो-घ. ज., जनकारौ-झ.
१५. गोर गोरस—ग. को रस-झ.
१६. चोर—क. चाखि-झ
१७. के—क. घ. कैं-ख. छ. ज., कें-च.
१८. फिर—क. छ., आयो-झ.
१९. आए—क. ओए-ग. आयो-ड. फिरि-झ.
२०. इह—क. इहि-ग. आ-झ.
२१. देश—ख. घ. ड. झ.
२२. इनको—क. च. ज., इनिको-ख. इिनिको-ग. इनिकों-घ. इनकों-ड. इनकौं-छ.
२३. जिन—क. च. छ. ज., जानिमां-ज.
२४. माने—क. मानो-ख. ड., मानो-घ. ज., मानों-च. मानौं-छ.
२५. कोऊ—क. घ. च. छ. कोई-ख. ड. कोइि-ग. कोउ-ज.
२६. कपट—ग. दोउ-कपटी-झ.
२७. इनको—क. ख. घ. च., इिनकी-ग. इनकों-ड.
२८. भेस—क. भेश-ख. वेस-ग. घ. ड. वेस-छ.
२९. क. ख. ड. छ.
३०. जिन—क. ख. ड. छ. ज. झ.
३१. नाइ—क. जाइि-ग. जाइ-ड. झ. ३२. कछू—ज.

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ४५ पर दिया गया है।

कोऊ[1] कहै[2] रे[3] मधुप[4] कहैं[5] अनुरागी[6] तुमकौं[7] ॥
कौने[8] गुन[9] धौं[10] जानि[11] यहै[12] अचरज[13] है[14] हमकौं[15] ॥
कारौ[16] तन अति[17] पातकी[18] मुष[19] पीरौ[20] जगनिंद[21] ॥
गुन[22] औगुन[23] सब[24] आपुने[25] आपुहि[26] जानि[27] अलिंद[28] ॥
देषि[29] लं[30] आरसी ॥४६॥*

---

१. कोउ—ज. झ.
२ कहु—छ.
३. अहो—क. ख. रे-ग.
४. मधप—क. मधुम-छ.
५. कहें—क. करें-ख. कहै-ग. ङ. छ. यहे-घ. कहे-च. छ.
६. अचिरजहे—घ. अनुरागीतु-छ.
७. तुमकौ—ग. हमकों-घ. तुमको-छ.
८. कोन—क. ख. कानूने-ग. कौने-घ. ज., कोने-छ.
६. गुनों—क. गुण-ख. गुन-ज. निरगुन-झ.
१०. धों—क. ग. घ. ज., यों-ख. वों-च. धो-छ.
११. जान—क. जानि-च. जानै-झ.
१२. पर्म—क. परम-ख. परे-ग. यहें-घ. छ. ज. यह-च. झ.
१३. आचर्ज—क. अचिरज-ग. घ. ङ. ज. इचरज-छ.
१४. हें—क. ज. हे-ख. घ. हैं-छ.
१५. हमको—क. ज. हमकौ-क. ङ. हमकों-छ.
१६. कारो—क. ख. घ. च. छ. करो-ज.
१७. अत—क. ज. आरे-ख. १८. पातिकी—घ. च. १६. मुख—ख. च. झ.
२०. पीयरो—क. ख. पीरो-घ. च. ज.
२१. नंद—ग. छ. विंद-घ. २२. गुण—ख.
२३. अवगुन—क. अपगुण-ख. ओगुन-ग. घ. ज. औंगुन-च.
२४. सभ—क. सव-ग. ङ. ज.
२५. आपनें—क. ङ. ज. आपनै-ख. आपनैं-ग. स आपने-च. आपनों-छ.
२६. आप—क. इहां-ख. आपुही-ग. घ. आपही-ङ. छ. ज.
२७. जान—क. जानि-घ. च. ज., जानै-झ.
२८. अनंत—क. आनंद-ख. अवद-ग. अनंद-ङ. अलिद-ज. मिलिंद-झ.
२६. देष—क. देख-ख. देखि-च. झ.
३०. ले—क. ख. जे-ग. लें-घ. च. लैं-छ. के-ज. लेहू-झ.

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ४८ पर और ख प्रति में क्रमांक ५२ पर दिया गया है। ङ प्रति में लिपिकार इस छंद के उपरान्त छंद संख्या लिखना भूल गया है।

कोऊ[१] कहै[२] है[३] मधुप[४] कहा मोहन[५] गुन[६] गावै[७] ॥
ह्रदै[८] कपट[९] सों[१०] परम[११] प्रेम[१२] नाहिंन[१३] छबि[१४] पावै[१५] ॥
जानत[१६] हौं[१७] हरि[१८] भांति[१९] के[२०] सर्वस[२१] लियौ[२२] चुराय[२३] ॥
ता[२४] पाछे[२५] ब्रजवासिनी[२६] को[२७] जु[२८] तुम्हें[२९] पतियाय[३०] ॥
लहे[३१] हम[३२] जानि[३३] कै[३४] ॥५०॥*

---

१. कोउ—ख. ग. ज. झ.
२. कहे—क. घ. च. झ.
३. अहो—क. -रेग. र-छ.
४. मध्प—क.
५. मोहन—ग. मोंहन-घ. च. हरि के-झ. ६. गुंन—च.
७. गावो—क. छ. गावौ-ख. गावै-ग. ड. गावें-घ. च. गावे-ज.
८. हिरदे—क. ह्रदै-ग. हृदय-घ. ह्रदे-च. ज. ९. कप—ग.
१०. है—क. सो-ग. सौ-ड. सो-छ. ज. ११. प्रगट—क. १२ प्रेम—घ. च.
१३. नाहन क. नाही-ग. नांही-ड. नाहिन-च. नाहिं-छ.
१४. छब—क. छिब-छ.
१५. पावों—क. पावौ-ख. पावें-घ. च. , पावो-छ. पावे-ज.
१६. जाति—ग. जानति-घ. ड. जांनति-च. जातिन-छ.
१७. हों—क. नहीं-ग. हो-घ. ज. हौ-ड. १८. हर—क.
१९. भात—क- भां-घ. भाति-ज.
२०. को—क. कैं-ख. कौ-ग. कें-छ.
२१. सरवंस—क. सवरस-ख. सर्वसु-ग. सर्वस-छ. सरवसु ज. रस-सर्वस-झ.
२२. विश्व—क. लियो-ख. लीयौ-ग. लीयो-घ. च. छ. ज.
२३. चुराइ—क. ड. ज. चुराइि-ग.
२४. इसी—क. ग्रेसै-ग. छ. ग्रेसे-व. ग्रैसैं-ड. ग्रेंसे-च. ग्रेसो-ज.
२५. पुरी—क. चोरी-ख. वोली-ग. ड. वहुरि-घ. वहु-च. बोरि-छ. वारि-ज.
२६. वृजवासिनी—ख. घ. वृजवासिन-ज.
२७. कोऊ—क. तुम्है-ग. ड. छ. तुमें-घ. च. , तुम्हें-ज. कोउ-झ.
२८. न—क. नाहि-झ.
२९. तुम—क. तुम्ह-ख. तुमें-घ. च. तुम्हे-झ. तुमें-झ.
३०. पतयाइ—क. पतियाइि-ग. पतियाइ-घ. ड. पतिपाय-छ. पै प्याइ-ज. पतयाय-झ.
३१. लेह—क. लये-ग. लहै-ड. छ. ३२. मेह—छ.
३३. जान—क. ज. जांनि-घ. च.
३४. कें—क. ज. कें-ख. घ. च.

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ४७ पर दिया गया है।

कोऊ[1] कहै[2] रे[3] मधुप[4] कहा तू[5] रस[6] की[7] जानै[8] ॥
बहुत[9] कुसुम[10] पै[11] बैठि[12] सबै[13] आपुन[14] सम[15] मानै[16] ॥
आपुन[17] सों[18] हमकों[19] कियौ[20] चाहत[21] है[22] मतिमंद[23] ॥
दुबिधा[24] रस उपजाय[25] कै[26] दूषित[27] प्रेम[28] अनंद[29] ॥
कपट[30] के छंद[31] सों[32] ॥५१॥*

---

१. केउ--क. कौउ-ग. कोउ-छ. ज. झ.
२. कहे—क. ख. घ. छ. ज., कहें-च.
३. अहो—क. र-छ.
४. मधम---क.
५. रस—क. ग. तु-छ.
६. की—क. ग.
७. तुम—क. तू-ग.
८. जानो—क. जानें-ख. घ. जानैं-ड. ब. जांनें-च. जाने-ज.
९. बौहुतु—ग. बहोत-झ.
१०. कुसुप—क. कुस्म-ख. कुसम-ग. घ. च. छ. पहोम-ज. ११. पैंर—छ.
१२. बैठ—क., ख प्रति में 'पै बैठि' के स्थान पर 'पर्बेठि' पाठ मिलता है। वेठि-घ. ज. बेंठि-च. वैठि-छ.
१३. सभे—क. सर्वे-ख. घ. सबन-च. सवे-ज.
१४. समसर—क. सिर-ख. ड. छ. आरपुनु-ग. आपन-ज.
१५. कर—क. सिर-ख. सी-ग. रस-घ. च. सर-ड. झ.
१६. मानो—क. माने-ख. मानौ-ग. मानें-घ. मांनें-च. जानैं-छ. ज प्रति में 'सम मानै' के स्थान पर 'संमाने' पाठ मिलता है।
१७. आपन—क. ख. ग. छ. आपुने-ज.
१८. सो—क. छ. ज. सौ-ग. सौं-घ. च. ज. झ.
१९. हमको—क. हमकौ-ग. ड. हमकों-ध. च. ज. झ.
२०. कीयो—क. घ. छ. ज. कियो-ख. च. कीयौ-ग.
२१. चाहतु—च. चांहत-ज. २२. हौ—ग. ड. २३. मतमंद--क.
२४. दुबधा--क. छुविधा-ग. दुविधा-च.
२५. उपचाइ—क. ड. च. छ. उपजाइ-ग.
२६. कै—क. ज. के-घ. च.. कैं-छ. २७. दुषी—क. द्रपित-ग. २८. प्रेम—घ. च.
२९. ग प्रति में 'प्रेम अनंद' के स्थान पर 'प्रमानंद' पाठ दिया गया है। आंनंद-च.
३०. कमट—छ.
३१. छद—ग. छेद्र-छ.
३२. तनें—क. सों-ख. घ. ड. च. ज. झ. सौ-ग. सो-ज.

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ४८ पर दिया गया है।

कोऊ[1] कहै[2] रे[3] मधुप[4] कौन[5] तुम्हें[6] कहै[7] मधुकारी[8] ॥
लिए[9] फिरत[10] मुष[11] जोग[12] गांठि[13] प्रेमी[14] बधकारी[15] । ●
रुधिर[16] पान[17] कियौ[18] बहुत[19] कै[20] अरुन[21] अधर[22] रङ्ग रात[23] ॥ *
अब[24] ब्रज[25] में[26] आये[27] कहा करन[28] कौन[29] कौ[30] घात ॥ ●
जात[31] किन[32] पातकी[33] ॥५२॥ *

---

१. केऊ – क. कोउ-ख. ज. झ. कोउ-ग. २. कहे – क. ख. घ. च. ज.
३. अहो – क. ख. ४. मधप – क. मधुम-छ.
५. कोन – क. ख. ग. कोंन-ड. च. कांन-ज.
६. तुमको – क. ग. कहे-ख. तुमें-घ. तुम्हैं-ड. तुम्है-छ. तुह्मे-ज. तुम-झ.
७. कहे – क. घ. ज. तुमको-ख. कहैं-ड. कहें-च. कहि-झ.
८. मधकर – क. मधुकर-ख. मधुकरा-ज. ९. लीए – क. लियें-च. लीये-ज.
१०. फिर्त – ख. फिर-ग. छ. , फिरत हो-च. ११. विष – ख. मुख-च. तुम-ज .
१२. योग – घ. च. १३. कान्ह – क. गांठ-ख. गाठि-ग.
१४. ब्रह्मी – क. प्रेम के-ख. प्रेमें-घ. रें में-च.
१५. के बुधकर – क. वधकर-ख. ग प्रति में 'प्रेमी वधकारी' का पाठ 'प्रेमोपघकारी' दिया गया है, वधिकारी-घ. च. , वधिकरा-छ. विधिकारी-ज.
* ड प्रति में उक्त छंद की द्वितीय पंक्ति छूट गई है और उसके स्थान पर पत्र कोरा है।
१६. रुधुरु – क. रुधिरु-छ. रुधीर-ज. १७. पांन – घ. च.
१८. कीयो – क. ख. घ. च. छ. कीयौ-ग. ड. कियो-ज. १९. बहोत – झ.
२०. को – क. कर-ख. के-ग. घ. ज. ड प्रति में के शब्द नहीं है, कें-च. कैं-छ.
२१. अधर – क. ख. अरुन-ग. च. ज.
२२. अर्न रङ्ग – क. अरुन-ख. अर्धंग-ग. अधर रंग-घ. ड. छ. ज. अधरंगी-च.
२३. वात – क. घ. च. ज. पात-ग. गात-ड.
२४. अव – ग. घ. ड. च. छ. ज. २५. वृज – ज.
२६. मे – ख. ज. , में-घ. च. २७. आए—क. ख. घ. ड. ज. २८. कर्न--क.
२९. कोन – क. ख. ज. कोंन-घ. ड. ज. कौंन-छ.
३०. को – क. ख. ज. कों-घ. ड. च. की-झ.
● च प्रति में उक्त छंद की तृतीय पंक्ति चतुर्थ क्रमांक पर और चतुर्थ पंक्ति तृतीय क्रमांक पर लिखी है।
३१. जाति – ग. घ. ड. च. छ. जाइ-झ.
३२. क्यौं न – क. नहीं-ख. कैंन-ग. ड. किनि-घ. कीन-च. के-ज.
३३. पातंकी – ख. पांतिके-ग. पातिकी-घ. छ. पातिके-ड. पांतिकी-च.
* क प्रति में यह छंद क्रमांक ४९ पर और ख प्रति में क्रमांक ४७ पर दिया गया है।

कोऊ[1] कहै[2] रे[3] मधुप[4] प्रेम[5] षटपद[6] पसु[7] देष्यो[8] ।।
अब[9] लौं[10] या[11] ब्रज[12] देस[13] माहिं[14] कोऊ[15] नहिं[16] विशेष्यौ[17] ।।
द्वै[18] शृंग[19] आनन[20] पै[21] जमे[22] कारौ[23] पीरौ[24] गात[25] ।।
षल[26] अमृत[27] सम[28] मानही[29] अमृत[30] देषि[31] डरात[32] ।।
बादि[33] यह रसिकता[34]।।५२।।*

---

१. केउ--क. कोउ-ज. झ.

२. कहे—क. घ. कह-ख. कहैं-ड. च. ३. अहो—क. ४. मधप—क.

५. आन—क. ग प्रति में प्रेम-शब्द नहीं है । प्रेम-घ.

६. पट्पट—ज. पद्पद-झ.

७. पस —क. कों पसुख-ख कौ पसु-ग. ज. पशु-घ. ड. को पसु-च. छ.

८. देष्यो—क. ख. छ. , देख्यों-घ. देख्यौं-च. देखौ-झ.

९. अव—ख. ग. घ. ड. च. ज.

१०. लो—क. लों-ख. घ. च. छ. ज. लौ-ग. ड.

११. इह--क. हे-ख. इहि-ग. च. छ. यह-घ. ज. इहिं-ड.

१२. वृज—ख. ज.

१३. देश—ख. ज. च प्रति में ब्रजदेस का पाठ विदेस मिलता है ।

१४. माह--क. माहि-ख. घ. ड. छ. ज. मोहि-ग. मांझ-झ.

१५. कह—क. कोऊ-ग. कोउ-ज. झ.

१६. नाह--क. नांहि-ख. ग. घ. ड. ज.

१७. वशेष्यो—क. विशेष्यो-ख. विसेष्यौ-ग. विसेख्यो-घ. विसेख्यौ-च. बसेष्यो-छ. विषेष्यौ-ज. विसेखो-झ.

१८. दोइ--क. द्वौ-ग. द्वे-घ. च. ज.

१९. संग--क. सिंहन-ख. सिंग-ग. सिंघ-घ. ड. च. छ. ज.

२०. तैं--ख. आंनन-घ. च.

२१. पर--क. ख. ग. घ. ड. च. छ. ज.

२२. जमें--ख. घ. च. जमै-ग. ड. जमैं-छ. नमें-ज.

२३. कारो--क. ख. च. छ. ज. कारों-घ.

२४. पीयरो--क. पीरो-ख. ग. च. ज. पिरौ-ग. छ. २५. गत--च.

२६. खल—घ. च. झ. ष्षल-ज. २७. अंमृत--घ. च. २८. सब—च.

२९. मानीए--क. मांनही-च. ांनही-छ. ज.

३०. अंमृत—क. ग. घ. च. , अमृद-ज.

३१. देष--क. दोषि-ग. देखि-झ. ३२. झरात—क. डरांत-ज.

३३. वाह—क. वात-ग. छ. वाद-च. ज.

३४. रस्कता—क. रसकता-ग. छ. रसकथा-च. ज.

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ५१ पर दिया गया है ।

कोऊ[1] कहे[2] रे[3] मधप[4] ग्यान[5] उलटौ[6] लै[7] आयौ[8] ॥
मुक्ति[9] परे[10] जे[11] रसिक[12] तिन्हें[13] फिरि[14] कर्म[15] बतायो[16] ॥
वेद[17] उपनिषद[18] सार जो[19] मोहन[20] गुन[21] गहि[22] लेत[23] ॥
तिनकों[24] आतम[25] सुद्ध[26] करि[27] फिरि[28] फिरि[29] संथा[30] देत[31] ॥
जोग[32] चटसार[33] में[34] ॥५४॥*

---

१. केउ—क. कौऊ-ग. कोउ-झ.

२. कहे—क. ख. घ. ज. कहें-घ.

३. अहो—क. ख. र-छ.

४. मधप—क. मुधुप-ग.

५. ज्ञान—घ. ड. ज. ग्यांन-च.

६. उलटो—क. ख. घ. च. छ. ज.

७. क प्रति में लै शब्द नहीं है। ले-ख. च. ज. लें-घ.

८. आयो—क. ख. घ. च. छ. ज.

९. मुक्त—क. ख.

१०. परा—क.

११. ए—ख. जों-च. छ प्रति में जे शब्द नहीं है,

१२. रस्क—क. रसक-छ.

१३. ताह—क. फिर-ख. तिन्है-ग. छ. तिन्हे-घ. ज. फेरि-झ.

१४. फिर—क. तिने-ख. फेर-छ. उन-झ. १५. करम—झ.

१६. बतायो—क. वतायो-ख. च. छ. ज. बनायो-घ.

१७. वेद—क. ख. ग. घ. ड. च. ज.

१८. उपनिषतः—क. उपांनिषद-च.

१९. जो—ख. ड. तें-घ. जें-च. ते-झ.

२०. मोह—क. मोंहन-च. २१. गुण—ख. गुंन-ज. २२. गह—क. ही-ख.

२३. लेंह—क.

२४. तिनको—ख. तिनको-ड. तिनमें-च. तिनकी-झ.

२५. उत्म—क. ऊ नमः-क. आतम-ड. आत्मा-झ.

२६. सुध—क. छ. सिध-ख. छुद-ग. शुद्ध-घ. ड. २७ की—ख.

२८. फिर—क. ख. छ. झ. २९. कर—क. झ. फिर-ख. ३०. सनथा—ख.

३१. देह—क.

३२. चवत—क. योग-ग. घ. ड. ज्योग-च.

३३. रसप्रेम—क. चटसाल-छ. षटसार-ज.

३४. ज्यों—क. मै-ग. ड. मैं-छ. मे-ज.

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ५२ पर तथा ख प्रति में क्रमांक ५० पर दिया गया है।

कोऊ[1] कहै[2] रे[3] मधुप[4] निरगुनहि[5] इन[6] बहु[7] जान्यौ[8] ॥
तरक[9] बितरकन[10] जुक्त[11] सबै[12] उनही[13] में[14] मान्यौ[15] ॥
पै[16] इतनी जानी[17] नहीं[18] बस्तु[19] बिना[20] गुन[21] नाहिं[22] ॥
निरगुन[23] भये[24] अतीत[25] के[26] सगुन[27] सकल[28] जग[29] माहिं[30] ॥
सषा[31] सुनि[32] स्याम[33] के[34] ॥५५॥*

---

१. केऊ—क. कोऊ-ग. कोउ-ज. झ.
२. कहै—क. घ. च. छ. ज. कहें-ख.
३. अहो—क. ख. ग. ड. च. छ. ४. मधप—क. मधुपा—ग.
५. निर्गुन—क. नगुंन-ग. निरगुंन-ज. निर्गुनहि-झ.
६. वह—क. इन-ग. इनि-घ. वहु-झ.
७. बहु—शब्द क प्रति में नहीं है। वहु-ग. घ. वहुं-ज इनि-झ.
८. जाने—क. जानौ-ग. झ. जान्यौ-घ. छ. जांन्यों-च. ज.
९. तर्क—क. ख. ग. घ. ड. तर्कि-छ.
१०. वितर्कन—क. वितर्कनि-ख. ग. घ. ड. ज., बितर्कनि-छ.
११. सास्त्र—क. युक्ति-ख. जुगति-ग. ड. युक्त-घ. च.
१२. जुक्त—क. बहुत-ख. घ. ड. च. छ. ज. और-ग.
१३. वहुती—क. बहुतै-ग. उन-घ. उनंही-छ.
१४. वह—क. हे-ख. ड. छ. जौ-ग. हि-घ. में-च हे-ज.
१५. आनो—क. आन्यौ-ख. ग. ड. मान्यो-घ. मांन्यों-च. आन्यों-छ. ज.
१६. पैं—क. ये-ख, घ. ज. पे-च.
१७. नहो—क. च. ज. नहि-ख. ग.घ. ड. नंही-छ.
१८. जान हौं—क. जानिहों-ख. ग. घ. ज., हौ-ड. जांनि हों-च. जानिहौं-छ.
१९. वस्त—क. वस्तुनि-ग. २०. विना—ख. ग. घ. ड. च. ज.
२१. गुण—घ. २२. नाह—क. ग्यान-ग. नांहि-च. छ.
२३. निर्गून—क. ख. ग. निर्गुंण—घ. ड.
२४. स्कत—क. भए-ख. झ. भऐ-च. २५. जे—क.
२६. स्याम—क. २७. की—क. सर्गुण ख. सरगुंन-ज. २८. लीन—क.
२९. संगता—क. जुग-ख. झ. ३०. माह—क. मांहि-च. छ. झ.
३१. चवत—क. सखा-झ. ३२. रस—क.
३३. प्रेम—क. स्यांम-च. छ. ज. ३४. ज्यौं—क.

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ५४ पर दिया गया है।

कोऊ[1] कहै[2] अहो[3] मधुप[4] तुम्हैं[5] लाजौ[6] नहिं[7] आवै[8] ॥
स्वामी[9] तुम्हरौ[10] स्याम[11] कूबरीदास[12] कहावै[13] ॥
यह[14] नीचो[15] पदवी हुती[16] गोपीनाथ[17] कहाय[18] ॥
अब[19] जदुकुल[20] पावन किया[21] दासी जूठन[22] खाय[23] ॥
मरत[24] कहा[25] बोल[26] को[27] ॥५६॥*

---

१. कोउ—ख. ज. झ.
२. कहे—क. ख. घ. च. ज. ३. अहो—ग. ४. मधप—क.
५. तुम:—क. तुम्हीं को-ख. तुम्ह-ग. ज. तुमे-घ. तुमें-च. तोहि—झ.
६. लाजें—क. लाज-ख. ड. ज.. लाज्यौ-ग. लाज्यो-घ. लाज्यों-च. लज्जा-झ.
७. नहीं —क. ग. च. छ. ज. न-ख.
८. आवे—क. ज. आवत-ख.
९. स्वामी—क. स्वांमी-घ. च. स्वामि-झ.
१०. तुमरो—क. घ. तिहारे-ख. तुम्हारे-च. तुम्हारो-ज. तुमारो-झ.
११. स्यांम—ख. च. छ. ज.
१२. कुवरनाथ—ख. कूबरीनाथु-ग. कबरीनाथ-ड. कुबरीनाथ-छ. कुबरीदास-ज.
१३. कहावे—क. ज. कहावत-ख.
१४. या —क. इहा-ख. यही-ड. यहै-झ.
१५. नीच—ख. ट.-ड. ऊँची-च. उचित-झ.
१६. हती—ग. घ. च. झ.
१७. गोपिनाथु—ग. गोपीननाथ—छ.
१८. कहाइ—क. ज. कहाइि-ग. १९. अब—क. ग. घ. ड. च.
२०. जदकुल—क. च. यदुकुल-ख.
२१. कीयो—क. घ. च. छ., भए-ख. कीयौ-ग.
२२. जूठिनि—घ. की झूठनि-ड. झूंठनि-च. झूठन-छ. झूनि-ज.
२३. षाइ—क. ज. षाइि-ग. खाय-च. झ.
२४. जरत—क. ग. घ. ड. च. ज. झ. तरक-छ.
२५. या—क. ग. ड. च. छ. ज. झ. या बोल कों-शब्द घ प्रति में नहीं है।
२६. बौल—ग. बोल-ड. २७. कों—क. ग. ड. झ. को-च. को-छ.

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ५३ पर और ख प्रति में क्रमांक ४६ पर दिया गया है। ड प्रति में इस छंद का क्रमांक ५६ के बदले ५७ लिखा गया है और लिपिकार ने भूल से ५७वां छंद छोड़ दिया है।

कोऊ[1] कहै[2] रे[3] मधुप[4] स्याम[5] जोगी[6] तुम[7] चेला[8] ।।
कुबजा[9] तीरथ जाय[10] कियौ[11] इंद्रिन[12] कौ[13] मेला[14] ।।
मधुबन सिद्ध[15] कहाय[16] कै[17] आये[18] गोकुल माहिं[19] ।।
इहां[20] सबै[21] प्रेमी [22] बसे[23] तुमरो[24] गाहक[25] नाहिं [26] ।।
पधारो[27] रावरे[28] ।।५७।।*

---

१. कोउ—क ड. छ. ज. झ., कौउ-ग.
२. कहें—क ख. ड. कहे-घ. ज. क-च. ३. अहो—ख
४. मधुम—ग ५. स्यांन—च. छ. ज. ६. योगी-घ. च.
७. तू—ग. छ. ८. बेला—ज.
९. कुविजा—क. घ. ड. च. ज. कुवजा-ज. छ. कविजा-ग.
१०. जाइ—ग. ज. झ आय-छ.
११. कियो—क. ड. किये-ख. करौ-ग. किधौं-घ. कीयो-च. छ. ज.
१२. इंद्रीन—ख. इंद्रनि-ग. इंद्रिनि-घ. इंद्रन-छ. इद्रीन-ज.
१३. को—क. ख. घ. ड. च. छ. ज.
१४. पेला—ग. १५. सुधि—ख. सिद्दरि-ग. सिद्धि-च. सिधि-छ. ज.
१६. बिसारि—ख. वड़ाइि-ग. कहाइ-च. झ. षड़ा-छ. काहाइ-ज.
१७. के—क. ड. ज. कें-ख. घ. च. कैं-छ. झ.
१८. आए—घ. आयो-च. आऐ-ज.
१९. माहि—क. ग. घ. ड. मांगि-ज.
२०. इत—क. ग. घ. ड. च. छ. ज. झ.
२१. सब—क. ग. घ. ड. च. छ. ज. झ.
२२. प्रेमी—घ. च.
२३. लोग हैं—क. घ. च. लोग हैं-ग. झ. लोग है-छ. लोग हे-ज.
२४. गाहक—ग. झ. २५. कोउ—ग. कोउ-झ.
२६. नाहि—क. ग. घ. ड. छ. ज.
२७. बूझि जो—क. ड. झ. बूझ जो-ग. च. बूझि-घ. कहिय जो-छ. बुझो यो-ज.
२८. ज्ञान हो—क. ग. ड. ज. घ प्रति में छंद के अंत में दी गई टेक नहीं लिखी गई है।
ग्यान हो—घ. ज्ञान हों-छ. ज्ञानि हो-झ.

* ख प्रति में यह छंद क्रमांक ४८ पर दिया गया है। ड प्रति में यह छंद लिपिकार की असतर्कता से छूट गया है, अतः विगत छंद क्रमांक ५६ को ही उसने छंद क्रमांक ५७ लिख दिया है।

कोऊ[१] कहै[२] रे[३] मधु[४] साधु[५] मधुबन[६] के ऐसे[७] ।।
और[८] तहाँ[९] सिद्ध[१०] लोग[११] ह्वै[१२] हैं[१३] धौं[१४] कैसे[१५] ।।
औगुन[१६] गुन[१७] गहि[१८] लेत[१९] हैं[२०] गुन[२१] कों[२२]डारें[२३] मेटि[२४] ।।
मोहन[३४] निरगुन[२६]क्यौं[२७]नहीं[२८]तुम[२९]साधुन[३०]कों[३१] भेंटि[३२] ।।*
गांठि[३३] कौ[३४] षोइ[३५] कै[३६] ।।५८।।●

---

१. केऊ—क. कोउ—ज. झ. २. कहे—क. ख. घ. च. ज.
३. लेह—क. लेत-ख. ड. च. लें-घ. ले-छ. अहो-ज. ४. मधप—क. री सखी-ख.
५. साध—क. घ. छ. ड प्रति में यह शब्द छूट गया है ।
६. मधबन—क. मधवन-ग.
७. एसे—क. औसें-ख. औसे-ग. एसें-घ. अेसे-ड. औसे-च. औसैं-छ. ऐसे-ज.
८. ओर—क. ख. ग. घ. च. छ. ज.
९. तहा—क. ग. घ. ड. १०. सुध—क. ग. छ. लोग-ख. शुद्ध-च. ज. झ.
११. कहो—ख. १२. होइ—क. वों-ख. ह्वौं-ग. के-घ. हवें-च. हवें-ज. वे-झ.
१३. हें—क. ह्वे-ख. है-ग. हे-घ. ज. हैं-च. धौं-झ.
१४. धो—क. घ. ज. है-ख. धौ-ग. हैं-झ.
१५. कैसें—ख. केसै-घ. केसे-च. ज. कैसें-छ.
१६. ओगुण—ख. औगुन-ग. ओगुन-घ. च. ज.
१७. ही—ख. १८. लेह—क. १९. री—क. रे-ग. ले-छ. लें-ज. झ.
२०. ओर—क. हे-ख. है-ग. ड. हें-च. रहैं-छ. रहै-झ.
२१. गुंण—क. गुन-ज. २२. को—ख. ज. कौ-ग. ड. कों-छ.
२३. ठारे—क. डाज्यौ-ग. डारे-घ. ज. डारै-छ. २४. मेटि—च.
२५. मोहत—छ. २६. निर्गुण—ख. निर्गुन-ग. घ. ड. छ. झ.
२७. क्यो—क. ख. घ. क्यों-ड. ज. झ. क्यौं छ.
२८. नहो—क. ज. न ह्वैं-ख. होहि जो-ग. न होहि- घ. छ. होयरी-ड.
२९. इन—क. ड. सखी इन-ख. तूँ-घ.
३०. साधन—क. ख. ग. घ. ड. च. छ. ज. ३१. कौ—ग. ड. ३२. भेद—क. भेट-ख.

* च प्रति में यह पंक्ति छूट गई है ।

३३. गाठ—क. गान-ख. गांठि-ग. घ. ड.
३४. की—क. को-ख. के-ग. घ. च. छ. ज. को-ड.
३५. षोह—क. षाय-ख. खोइि-ग. षोय-ड. खोइ-च. झ.
३६. के—क. ख. घ. च. ज. को-ग.

● क प्रति में यह छंद क्रमांक ५६ पर और ख प्रति में क्रमांक ४९ पर दिया गया है ।

कोऊ[1] कहै[2] रे[3] मधुप[4] होंहि[5] तुम से[6] जो[7] संगी[8] ॥
क्यों[9] न[10] होंहि[11] तन[12] स्याम[13] सकल[14] बातन[15] चतुरंगी ॥
गोकुल में[16] जोरी[17] कोऊ[18] पावत[19] नांहि[20] मुरारि[21] ॥
मदन[22] त्रिभंगी[23] आपु[24] हैं[25] करी[26] त्रिबंकी[27] नारि ॥
रूप[28] गुन[29] सील की ॥ ५९ ॥*

---

१. केऊ—क. कोई-ख. कोउ-ज. झ.
२. कहो—क. कहे-ख. छ. ज. कह्-ग. ड. च.
३. रे—शब्द क प्रति में नहीं है। ४. मधक—क.
५. होइ जो—क. होहि-ग. होहि-च. होहि-छ. होइ है-ज. होय-झ.
६. सें—क. सो-घ. ७. क प्रति में यह शब्द होइ के साथ आया है। ही-ज. जे-झ. ८. संयोगी—ज.
९. क्यों—क. क्यौ-ग. ड. छ. क्यो-ज. १०. उन—क.
११. होइ—क. ग. होहि-घ. ड. च. हौहि-छ. होय-झ.
१२. ते—क. तुम-ज. १३. स्यांम—घ. च. छ. सकल-ज. १४. वात—ज.
१५. बातनु—ख. वातनि-ड. में-ज.
१६. मैं—ग. च. ज. झ. में-घ. मै-ड.
१७. वौरी—क. जीरी-ग.
१८. कीयों—क. कोउ—ख. ग. ज. १९. पालत—ग.
२०. नाह—क. नाहि-ख. ग. घ. ड. ज.
२१. मुरार—क. मुरारी-ग. २२. मनों—च.
२३. त्रभंगी—क. ख. ग. घ. ड. ज. त्रभगीं-च. त्रिंवंका—छ.
२४. आप—क. ख. ड. छ. ज.
२५. है—क. ग. ड. हे-ज. ही-झ.
२६. करि—ग. करौ-झ.
२७. त्रवंगा—ख. च. छ. त्रवंका-ग. ज. ड. त्रिवंका—घ.
२८. रप—छ. रुप-ज. २९. गुण—घ. गुंन-ज.

* क प्रति में इस छंद का क्रमांक नहीं लिखा गया है, किन्तु गणना करने से इसका क्रमांक ५५ आता है।

इहि[1] विधि[2] सुमिरि[3] गोविंद[4] कहत[5] ऊधो[6] प्रति[7] गोपी ।।
भृंग[8] संख्या[9] करि[10] कहत[11] सकल[12] कुल[13] लज्जा[14] लोपी ।।
ता पाछें[15] इक[16] बार[17] ही[18] रोइं[19] सकल ब्रजनारि[20] ।।
हा[21] करुनामय[22] नाथ[23] हौ[24] केसव[25] कृष्म[26] मुरारि[27] ।।
फाटि[28] हिय[29] दृग[30] चल्यौ[31] ।। ६० ।।*

---

१. इह—क. ख. इहि.ग. यह-झ. २. विध—क. ख.
३. सुमर—क. ख. 'विधि सुमिरि' के स्थान पर घ प्रति में ~~'सुमिरी', ङ. झ~~ प्रतियों में 'सुमिरत', और च प्रति में 'सुमिरि', छ प्रति में 'सुमरी', तथा ज प्रति में 'सुमरि' पाठ मिलता है।
४. गोविंद—शब्द ख प्रति में नहीं है। गोविद—ग.
५. करत—ङ. कहेत-ज. ६. ऊधो—क. घ. च. छ. उद्धव-ख. ऊधौ-ग. ज. ऊधों-ङ.
७. प्रत—क. ज. ८. भ्रंग—क. भ्रंगनि-ग. भृगु-च. छ. ज.
९. सुवग्या—क. संक्या-ङ. संज्ञा-झ.
१०. करके—क. कर-ख. नहि-ग.
११. कहत—शब्द क प्रति में नहीं है। के-ख. करत-ङ. कहेत-ज.
१२. सबन—ख. १३. लजा—क. १४. कुल—क. लज्या-ख.ग.घ.ङ.च. छ.ज.
१५. पाछें—क. ख. घ. च. ज. १६. एक—ख. ज. इक—ग. एक-च. इंही-छ.
१७. बोर—छ. १८. ही—क. 'बार हीं' के स्थान पर घ प्रति में 'बारह' और ज प्रति में 'बारइ' पाठ मिलता है।
१९. रहत—ख. रोई-ग. रोइ-च. ज. रोइंक-छ.
२०. ब्रजनार—क. वृजनारि-ज. २१. कहा—ज.
२२. करुणनिधि—क. करुनामैं-ग. करुणामय—घ. च.
२३. नामयनो—ग. नांथ—च. ज. २४. हों—क. ख. च. छ. ज. हौं-घ. जू-झ.
२५. केसों—ख. केशव-ङ. केशो-ङ केवल-ज.
२६. कृष्म—ख. ङ. छ. ज. क्रस्न-ग. कृष्ण-ङ.
२७. मुरार—क. घ. मथुराइ-ग. २८. भाव—क. गोहन-ख.
२९. हीए—क. क्यों-ख. हि.-घ हीय-च. ज.
३०. ब्रव—क. न.-ख. दृग-च. दय-छ. वहि-ज. 'हिय दृग' के स्थान पर ग प्रति में 'हीयर', ङ प्रति में 'हिरदों' पाठ मिलता है।
३१. लगा हो—ख. चले-ग. दृग चल्यौ-शब्द घ प्रति में नहीं हैं।

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ५७ पर और ख प्रति में क्रमांक ५३ पर दिया गया है।

उमग्यो[1] दोऊ[2] नयन[3] सलिल[4] अंसुवन[5] की[6] धारनि[7] ॥
भींजत[8] अंबुज[9] नीर[10] कंचुकी[11] बहु[12] गुन[13] हारनि[14] ।
ताही[15] प्रेम[16] प्रवाह[17] में[18] ऊधौ[19] चले[20] बहाय[21] ॥
भली[22] ग्यान[23] की मेंड[24] हौं[25] ब्रज[26] में[27] दीनी[28] आय[29] ।
कूल[30] कौ[31] तृन[32] भयौ[33] ॥ ६१ ॥*

१. **उमग्ये**—क. इनके-ख. उमगे-ग. उमग्यो-च. छ. उमगी-झ.
२. **जौ**—क. जो कछु-ख. जौं-ग. जो-घ. छ. च. ज्यौं-ड. ज्यों-ज. जो कोउ-झ.
३. **कोऊ**—क. सालहैं-ख. कोउ-ग. छ. ज. कोऊ-घ. ड. कहूं-च. सलिल-झ.
४. **सकल असु**—क. ऐसे ही-ख. अंसुवन लै-झ.
५. **ले**—क. पिय-ख. अन्त ले-ग. अंस ले-घ. ज. अंस ले-ड. छ. अंस लें-च. सिंधु-झ.
६. **वही**—क. पग-ख. विनकी-ग. बनकी-घ. ड. ज. । धनकी-च. बनकी-छ भयौ-झ. ७. **धारन**—क. ख. च. झ. धारनी-ग. रनि-छ.
८. **भींजत**—क. बसन-ख. ९. **अंबुर**—क. न-ख. १०. **उलटे**—ख.
११. **कंचकी**—क. जाय-ख. १२. **कंचुकी**
१३. क प्रति में '**बहुगुन**' के स्थान पर '**भूषन**' पाठ मिलता है, भूषन-ख. गन-घ. च. छ. ज. झ. १४. **हारन**—क. च. छ. झ. आभरन ख.
१५. **ताह**—क. प्रेम-ख. ताहि-ग. वाही-छ. तजी-ज.
१६. **प्रीत**—ख. प्रेम-ग. प्रेम-घ. च. १७. **आरविंद**—क. अरुविंद-ख. प्रवबव-ग.
१८. **मे**—क. ग. में-ख. घ. च. ज.
१९. **ऊधों**—क. घ. च. छ. उद्धव-ख. उधौ-ग. ज. ऊधौं-ड.
२०. **चल्यो**—क. चलौं-घ. चलें-छ.
२१. **हाइ**—क. वाहाइ-ग-वहाइ-ड. छ. ज. वहाय-च.
२२. **भले**—क. ख. भारी-च. २३. **ज्ञान**—ख.झ. ज्ञान-घ. ग्यान-च.
२४. **मेंड**—क. मेड-ख. ज. मैड-ग. ड. २५. **ए**—क. ही-ख. झ. हू-ग. हुती-ड. हुं-छ.
२६. **व्रज**—क. ख. ता-छ. वृज-ज. २७. **में**—ख. मैं-ग. ड. मे-घ. ज. व्रजे-च. दिन-छ.
२८. **प्रगटे**—ख. दीनी-ग. घ. ड. च. व्रज मैं-छ. दिनी-ज.
२९. **आई**—क. ड. ज. आइ-ग. आई-छ.
३०. **कुल**—क. ख. घ. ड. च. छ. ज. कुलिस-झ.
३१. **के**—क. ख. ग. ड. च. छ. ज.
३२. **तारन**—क. त्रिन-ख. तेन-ग. ड. तृन-च. छ. त्रन-ज.
३३. **भए**—क. भयो-ख. च. भये-ग. को तृन भयो शब्द घ प्रति में नहीं है, भऐ-छ. ज.

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ५८ पर तथा ख प्रति में क्रमांक ५४ पर दिया गया है ।

प्रेम[१] प्रसंसा[२] करत[३] सुद्ध[४] जो[५] भक्ति[६] प्रकासी ॥
दुबिधा[७] ग्यान[८] गलानि[९] मंदता[१०] सिगरी[११] नासी[१२] ॥
कहत[१३] भयौ[१४] निस्चै[१५] इहै[१६] हरि[१७] रस की[१८] निज[१९] पात्र ॥
हौं[२०] तो[२१] कृतकृत[२२] ह्वै[२३] गयौ[२४] इनके[२५] दरसन[२६] मात्र[२७] ॥
मेटि[२८] मल ग्यान[२९] कौ[३०] ॥ ६२ ॥●

---

१. प्रेम—ग. प्रेंम-घ. च.
२. प्रसांसा—क. विवस्था-ख. प्रसंसा-ग
३. कर्त—क. देखी-ख. करतु-ग.
४. सुध—क. ख. ग. छ. सुधी-ज.
५. यो—ख.
६. भक्त—क. ख. भगति-ग. ङ. भक्ती-ज.
७. दुबधा—क. द्विविधा-ख. दिविधा-घ. ङ. च. छ.
८. ज्ञान—ङ. छ. ज्ञांन-च. ज.
९. गिलान—क. गल्यान-ख. गलान-ग. गिलानि-घ. गिलांनि-च. मिल-ज.
१०. विद्या—क. मंदिता-च.
११. सिगरी—क. घ. ङ. ज. सवरी-च.
१२. छ प्रति में दूसरी पंक्ति छूट गई है।
१३. कहेत—ज.
१४. भयो—क. ख. घ. च. भहो-छ. भलो-ज. भलौ-झ.
१५. रिचै—क. विस्मै-ग. ङ. छ. विस्में-छ. घ. विस्मय-च. विष्मै-छ. बिषमे-झ.
१६. भयौ—ग. ङ. झ.　　१७. हर—क. छ.
१८. के—क. झ. को-ख.
१९. निज—ग.　　२०. होंउ—क. हो-ग. घ. घ. हों-ज.
२१. तों—ङ. तौं-छ. जो-ज.
२२. क्रितकृत—क. कृतारथ-ख. क्रतक्रत-ग. कृतकृत-च. भक्तक्रत-ज.
२३. हो—क. है-ग. ह्वे-घ. घ. ज. ह्वें च.
२४. गयो—क. ख. घ. च. ज. रह्यो-छ.
२५. इनके—ग. इनिके-ङ.　　२६. दर्सन—क. दरस-ग.　　२७. पात्र—ग.
२८. मेट—क. ख. मैटि-ग. मेंटि-घ. च. मेठ-छ.
२९. गात—क. ङ. गात्र-ख. ग्यांन-च. ज्ञांन-ज. ज्ञान-झ.
३०. के—क. को-ख. छ. ज. मल ग्यान को-शब्द घ प्रति में नहीं हैं। कों-च.

● क प्रति में एक छंद क्रमांक ५९ पर और ख प्रति में क्रमांक ५५ पर दिया गया है।

पुनि[1] पुनि[2] कहै[3] हरि[4] कहन[5] बात[6] एकांत[7] पठायौ[8] ॥
मैं[9] इनकौ[10] कछु[11] मरम[12] जानि[13] एकौ[14] नहिं[15] पायौ[16] ॥
हौं[17] कहौं[18] निज मरजाद[19] की ग्यान[20] करम[21] कौ[22] रूप[23] ॥
ये[24] सब[25] प्रेमासक्त[26] हैं[27] कुल[28] लज्जा[29] रहि[30] लोप[31] ॥
धन्य[32] ये[33] गोपिका[34] ॥ ६३ ॥*

---

१. कुन—क. पुन-ख. पु-ग. २. कही—क. कहे-ख.
३. हों—क. हो-ख. कहै-ग. कहे-घ. च. ज. कहैं-छ. झ.
४. हर—क. हरि-शब्द ग प्रति में नहीं है।
५. कहत—क. घ. छ. येकंत-ग. हन-ज.
६. वांत—ख. घ. च. हरि-ग. वात-ड. ज. ७.कहन—ग. ८. पठायौ—ग.
६. में—क. ड. मौ-ग. मैं-घ. ज. मैं-च.
१०. उनको—ख. इनको-घ. ड. इनिको-झ.
११. नही—ग. कछू-च. नहि-ज.
१२. मर्म—क. ख. मरमु-ग. १३. जान—क. जांनि-घ. च.
१४. एको—क. ख. छ. ज. एके-घ. एकों-ड. एकें-च.
१५. नही—क. ग. घ. छ. ज. न-च. १६. पायो—क. ख. घ. च. छ. ज.
१७. हों—क. ख. च. हो-ग. घ. ज. हौ-छ.
१८. कहौं—शब्द क प्रति में नहीं है। कहौ-ग. ड. छ.
१६. मर्याद—ख. मिरजाद-घ. २०. ज्ञान—ख. ड. ग्यांन-घ. ज. जान-ज.
२१. कर्म—क. ख. ग. घ. ड. च. छ.
२२. को—क. च. छ. ज. कै-ख. ड., कों-त्र. २३. रोप—ग.
२४. ए—क. ख. घ. झ. जे-ग. ऐ-च.
२५. सभ—क. परमाशक्त है-ख. सब्र-ग सव-ड. ज. सेवक-च.
२६. प्रेमअस्कत—क. युक्त-ख. पेम असक्त-ग. प्रेमआसक्ति-घ. प्रेमी लोग-ड. प्रेंम आसक्ति-च. प्रेम आसत्क-ज.
२७. है—ख. ग. ड. हवे-घ. हें-च. ह्वे-छ. ह्वै-ज. २८. कु—छ.
२६. लजा—क. लाल-ख. लज्या-ग. घ. ड. च. छ. ज.
३०. नहीं—क. हिए ते-ख. रस-ग. रही-घ. च. छ. झ. र-ज.
३१. लूप—घ. ३२. धंन्य—घ. धनि-छ. ज. ३३. इह—क. ऐ-ख. ज. के-ज.
३४. गोपका—क. ये गोपिका शब्द घ प्रति में नहीं है।

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ६० पर और ख प्रति में क्रमांक ५६ पर दिया गया है।

जे[१] ऐसें[२] मरजाद[३] मेटि[४] मोहन[५] कौं[६] ध्यावें[७] ॥
काहे न[८] परमानंद[९] प्रेम[१०] पदवी सचु[११] पावें[१२] ॥
ग्यान[१३] जोग[१४] सब[१५] करम[१६] तें[१७] प्रेम[१८] परे[१९] है[२०] सांच[२१] ।
हौं[२२] नहि[२३] पटतर देत हौं[२४] हीरा[२५] आगे[२६] कांच[२७] ॥
विषमता[२८] बुद्धि[२९] को[३०] ॥ ६४ ॥*

---

१. ए—ख. जै-ग. ये-ड. जो-झ.
२. एसे—क. ग्रैसी-ख. ग्रैसे-ग. ग्रेसे-घ. ज. ग्रेंसे-च. ग्रैसें-छ. ऐसी-झ.
३. मर्याद—ख. मर्जाद-छ. ४. मेट—क. ख. मेटि-ग. मेंटि-च. ५. मोंहन—च.
६. कौं--क. ज. कों-ख. घ. ड. च.
७. ध्यावे--क. घावें-ख. घ. च. ध्यावे-ग. धावै-ड. झ. धावे-ज.
८. झ प्रति में काहे न के स्थान पर कहत पाठ मिलता है।
९. परमानंद--ग. परमांनंद-च. ज. १०. पेम—ग. प्रेम-घ. च.
११. सच—क. कों-ख. १२. पावे—क. ज. पावें-ख. घ. च. पावै-ग. झ.
१३. ज्ञान--घ. ड. ज. झ. ग्यांन-च.
१४. योग--क. कर्म-ख. जुगति-घ. जाग-ड. १५. सत--क. ग. सव-ख.
१६. कर्म--क. घ. ड. च. छ. ज. जोग-ख. काम-ग.
१७, तें--क. ख. घ. ड. से-ग. से-च. ज. १८. प्रेम—ग. प्रेंम-घ. च. १९. परें—च.
२०. हे—क. ग. ज. ही-ख. हें-घ. च.
२१. साच—क. ख. संच-ग. सांचु-घ. च. ज.
२२. हौ—ड. छ. हों-च. नाहिं-झ.
२३. उन—क. या-ख. यह-ग. नही-घ. च. छ. ज. न-झ.
२४. हों—ग. ज. हौं—ड. २५. हियरा—च.
२६. धन ले—क. ग. च. धन लें-घ. धन लै—ज. धन लों-झ.
२७. कांच—क. ख. ग. कांचु-घ. काचु—च. ज.
२८. विमुखता—ख. विषता-ग. च. विषः-घ.
२९. बुध—क. ख. बुधि-ग. च. छ. बुद्ध-ज.
३०. बुद्धि की—शब्द घ प्रति में नहीं हैं।

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ६१ पर और ख प्रति में क्रमांक ५७ पर दिया गया है। झ प्रति में यह छंद क्रमांक ६५ पर दिया गया है।

धन्य[1] धन्य[2] ये[3] लोग[4] भजत[5] हरि[6] कौं[7] जो[8] ऐसे[9] ॥
और[10] कोऊ[11] उन[12] बिना[13] प्रेम[14] पावत[15] है[16] कैसे[17] ॥
मेरे[18] या[19] लघु[20] ग्यान[21] कौ[22] उर[23] में[24] मद[25] रह्यौ[26] बाध[27] ॥
अब[28] जान्यौ[29] ब्रज[30] प्रेम[31] कौ[32] लहत[33] न[34] आधौ[35] आध[36] ॥
वृथा[37] स्रम[38] करि[39] मर्यौ[40] ॥ ६५ ॥*

---

१. धनि--ग. छ. धंन्य-घ. ज. २. धनि — ग. छ. धंन्य-घ. ज.
३. इह—क. ए-ख. घ. ४. लोक—क. ५. भजति—घ. ६. हर—क.
७. को—क. घ., सो-ख. कौं-ग. ड. कों-च. ज. झ.
८. जे—क. ज., जे-ख. जौ-ग. जैं-च.
९. एसे—क. एसें-ख. ऐसें-घ., असें-च. असै-छ. असे-ज. ऐसे-झ.
१०. और—ख. घ. च. ज. औरु—ग.
११. वितेऊ—क. कोउ-ख. ग. छ. ज., कौन-झ. १२. इहि—ख. विनु-ग. घ.
१३. रसः--क. या रसहि-ख. घ या रसै-ग. पा रसहि-ड. रसहि-च. छ. रसही-ज
१४. प्रेम—ग. प्रेंम-घ. च. १५. परसत—क. बस ह्वै-ख. पांवत-घ.
१६. है--क. घ. ज. हे-ख. हें-च. हैं-झ. १७. कैसे—घ. च. केसैं-छ. कैसे-ज.
१८. मैं—ग. मेरे-च. १९. नहि तो--ग. वा-घ. च. लघु-झ.
२०. लग—क. बा-झ. २१. ग्यांन--ख. च. ज्ञान-ड. ज. झ.
२२. को—क. च. छ. 'ग्यान को'-शब्द घ. प्रति में नहीं हैं।
२३. पहिलौ—ग. २४. मं—ख. मे-ड. में-ज. मैं-झ.
२५. मेद– ख. मंदर-च. मल-झ. २६. होय—ख. रहो-घ. हों-च.
२७. बाढ़ वांध—ख. ग प्रति में 'मद रह्यौ बाध' के स्थान पर 'जान्यौ साध' पाठ मिलता है। वाधि-घ. च. वांधि-ड. ज. २८. तब-क. ख. छ. तव-घ. ड. च. ज.
२९. जान्यों—क. ख. छ. जानौ-ग. ड. जांन्यो-घ. जांन्यों-च.
३०. जत्र—क. जो-ख. वृज-ज. ३१. प्रेम—ग. प्रेम-घ. च.
३२. की--क. घ. ड. च. छ. ज. को-ग. ३३. हलत—ख. ३४. हे—झ.
३५. आघे—क. आधो-ख. घ. च. ज.
३६. आढ़--क. अधि-घ. ड. च. छ. आधु-ज. ३७. ब्रिथा——क. व्रथा-ग.
३८. श्रम--क. ख. ग. ड. च. छ. ज. ३९. के—क. कर-ख. को-ग.
४०. मूए—क. मर्यो-ख. गये-ग. घ प्रति में टेक छूट गई है। सवे-च. ज. श्रवे-छ. थके-झ.

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ६२ पर, ख प्रति में ५८ पर तथा झ प्रति में ६४ पर दिया गया है।

पुनि[१] कहै[२] सब तें[३] साधु[३]-संग[५] उत्तम[६] है[७] भाई[८] ॥
पारस[९] परसे[१०] लौह मात्र[११] कंचन ह्वै[१२] जाई[१३] ॥
गोपी प्रेम[१४] प्रसाद[१५] तें[१६] होइ[१७] विशेष[१८] जो[१९] पाइ[२०] ॥
ऊधौ[२१] तें[२२] मधुकर[२३] भयौ[२४] दुविधा[२५] ग्यान[२६] मिटाइ[२७] ॥
पाय[२८] रस[२९] प्रेम[३०] कौ[३१] ॥६६ ॥*

---

१. फुन—क.
२. कही—क. कहें-ख. कहि-घ. कहे-च. ज. कहैं-छ. कह्यौ-झ.
३. सभ—क. सवतें-ग. सवतें-घ. ड. ४. साध—क. ख. ग. छ.
५. संगति—घ. ड. च. छ. संगत-ज. झ.
६. उत्यम—क. उत्तिम-ख. हैं-च. है-छ. उत्तम-ज. है-झ.
७. है—क. ज. हैं-ख. उत्तम—झ. ८. भाइ—ग. भइ-ज.
९. पारस—क. या रस-घ. पारसु-च. १०. परसे—ख. परसै-ग. ड. परसें-छ.
११. तुरित—ख. सों-च. १२. हो—क. ह्वौ-ग. हे-घ. ह्वें-च. ह्वे-ज.
१३. जाइ—ख. ज. जाइि-ग. १४. प्रेम—ग. प्रेंम-च. १५. प्रताप—झ.
१६. को—क. ख. कों-ग. तें-घ. च. छ. कों-ड. ते-ज.
१७. हौं—क. ड. हो-ख. घ. ज. हों-ग. छ. हों-च.
१८. उनके—क. ही-ख. अवसेष-ग. अविशेषों-घ. अवसेषौ-ड. अबिसेख्यो-च. अवमेसो-छ. अवएसे-ज.
१९. महे—क. सीखें-ख. न-ग. ड प्रति में जो शब्द नहीं है। आय-च. सों-ज.
२०. पाउ—क. जाइ-ख. पाइि-ग. आइ-ड. पाइ-ज.
२१. ऊधो—क. घ. उधो-ख. छ. ज. उधो-ग. ऊधों-च.
२२. तू—क. ते-ख. घ. ड. च. तै-ग. छ. तें-ज.
२३. मधकुर—ग. मधुकुर-छ. २४. भयो—क. ख. घ. छ. ज.
२५. मुद्रा—क. ख. दुवध्या-छ.
२६. जोग—क. ख. ग्यांन-च. ज्ञान-झ.
२७. मिटाय—ख. च. छ. झ. मिटाइी-ग.
२८. आह—क. आय-ख. पाइि-ग. पाइं-घ. ड. ज. झ. आइ-छ.
२९. यह—क. इह-ख. र-घ. ३०. प्रैम—ग.
३१. के प्रति में 'प्रेम को' के स्थान पर 'संप्रदा' ख प्रति में 'सम्प्रदा' पाठ दिया गया है। घ प्रति में प्रेम को-शब्द छूट गये हैं। कों-च., को-ज.

* क प्रति में इस छंद को ६५॥६६ क्रमांक एक साथ दिये गये हैं तथा ख प्रति में यह छंद क्रमांक ६१ पर दिया गया है।

पुनि[1] कहै[2] परसत[3] पांय[4] हौं[5] इनहिं[6] निवार्यौ[7] ॥
भृंग[8] संग्या[9] करि[10] कहत[11] निंद[12] सबहिन[13] तैं[14] डार्यौ[15] ॥
अब[16] ह्वै[17] रहौं[18] ब्रजभूमि[19] के[20] मारग में[21] धूर[22] ॥
विचरत[23] पद[24] मोपर[25] परैं[26] सब[27] सुष[28] जीवन[29] मूर[30] ॥
मुनिन[31] हू[32] दुर्लभैं[33] ॥६७॥ *

---

१. उन—क. पुनि-पुनि छ. पुनि-ज.
२. गहे—क. कहि-ख. झ. कहैं-घ. कहैं-च. ज. कहैं-छ. ३. प्रस्ता—ख.
४. पाइ—क. घ. ड. छ. ज. पाय-ख. ग. च.
५. हम—क. हो-ख. घ. च. ज. हों-ग. हौं-ड.
६. उनहि—क. इनही-ख. च. छ. इनहि-ग.
७. निवारो—ख. विवार्यौ-ग. निवार्यौ-घ. छ. ज.
८. भृंग—क. भृंगनि-ग. भृंग—छ.
९. सुवग्या—क. संज्ञा-ख. ड. झ. १०. कर—क. छ.
११. के—क. ख. कहेत-च. कहेंत ज.
१२. नीद—ख. निद्रा-ग. निंदि-घ. निंद्य-ड. छ. निंद-ज.
१३. सभंही—क. सब इंद्रियन-ख. सबही-ग. घ. ड. च. छ. ज.
१४. ते—क. ज. तें-ख. घ. च. छ. मे-ग.
१५. ढारे—क. टारो-ख. डार्यो- घ. छ. ज., डार् यों-ड. ज. १६. अब-घ. छ. ज.
१७. हो—क. ह्यो-ग. ह्वे-घ. ज. ह्वैं-च.
१८. रहो—क. ख. ज., रहौ-ग. ड. रह्यो-घ. रहों-च. रहौं-छ.
१९. ब्रजभूम—क. वृजभूमि-च. व्रजभुम-छ. वृजभुमि-ज.
२०. की—क. ख. ग. छ. कों-घ. मे-ड. को-च. ज.
२१. मह—क. मे-ख. च., मैं-ग. ड. में-घ. ज.
२२. धूल—ख. धूरि-ग. घ. ड. च. छ. धुरि-ज.
२३. फिरते—ख. विचरज-घ. विपरत-ज. २४. पग—ख. पदरज-ग.
२५. मोंपर—ख. मो-ग. २६. धरे—क. परे-ग. ड. झ. परे-घ. ज. परें-च.
२७. सभ—क. सव-ग. ज. २८. सुख—ख. च. झ. सष-ग.
२९. जीवनि—ग. घ. ३०. मूल—ख. मूरि-ग. घ. ड. च. छ. मुरि-ज.
३१. मुनन—क. मुनिनि-ग., घ प्रति में सम्पूर्ण टेक छूट गई है।
३२. हां—ख. दुलभ-ग. कूं-ड. के-च. हं-छ. हु-ज. कों-झ.
३३. दुरलभा—क. दुर्लभ जो-ख. है जो-ग. दुर्लभ भए-ड. दुर्ल्लभ हें-च. दुल्लभ दुल्लभ है-छ. दुर्ल्यभ है-ज.

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ६३ पर और ख प्रति में क्रमांक ५९ पर दिया गया है।

कै[१] ह्वै[२] रहौं[३] द्रुम[४] गुल्म[५] लता[६] बेली[७] बन[८] मांही[९] ॥
आवत जात सुभाय[१०] परै[११] मो पै[१२] परछांही[१३] ॥
सोऊ[१४] मेरे बस[१५] नहीं जो[१६] कछु[१७] करौं[१८] उपाय[१९] ॥●
मोहन[२०] होंहि[२१] प्रसन्न[२२] जो[२३] यह[२४] बर[२५] मांगौं[२६] जाय[२७] ॥
कृपा[२८] करि[२९] देंहि[३०] जो[३१] ॥६८॥*

---

१. के—क. ग. के-घ. च. ज.
२. हो—ग. मे-घ. मै-ङ. छ. में-च. से-ज. मैं-झ.
३. रहों—क. रहो-ग. हो-घ. हो-ङ. होउ-च. होंहु-छ. होहु-झ.
४. द्रम—ग. द्रूम-च. हम-ज.
५. लता—क. ङ. गुलम-छ. ज. ६. गुलम—क. गुलम-ङ. लतां-छ.
७. वल्ली—ख. वेली-ङ. ज. ८. वन—ग. घ. ङ. च. छ. ज.
९. माही—क. ध. ग. घ. ङ. च. ज. १०. सुभाइ—क. ङ. छ. ज. सुभाव-ग.
११. परे—क. घ. ज. परें-ख. ङ. च. १२. मोपर—क. ख. ग. घ. ङ. च. छ. ज.
१३. परछाही—क. ग. घ. ङ. ज., परछाई-च. परछांई-झ.
१४. सोई—क. सोउ-ज. सो तौ-झ. १५. वस—क. ग. घ. ङ. च.
१६. ज्यों—ङ. छ. सो-च. ज्यो-ज. १७. हो—ख. कछू-घ. च. ज.
१८. करों—क. च. छ. करो-ख. घ. करौ-ग. कहो-ज. करूँ-झ.
१९. उपाउ—क. उपाइ-ग. ऊपाई-घ. उपाइ-ङ. ज. ऊपाइ-छ. बनाइ-झ.

● ङ प्रति में यह पंक्ति चतुर्थ क्रमांक पर दी गई है।

२०. मौहन—ग. मोंहन-च.
२१. हो—क. होय-ख. घ. हौंहि-ग. होइ-ङ. होहि-च. हुंहि-छ. होय-झ.
२२. परसन्य—क. प्रसंन-ग. घ. ङ. प्रसंन्न-घ. प्रसन-छ.
२३. जो—ग. २४. तो—झ. २५. वरू—क. ग.
२६. मांगो—क. माग्गो-ख. मागे-ग. मागो-घ. ज., मागों-ङ. मागौं-च.
२७. जाइ—क. ङ. छ. ज. जाहिं-ग.
२८. क्रपा—ख. ग. छ.। घ प्रति में सम्पूर्ण टेक का पाठ कृ० क० दे० मिलता है।
२९. कर—क. ३०. देह—क. छ. देइ-ग. देहु-ङ.
३१. तो—ख. च. जो-ग.। झ प्रति में 'देंहि जो' का पाठ 'दीजिए' लिखा गया है।

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ६४ पर तथा ख प्रति में क्रमांक ६० पर दिया गया है।

ऐसे[1] मन[2] अभिलाष[3] करत मथुरा फिरि[4] आयौ[5] ॥
गदगद पुलकित[6] रोम[7] अंग आवेस[8] जनायौ[9] ॥
गोपी[10] गुन[11] गावन[12] लग्यौ[13] मोहन[14] गुन[15] गयौ[16] भूल[17] ॥
जीवन[18] कौं[19] लैं[20] कहा[21] करौं[22] पायौ[23] जीवन[24] मूल[25] ॥
भक्ति[26] कौ[27] सार यह[28] ॥६६॥*

---

१. इहविध—क. अब-ग. ऐसें-घ. ऐन-ड. ऐसें-च. ऐसें-छ एसे-ज.
२. कन—क. फिर-ख. अैसे-ग. मोंहन-च.
३. अभालाष—क. अभिलाख-ख. अभलाष-छ.
४. पुर—क. फिर-ख. छ. ज.
५. आवत—क. ख. ड. छ. ज. आवत-ग. घ. आवन-च.
६. पुलकत—क. फुलकित-ख. घ. च. ज. पुलिकित-छ.
७. रोंम—च. ८. औंवेश—ख. ज. आवेस-झ.
९. जनावत—क. ख. ग. घ. ड. छ. ज. जनावन-च.
१०. गोपीपी—ग. ११. गुण—ख. १२. गावत—क.
१३. लग्यो—क. ख. घ. च. छ. ज.
१४. फिर—ख. अैसें-ग. मोंहन-च.
१५. गुण—ख. ग. प्रति में गुन शब्द छूट गया है।
१६. गयो—क. ख. ग. च. छ. ज.
१७. भूल—क. ख. मुलि-छ.
१८. जीवनि—ड.
१९. कौ—ग. ड. कौं-छ. कों-ज.
२०. क—और ख प्रतियों में 'कों से' के स्थान पर 'कोऊ' पाठ मिलता है। कह-ग. ले-घ. ज. लें-ड. छ. लै-घ.
२१. राम—ग.
२२. करे—क. ज. करें-ख. छ. करो-घ. करो-ड. करूं-च.
२३. जो लहिये—क. जो पाव-ख. जो लहिय-ग. तवपाई-घ. च.जव लहित-ड. ज. जब लहिये-छ.
२४. जीव—ख. जीवनि-छ.
२५. मू--ग. मूलि-घ. ड. च. छ. मुलि-ज.
२६. भक्त—क. च. छ. मुलि ड. २७. कौं--ड. छ.
२८. जो—ख. वह-ग. 'कौ सार यह'-शब्द घ प्रति में छूट गये हैं। ए-झ.

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ६७ पर और ख प्रति में क्रमांक ६२ पर दिया गया है।

ऐसे[१] सोचत[२] जहां[३] स्याम[४] तहां[५] आयो[६] धायो[७] ॥
परिकर्मा[८] दंडौत[९] प्रेम[१०] सों[११] अधिक[१२] जनायो[१३] ॥●
कछु[१४] निरदयता[१५] स्याम[१६] की करि[१७] क्रोधित[१८] दोऊ[१९] नैन[२०] ॥
कछू[२१] ब्रजवनिता[२२] प्रेम[२३] के[२४] बोलत[२५] रस भरे[२६] बैन[२७] ॥
सुनौं[२८] नंदलाड़ले[२९] ॥७०॥*

---

१. ऐसे—क. ख. ज. अैसे-ग. ड. छ. एसें-घ. अैसे-च.
२. शोचत—ख. ३. जहा—क. च. स्याम-ख. ग.
४. राजत—ख. जहाँ-ग. च प्रति में स्याम शब्द नहीं है। स्यांम ज.
५. आयो—क. स्यांम छ. ६. तहाँ—क. छ. चलि के आयो- ज.
७. धायो—घ. द. छ. ज.
८. प्रकभाक परिक्रमा—ख. छ. झ. परिकर्म-ग. परिकरमा-घ. प्र. परिकूमा-ज.
९. डंढोत—क. डंडवत-ख. प डंडोत-ग. दंडवत-घ. छ. दंडोत-ड. च. दडवत-ज.
१०. प्रेम— ग. प्रेंम—च. ११. सों—घ. ज. च प्रति में सों-शब्द छूट गया है।
१२. बहुत—क. हेत-ख. अधिक-घ. च.
१३. जनायो—क. ख. घ. ड. च. छ. ज. न्हवायो-ग.
● ड प्रति में यह पंक्ति छूट गई है।
१४. कछू—क. घ. च. के-झ.
१५. निरदया—क. निघेता-ख. निरदइता-घ. निदेयता-ड. झ.
१६. स्यांम—च. ज. १७. कछु—ड. करि-च.
१८. क प्रति में कछु निरदयता का पाठ आक्रोधत तथा ग प्रति में कुरधित दिया गया है। क्रुधत-घ. क्रुधि-त्र. क्रुधति-छ. क्रुधित-ज कुद्धित-झ.
१९. दोउन—ख. दोउ-ज. झ. २०. नैन—ख. नैन-ड. च. ज.
२१. कछू—क. घ. च. ब्रजवनिता-ड.
२२. ब्रजवनता—क. के-ड. वृजिवनिता-ज.
२३. प्रेम—ग. स्याम-च. प्रेंम-ज. २४. की—क. ख. ग. ड. च. झ.
२५. वोलत—ग. घ. ड. छ. ज.
२६. भरे—क. भरि—ग. घ. छ. भए-ज.
२७. नैन—ख. वैन-ग. छ. वैन- ज. नेंन-ड. वेंन-च.
२८. सुनो—क. ज. सुनौं-ख. च. छ. सु.-घ.
२९. नंदलाडले—क. नदलाडिले-ग. न.-घ.

* क प्रति में छंद क्रमांख ७० और ७१ दोनों का क्रमांक ६८ लिखा है। ख प्रति में यह छंद क्रमांक ६३ पर दिया गया है।

करुनामयो[1] रसिकता[2] है[3] तुमरी[4] सब[5] झूठी[6] ॥
तब[7] ही[8] लौं[9] कहौं[10] लाख[11] जबही[12] लौं[13] बांधो[14] मूठो[15] ॥
मैं[16] जान्यो[17] ब्रज[18] जाय[19] कै[20] निरदै[21] तुमरो[22] रूप[23] ॥
जे[24] तुमकों[25] अवलंबही[26] तिनकों[27] मेलो[28] कूप[29] ॥
कौन[30] यह[31] धर्म है[32] ॥७१॥*

---

१. करनामय—क. करुणामय-ज. करुनामय-झ.
२. अर—क. एक-घ. सब-ड. और-च. अरु-झ.
३. रसिक रसिकता—ख. रिसता-छ. रसिकता-झ.
४. तुम्हरी—ख. ड. च. छ. ज., तुह्मरि हे—ग. तुमारी-झ.
५. सभ—क. सब-ग. ड. ड. ज. ६. जूठी—क. तुमरी झूठी-ख. झूठी-ग. झूँठी-घ.
७. भव—घ. तव-ड. जव-झ.
८. ही शब्द छ प्रति में नहीं है। ज प्रति में 'तब ही' का पाठ 'तहाँ' मिलता है।
९. लौ—क. ख. घ. ज. लौं-ग. ड. लों-च.
१०. लहे—क. लहें-ख. लह-ग. कहो-ग. ज. झ. कहो-कहो-च.
११. लाख—झ. १२. जबहु—क. जबहि-ख. तबहिं-झ.
१३. ले—क. लौ-ख. ग. ड. च. लों-घ. लोय-ज.
१४. बाधी—क. बधी-ग. बाधी-ड. १५. मूढी—झ. मूठि-ग. मुठी-छ. ज.
१६. मे—ख. ज. मैं-ग. ड. में-घ. च.
१७. जान्यों—क. ख. छ., जानो-ग. जांन्यों-घ. ज. जांन्यो-च. जानो झ.
१८. वृज—ज. १९. जाइ—क. च. छ. झ. जाय-ख. घ. ताइ-ज.
२०. के—क. घ. ज. कें-ख. च. कैं-छ.
२१. निरदया—क. निर्दे ख. निरदय-ग. निर्दय-घ. ड. च. झ. लिरदे-ज.
२२. तुमरों—क. ख. ग. घ. छ. तुम्हरो-च. ड. तुह्मरो-ज.
२३. रूप—शब्द ज प्रति में नहीं है।
२४. जो—घ. ड. च. छ. ज. झ. २५. तुमको—क. ज. तुह्मको-ग. छ.
२६. अवलंभंही—क. अवलंबही-ख. छ. आवलंवही-च.
२७. तिनको—क. नीकें-ख. च. तिहिनीके-ग. नीके-घ. ज. नीकैं-ड.
२८. मेलो—क. घ. च. छ. ज. डारो-ख. मेलो-ग.
२९. कुप—ज. ३०. कौन—क. ख. ज. को-घ. कौंन-ड. कोंन-च.
३१. ये—झ. ३२. हैं—क. ज. हे-ख. च. धर्म है—शब्द घ प्रति में नहीं है।

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ६८ पर और ख प्रति में क्रमांक ६४ पर दिया गया है।

पुनि[१] पुनि[२] कहै[३] अहो स्याम[४] जाय[५] वृन्दावन[६] रहिये[७] ॥
परम प्रेम[८] को[९] पुंज[१०] जाय[११] गोपिन[१२] संग[१३] लहिये[१४] ॥
और[१५] क्रिया[१६] सब[१७] छांडि[१८] कै[१९] उन[२०] लोगन[२१] सुख[२२]देहु[२३] ॥
नातरु[२४] टूट्यौ[२५] जात[२६] है[२७] अबही[२८] नेह[२९] सनेह[३०] ॥
करौगे[३१] तौ[३२] कहा[३३] ॥७२॥

---

१. पुंनि—ज.
२. पुनि पुनि के स्थान पर क प्रति में फुन, ख प्रति में अपनी और ग प्रति में पुनि पाठ मिलता है। पुंनि-ज,
३. कहे—क. ख. घ. ज. कहौं-ग. छ. ज. कहें-च. ४. स्यांम—च.
५. जाय—ख. जाइि-ग. जाइ-ड. छ. ज. चलो-भ.
६. ब्रिदाबन—क. ब्रिदावन-ग. व्रंदावन-छ. व्रंदाबन-भ.
७. रहीए—क. रहिये-ख. च. रहीये-ग. रहिये-ड. जैए-भ.
८. प्रेम—ग. प्रेंम-घ. च. ज. ९. को—क. च. छ. की-ख. को-घ. ड. के-ज.
१०. पुज—छ. ११. जाइ—क. ड. ज. भ. जहां-ख. जाइि-ग.
१२. गोपन—क. गोपी-ख. गोपिनि-ग. भ. गोपिन-ड. च. १३. सग—ग.
१४. लहीए—क. लहियें-ख. च. लहियै-ग. ड. लहीयै-ज. लहिए-भ.
१५. और—ख. ग. घ. च. ज.
१६. प्रिया—क. ग्राम-ग. क्रपा-ग. छ. भ. क्रया-च.
१७. सभ—क. १८. छाड—क. ख. छाडि-ग. घ. ड. छ.
१९. के—क, छ. ज. कें-ख. कै-छ २०. हम—ड. च. ज. ऊन-छ.
२१. लोकन—क. २२. सुख—ख. ग. च. भ.
२३. देह—क. देउ-ग. घ. भ.
२४. नांतर—क. ख. अबही-ग. नातर-घ. च. छ. ज. ग. भ.
२५. अबही—क. टूया-ख. टूटो-ग. भ. टूट्यो-छ.
२६. जातु—ग.
२७. हैं—ख. हें-घ. हे-ड. च. ज
२८. टूटो—क. अब हें-ख.
२९. ने सु—ग. ३०. सनेहु—ज.
३१. करेंके—क. सुनो-ख. ३२. व्रजराजज—ख. तव-ठ. तों-छ.
३३. नागरी—ख. घ प्रति में पूरी टेक छूट गई है।

● क प्रति में यह छंद क्रमांक ६९ पर और ख प्रति में क्रमांक ६५ पर दिया गया है।

सुनत[१] सखा[२] के[३] बैन[४] नैन[५] भरि[६] आये[७] दोऊ[८] ॥
विवस[९] प्रेम[१०] आवेस[११] रही[१२] नाहीं[१३] सुधि[१४] कोऊ[१५] ॥
रोम[१६]रोम[१७] प्रति[१८] गोपिका[१९] ह्वै[२०] गये[२१] सांवरे[२२] गात ॥
कल्पतरोवर[२३] सांवरो[२४] ब्रजवनिता[२५] भई[२६] पात[२७] ॥
उलहि[२८] अंग[२९] अंग[३०] तें[३१] ॥७३॥*

---

१. सुंनत—ज.
२. सखा—ख. च. झ.
३. के—ख.
४. वेंन—क. ग. बैन-ख. ङ. वे न-घ. ज. वैन-च
५. नैंन—ख. नेन-घ. नेंन-च. ज.
६. भर—क.
७. आऐ—ग. च. आये-छ.
८. दोउ—ख. ज.
९. विविस—क. विषम-छ. विशम-ज.
१०. प्रेम—घ. च.
११. आवेश—क. ख. आबेश-छ.
१२. रहि—घ.
१३. नाहन—क. नाहिन-ख. घ. नाही-ग. ङ. छ. नांहिन-च. नाहि-ज.
१४. सुध—क. छ.
१५. कोई—क. कोउ-ख. ज.
१६. रोम—घ. च.
१७. रोम—च.
१८. प्रत—क. सव-ज.
१९. गोपकाका—क. गोपीका-ख. गोविका का-ग.
२०. होइ—क. ह्यौ-ग. ह्वे-घ. ज. ह्वैं-च.
२१. गइ—क. गई-ख. झ. गये-च. गऐ-छ. ज.
२२. सारो—क. सगरे-ख. सिगरे-ग. सावरे—घ. ङ. सारे-ज.
२३. कामतरोवर—क. घ. कलप तरोवर-ख.
२४. सावरो—ख. ज. सावरौं-ग. सावरों-घ. ङ.
२५. ब्रजवनता—क. मानो-ख. वृजबनिता-ग.
२६. कीए—क. व्रजवनिता-ख. सव-ग. ई-च. भइ-छ. ज.
२७. पाति—छ.
२८. उलह—क. उलही-ख. छ. ज. उसहे-ग. उलटि-झ.
२९. अं—घ., ३०. अंग अंग—ज.
३१. ते—ख. ङ. च. छ. ते-ग. अंग तें—शब्द घ प्रति में छूट गये हैं। ते-ज.

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ७० पर और ख प्रति में क्रमांक ६६ पर दिया गया है।

ह्वै[१] सुचित[२] कहि[३] भले[४] सषा[५] पठये[६] सुधि[७] लावन[८] ॥
औंगुन[९] हमरे[१०] आनि[११] तहां[१२] तें[१३] लगे[१४] दिषावन[१५] ॥
मोमें[१६] उनमें[१७] अंतरा[१८] एकौ[१९] छिन भरि[२०] नांहि[२१] ॥
ज्यों[२२] देषी[२३] मो[२४] मांझ[२५] वे[२६] त्यों[२७] मैं[२८] उनहीं[२९] माहिं[३०] ॥
तरंगनि[३१] वारि[३२] ज्यों[३३] ॥७४॥*

---

१. हो—क. ह्यो-ख. ह्वे-ग. ज. ह्वै-च.
२. सुचेत—क. घ. ड. च. छ. ज. सचेत-ख. ग.
३. कहे—क. कही-घ. ड. छ. ज. ४. भले—क. चले-ग.
५. सखा—ख. च. झ. साषा-ग.
६. पठीए—क. पठाए-ग. पठए-घ. ७. सुध—क. छ.
८. ल्यावन—क. ख. ग. छ. लावनि-ज.
९. ओगन—क. औगुण-ख. अवगुन-घ. च. छ. अवगुंन-ज.
१०. मेरे—क. हमरे-ख. च. ११. आन—क. आंनि-घ. च. ज.
१२. तहा—क. ग. घ. ड. उहां-झ.
१३. ते—क. ख. घ. च. ज. ते-ग. छ. ते-ड. १४. लगो—क. लगें-च.
१५. दिखावन—ख. च. ज. झ. सिषावनि-छ.
१६. उनमे—क. उनमें-ख. मोंमे ग. मोमें-घ. च. मोमै-ड. मोमैं-ज.
१७. मोमे—क. मोमें-ख. उनिमें-ग. उनमें-घ. च. ज. उनमे-ड.
१८. अंतरो—क. अहो—ख. अंतरों-छ. आंतरो-ज.
१९. एके—क. ज. सखा-ख. एको-घ. ड. एकौ-च. इकौ-छ.
२०. भर—क. झ. २१. नाह—क. अंतरनांहि-ख. नाहि-ग. घ. ड.
२२. जो—क. घ. झ. ज्यों-ख. च. ज. ज्यो-छ.
२३. देखे—क. देष-ग. देखी-ज. देखो-झ. २४. मो—ग.
२५. माझ—क. घ. ड. छ. माह-ख. ग. मांन-च.
२६. ये—ग. में-ब. वै-ड. छ. वें-च.
२७. त्यों—क. च. त्यो-ख. घ. छ. त्यौं-ग. तो-ज. तौ-झ.
२८. हम—क. हों-ख. हो-ग. मै-ड. में-च. ज. २९. उनिही—ग.
३०. माह—क. माहि-ग. घ. ड. मांझ-च. नाहि-ज.
३१. त्रिगुण—क. तरंग-ख. तामे-ग. तरंगिन-घ.
३२. की वार—क. और वार-ख. रंगनि-ग. वार-घ. च. छ. ज.
३३. जो—ख. घ. च. वराज्यो ग. ज्यो-ज.

* क प्रति में यह छंद क्रमांक ७१ पर और ख प्रति में क्रमांक ६७ पर दिया गया है।

गोपिन[1] रूप[2] दिखाइ[3] एक[4] करिकै[5] बनवारी[6] ॥
ऊधौ[7] भरम[8] निवारि[9] डारि[10] व्यामोह[11] कौ[12] जारी[13] ॥
अपनौ[14] रूप[15] दिखाइ[16] कै[17] लीनौ[18] बहुरि[19] दुराय[20] ॥
नंददास[21] पावन भयौ[22] जो[23] यह[24] लीला[25] गाय[26] ॥
प्रेम[27] रस[28] पुंज[29] की[30] ॥७१॥●

---

१. गोपी--क. ख. घ. ड. च. छ. ज. गोपि-ग.
२. आप—क. घ. ड. च. छ. ज. येक-ग.
३. दिषाय—ख. घ. ड. छ. दिषाइ-ग. दिखाइ-झ.
४. अंग—ख. येक-ग. तबे-झ.
५. बरके—क. ख. घ. च. करिके-ज. मोहन-झ. ६. बनमारी—ग.
७. उधव—ख. उवौ-घ. च. ऊवो-ड. उधों-ज.
८. को भर—क. के भरे-ख. को शर्म-म. को मर्म-च. को भ्रम-छ. कौ मर्म-ज. ९. नैन—क. ख. निवार-च.
१०. डार—क. च. डारी-ख. ग. छ. प्रतियों में डारि-शब्द नहीं है। व्याह-घ. माह-ड. ११. मुष—क. मोह-घ. माया-ड. व्याहमोंह-च.
१२. प्यायो—क. करि-ड. १३. झारी—क. डारी-ड.
१४. अपने—क. ख. अपनो-घ. ज. अपनों-च. छ. अघुनो-झ.
१५. नैत्र—क. नित्य-ख. रूपु-ग. रुप-ज.
१६. निहार—क. विहार-ख. दिषांइ-च. झ. दीषायइ-छ.
१७. के—क. ग. की-ख. कैं-घ. छ. कें-च. ज. कै-झ.
१८. लीने—क. लीन्ही-ख. लीनों-च. छ. लीनो-ज.
१९. बहुर—क. वहुर-ख.
२०. दुराइ—क. ड. झ. दुराइ-ग. दुराय-घ. दुराई-ज.
२१. जनमुकुंद—क. ड. जनमकुंद-ग. जनमुकंद-घ. च. छ. ज.
२२. भयो—क. घ. छ. ज. भयें-ख. भये-ग. ड.
२३. सो—क. ख. घ. च. छ. ज. यह-ड. २४. सुभ—ड.-ग-झ.
२५. लीलहा—क, लील-ग. २६. गाइ--क.ड. ज. गाइ-ग.
२७. संदेह--ख. प्रेम-घ. च. २८. तुम—ख. २९. जिन—ख.
३०. 'पुंजकी' के स्थान पर घ. च. छ. प्रतियों में 'पुंजनी', ग प्रति में 'पूजती' और ड प्रति में 'पूजनी' पाठ मिलता है। करो-ख.

● क प्रति में यह छंद क्रमांक ७२ पर और ख प्रति में क्रमांक ६८ पर दिया गया है।
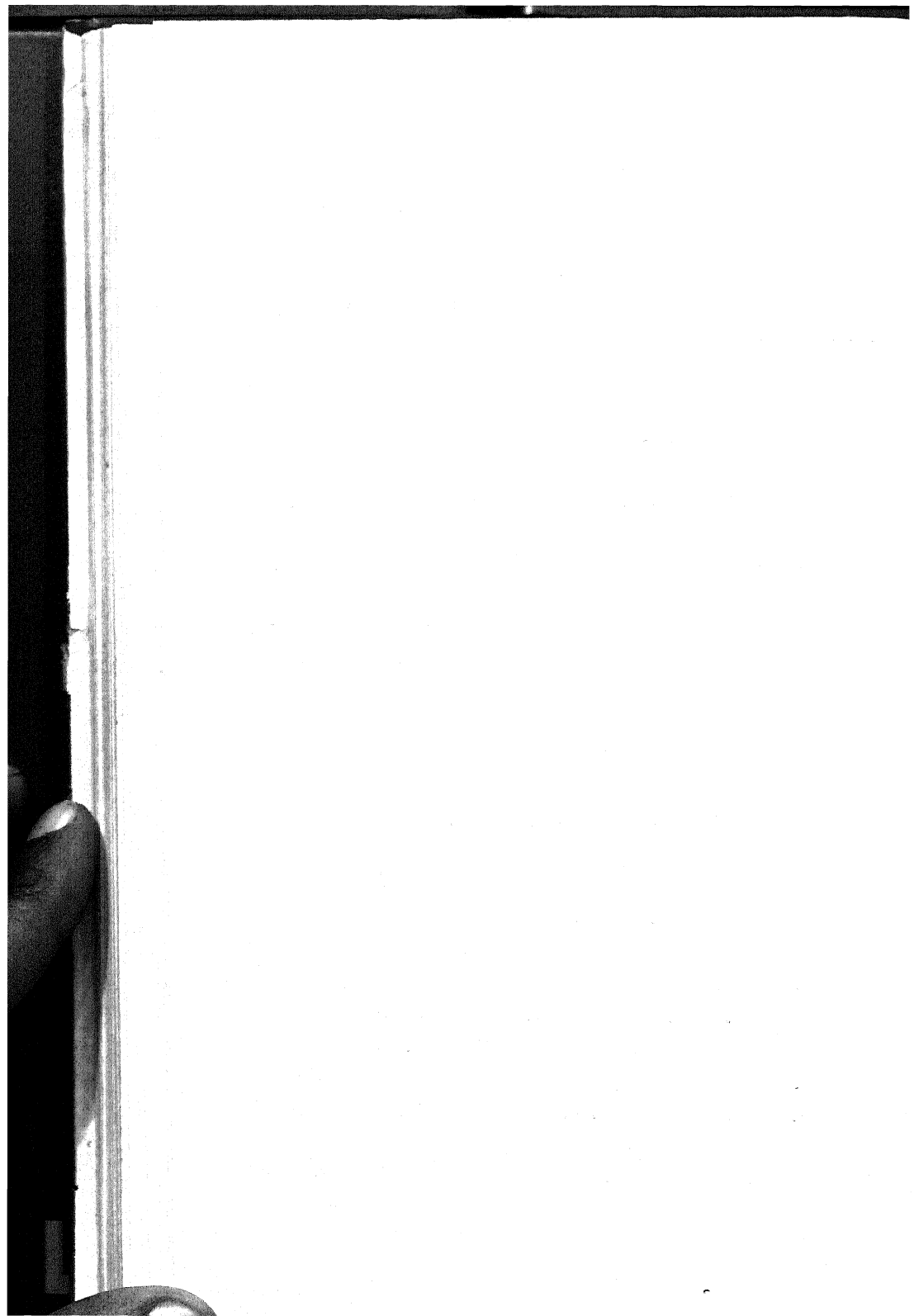
परिशिष्ट

(क) भाषा दशम स्कन्ध में नंददास द्वारा अनूदित भँवरगीत
(ख) शब्दार्थ और संकेत
(ग) भँवरगीत का अन्य कथा-कोश
(घ) सन्दर्भ साहित्य-सूची

परिशिष्ट—क

भाषा दशम स्कन्ध में नंददास द्वारा अनूदित भँवरगीत

ग्रंथ का नाम—दशम स्कन्ध.

कवि—नंददास.

पृष्ठों का आकार—१०½''×१०½''

पत्र संख्या—१ से १५८ तक,

पूर्ण या अपूर्ण—पूर्ण,

प्रति पृष्ठ पंक्ति—१६,

प्रति पंक्ति अक्षर—२६-२७,

ग्रंथ के स्वामी—श्री हरगोविंदजी पुजारी,

पता—श्री यशोदानंदन मन्दिर, श्री सत्यनारायण मन्दिर की गली, अठखंभा, वृन्दावन,

ग्रंथारम्भ—श्री कृष्णाय नमः ॥ उँ नमः परमात्मने ॥ श्रीकृष्ण चरित्र दशम स्कन्ध नंददासकृत भाषा लिख्यते ॥

ग्रंथान्त में पुष्पिका—इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कन्धे भाषा कृत नवि अध्याय ॥६०॥ संवत् १७६६ वर्षे मास पोस मासे कृष्ण पषे ८ अष्टमा बुधवासरे लीषीतं उदेपुर मधे ॥ दमपुज्ञातीतीवाडी दुरगादासेन लीषीतं॥ लीषावीतं वडजी उदावत पठनारथे ॥श्री॥ श्लोक संख्या ॥६००॥००,

सूचना—उक्त प्रति में भँवरगीत ८६ वें पत्र के द्वितीय पृष्ठ से प्रारम्भ होता है। इसमें अनेक लिपिदोष हैं, जिनका शुद्ध रूप पाद-टिप्पणी में दिया जा रहा है—

सोरठा—**प्रेम रीति जीय जानि ॥ बयालीस अध्याय में ॥**

बृज की वेदन जानि ॥ ऊधो तहां पठाइ हरि ॥१॥

कछुक दिवस बीति गये जबें ॥ सुधि आई गोपन की तबें ॥

तब हरि ऊधो लये बुलाय ॥ कही बात ताओं समुझाय ॥२॥

लेहु जाहु जाउ[1] गोपन की सुधि ।। उनन कै हृदे प्रेम की वुद्धि ।।
हम आए मथुरा कौ जबें ।। उपज्यो विरहु गोपिकन तबें ।।३।।
तब हम उनसों कहो विचार ।। हम वे[2] आवत है नारि ।।
तातें वे जीवत सब रही ।। जद्यपि विरह प्रेम में वही ।।४।।
नातरु सब मर जाती वांम ।। वार वार कही यो स्याम ।।
अब तुम चलौ बेगि दे राय ।। आवहु उनकौं जोग सिषाय ।।[3]
मात जसोदा नंद सो देव ।। कहो प्रनाम हमारी सेव ।।
सबहीं सों कहीयों परनाम ।। गुरु के शिष ऊषधव[4] तम नाम ।।६।।
यह सुनिकै ऊधव चले राय ।। पहुचे संध्या समे जाय ।।
अैसो देष्यो श्री ब्रजवास ।। गरजत बैल फिरे चिहु पास ।।७।।
सवही गउ सोभजे इसी ।। कामधेनु सुरपति कै जिसी ।।
उधव गयौ गांव ढिग जवै ।। गोषुर रज बहु ऊड़ी तबें ।।८।।
काहू दर[5] न पायो राय ।। पहुँचे नंद ग्रेह में आय ।।
देषत नंद उठे विहसाय ।। ऊधव लीने कण्ठ लगाय ।।९।।
बहुत भांति कीनि मनुहार ।। तपत नीर सौ चरन पषार ।।
षट्रस भोजन जैयौ राइ ।। कीयो विश्राम सेज पर जाइ ।।१०।।
ऊधव सुष में बैठे जबें ।। कुसल नंदजू बूझी तबें ।।
हमरे मित्र वंध वसुदेव ।। तिनके कुसल प्रसन विधि भेव ।।११।।
राम क्रिस्न दोऊ नीके वीर ।। ब्रज को जीवन स्याम सरीर ।।
वडवानल अचयो गोपाल ।। रक्षा करि राषे सब ग्वाल ।।१२।।
विग्रह जिते मांझ सब[6] ब्रज भए ।। ते सब षोच स्याम सर लए ।।
ना हरि आए हमरै तात ।। तुम जिन जानौ जादों गात ।।१३।।
हम राखे सब पाकर लाल ।। है हरि तीन लोक प्रतिपाल ।।
अलष अमर तिहु पुर के राय ।। सोई प्रगट भए हैं आय ।।१४।।
हम यह जान करी हरी सेव ।। ग्रौर वात जिनसमझौ[7] देव ।।
इतनी बात नंद कही जबें ।। भए प्रश्न[8] मन ऊधव तबें ।।१५।।
पुनि ऊधव उठि विनई सेव ।। नीके आहिं निपट वसुदेव ।।
नीके राम क्रिस्न दोऊ राय ।। कहयौ प्रनाम तुमसों हितु पाइ[9] ।।१६।।
सुनौ नंद मन में करि ग्यानं ।। जिनके हृदं कृष्ण कौ ध्यान ।।

---

१. जाउ शब्द अनावश्यक है । २. वे की अपेक्षा — तौ-पुनि — चाहिए । ३. छंद संख्या ४. लिपिकार ने छोड़ दी है । ५. ऊधव, शब्द होना था । ६. यहाँ दर की अपेक्षा दूर शब्द चाहिए । ७. सब शब्द आवश्यक नहीं है । ८. समझौ । ९. प्रसन्न । ४. पाय ।

मन वच सेव कृष्ण करै ॥ तुलसीदल हरि ऊपर धरै ॥१७॥
निस दिन करै क्रिस्न की सेव ॥ साचो जीवन ताकौं देव ॥
नवधा भक्ति कृष्ण की करै ॥ तिनके हरि संकट सब हरै ॥१८॥
यह सुनि नंद जसोदा राय ॥ कीनों प्रेम रुदन ता ठाय ॥
तब फिरि ऊधव विनई सेव ॥ अब दुष जनि कीजै देव ॥१९॥
कमल नैन त्रिभुवनपति राय ॥ दें हैं तुमको दसन[1] आय ॥
कहत बात निशि बीती सबें ॥ घरी च्यार पछिली रही तबें ॥२०॥
दही विलोचन को उठि वाम ॥ धूप दीप करी अपने धाम ॥
अरुन वदन अरुनोदै बार ॥ भुजा नितंब चलै त सु ढार ॥२१॥
नवत कमकर[2] नारि की इसी ॥ झंझी कमल पवन लगि जिसी ॥
कंकन चूरई बधि सोर ॥ छुद्र घंटिका नूपुर सोर ॥२२॥
इन करि सव सोभित ब्रज ऐसों ॥ गर्जे मेघ पर्वत में जैसो ॥
सुन्यो सबद इ उधो जबें ॥ अति आनंद मगन भए तबें ॥२३॥
धनि धनि जदुपति हरि राइ ॥ जबै ले सुष के इहि ठाय ॥
ऐसे करत भोर भयों जबें ॥ ललिता कुंडि न्हान गए तबें ॥२४॥
गोपीहूं उठि कै ता बार ॥ कंचन रथ देष्यौ ता द्वार ॥
देषि गोपिकन मीड़े हाथ ॥ आए अक्रूर बहुरिहुं नाथ ॥२५॥
जिन पापी सर्वसु हरि लियो ॥ बहुरि आइ दरसु तिन दीयै[3] ।
है कहि गोपी आगे चली ॥ सषी सहज में एकें मिली ॥२६॥
उधव उतरे आए न्हाय ॥ देषत गोपी रही भुराय ॥
पीत वसन अरु कुंडल कांन ॥ ए को आवतु क्रिस्न समान ॥२७॥

दोहा—इंदा विंदा राधिका ॥ स्यामा कामा आय ॥
ललिता मिलि चंद्रावली ॥ सवे भई इकठाय ॥२८॥

इति श्री भागवते दसम स्कन्धे छयालीसमोध्याय ॥४६॥

सोरठा ॥ गोपिन कूं समझाइ ॥ सैंतालीस अध्याय में ॥
बहुरि भेंटि नंदराइ ॥ ऊधव मथुरा आइ हैं ॥१॥
देषे ऊध[4] गोपिन जबें ॥ अति आनंद भयो सुष तबें ॥
पूछ प्रश्न तिन विनई सेव ॥ नीके है त्रिभुवनपति देव ॥२॥

---

१. दरसन । २. कमर । ३. दियो-शब्द शुद्ध रूप है ।

४. उधव

ऊधव तुम आये इहि ठाम ।। नंद मिलन को आए स्याम ।।
हम तो तऊ न तोरी प्रीति ।। उन सब करी लोभ की रीति[१] ।।३।।
लोभी प्रीति दाम ते राय ।। परजा मिली तेज ते आय ।।
सिव को विद्या लगि हेत ।। पंछी तरफली तौ लो देत ।।४।।
मारीहु मारि भिषारी सहे ।। पावै भीष बहुरी नहीं रहै ।।
वन मृग सुष जइ लगि नहीं जरै ।। लोभी प्रीति लोभ लों करै ।।५।।
स्वारथ प्रीति करि गये स्याम ।। वारंवार कहै ब्रजवाम ।।
उधव गोपी ठाढ़ी जहा[२] ।। उडत भवर एक आयो तहां ।।६।।
बैठे उड़े करै गूंजार ।। गोपी फिर बोली ता वार ।।
कही बात उधव सौ जिती ।। लै लै नाम भंवर कु तिती ।।७।।
जैसी जिनि मुषि निकरी तबै ।। इकर बात कही मिलि सबै ।।
अरे असित षटपद सुनि बात ।। कुटिल कपट सब तेरो गात ।।८।।
अरे विहंगम वन के मीत[३] ।। ति ने करी हमारी चित ।।
तैं त्यागी चंपे को संग ।। तातें भयो सावरे अंग ।।९।।
ब्रजवनिते तिनकों द्रुम देषत[४] ।। कीयो जाय कुविजा सों हेत ।।
तुम तीन्यौं जग कपटी नाथ ।। बहुत कहा हम गावे गाथ ।।१०।।
काटि नाक सूपनषा कांन ।। अनाथ करी श्री भगवान ।।
बाली कपि मार्यौ, बेकाज ।। बावन ह्वै छल्यो बलिराज ।।११।।
सुनहु सषी जिन कीजै संग ।। सबे विधि बुरे सांवरे अंग ।।
लछमी क्यों पतिआई इनें ।। सबहिन कौं दुष दीनो जिनें ।।१२।।
एक कहै सुनि हो ब्रजवाम ।। धरे षेल विपत्याई स्याम ।।
करत भिषारी प्रभुता आई ।। ताही तें सेवत हरी[५] पाई ।।१३।।
एक कहे जसु भलौ मुरारि ।। याही तें गावत ब्रजनारी[६] ।।
एह कहिकै गोपी ही जिती ।। प्रेम मगन ह्वै रोई तिती ।।१४।।
रोई सब गोपिका जबें ।। ऊधव फिरि बचन कह्यो तबें ।।
हरि तुमसों यह कह्यो संदेस ।। मन में जिन कछु करौ अंदेस ।।१५।।
मोकूं भजे दूर ते कोई ।। वेगि ही दरसु तासु को होई ।।
हो सर्वग्य सर्व के देव ।। तन मन हाय करौं जो सेव ।।१६।।
वेग ही दरसु तासु को होई ।। सुत पति छोड़ि भजे जो कोई[७] ।।
अब नारि तजो सब धाम ।। हरि कों भजे होइ निहिकाम ।।१७।।

---

१. मूल प्रति में यह पंक्ति दो बार लिखी हैं । २. जहां । ३. मिल ।
४. दुष देत । ५. हरि ६. व्रजनारि । ७. कोइ ।

जोग तंत तुम साधो वाम ।। सों सव ंथ छांड़ि के वाम ।।
प्रथम आतम दूजो देह ।। ता पाछे सुत पति सूं नेह ।।१८।।
जोग वचन ऊधौ कह्यौ जबै ।। मुरछि परी गोपीका सबै ।।
बहुर्यौ सब ही उठी सभारि ।। करन परेषो लागी नारि ।।१६।।

धन्यासिरी[1] ।।

मुरली बजाइ करि मंत्र सों पठाइ करि मोहन सो डारि करि मनु षेंचि लै गयो ।।
ग्रेह ते बुलाइ कर बन में भुराय करि थित सौं दिषाइ करि उघम सो के गयौ ।।
सबही कौं अंक भरि अधर कौ पान करि अनिल सौ डारि करि आपु अमृत अंचै गयौ ।।
करें न परेषो हरि सुषै कहै अब कोऊ मधुयर स्याम तौ हमहि दुष दै गयौ ।।१६।।[2]

अब हम आसा वाड़ी लोय ।। आसा कीए परम दुख होय ।।
जैसे पंगला आस करि राय[3] ।। ठाढ़ी भई द्वार पें आय ।।१७।।
आसा कीइ[4] परम दुष होई[5] ।। तब सो बाड़ि ग्रेह में गई ।।
आषा तजें सुष भयो गात ।। बहुत कहा अब कहीए[6] बात ।।१८।।
एक कहै हमसे ऐसें स्याम ।। तिनकी आस न बूढ़ी वाम ।।
हरि लीला देषी हित लाइ[7] ।। भयो निरासन हमपे जाय ।।१६।।[8]
एह कहि प्रेम मगन जब भई[9] ।। करी दिलासा ऊधौ तबें ।।
देषी लिप्त कृष्नसों वाम ।। तब ऊधौ कीनौ परनाम ।।२४।।
उधव प्रेम मगन अति भए ।। ह्वै करि विदा नंद पे गए ।।
अहो नंद धनि गोपी वांम ।। जिनकी प्रीति नमन के स्याम ।।२५।।
उनकी चरन कमल रज राय ।। मैं लोंनी सब सीस चढ़ाइ[10] ।।
ऐसे करत बहुत दिन गए ।। ऊधव विदा नंद सों भए ।।२६।।
जेते दिवस व्रज में रहे राय ।। नित्य मिलै गोपिन कों जाय ।।
ऊधव चले विदा ह्वै जबें ।। चलें ग्वाल पहुँचावन तबें ।।२७।।

दोहा—वृषभान भद्रसेन श्रीदामा । अर्जुन सुबल संतोष ।।
कृष्न ऋृषभ अस तेजसी । विदा भए दै धोका ।।२८।।

वरुथ परें व प्रस्थ विशाल ।। विदा भए सबही तब ग्वाल ।।
मथुरा माहि उधौ गए जबै ।। दयौ दर्व उग्रसेनहि तबें ।।२६।।

---

१. धनाश्री । २. छंदसंख्या १६ नहीं, २० होनी चाहिए थी । ३. यह चरण मूल प्रति में दो बार लिखा गया है । ४. किए । ५. होइ । ६. कहिए । ७. लाय । ८. मूल प्रति में छंद संख्या २० से २३ के बदले १६ से १६ तक लिखी गई है । ६. मइ जबें । १०. चढ़ाय ।

देते भेंट कंस को जितो ।। दई नंद उग्रसेनहि तितौ ।।
बहुरि मिले बसुदेवहि जाइ[1] कीयो प्रनाम नंद कौं आय ।।३०।।
पुनि भेटे जादोपति कौं जबें ।। कही बात तब ब्रज की सबें ।।
गोप ग्वाल ब्रज में हैं जितौ ।। ऊधव कह्यौ संदेसौ तितौं ।।३१।।

दोहा—हरि सुख हित ब्रजवाम के ।। उधौ कह्यो संदे[2] सुनाय ।।
अंतरजामी आप जीय ।। मिले निरंतर आय ।।३२।।

इति श्री भागवते दसम स्कन्धे सेंतालीसमोध्याय ।।४७।।

---

१. जाय । २. सदेस ।

ह्रस्व और दीर्घ स्वरो के लेखन की अनेक गलतियाँ उक्त हस्तलिखित प्रति में हैं, जो लिखियाओं की योग्यता और असावधानी से उक्त रचना में आई हैं ।

—लेखक

परिशिष्ट–ख

शब्दार्थ और संकेत

सूचनाएँ—१. अंक संख्या भँवरगीत की छन्द-संख्या की द्योतक हैं।

२. सभी शब्दार्थ भावसापेक्ष हैं।

१. **ऊधौ**=उद्धव, भगवान कृष्ण के अनन्य मित्र, भक्त और ज्ञानमार्गी साधक। **ब्रजनागरी**=ब्रज की सभ्य और सुसंस्कृत नारियाँ, गोपियाँ। **सील**=शील। **लावन्य**=लावण्य। **गुनआगरी**=गुणों का भाण्डार, गुणों से परिपूर्ण। **प्रेम धुजा**=प्रेम की पताका (फहराने वाली), प्रेमियों में अग्रगण्य। **रसरूपिनी**=(प्रेम) रस की साकार प्रतिमा। **उपजावन**=उत्पन्न करना। **सुष पुंज**=सुख का समूह।

२. **तुम पै**=तुम्हारे पास, तुम तक। **समै**=समय। **संकेत**=एकान्त स्थल। **औसर**=अवसर। **इक**=एक। **ठाउं**=स्थान। **बहुरि**=पुनः, फिर। **मधुपुरी**=मथुरा।

३. **ग्राम**=गाँव। **ग्रह**=गृह, घर। **ह्रदै**=हृदय। **प्रेमबेली**=प्रेम की लता। **दृग**=आँख। **पुलकि**=पुलकित। **कण्ठ घुटे**=(भावावेग से) कंठ अवरुद्ध हो गया। **विवस्था**=व्यवस्था, आयोजन।

४. **अरघासन**=अर्घ्य और आसन। **परिकर्मा**=परिक्रमा। **सषा**=सखा, मित्र। **बहु**=बहुत। **बूझत**=पूछती हैं। **सुधि**=हालचाल। **मुष**=मुख। **नीके**=अच्छे। **बलबीरजू**=बलवीर अर्थात् बलरामजी और बलराम के बीर अर्थात् उनके भाई कृष्ण, यहाँ दूसरा अर्थ ही अभीष्ट है। **रसाल**=मधुर, सरस।

५. **संगी**=साथी। **जदुकुल**=यदुकुल, यादववंश। **सगरे**=सब। **सबन के**=सभी के। **कुसलात**=कुशलता। **हौं**=मैं। **तीर**=निकट, पास। **थोरे**=थोड़े। **जिय**=मन।

६. **आनन**=चेहरा। **आवेस**=आवेश। **जनायौ**=प्रकट किया। **विह्वल-ह्वै**=व्याकुल होकर। **धरनीपरी**=धरती पर गिर पड़ी। **ब्रजबनिता**=गोपियाँ। **मुरझाय**=कांतिहीन होकर। **जल-छींट**=पानी के छींटे। **प्रबोधहीं**=चेताते हैं, समझाते हैं।

७. **आंपिन**=आँखों से । **देषो**=देखो । **अषिल**=अखिल, सम्पूर्ण । **विस्व**= विश्व, सृष्टि । **विसेषो**=विशेष । **लोह**=लोहा । **दारु**=देवदारु, लकड़ी । **पाषान**= पत्थर । **माँहि**=में । **अकास**=आकाश । **सचर**=गतिशील, चेतन प्राणी । **अचर**= जड़ (पदार्थ) । **बरतत**=काम में लेते हैं । **जोति ब्रह्म परकास**=ब्रह्म की ज्योति का प्रकाश ।

विशेष—इस छंद में उद्धव ब्रह्म की सर्वव्यापकता का प्रतिपादन करते हैं और इस तथ्य का संकेत करते हैं कि ब्रह्म हम सबके सन्निकट है । उसे देखने के लिए ज्ञान की आँखें—अन्तश्चक्षु चाहिए ।

८. **कासों**=किससे । **मारग**=मार्ग । **सूधों**=सरल, सीधा । **नैन**=नेत्र । **बैन**=वचन, वाणी । **स्त्रुति**=कान । **नासिका**=नाक । **दिषाय**=दिखाकर । **सुधि-बुधि**=होश हवास । **ठगौरी**=ठग विद्या ।

९. **सगुन**=सगुण । **उपाधि**=एक वस्तु को दूसरी वस्तु बतलाने का छल, कपट । **निरगुन**=निर्गुण । **निर्लेप**=निर्लिप्त । **तीनों गुण**=सगुण साकार ब्रह्म में आरोपित सत्, चित् और आनंद गुण (जो निर्गुण ब्रह्म पर लागू नहीं होते क्योंकि वह तो गुणातीत है, निर्गुण है) । **पांय**=पाँव । **अच्युत**=कृष्ण, ब्रह्म, जो कभी अपने स्थान से स्खलित नहीं होता । **प्रांन**=प्राण ।

विशेषः—उद्धव ब्रह्म को सशरीर नहीं, ज्योतिस्वरूप, सबका प्राण और निराकार मानते थे । वे उसे संपूर्ण विश्व में व्याप्त रहने पर भी सबसे निर्लिप्त समझते थे, अतः उनकी दृष्टि में ब्रह्म का सगुण-साकार रूप उपाधिमात्र था ।

१०. **मुष**=मुख । **नाहिंन**=नहीं । **हुतो**=था । **किन**=किसने । **षायो**= खायो । **धायो**=दौड़ा । **अंजन**=काजल । **पूत**=पुत्र । **ब्रजनाथ**=ब्रज के स्वामी ।

११. **कोउ**=कोई । **षंड**=खण्ड । **ब्रह्माण्ड**=वह अण्डाकृति क्षेत्र, जिसमें संपूर्ण विश्व समाया है । **तें**=से । **जाता**=उत्पन्न । **जोग जुगति**=योग की युक्ति, योग-साधना । **परधाम**=परमधाम, मोक्ष ।

१२. **ताहि**=उसे । **जोग**=योग । **जोगजोग**=योग (साधना करने) के योग्य। **जिहि**=जिसे । **पियूष**=अमृत । **समेटं**=इकट्ठा करना, समेटना । **धूर**=धूल ।

१३. **ईस**=शिव, शंकर । **धूरछेत्र**=कर्मक्षेत्र, संसार । **हरिपद**=मोक्ष । **लोक चतुर्दस**=चौदह लोक यथा–१. भूलोक, २. भुवर्लोक, ३. स्वर्लोक, ४. महर्लोक, ५. जनलोक, ६. तपलोक, ७. सत्यलोक (ब्रह्मलोक); ८. अतल, ९. नितल, १०. वितल, ११. गमस्तिमान, १२. तल, १३. सुतल और १४. पाताल (देखिए—संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, षष्ठ संस्करण, पृष्ठ ८७७)। **सप्तदीप**=पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े और मुख्य विभाग–१. जंबू, २. कुश,

३. प्लक्ष, ४. शाल्मलि, ५. क्रौंच, ६. शाक और ७. पुष्कर द्वीप। **नवखंड**=पृथ्वी के नौ खण्ड—१. भरत, २. किंपुरुष, ३. भद्र, ४. हरि, ५. हिरण्य, ६. केतुमाल, ७. इलावृत्त, ८. कुश और ९. रम्य।

१४. **कर्म अधिकारी**=कर्मसाधना के मर्म को समझने वाले अधिकारी, ज्ञानी। **सानै**=सानना, मिलाना। **लौं**=तक। **कर्म बंध**=कर्म बंधन में बद्ध। **बिमुख**=विमुख, प्रतिकूल।

विशेष—गोपियाँ इस छंद में कर्म को धूल और प्रेम को अमृत मानकर कर्म-साधना की अपेक्षा प्रेमाभक्ति की महत्ता का संकेत करती हैं। उनके मतानुसार कर्म-काण्ड में फँसा हुआ जीव कर्मकाण्ड में अपना ध्यान केंद्रित कर लेता है और इसीलिए उसका ध्यान ईश्वर के प्रतिकूल हो जाता है। इसके विपरीत भगवद्प्रेमी हरि को अपने हृदय में प्रतिष्ठित कर उनके नित्य दर्शन और सन्निधि का लाभ पाता है।

१५. **सद्गति**=मोक्ष। **बली**=शक्तिवान। **त्रिभुवन**=धरती, पाताल और स्वर्ग। **कर्मन तैं**=कर्मों से। **पारब्रह्मपुर वास**=मोक्ष में निवास, मोक्ष प्राप्ति।

१६. **बेरी**=बेड़ी, जंजीर। **पांइन**=पैरों को। **दोउ**=दोनों। **कोउ**=किसी भी। **मानो बहु तेरी**=अधिक मान्यता या महत्व दो। **पचि मरे**=थक-थककर मर गये। **बिषै**=सांसारिक सुख। **वासना**=इच्छा, कामतृष्णा।

१७. **काहे कों**=क्यों। **द्वार**=दरवाजे। **इंद्रिन**=इंद्रियों। **मारें**=मारना, दमन करना। **जरि**=जलकर। **लीन होइ**=एकाकार होना। **सायुज्य**=मुक्ति की वह अवस्था, जिसमें जीव ब्रह्म में मिलकर एक रूप हो जाता है। **समाइ**=समाना, मिलना, तद्रूप होना।

१८. **भजै**=भजता है। **निजरूपहि**=अपने आत्मरूप को। **उर आनै**=हृदय में लाना, अवस्थित करना। **बांमी**=साँप के बिल के ऊपर दिखाई देने वाला मिट्टी का ढेर।

विशेष—इस छंद में गोपियों ने कृष्ण को घर आया हुआ नाग और निर्गुणो-पासना तथा योग द्वारा ब्रह्म की आराधना को 'बांमी' की पूजा कहकर अपने लोका-नुभव के आधार पर निर्गुणसाधना और योग की अपेक्षा सगुणोपासना और भक्ति के वर्चस्व का महत्व प्रतिपादित किया है।

१९. **नेति**=न+इति, अनंत। **रचि**=रचकर, बनाकर। **खोजि**=खोजकर। **किहि टेक**=किसके सहारे टिका है।

२०. **तरु**=वृक्ष। **जमै**=जमता है। **वा गुन**=ब्रह्म का गुण, सच्चिदानंद। **परछांह**=परछाईं, प्रतिबिम्ब। **माया दरपन**=माया का दर्पण। **गुन न्यारे भये**=

माया के संस्कार से ब्रह्म के सत्, चित और आनंद गुण जीव में सत् रज और तम में बदल कर भिन्न हो गये। **अमल**=स्वच्छ, निर्मल। **वारि**=पानी।

विशेष—गोपियों के मन से जैसे बीज के बिना वृक्ष उत्पन्न नहीं होता, उसी प्रकार सगुण ब्रह्म के बिना सगुण सृष्टि की उत्पत्ति संभव नहीं है। जीव और ब्रह्म में—शुद्धाद्वैतदर्शन के अनुसार—शुद्ध अद्वैत है। जीव ब्रह्म में अभेद है। केवल माया के संयोग से ब्रह्म के विशुद्ध सत, चित् और आनंद गुण जीव में सत, रज और तम् बन गये हैं। यह प्रक्रिया ठीक वैसी ही है, जैसे शुद्ध जल कीचड़ के संयोग से गँदला बन जाता है।

२१. **माँझ**=में। **आनि**=लाकर। **सानो**=मिलाना। **बदत**=कहते हैं।

२२. **स्वास मुष त**=मुख की श्वास से। **निसरे**=निकले। **आसक्ति**=अनुरक्ति, लगन। **बिसरे**=भूल गये। **किनहु**=किसीने भी। **देषि**=देखा। **विसेष**=विशेष।

२३. **लौ लागै**=प्रेम होना। **तरनि**=सूर्य। **गुनातीत**=गुणों से परे।

२४. **तरनि**=सूर्य। **मै**=मय। **दुराई**=छिपा हुआ है। **दिव्य दृष्टि**=अन्तर्दृष्टि। **वे आँषें**=अन्तश्चक्षु, मन की आँखें। **तिनकों**=उन्हें। **विस्मै**=आश्चर्य। **कहा है**=क्या है। **परे**=पड़े **कूप**=कुआँ।

२५. **नित**=नित्य, नियमित रूप से। **तामें**=उसमें। **कौन पै**=किससे। **निहकर्म**=निष्कर्म।

विशेष—उद्धव भक्ति को नित्य कर्म के अन्तर्गत मानते थे। भक्ति और योग दोनों ही कर्म हैं। संसार में कर्म से कोई बच नहीं सकता। मोक्ष की प्राप्ति के लिए आत्मा के ब्रह्म से तादात्म्य के लिए—क्रमशः कर्मों के द्वारा ही सायास कर्मों के बंधन काटे जाने चाहिए। क्रम-क्रम से कर्मों के द्वारा कर्मबंधन काट जीव मुक्ति पा सकता है। इस तरह से उद्धव कर्मकाण्ड का पक्ष पुष्ट करते हैं।

२६. **ह्वै**=होकर। **परमान**=प्रमाण। **अतीत**=भूतकाल। **सकल**=सब।

२७. **नस्वर**=नश्वर, नाशवान। **सबहिन**=सभी। **तैं**=से। **वासुदेव**=वसुदेव के पुत्र कृष्ण। **अच्युत**=अचल स्थिर ब्रह्म, कृष्ण। **न्यारे**=भिन्न, अलग। **इंद्रिय दृष्टि विकार**=आँखों की दृष्टि के विकार। **रहित**=बिना। **अधोक्षज**=ब्रह्म, कृष्ण। **प्रापति**=प्राप्ति। **तिनकों**=उन्हें।

२८. **नास्तिक**=अनीश्वरवादी। **निज रूपै**=अपने आत्मरूप को। **भानं**=सूर्य। **करतल**=हाथ की हथेली। **आमलक**=आँवला। **कोटिक**=करोड़ों।

२९, **पियरे**=पीले। **बागे**=अंगे की तरह का एक पुराना कपड़ा, बागा। **तें**=मुषमुख से। **स्रवै**=भरता है। **अंबुज नैन**=कमल के समान नेत्र। **चुचान**=

आँसुओं से भर जाना । **तरक**=तर्क । **रस-रीत**=(प्रेम के) रस की रीति ।

३०. **गुसाईं**=स्वामी । **बिडरात**=इधर-उधर भटकते फिरना । **गाईं**=गाएँ । **फेरि**=पुनः । **कृपाल**=दयालु । **होउ**=होकर । **दुःख जलनिधि**=दुःख के समुद्र में । **बूड़हीं**=डूबते हैं । **कर**=हाथ । **अवलम्बन**=सहारा । **देहु**=दो । **निठुर**=निष्ठुर । **कहं**=कहाँ ।

३१. **दुरि-दुरि**=छिप-छिपकर । **ओट**=आड़ । **हिये**=हृदय । **लौन**=नमक । **हमसी**=हमारे समान । **कोरि**=करोड़ों । **भांत**=प्रकार से । **रावरे**=तुम्हारे । **तोरि**=तोड़कर ।

३२. **दुराई**=छिपाना । **सिषाई**=सिखाई । **अधीन**=वशीभूत । **बोलत-दीन**=दीन वचन बोलती है । **जे**=थे । **मीन**=मछली । **विचारौ रावरे**=तुम स्वयं विचार करो ।

३३. **इतराय**=इठलाना, गर्व करना । **पाय**=पाकर । **प्रभुता**=बड़प्पन, बड़ाई । **अवला वध**=नारी की हत्या (यहाँ कृष्ण द्वारा पूतना के वध का संकेत है) । **बली**=शक्तिशाली । **पराक्रम**=बल, शक्ति ।

३४. **चहत**=चाहते हो । **गिरि**=पर्वत । **धरि**=धारण करके, उठा करके । **व्याल**=सर्प । **अनल**=अग्नि । **विष**=जहर । **ज्वाल**=ज्वाला, लपटें । **राषि लिये**=रक्षा की, बचा लिए । **ठौर**=स्थान । **दाहहो**=जलाओगे ।

३५. **पातक**=पाप । **व्यापै**=व्याप्त नहीं होता, लगता । **करनहार**=करने वाले । **आपै**=स्वयं । **निरदै**=निर्दयी । **पय**=दूध । **प्यावत**=पिलाते समय । **प्रानन-हरे**=प्राण हर लिए ।

३६. **जग्य**=यज्ञ । **जात हे**=जा रहे थे । **समीप**=निकट । **मग**=रास्ता । **कुलदीप**=सुपुत्र । **रघुवंसी कुलदीप**=रघुवंश में उत्पन्न रघुकुल के दीपक राम । **बाल ही रीत यह**=बचपन से इनकी यही रीति है ।

३७. **स्त्रीजित**=स्त्री द्वारा जीते हुए, नारी के वशीभूत । **लक्ष**=लाख । **संधान**=निशान लगाना । **आयुध**=हथियार, शस्त्र । **सूरे**=शूर । **कोप**=क्रोध । **विरूप**=कुरूप । **लोप**=लुप्त ।

३८. **आली**=सखी । **बनमाली**=कृष्ण (यहाँ विष्णु अर्थ अभिप्रेत है) । **अकाय**=अशरीरी ब्रह्म, निराकार ।

३९. **ढीठ**=धृष्ट, अनुचित साहस करने वाला । **सनमुख**=सामने । **सुत**=पुत्र । **सिच्छा**=शिक्षा । **दंड**=हाथ । **बपु**=शरीर । **नषन**=नाखूनों से । **विदार्यौ**=विदीर्ण कर दिया, फाड़ डाला ।

४०. **फरस**=परशु । **कंध**=स्कंध, कन्धा । **छत्री**=क्षत्रिय । **संघारी**= संहार किया । **सोनित**=शोणित, रक्त । **पोखे अपने पित्र**=अपने पित्रों का तर्पण किया, पोषण किया । **निरदै** =निर्दय । **बिलग**=अन्य, भिन्न ।

४१. **दोस**=दोष, बुराई । **नरेस**=राजा । **देसै**=देश में । **दुलही**=दुलहिन । **छुधित**=भूखा । **ग्रास**=कौर । **मुष**=मुख । **काढ़ि**=निकालकर ।

४२. **आवेस**—आवेश । **दुराय**=छिपाना ।

४३. **भरम**=भ्रम । **भाज्यौ**=भाग गया । **तिमिर भाव**=(अज्ञान के) अंधकार के भाव से । **लाज्यौ**=लज्जित हुआ । **रज**=(चरण) धूलि । **कृतारथ**=कृतार्थ, कृतकृत्य । **वार**=न्यौछावर करके । **जोग**=योग्य ।

४४. **कबहुं**=कभी । **रिझाऊं**=आकर्षित करूं । **जिहि किहि**=जिस किसी । **विधि**=रीति, पद्धति । **रीझहीं**=आकर्षित हों ।

४५. **ताही**=उसी । **छिन**=क्षण । **इक**=एक । **कहूं ते**=कहीं से । **तंह**= वहाँ । **ब्रजबनितन**=ब्रजनारियों, गोपियों । **पूंज**=समूह । **मांझ**=में । **अरुन**=लाल **मधुप**=भ्रमर । **आनि**=आकर । **प्रगट्यौ**=प्रगट हुआ ।

४६. **ताहि**=उस । **वितर्कन**=वितर्कों । **घातें**=चोटें । **परसौ**=छुओ । **मम**=मेरे । **इहां**=यहाँ ।

४७. **विश्व**=संसार । **मांझ**=में । **कारे**=काले । **कपटी**=कपट करने वाला । **कुटिज**=धोखेबाज, छली । **मानस मसिहारे**=काले रंग के मनुष्य । **परसिकै**=छूकर । **जरत**=जलता है । **आजु लौं**=आज तक । **भुजंग**=सर्प ।

४८. **स्याम**=काला । **पीत**=पीला । **झनकार्यौ**=झनकार । **पुर**=नगर । **गोरस**=दूध, इंद्रिय रस । **जिनि**=मत, नहीं ।

५०. **अनुरागी**=प्रेमी । **धौं**=न जाने, न मालूम । **अचरज**=आश्चर्य । **कारौ**=काला । **पातकी**=पापी । **पीरौ**=पीला । **जग निंद**=संसार द्वारा निन्दित । **औगुन**=अवगुण, दोष । **आपुने**=अपने । **आपुहि**=स्वयं । **अलिंद**=भँवर । **आरसी**= दर्पण ।

५१. **छबि**=सुन्दरता । **सर्वस** =सर्वस्व । **ता पाछें**=तदुपरान्त, उसके बाद । **जु**=जो । **पतियाय**=भरोसा करे, विश्वास करे । **लहे**=लिए ।

५२. **कुसुम**=फूल । **आपुन सम**=अपने ही समान । **मानै**=मानता है । **मतिमंद**=जड़मति, मूर्ख । **दुबिधा**=द्विविधा, चित्त की अस्थिरता, अनिश्चय । **अनंद** =आनंद । **छंद**=जाल, संघात, समूह ।

५३. **मधुकारी**=मधुरता उत्पन्न करने वाला । **गांठि**=गठरी । **बधकारी**=

वध करने वाली। **रुधिर** = खून। **अधर** = ओंठ। **रंग रात** = लाल रंग। **घात** = शिकार। **जात** = जाता। **किन** = क्यों नहीं। **पातकी** = पापी।

५४. **षटपद** = छः पैरों वाला, भ्रमर। **पसु** = पशु। **लौं** = तक। **विशेष्यौ** = विशेष। **द्वै** = दो। **शृंग** = सींग। **आनन** = चेहरा। **पै** = पर। **कारौ** = काला। **पीरौ** = पीला। **गात** = शरीर। **षल** = खल, दुष्ट, धतूरा (विष)। **बादि** = व्यर्थ, निरर्थक। **रसिकता** = रसिक प्रवृत्ति।

५५. **जे** = जो। **गहि लेत** = पकड़ लेते हैं। **तिनको** = उन्हें। **आतम** = आत्मा। **सुद्ध** = शुद्ध। **संथा** = पाठ, सबक। **जोग चटसार** = योग की पाठशाला।

५६. **निरगुनहि** = निर्गुण ब्रह्म को। **जुक्त** = युक्त। **सबै** = सब कुछ। **पै** = परन्तु। **सकत** = सब। **मांहि** = में।

५७. **लाजौ** = लज्जा, शर्म। **पावन** = पवित्र। **जूठन** = जूठा पदार्थ। **षाय** = खाकर। **कहा** = क्यों।

५८. **जोगी** = योगी। **चेला** = शिष्य। **मधुबन** = 'मथुरा' नगरी अर्थ अभीप्सित है। **तुमरो** = तुम्हारा। **गाहक** = ग्राहक, खरीददार। **पधारो रावरे** = आप पधारिये, यहाँ से चले जाइए।

५९. **सिद्धि-लोग** = सिद्धि प्राप्त पुरुष। **धौं** = न जाने। **गहिलेत हैं** = ग्रहण कर लेते हैं। **मेटि** = मिटाकर। **षोइ** = खोकर।

६०. **संगी** = साथी, मित्र। **तन** = शरीर। **सकल बातन** = सब बातों में। **पावत** = पाते। **मुरारि** = कृष्ण। **मदन** = कामदेव। **त्रिभंगी** = तीन स्थलों पर झुकी हुई छबि, भंगिमा। **त्रिबंकी** = कुबड़ी, तीन जगह से झुकी हुई।

६१. **इहि** = इस। **विधि** = रीति। **सुमिरि** = स्मरण कर। **ऊधौ प्रति** = उद्धव से। **भृंग** = भ्रमर। **संज्ञा** = नाम। **लोपी** = लुप्त कर दी। **करुनामय** = दयालु। **फाटि** = फटकर। **हिय** = हृदय। **द्दग चल्यौ** = नेत्रों से (बह) चला।

६२. **उमग्यौ** = उमड़ पड़ा। **नयन-सलिल** = नेत्रों का जल, आँसू। **अंसुवन** = आँसुओं। **धारनि** = धाराओं में। **अंबुजनीर** = कमल (के समान नेत्रों) के जल से, आँसुओं से। **कंचुकी** = चोली। **बहु** = अनेक, कई। **गुन-हरनि** = लड़ियों वाले हार। **मेंड** = मर्यादा। **कूल** = किनारा। **तृन** = तृण, घास का टुकड़ा। **भयौ** = हो गया।

६३. **प्रसंसा** = प्रशंसा, तारीफ। **सुद्ध** = शुद्ध, पवित्र। **प्रकासी** = प्रकाशित हुई। **गलानि** = ग्लानि। **मंदता** = जड़ता, दुर्बुद्धि। **सिगरी** = सब। **नासी** = नष्ट हो गई। **निस्चै** = निश्चय। **इहै** = यही। **हरिरस** = भगवद्भक्ति। **कृतकृत** = कृतकृत्य, धन्य। **दरसन** = दर्शन। **मेटि** = मिटाकर। **मल** = गंदगी, मैल। **ग्यान कौ** = ज्ञान का।

६४. **एकांत**=अकेले में । **पठायौ**=भेजा था । **मरम**=मर्म, रहस्य । **एकौ**=एक भी । **निज**=अपना । **मरजाद**=मर्यादा ।

६५. **मेटि**=मिटाकर । **काहे न**=क्यों नहीं । **सचु**=सुख, आनंद । **सांच**=सचमुच में । **पटतर**=समता ।

६६. **लघु**=छोटा, अल्प । **मद**=नशा, अहंकार । **बाध**=बाधा बनकर । **लहत**=लेना, पाया । **आधौआध**=आधे का आधा, चतुर्थांश । **स्रम**=मेहनत परिश्रम, कष्ट ।

६७. **परसे**=छूते ही, छूने पर । **लोह मात्र**=सभी लोहा । **कंचन**=शुद्ध सोना । **पाइ**=प्राप्ति । **पाय**=पाकर ।

६८. **हौं**=मैं । **भृंग**=भ्रमर । **निवार्‌यौ**=मुक्त किया । **निंद**=निंदा । **सबहिन तें**=सभी से । **मारग**=मार्ग । **बिचरत**=घूमते फिरते, विचरण करते समय । **पद**=पैर, चरण । **मूर**=मूल । **मुनिन हू**=मुनियों को भी । **दुर्लभ**=अलभ्य है, दुष्प्राप्य है ।

६९. **कै**=अथवा । **द्रुम**=वृक्ष । **गुल्म**=झाड़ीनुमा पौधा, जो एक जड़ से कई शाखाओं में होकर निकले और जिसमें कड़ी लकड़ी या डंठल न हों । **लता**=बेला । **मांही**=में । **आवतजात**=आते-जाते । **सुभाय**=स्वाभाविक रूप से । **परै**=पड़े । **मोपै**=मुझपर । **सोऊ**=वह भी । **बस**=वश । **बर**=वरदान । **देंहि**=दें ।

७०. **अभिलाष**=इच्छा । **जनायो**=प्रकट किया । **गावन**=गाने । **मूल**=जड़, सम्पत्ति, आदि कारण ।

७१. **धायो**=दौड़ा । **दंडौत**=दंडवत, साष्टांग प्रणाम । **निरदयता**=निठुराई । **ब्रजबनिता**=गोपियाँ । **रस भरे**=(प्रेम के) रस से सिक्त । **नंदलाड़िले**=नंद के प्रिय पुत्र (कृष्ण) ।

७२. **तुमरी**=तुम्हारी । **लाष**=लाख । **जबही लौं**=जब तक । **बाँधी मूठी**=मुट्ठी बँधी हुई है । **निरदै**=निष्ठुर । **जे**=जो । **अवलंबही**=सहारे रहें । **तिनको**=उन्हें । **मेलौ कूप**=कुएँ में गिरा देते हो ।

७३. **पुंज**=समूह । **लहिये**=प्राप्त कीजिए । **क्रिया**=कार्य । **छांड़ि कै**=छोड़कर । **देहु**=दो । **नातरु**=नहीं तो । **नेह**=प्रेम । **सनेह**=स्नेह । **तौ**=फिर **कहा**=क्या ।

७४. **बिवस**=विवश । **रोम रोम प्रति**=प्रत्येक रोम रोम । **साँवरे गात**=श्याम शरीर वाले भगवान कृष्ण । **कल्पतरोवर**=कल्पतरु । **सांवरो**=श्याम । **ब्रजबनिता**=ब्रज की गोपियाँ । **भई**=हुईं । **पात**=पत्ते । **उलहि**=प्रस्फुटित होकर ।

७५. **ह्वै सुचित**=स्वस्थ मन होकर। **पठये**=भेजे। **सुधिलावन**=खबर लेने। **आनि**=लाकर। **तहाँ ते**=वहाँ से। **मोमैं**=मुझमें। **अंतरा**=अंतर, भेद। **एकौ**=एक भी। **ज्यौं**=जैसे। **मो मांझ**=मुझमें। **त्यों**=उसी तरह से। **उनहीं मांहि**=उनमें। **तरंगनि**=लहरों में। **वारि**=पानी, जल।

विशेष—इस छंद में भगवान कृष्ण ने जल-तरंग न्याय से गोपी और कृष्ण (जीव और ब्रह्म) में शुद्धाद्वैत प्रतिपादित किया है।

७६. **गोपिन**=गोपियों का। **भरम**=भ्रम। **निवारि**=निवारण करके। **डारि**=डाली। **व्यामोह**=अज्ञान। **जारी** =जाली। **दुराय**=छिपा लिया। **प्रेमरस पुंज**=प्रेम (के) रस के समूह (कृष्ण और गोपियाँ)।

परिशिष्ट—ग

भँवरगीत का अन्तर्कथाकोश

[भँवरगीत में जिन कथाओं का संकेत किया गया है, उनका ससन्दर्भ सार इस प्रकार है।]

१. गोवर्द्धन-धारण की कथा

श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध के चौबीसवें और पच्चीसवें अध्याय के अनुसार यह कथा श्री शुकदेव मुनि ने राजा परीक्षित को सुनाई।

इन्द्रयज्ञ-निवारण-प्रसंग में यह बताया गया है कि व्रजवासी मेघाधिपति इन्द्र के उपासक थे और वे प्रतिवर्ष विधि-विधानपूर्वक इन्द्र की पूजा किया करते थे किन्तु भगवान श्रीकृष्ण ने नन्द तथा अन्य गोप-ग्वालों को इन्द्र की अपेक्षा गोवर्द्धन की पूजा करने की सलाह दी। कृष्ण की प्रेरणा से व्रजवासियों ने इन्द्र की पूजा त्याग गिरिराज गोवर्द्धन की पूजा की।[1] इससे इन्द्र परम कुपित हुए और उन्होंने सावर्तन नामक गण के नेतृत्व में प्रलय के मेघों को व्रज पर बरसने भेजा। मूसलाधार पानी बरसा, जिससे संत्रस्त सभी व्रजवासी आत्मरक्षा के लिए कृष्ण की शरण में आये। कृष्ण ने अपने हाथ से गोवर्द्धन पर्वत को उखाड़ लिया और उसकी छाया में सब व्रजवासियों की रक्षा की।

सात दिन तक प्रलय-वृष्टि के बाद जब इन्द्र को श्रीकृष्ण की योग-माया का प्रभाव ज्ञात हुआ तब उसने व्रज पर बरसने वाले मेघों को रोक दिया। व्रजवासी गोवर्द्धन की छाया से निकल अपने-अपने घर चले गये तथा कृष्ण ने गोवर्द्धन पर्वत को फिर यथास्थान रख दिया।[2]

टिप्पणी—यह कथा भगवानकृष्ण की भक्तवत्सलता और लोकरक्षण-कारिणी वृत्ति की पोषक है। अन्तर्कथा क्रमांक ३, ४, और ५ भी इन्हीं तथ्यों का समर्थन करती हैं।

२. ब्रह्माण्ड की कथा—

यह कथा श्रीमद्भागवत के द्वितीय स्कन्धान्तर्गत पंचम अध्याय में सृष्टि वर्णन[3] प्रसंग के रूप में विद्यमान है।

---

१. श्रीमद्भागवत महापुराण, गीता प्रेस गोरखपुर, चतुर्थ संस्करण, दशम स्कन्ध, पृष्ठ २८१. २. वही, पृष्ठ २८५.

३. वही, द्वितीय स्कन्ध, पृष्ठ १६२.

एक बार नारद ने अपने पिता ब्रह्मा से सृष्टि की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक प्रश्न पूछे। तब उन प्रश्नों के उत्तर देते हुए ब्रह्माजी ने कहा कि त्रिगुणात्मिका माया के अधिपति भगवान नारायण ही संसार के कारणभूत हैं। आकाश, वायु, तेज, जल, और पृथ्वी की उत्पत्ति उनसे ही हुई। काल, स्वभाव और कर्म के अनुसार इन पंच-भूतों में शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध आदि गुणों का आविर्भाव हुआ। फिर वैकारिक अहंकार से मन और इन्द्रयों के दस अधिष्ठातृ देवताओं की उत्पत्ति हुई। उनके नाम हैं—दिशा, वायु, सूर्य, वरुण, अश्विनीकुमार, अग्नि, इन्द्र, विष्णु, मित्र और प्रजापति। तेजस् अहंकार के विकार से श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा और प्राण नामक ज्ञानेन्द्रियाँ तथा वाक्, हस्त, पाद, गुदा, और जननेन्द्रिय नामक पाँच कर्मेन्द्रियाँ उत्पन्न हुईं। ज्ञानशक्ति रूपी बुद्धि और क्रियाशक्तिरूप प्राण भी तेजस् अहंकार से ही उत्पन्न हुए।

प्रारम्भ में पंचभूत, इन्द्रिय, मन और सत्व आदि तीनों गुण परस्पर संगठित नहीं थे, अतः ये अपने रहने के लिए भोगों के साधन रूप शरीर की रचना नहीं कर सके। भगवान की शक्ति ने प्रेरित कर इन्हें एक दूसरे से मिला दिया और इन्होंने आपस में कार्यकारणभाव स्वीकार कर व्यष्टि समष्टि रूप पिण्ड और ब्रह्माण्ड दोनों की रचना की। यह ब्रह्माण्ड रूप अण्डा निर्जीववत् एक सहस्र वर्ष तक जल में पड़ा रहा। इसके बाद काल, कर्म और स्वभाव को स्वीकार करने वाले भगवान ने इसे जीवित कर दिया। इस अण्डे से एक विराट पुरुष उत्पन्न हुआ। ब्राह्मण इस विराट पुरुष के मुख और क्षत्रिय भुजाएँ हैं। वैश्य उसकी जाँघों से और शूद्र पैरों से उत्पन्न हुए हैं। इस विराट पुरुष के मस्तक में सत्यलोक, दोनों स्तनों में तपोलोक, गले में जनलोक, वक्षस्थल में महलोक, हृदय में स्वर्लोक, नाभि में भुवर्लोक और चरणों में भूलोक (पृथ्वी) की कल्पना की गई है। इसी तरह उसकी कमर में अतल, जाँघों में वितल, घुटनों में सुतल, जंघाओं में तलातल, एड़ी के ऊपर की गाँठों में महातल, पंजे और एड़ी में रसातल और तलुओं में पाताल की कल्पना की गई है। सामान्यतः सातों लोक, सातों पाताल जिस विश्व-गोलक में बसे हैं, उसे ब्रह्माण्ड कहा जाता है।

३. अघासुर की कथा—

यह कथा श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम स्कन्ध के बारहवें अध्याय में वर्णित है। कथा इस प्रकार है कि कंस द्वारा कृष्णवध के लिए प्रेरित पूतना और बकासुर जब कृष्ण द्वारा मार डाले गये तब उनका भाई अघासुर कृष्ण से प्रतिशोध लेने के लिए अजगर का रूप धारण कर ब्रज में आया। और मुँह खोलकर उसी मार्ग पर पड़ गया जिसपर से बालकृष्ण अपने अन्य सखाओं के साथ गायें चराने के लिए जाते थे। अजगर के उस खुले हुए विशाल मुख को गुफा समझकर गोप-बालक तरह-

तरह की कल्पनाएँ करने लगे। इतने में अजगर ने एक लम्बी साँस खींची और बछड़ों समेत सब गोप-ग्वाल उसके मुख-विवर में जा पड़े। गोप-ग्वाल और बछड़ों की रक्षा के लिए कृष्ण भी उस अजगर के मुँह में चले गये।

अजगर के मुँह में पहुँचते ही कृष्ण ने अपने शरीर का इतना विस्तार किया कि उसकी साँस रुक गई और वह प्राणान्तक क्लेश से छटपटाने लगा। अन्त में साँस न ले सकने के कारण उसके प्राण ब्रह्मरन्ध्र फोड़कर निकल गये।

कृष्ण ने अपनी अमृतमयी दृष्टि से सभी मृत गोप-ग्वालों और बछड़ों को जीवनदान दिया। इसके बाद वे सब गोप-ग्वालों व बछड़ों सहित अघासुर के मुख से बाहर आ गये

४. कालिय नाग की कथा—

यह कथा श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम स्कन्ध में सोलहवें और सत्रहवें अध्याय में वर्णित है। कालिय पर कृपा प्रसंग के अन्तर्गत श्री शुकदेवजी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाविषधर कालिय ने यमुनाजी का जल विषैला कर दिया था। उसके विष की तीव्रता से कालियदह का जल खौलता रहता था। उसकी गर्मी से ऊपर से उड़कर जाने वाले पक्षी भी उसमें गिर जाया करते थे।

कालिय नाग को वहाँ से निकालकर रमणक द्वीप वापिस भेजने के लिए कृष्ण कालियदह में कूद पड़े। कालियनाग के फन-फन पर नृत्य कर उन्होंने उसके दर्प को चूर कर दिया। नाग-पत्नियों ने कृष्ण से प्रार्थना की और कृष्ण ने उसे अभय दान दे रमणक द्वीप भेज दिया।

राजा परीक्षित ने शुकदेवजी से कालिय नाग के रमणक द्वीप छोड़ यमुना के कुण्ड में आकर रहने का कारण पूछा। इसपर शुकदेवजी बोले—हे राजन, रमणक द्वीप में हरि का वाहन महाबली गरुड़ रहता था। गरुड़ की माता और सर्पों की माता कद्रू में परस्पर वैर होने के कारण गरुड़ मिलने वाले हर सर्प को खा जाता था। इससे व्याकुल हो सर्प ब्रह्माजी की शरण में गये और ब्रह्माजी ने यह नियम बना दिया कि प्रत्येक सर्प-परिवार बारी-बारी से गरुड़ को एक सर्प की बलि दिया करे।

कद्रू के पुत्र कालिय को अपने बल और विष का बड़ा घमण्ड था। उसने गरुड़ को तिरस्कृत करने के लिए दूसरे सर्पों द्वारा गरुड़ को दी गई बलि खा ली। इससे गरुड़ और कालिय में घोर युद्ध हुआ। गरुड़ के पंखों की चोट खा कालिय अपने प्राण बचाने के लिए रमणक द्वीप से भाग यमुनाजी के कुण्ड में छिप गया। यमुनाजी का यह कुन्ड गरुड़ के लिए अगम्य था, क्योंकि पूर्वकाल में इस कुन्ड के

निकट सौभरि ऋषि तपस्या किया करते थे। उनके मना करने पर भी एक बार क्षुधा-तुर गरुड़ ने इसी कुन्ड से एक मत्स्य मारकर खा लिया था। कुन्ड के जीवों की रक्षा के लिये दयाभावप्रेरित सौभरि ने गरुड़ को यह शाप दिया कि यदि वह फिर कभी उस कुन्ड में आकर शिकार करेगा तो वह जीवित नहीं बचेगा। इसलिए कालिय उस कुन्ड में आकर रहने लगा।[1]

द्वापर में भगवान कृष्ण ने कालिय नाग को नाथ उसके मस्तक पर अपने चरणचिन्ह अंकित कर उसे अभयदान दिया और वह फिर सर्पों के देश रमणक द्वीप को चला गया।

५. दावानल की कथा—

यह कथा श्रीमद्भागवत से दशम स्कन्ध में सत्रहवें अध्याय के उत्तरार्द्ध में दी गई है। कृष्ण और कालियनाग के संघर्ष के समय समस्त व्रजवासी नंद, यशोदादि कालियदह के तट पर आ गये थे। समय अधिक हो गया था, इसलिए कालिय नाग को रमणक द्वीप भेजने के बाद कृष्ण, बलराम, नंद, यशोदा, गोप-ग्वाल आदि सभी उस रात को नगर में न जाकर यमुना तट पर ही रुक गये।

गर्मी के दिन थे। वन सूख गया था, अतः अकस्मात् आधी रात को उस वन में आग लग गई, और उसने सब व्रजवासियों को चारों ओर से घेर लिया। अपने सुहृदों और शरणागतों को अभयदान देने के लिए कृष्ण ने उस भीषण दावाग्नि का पान कर लिया।[2]

६. पूतना-वध की कथा—

यह कथा श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम स्कन्ध में छठे अध्याय के अन्तर्गत पूतना-उद्धार[3] के नाम से वर्णित है। पूतना एक बड़ी क्रूर राक्षसी थी। वह स्वेच्छा से रूप-परिवर्तन कर लेती थी तथा आकाश मार्ग से भी विचरण कर सकती थी। कंस ने उसे अहीरों की बस्तियों में बच्चों को मारने के लिए भेजा था। अपनी माया के बल से वह एक सुन्दर रमणी का रूप रख नंद के घर गई। उसने अपने स्तनों पर बड़ा भयंकर विष लगा लिया था। बड़े कौशल से उसने रोहिणी और यशोदा के देखते-देखते बालकृष्ण को स्तन-पान कराया। पर कृष्ण स्तन-पान के मिस पूतना के प्राण तक पी गये।

मृत्यु के पूर्व पूतना के स्तनों में इतनी पीड़ा हुई कि वह अपने मूल रूप को

१. श्रीमद्भागवत महापुराण, दशम-स्कन्ध, अध्याय १७, पृष्ठ २४१,

२. वही, पृष्ठ २४४,

३. वही, अध्याय ६, पृष्ठ १४८,

छिपा न सकी और राक्षसी रूप में प्रकट हो गई। उसके शरीर से प्राण निकल गये और गिरते समय उसके विशाल शरीर ने छः कोस के भीतर के वृक्षों को कुचल डाला। स्तन-पान के बदले में कृष्ण ने उसे मातृवत् मुक्ति-प्रदान की।

टिप्पणी—इस कथा से भगवान कृष्ण के असुर-संहारक लीलामय स्वरूप का परिचय मिलता है पूतना द्वारा कृष्ण को स्तनपान द्वारा विषपान कराने का षड्यंत्र था, अतः कृष्ण द्वारा उसका वध अनुचित नहीं कहा जा सकता। गोपियाँ उसे भावावेश में दुग्धपान-कराने वाली निष्कपट धाय की तरह बतला कर कृष्ण को उसके वध का दोष लगाती हैं। यह न्यायसंयत नहीं है। इसी तरह आगामी अन्तर्कथा क्रमांक ७ से १२ तक कृष्ण और विष्णु के अन्य अवतारों के सम्बन्ध में जो उपालम्भ दिये गये हैं, वे तर्क तथा न्याय की दृष्टि से समीचीन नहीं हैं।

७. ताड़का-वध की कथा—

यह कथा आदिकवि वाल्मीकि विरचित रामायण के बालकाण्ड[1] में वर्णित है। कथा इस प्रकार है कि त्रेतायुग में राक्षसगण ऋषियों के यज्ञादि अनुष्ठानों में अनेक विघ्न डालते थे। वे अवसर पाते ही ऋषियों को मार डालते थे।

रामावतार के बाद एक बार विश्वामित्रजी अपने यज्ञ की रक्षा के लिए राजा दशरथ के पास गये और उन्होंने राजा दशरथ से राम और लक्ष्मण को यज्ञ की रक्षा के लिए माँगा। राजा दशरथ न चाहकर भी राम और लक्ष्मण को विश्वामित्र के साथ भेजने के लिए विवश हो गये, अतः जब राम-लक्ष्मण और विश्वामित्र मलद व करुष नामक घोर वन-प्रदेश से जा रहे थे तब ताड़का ने उन पर आक्रमण किया। ताड़का सुकेतु नामक यक्ष की पुत्री, जम्भपुत्र सुदा की पत्नी और मारीच नामक यक्ष की माँ थी। एक बार वह अगस्त्य ऋषि को निगल जाने की कामना से उनके आश्रम में गयी, पर अगस्त्य को निगलने के पहले ही वह उनके शाप से राक्षसी हो गयी।

ताड़का ने अपने माया-बल से राम और लक्ष्मण पर पाषाण वृष्टि की। राम ने अग्नि वर्षा से उसका प्रतिकार किया। महाभयंकर संग्राम हुआ और अंत में राम ने उसके वक्षस्थल पर बाण मार कर उसका अन्त कर डाला।

८. सूर्पणखा की कथा—

सूर्पणखा की कथा रामायण और श्रीमद्भागवत महापुराण[2] दोनों में पाई

---

१. महामुनि वाल्मीकि प्रणीत रामायणम्-बालकांडम्, सर्ग २५, श्लोक १२ से २३ तथा सर्ग २६, श्लोक १ से २४ तक।

२. श्रीमद्भागवत महापुराण, नवम् स्कन्ध, अध्याय १०, श्लोक ४ व ६,

जाती है। कथा इस प्रकार है कि वनवासकाल में जब राम, लक्ष्मण और सीता-सहित पंचवटी में निवास कर रहे थे तब लंकेश रावण की बहिन सूर्पणखा काम के वशीभूत हो परिणय की कामना से उनके पास आई। राम ने उसे लक्ष्मण के पास भेजा और लक्ष्मण ने राम के संकेत से उसके नाक-कान काट डाले। रावण को जब राम के इस व्यवहार का पता चला तब उसने राम से प्रतिशोध लेने का संकल्प किया, जिसके फलस्वरूप सीता-हरण हुआ।

९. वामनावतार की कथा--

यह कथा श्रीमद्भागवत महापुराण के अष्टम स्कन्ध में पन्द्रहवें अध्याय से लेकर तेईसवें अध्याय तक[१] वर्णित है। कथानक इस प्रकार है कि दैत्यों का राजा बलि, जो प्रह्लाद का पौत्र, और विरोचन का पुत्र था, अपने तपोबल से स्वर्ग का स्वामी बन गया। इससे देवराज इन्द्र की माता अदिति को बड़ा परिताप हुआ। उन्होंने प्रजापति कश्यप से सहायता के लिए निवेदन किया। कश्यप ने उन्हें भगवान विष्णु की आराधना के लिए पयोव्रत करने का सुझाव दिया। अदिति की आराधना से प्रसन्न हो भगवान विष्णु ने उसकी गोद में वामन अवतार लिया।

वामनावतार के बाद दैत्यराज बलि ने नर्मदा नदी के उत्तर तट पर भृगु कच्छ नामक स्थान पर अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान किया, जहाँ वामन ने ब्राह्मण-वेश में आकर बलि से तीन पग भूमि का दान माँगा। दैत्यगुरु-शुक्राचार्य ने बलि को वामन के छल से सतर्क किया, पर बलि ने अपकीर्ति के भय से गुरु की आज्ञा की अवहेलना की और वामन को तीन पग भूमि का दान दिया।

भूमि नापते समय वामन ने अपने विराट स्वरूप का विस्तार किया और दो पग में सारी धरती और तीसरे पग में बलि के शरीर को नाप उसे सुतल लोक में निवास के लिए भेजा। इसके बाद इन्द्र का स्वर्ग पर अधिकार हो गया और अदिति की मनोकामना पूरी हुई।

इस कथा के आधार पर गोपियों ने विष्णु पर 'सत्य-धर्म छोड़ने' और 'लोभ की नाव' होने का आरोप लगाया है।

१०. नृसिंहावतार की कथा—

यह कथा श्रीमद्भागवत महापुराण के सप्तम् स्कन्ध में युधिष्ठिर-नारद-संवाद के अन्तर्गत प्रथम अध्याय से लेकर नवम् अध्याय तक वर्णित है।

कथा का सारांश इस प्रकार है कि एक दिन ब्रह्मा के मानसपुत्र सनकादिक ऋषि

---

१. श्रीमद्भागवत महापुराण, अष्टम् स्कन्ध, पृष्ठ ९३८-९७७।

२. वही, सप्तम् स्कन्ध, पृष्ठ ७७३-८३४

तीनों लोकों में स्वच्छन्द विचरण करते हुए वैकुण्ठ पहुँचे। वहाँ भगवान विष्णु के द्वारपाल जय और विजय ने उन्हें साधारण बालक समझ कर भीतर जाने से रोक दिया। इस पर ऋषियों ने उन्हें तीन जन्मों तक असुर योनि में रहने का शाप दिया। शाप के अनुसार जय और विजय क्रमशः हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष, कुंभकर्ण और रावण तथा शिशुपाल और दन्तवक्त्र हुए।

हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष भाई-भाई थे। भूमि का उद्धार करने के लिए जब भगवान विष्णु ने वराहावतार ले हिरण्याक्ष को मार डाला तब हिरण्यकशिपु को बड़ा दुःख हुआ। उसने मदराचल की घाटी में जाकर घोर तप किया, जिससे प्रसन्न हो ब्रह्मा ने उसे यह वरदान दिया कि वह न तो दिन में मरेगा, न रात में, न घर में, न बाहर, न अस्त्र से न शस्त्र से, न मनुष्य से न पशु से।

प्रहलाद इसी दैत्यराज हिरण्यकशिपु के चार पुत्रों में से एक थे। वे बड़े भगवद्भक्त थे और दैत्य-बालकों को भगवद्भक्ति का उपदेश दिया करते थे। इससे हिरण्यकशिपु को बड़ा क्रोध आया और उसने उन्हें अनेक यातनाएँ दीं। एक दिन उसने प्रहलाद से पूछा—बता तेरा हरि कहाँ है ?

प्रहलाद ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया—वह सर्वत्र है।

हिरण्यकशिपु ने निकटवर्ती खंभे की ओर इंगित कर पूछा—इस खंभे में भी है ?

प्रहलाद ने कहा—अवश्य।

हिरण्यकशिपु ने क्रोध से उस खम्भे में एक घूँसा मारा। खम्भा फट गया और भक्तवत्सल भगवान ने सन्ध्या के समय, महल के द्वार पर अपने नखों से हिरण्यकशिपु का उदर विदीर्ण कर डाला। इस तरह से ब्रह्मा के वर व प्रहलाद की रक्षा एक साथ हो गई।

११. परशुराम की कथा—

श्रीमद्भागवत महापुराण के नवम स्कन्ध में पन्द्रहवें तथा सोलहवें अध्याय में परशुरामजी की कथा[1] दी गई है। परशुराम जमदग्नि और रेणुका के सबसे छोटे पुत्र थे। एक बार हैहयवंशीय अर्जुन ने दत्तात्रेय को प्रसन्न कर उनसे एक सहस्र भुजाएँ, अतुल सम्पत्ति, शौर्य और कीर्ति प्राप्त की तथा अपनी शक्ति के गर्व में जमदग्नि के आश्रम से जबरदस्ती कामधेनु को बछड़े समेत ले गया। परशुराम को जब सहस्रार्जुन के उक्त कुकर्म का पता चला तब उन्होंने उसे उसकी राजधानी महिष्मती में जाकर युद्ध के लिए ललकारा। युद्ध में उन्होंने सहस्रार्जुन की एक सहस्र

१. श्रीमद्भागवत महापुराण, द्वितीय खण्ड, नवम् स्कन्ध, पृष्ठ ६७-७५

भुजाओं को काट कर उसका शिरच्छेदन कर डाला। सहस्रार्जुन के दस हजार पुत्र डर कर भाग गये।

एक बार परशुराम की माता रेणुका गंगा तट पर जल भरने गई। वहाँ उन्होंने गन्धर्वराज चित्ररथ को अप्सराओं के साथ विहार करते हुए देखा, जिससे उनका मन चंचल हो गया, तथा उन्हें जल लेकर आने में विलम्ब हो गया। जब वे जल लेकर लौटीं तब जमदग्नि ने तपोबल से उनके मानसिक व्यभिचार को जाना और अपने पुत्रों को उनका वध करने की आज्ञा दी, पर उनके किसी भी पुत्र ने यह आज्ञा नहीं मानी। अन्त में परशुरामजी ने पिता की आज्ञा से अपनी माता तथा भाइयों को मार डाला। जमदग्नि ने प्रसन्न होकर परशुराम से कहा कि वे कोई वर माँग लें। परशुराम ने वर माँग कर अपनी माता व भाइयों को फिर से जीवित करा लिया। इस तरह परशुराम ने पितृभक्ति और मातृभक्ति की रक्षा की।

एक दिन सहस्रबाहु के लड़कों ने छल से ध्यानमग्न जमदग्नि को मार परशुराम से अपनी पुरानी शत्रुता का बदला लिया। पतिशोक से विह्वल हो रेणुका विलाप करने लगीं परशुरामजी को बड़ा क्रोध आया और उन्होंने महिष्मती नगरी में जाकर सहस्रबाहु के समस्त पुत्रों के सिर काट-काट नगर के बीचों-बीच एक विशाल पर्वत खड़ा कर दिया। फिर पितृ-तर्पण के लिए सारी धरती को इक्कीस बार क्षत्रियों से विहीन कर उसे ब्राह्मणों को दान कर दी।

१२. रुक्मिणी-हरण की कथा—

यह कथा श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम स्कन्ध में बावन से चौपनवें अध्याय[1] तक वर्णित है। रुक्मिणी विदर्भराज भीष्मक की पुत्री थीं। वे परम रूपवती, गुणवती और शीलवती थीं। कृष्ण के रूप, गुण और शौर्य की कथाएँ सुन उन्होंने मन ही मन उन्हें अपना पति मान लिया था, पर रुक्मिणी का बड़ा भाई रुक्म चेदि-नरेश शिशुपाल से रुक्मिणी का विवाह करना चाहता था। विवाह की तिथि निश्चित हो जाने पर रुक्मिणी ने एक ब्राह्मण द्वारा कृष्ण के पास यह सन्देश भेजा कि वे ठीक समय पर उसे कुलदेवी के मन्दिर से अपने साथ ले जाएँ।

रुक्मिणी की योजना के अनुसार कृष्ण ने दल-बल सहित रुक्मिणी का हरण कर लिया। शिशुपाल, रुक्म तथा उसके पक्ष के अन्य राजाओं ने कृष्ण का पीछा किया। घोर युद्ध हुआ जिसमें कृष्ण तथा बलराम ने सबको पराजित कर दिया। द्वारका पहुँच कृष्ण ने रुक्मिणी से विधिवत् विवाह कर लिया।

१: श्रीमद्भागवत महापुराण, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ ४५६-४७४,

१३. **कुब्जा की कथा—**

कुब्जा की कथा श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम स्कन्ध में बयालीसवें[1] और अड़तालीसवें[2] अध्याय में वर्णित है।

कुब्जा कंस की दासी थी। उसका नाम त्रिवक्रा था। उसके द्वार तैयार किए हुए चन्दन और अंगराज कंस को बहुत भाते थे। अक्रूर के साथ मथुरा जाने पर एक दिन मार्ग में कुब्जा और कृष्ण की भेंट हो गई। कृष्ण के अनुरोध से कुब्जा ने उनको तथा बलराम को अंगराग अर्पित किया।

कुब्जा की प्रेमाभक्ति से प्रसन्न हो कृष्ण ने अपने चरणों से कुब्जा के पैर के दोनों पंजे दबा लिए और हाथ ऊँचा करके दो अँगुलियाँ उसकी टोढ़ी में लगाईं तथा उसके शरीर को जरा उचका दिया। इससे कुब्जा की कूबड़ मिट गई और उसे परम रूप और लावण्य प्राप्त हो गया।

उसने कृष्ण को अपने घर पधारने के लिए आमन्त्रित किया। कृष्ण ने कंस-वध के बाद उसकी मनोकामना पूर्ण की और उसे पत्नी के रूप में अंगीकार कर उसकी विरह-वेदना का शमन किया।

●

---

१. श्रीमद्भागवत महापुराण, द्वितीय खंड पृष्ठ ३८४-३८५.

२. वही, पृष्ठ ४२६-४२८.

परिशिष्ट—घ

सन्दर्भ साहित्य सूची

(१) प्रकाशित ग्रंथ

संस्कृत—

१. महामुनि बाल्मीकि प्रणीतं रामायणम्
२. श्रीमद्भागवत महापुराण

हिन्दी—

१. **अष्टछाप-परिचय**—श्री प्रभूदयाल मीतल.
२. **उद्धवलीला (भँवरगीत)**-प्रकाशक—बाबा तुलसीदास वृंदावन.
३. **कविवर नंददासकृत रासपंचाध्यायी और भँवरगीत**—संपादक ब्रजमोहनलाल विशारद.
४. **चौरासी वैष्णवन की वार्ता**—सं० द्वारका नाथ पारीख.
५. **दोसौ बावन वैष्णवन की वार्ता**—तीन जन्म की लीला भावना वाली. —संपादक गो० ब्रजभूषण शर्मा और द्वारकादास पारीख.
६. **नंददास**—संपादक उमाशंकर शुक्ल.
७. **नंददासकृत भँवरगीत**—सं० डा० सुधीन्द्र.
८. **नंददास का भँवरगीत: विवेचन और विश्लेषण**—डा० स्नेहलता श्रीवास्तव.
९. **नंददास और उनका भँवरगीत**—डा० पूर्णमासीराय.
१०. **नंददास ग्रंथावली**—सं० बाबू ब्रजरत्नदास.
११. **भँवरगीत**—सं० डा० प्रेमनारायण टंडन.
१२. **भँवरगीत**—सं० विश्वंभरनाथ मेहरोत्रा.
१३. **भ्रमरगीत**—सं० पंडित जवाहरलाल चतुर्वेदी.
१४. **भ्रमरगीत**—सं० बाबू ब्रजरत्नदास.
१५. **भ्रमरगीत**—सं० प्रिंसिपल रामाज्ञा द्विवेदी समीर.
१६. **भ्रमरगीत**—सं० दानबिहारी लाल शर्मा.
१७. **मिश्रबंधु विनोद**—श्री मिश्रबन्धु.
१८. **रासपंचाध्यायी और भँवरगीत**—सं० डा० उदयनारायण तिवारी.

१६. **रासपंचाध्यायी और भँवरगीत**—सं० बाबू बालमुकुन्द गुप्त.
२०. **सूरसागर**—सं० आचार्य नंददुलारे बाजपेयी.
२१. **सूरसागर**—रागकल्पद्रुम-नवलकिशोर प्रे,स लखनऊ.
२२. **श्रीनंददासजी भ्रमरगीत**—प्रकाशक श्री गोवर्द्धनदास लक्ष्मणदास ठक्कर.

(२) खोज विवरण

१. नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों के सक्षिप्त खोज विवरण, भाग १ और २.
२. राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज.

(३) हस्तलिखित ग्रंथ

हिन्दी—

१. **उक्ति-जुक्ति रस कौमुदी**—बाबू ब्रजरत्नदास की प्रति.
२. **उद्धव शतक**—वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की प्रति-हस्तलेख ४६२२१.
३. **गोपीगीत सनेह या भ्रमरगीत ककहरा**--डा० भगवानदास तिवारी की प्रति.
४. **गोपी विरहा**—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की प्रति. (पंजाबी भाषा)
५. **चौरासी वैष्णवन की वार्ता**—विद्याविभाग कांकरोली की प्रति.
६. **जोगलीला-उदय कविकृत**—पं० जवाहरलाल चतुर्वेदी की प्रति.
७. **जोगलीला-उदै कवि कृत**—याज्ञिक संग्रहालय की प्रति.
८. **दशमस्कन्ध-नंददास कृत**—श्री हरगोविन्द पुजारी, श्री यशोदानंदन मंदिर वृंदावन की प्रति.
९. **दानलीला-(दासबलि)**—पं० जवाहरलाल चतुर्वेदी की प्रति.
१०. **दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता**—डाकोर की प्रति.
११. **दोहा रत्नावली (रत्नावली)**—गोपालदास की प्रति-सोरों सामग्री.
१२. **दोहा रत्नावली (रत्नावली)**—गंगाधर की प्रति, सोरों सामग्री.
१३. **नाममंजरी**—नंददास : राजकीय अभिलेखागार, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद की प्रति.
१४. **नाममाला**—याज्ञिक संग्रहालय की प्रति.
१५. **नासकेत पुराण भाषा**—स्वामी नंददासकृत : याज्ञिक संग्रहालय की प्रति.
१६. **पंचाध्यायी**—आर्य भाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की प्रति.
१७. **पंचाध्यायी**—वाराहमिहिराचार्य पुस्तकालय, पटना की प्रति.
१८. **पंचाध्यायी**—बाबू ब्रजरत्नदास की प्रति.
१९. **पंचाध्यायी**—रामरत्न पुस्तक भवन की प्रति, वाराणसी.
२०. **पंचाध्यायी भाषा**—बाबू ब्रजरत्नदास की प्रति.

२१. **पंचाध्यायी रासलीला**--श्री ब्रजभूषणदास की प्रति.

२२. **प्रेमरस पूजनी लीला**--हस्तलेख क्रमांक २०६३, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग.

२३. **प्रेमरस पूजनी लीला**--झाला नंदकिशोरजी मुकुटवाले, वृंदावन की प्रति.

२४. **फूलमंजरी (पुरुषोत्तम कवि कृत)**--याज्ञिक संग्रहालय की प्रति.

२५. **बालकाण्ड (रामचरितमानस)-तुलसीदास**--सोरों की प्रति.

२६. **भँवरगीत**--कवि श्री चंपालाल मंजुल, भरतपुर की प्रति.

२७. **भ्रमरगीत लीला**---हस्तलेख क्रमांक ९०१।६३४, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी.

२८. **भ्रमरगीत**---९२१।६३४, ना० प्र० सभा०, वाराणसी.

२९. **भवरगीता**--९१६।६४०, ,, ,,

३०. **भ्रमरगीत**---५१९।३७२ ,, ,,

३१. **भमरगीत**---७६१।५५२ ,, ,,

३२. **भवरगीत**--९८९।६८१ ,, ,,

३३. **भमरगीत**--५१३।३६९ ,, ,,

३४. **भवरगीत**--१०५५।७३२ ,, ,,

३५. **भमरगीत**---१४७१।८९४ ,, ,,

३६. **भ्रमरगीत**--११३९।६८४ ,, ,,

३७. **भवरगीत**--११९५।९०० ,, ,,

३८. **भवरगीत**--३११३।१९५८ ,, ,,

३९. **भ्रमरदूत**--५३३।३८ ,, ,,

४०. **भमरगीत**--४५७।३४ याज्ञिक संग्रहालय की प्रति.

४१. **भवरगीत**---७००(घ)।१४ ,, ,,

४२. **भवरगीत**--१६५।५६ ,, ,,

४३. **भवरगीत**--३३५।५६ ,, ,,

४४. **भवरगीत**---५५९।५६ ,, ,,

४५. **भवरगीत**--१६८।५६ ,, ,,

४६. **भवरगीत**---६८।१३ ,, ,,

४७. **भवरगीत**--१८४।३३ ,, ,,

४८. **भवरगीत**--२८।१४ ,, ,,

४९. **भवरगीत**--१६६।५६ ,, ,,

५०. **भवरगीत**---८००।५६ ,, ,,

५१. **भ्रमरगीत**--हस्तलेख क्रमांक ४६२७९, वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी.

५२. **भमरगीत**—प्रतिक्रमांक ३, रामरत्न पुस्तक भवन, वाराणसी.
५३. **भमरगीत**—बाबू ब्रजरत्नदास की प्रति ग्रंथ क्रमांक ५३.
५४. **भवरगीत**—हस्त० क्र० २६१२, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग.
५५. **भवरगीता**— ,, ,, २१३०, ,, ,,
५६. **भुवरगीत**—ग्रंथांक ३४६२, राजकीय अभिलेखागार, उत्तरप्रदेश, इलाहाबाद
५७. **भ्रमरगीत**— ,, २६८३, ,, ,,
५८. **भवरगीत**—बंध सं० ५०१, कु० मु० हिन्दी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ, आगरा.
५९. **भवरगीत**—ग्रंथांक १७७, जिला पुस्तकालय, भरतपुर.
६०. **भमरगीत**— ,, १८५, ,, ,,
६१. **भवरगीता**— ,, २२४।क, ,, ,,
६२. **भवरगीत**— ,, २५२।क, ,, ,,
६३. **भवरगीत**— ,, २५६।क, ,, ,,
६४. **भवरगीत लीला**—२७१।क, ,, ,,
६५. **भमरगीत**—ग्रंथांक १०१२, स्टेट म्यूजियम, भरतपुर.
६६. **भवरगीत**—पं० विद्याधर पुरोहित, भरतपुर की प्रति.
६७. **भवरगीत**—श्री प्रभुलालजी गोयल, भरतपुर की प्रति.
६८. **भमरगीत**—भाषा बंध ६६, ग्रंथांक १५।३४, निज पुस्तकालय, नाथद्वारा की प्रति.
६९. **भवरगीत**— ,, ६२, ,, ११, ,, ,,
७०. **भ्रमरगीत**—बंध सं० ५०, ग्रंथांक ५, विद्याविभाग, कांकरोली.
७१. **भमरगीत**—ग्रंथांक २८, शुद्धाद्वैत पुस्तकालय, वृंदावन.
७२. **भँवरगीत**—श्री राधाचरण पुस्तकालय, वृंदावन की खंडित प्रति, प्रति क्रमांक ४८.
७३. **भवरगीत**— ,, ,, प्रति क्रमांक ४९.
७४. **भवरगीत**— ,, ,, प्रति क्रमांक ५०.
७५. **भवरगीत**—बंध संख्या ५५, ग्रंथांक ५७, श्री ब्रजवल्लभशरणजी अधिकारी वृंदावन.
७६. **भँवरगीत**—बंध संख्या ५३, ग्रंथांक ५०, ,, ,,
७७. **भव गीत**—लाला नंदकिशोरजी मुकुट वाले, वृंदावन.
७८. **भवरगीत**—श्री देवकीनन्दनाचार्य पुस्तकालय, कामां, कामबन की प्रति.
७९. **भ्रमरगीत**—सोरों की खंडित प्रति.

●